औ ९२

प्रेमलता परवलो

भूमिका ।

* जय सियराम जय जय सियराम *

भगवत प्राप्ति, की इच्छा करने वाले, बिरक्त वा त्यार्थ जिज्ञासू जो जीव हैं, सो प्रथम भगवत भागवतों के वाक्य, पढ़ें सुनें, गुनें, कि क्या आज्ञा हम लोगों को है, युगानुसार, उत्तम साधु धर्म ग्याता, आचार्य, यथार्थ, बक्ता, बिद्वान, बिरक्त, बैष्णव, सर्ब शुभ गुण सम्पन्न, सतगुरू की सेवा सत सङ्ग करि माया, ब्रह्म, जीव, तीनों का स्वरूप अरु षट शरणागत, यथा अनुकूल का संग्रह १ प्रभु प्रति कूल का त्याग २ गोपत्तृत्व ३ रक्षा में बिश्वास ४ कार्पन्यता ५ आत्म निबेदन ६ षट सम्पत्ति सम १ दम २ श्रद्धा ३ बिश्वास ४ उपराम ५ तितिक्षा ६ इन्हें सब के भेदों को भले प्रकार जानि जाय, पश्चात् बिचार पूर्बक करनी करैं, जैसा लिखा है, कि-जाति, बिद्या हमत्वंच, रूप, यौबन, मेवच । इति पाँचौ पर्म दुख रूप भक्ति मार्ग में शूल समान ये अभिमान हैं, इन्हन के बश परि बिचारे अनन्त जीव मन मुखी, नर्कादिकों के कठिन कलेशों को भोगि रहे हैं, सर्ब [illegible] वलम्बी, सो केवल एक गुरु बिना, करों का

गुरू मिलत नहिं राम०। लोभी गुरू लालची चेल होइ नर्क में ठेलमठेला॥ हरै शिष्य धन शोक न हर सो गुरु घोर नर्क में परई॥ दोहा—गुरु बोरै भवशिन्धु में गुरू हिं लगावै पार। जानि बूझि गुरु कीजिये; प्रभहिं लखावन हार॥ गुरू कीतौ महि[illegible]ा है अधि बिन्द ते०। गुरू अनन्त हैं परंतु त[illegible] दर्शी श्रीसतगु कोई कोटिन में एकही [illegible]ये जाते हैं, जिन्हके प्रभु अवलम्ब के शिवाय, देह गेहादिकों की भी चिन्ता नही, जैसे—बैर न बिग्रह आश न त्राशा। सुख मय ताहि सदा सब आशा॥ अनारम्भ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दक्ष बिज्ञानी॥ प्रीति सदा सज्जन संसर्गा। त्रिण सम बिषय स्वर्ग अपवर्गा॥ भक्ति पक्ष हठ नहिं सठ ताई। दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥ दोहा—मम गुण ग्राम नामरत गत ममता मद मोह। ताकर सुख सोइ जाने परानन्द सन्दोह॥ भक्ति पक्ष य[illegible], प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा। दूसरि रत [illegible] कथा प्रसंगा॥ दोहा—गुरु पद पंकज सेवा तीसरि [illegible]क्ति अमान। चौथि भक्ति मम गुण गण करै क[illegible] त[illegible] गान॥ मंत्र जाप मम दृढ़ बिश्वासा। पंचम भ सो बेद प्रकाशा॥ षट दम शील बिरत बहु कर

निरत निरन्तर सज्जनधर्मा॥ सातवँ सम मोहि मयजग देखै। मोते सन्त अधिक करि लेखै॥ अष्टम यथा लाभ सन्तोषा। स्वप्नेहु नहिं देखै पर दोषा॥ नवम सरल सब मन छल हीना। मम भरोस हिय हर्ष न दीना॥ इत्यादि बचन बुझावै सुझावै सोई सत गुरू जानों जो परात्पर प्रभु श्री सीताराम जी को लखावै। जैसेकि, उपजहिं जासु अंशते नाना शंभु बिरंचि बिष्णु भगवाना॥ शिवहिं शिवता बिधिहिं बिधिता हरिहिं हरिता जिन्हदई। सोइ जानकी पति मधुर मूरति मोद मय मंगल मई॥ हरिहु और अवतार आपनें राखी बेद बड़ाई। लै चूरा निधि दई सुदामहिं यद्यपि बाल मिताई॥ इसवास्ते, परात्पर पूरण ब्रह्म श्री सीतारामही जानों, इनहीं केगुण नामादि का गान सब ईश्वर अवतारादि किया करते हैं॥ यथा पद्म पुराणे श्रीकृष्ण वाक्य मर्जनं प्रति। नश्चन्देह स्त्वया कार्जो नवक्तव्यं पुनः पुनः। पापी भवति धर्मात्मा रामनाम प्रभावतः॥ न म्लेक्षस्पर्नात्तस्य पापं भवति देहिनः। तस्मात्प्रमुच्यते जंतुर्यः स्मरे द्रामद्व्यक्षरम्॥ प्रायश्चित्तं कृतं तेन महापातक नाशनम्। तपस्तप्तं चजेनोक्तं राम मित्यक्षर द्वयम्॥ तत्रैव श्री बिरंचि वाक्यम्। केचिद्वदा दे

कंकर्म केचिद् ध्यानादि साधनम्। कुर्वन्ति नाम बिज्ञान बिहीना मानवा भुबि:॥ तत्र योग रता:केचित्केचित्ध्यान बिमोहिता:। जपेकेचित्तु क्लिश्यन्ति नैव जानन्ति तारकम्॥ अहंच शङ्करो बिष्णु स्तथा सर्बे दिवौकस:। रामनाम प्रभावेन संप्राप्ताः शिद्धि मुत्तमाम्॥ भबिष्योत्तार पुराणे श्री नारायण बाक्यं लक्ष्मी म्प्रति। भजश्व कमले [illegible] नामसर्बेश पूजितम्। रामेति मधुरंसाक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि:॥सर्बेषां साधनानांवै श्री नामोच्चारणं परम्। बदन्ति बेद मर्मज्ञा निमग्ना ज्ञान सागरे॥ यत्प्रभावान्मया नित्यं परमा नन्द दायकम्। रूपं रस मयं दिब्यं दृष्टं श्री जानकीपते॥ मार्कन्डेय पुराणे व्यास बाक्यम्। धर्मा न शेष संशुद्धान्सेवन्ते येद्विजोत्तमा:। तेभ्यो नन्त गुणंप्रोक्तं श्रेष्टं श्री नामकीर्तनम्॥ तस्मात्सर्बात्मना राम नाम माङ्गल्य कारणम्। भजध्वं सावधाने न त्यक्त्वा सर्ब दुराग्रहान्॥ गरुड़ पुराणे श्री बिष्णु बाक्यम्। श्री राम राम रामेति ये बन्दत्यपि पापिनः। पापकोटि सहस्त्रेभ्यस्तेषां संतरणं ध्रुवम्॥ इस प्रकार सर्ब ईश्वर श्रीसीताराम जी महाराज ही की उपासना कार रहे हैं। श्री शंकर आदि देवतनि के तौ एक केवल श्र

सीताराम नामहीं का अधार है। इस भेद को प्राकृत बिषई मलीन बुद्धि वाले जीव बिना सतसंग कैसे जानि सक्ते हैं। नाना प्रकार के मलीन ब्योहार अहार करि करि जीवों नें शुभाचरण सतसंग प्रभु भजन भावादि कल्याण कर्ता पदार्थ बिसारि दिये। महा भ्रष्ट दुर्गन्ध मय प्रभु प्रति कूल, नर्क देने वाले, मद, मांसादि ग्रहण करि, अपने को कृत कृत्य मानि लिया है। प्रभु सम्बन्धी कथा वार्तायें परि त्यागि मादक बस्तुओं प्रति प्रिय मानि राखी हैं। तिस्में गाँजा, तमाकू, आदि सात नशा तो श्री बाल्मीकी जी मदिरा के तुल्य ही लिखे हैं। तमाकू की उत्पति गऊ के कान से गरुड़ पुराण में लिखा है। तौ गऊ का मांसही भया। तैसही गाँजा। सो बड़े २ महानु भाव जो संसार के उद्धारार्थ प्रभु नें उत्पन्न किये हैं। सन्त, ब्राह्मण, जो हमारे भाई बैष्णव आदि उपासक्क कहावते हैं। प्रभु अर्पण करि प्रशाद पावते हैं। ते भी गाँजा, तमाकू को प्राणाधार मानि दुर्गति को प्राप्त हो रहे हैं। निवारण अर्थ प्रार्थना की जाय, तौ अपराध क्षमाने के बदले मन्मुखी प्रमाण बोलि २ मारपीट करने खड़े हो जाते हैं। लिखा है। कि, तमाले सत बर्षाणि सहस्र अमलादये।

कल्प कोटि सुरापानं धूम्र पाने युगे युगे॥ गृही होके कथे ज्ञान। अमली होके धरे ध्यान। साधू हो के कूटे भग। कहे कबीर तीनों ठग। ये मादक पदार्थ उत्तम लोग प्रभु धर्म ज्ञातन को गो मांस मदिरा तुल्य त्यागने की आज्ञा है। इस पर बहुत प्रमाण है। अमल करने वालों के सर्ब शुभ कर्म नाश हो जाते हैं। और प्रभु तत्व शास्त्रों का यथार्थ बोध, गुरु महात्माओं के बचनों का बिचार कभी नहीं होता। आशुरी बुद्धि वालों को, हे भाइयो। यह कलि काल है। सर्ब आशा त्यागि एक श्री सियाराम नाम का अमल अमल करो। गाँजा, तमाकू, मांस मदिरादि दुराचर्णों को त्यागो। प्रभु प्रति कूल जानि कर, और श्रद्धा सहित श्री सीताराम नाम रटो रटाओ। प्रभु प्राप्ति वालों को बिशेष बिद्यादिकों में श्रम करना व्यर्थ है। श्री सियाराम नाम रटते२ सर्ब तत्व भासने लगते हैं। अनुभव आदि बिद्याओं की कोठरी खुलि जाती हैं। सपथ करि सत्य कहत हौं। मैं कुछ न पढ़ा रहा, अक्षर लिखना ना दिका कुछ बोध न रहा, सो केवल श्री गुरु महाराज की कृपा से नामहीं रटते रटते पढ़ि गया, काव्य करने लग गया श्री सतगुरु कृपाप्रकाश नामक एक बड़ा भारी ग्रन्थ ही

बनि गया। इसी ग्रन्थ में से आठ नौ प्रकरण छपाय छपाय संत सज्जनों की सेवा में बिना मुल्य दिये गये हैं। इसमें श्री नाम की बड़ाई है. नाम प्रताप कहै कोउ साँचो शिला सरोरुह जामो। नाम रटते रटते मूर्ख मनुष्यों का पंडित व कबि महात्मा ईश्वरारादि देवता सर्ब गुणार्णव हो जाना कौन आश्चर्य है। सो यह श्री नाम का प्रभाव मैं अजमाय देखा अरु जो चाहै सो देखि लेवे। कि अखंड सियाराम नाम रटने में कैसा आनंद है। परंतु सर्ब आशा त्यागि केवल एक नामही रटे। नाम महा निधि मंत्र नामही सेवा पूजा। जप तप तीरथ नाम नाम बिनु और न दूजा। नाम बैर नाम प्रीति नाम कहि नामी बोलै। नाम अजामिल साखि नाम बंधन ते खोलै। नाम बड़ो रघुनाथ ते राम निकट हनुमत कह्यो। श्री कबीर कृपा ते पद्म नाभ परम तत्व परच्यो लह्यो॥ अनन्यता धारण करै प्रभु प्रतिकूल कर्म को त्यागैगा तब अवश्य अकथनीयँ आनन्द पावैगा। प्रथम मैं भी गाँजा तमाकू छोटी अवस्था में कुसंगियों के साथ मिलि पीने लगा। उसमें प्रीति होगई रही परंतु श्री हनूमान जी की मूर्ती को नाम

रटि सुनाता रहा। अच्छे २ महात्मा लोग मना भी किये। कि तू ये बिकार बस्तु खाना पीना त्यागि दे तब नाम रटनें का सुख फुरेगा। तौ नहीं मानता रहा। अज्ञान बश होके। वह अभागिनी मन मुखतर पीछे परी चली गई। पर जब कृपा होती हैं। तब प्रभु हठि हठि अधमो का उद्धार करते कराते हैं। वह कठिनकुलक्षण श्री हनूमान जी महाराजनें एकही दिनमें मूलही ते नाश करिऐसा उसमें दोष दिखाय दिया, कि भ्रष्टों से भ्रष्ट भासने लगा। पश्चात् बड़े २ सुख श्री नामोच्चारण में श्री गुरु हनुमत लाल जू कृपासागर महाराजों नें दरशाये जो कि अकथ आनन्द हैं। जय सियराम।

सवैया—काहे को तीरथ ब्रर्त करो वहु काहे को अङ्ग लपेटहु छारा। काहे
तपो तप कष्ट करो कलि काहे को शीस रखावहु बारा ॥ काहे करो जप
योगरु कर्म जो गाँजि तमाकूते प्रीति अपारा। प्रेमलता सबु त्याँगि भजो
अजहूँ सियराम सु नाम उदारा ॥१॥ शुचि संग करो सियराम रटो मुख
त्यागि कुभोगप्रपंच विकारा। जानत हैं जनके उरकी प्रभु पालिहैं पालत
जो जग सारा ॥ होइ रहो अनुकूल वृथा करि भ्रम धरो शिर पाप को
भारा। प्रेमलता लघु जीवन है कलिकाल करो उर बीच बिचारा।

—* इति भूमिका शुभम् *—

आपका, कृपा भिलाषी सिया लाल शरण दरबेस।

श्री ग्रन्थकर्त्ताजी

श्रीसीताराभाभ्यांनमः
श्रीसीताराभाभ्यांनमः
श्री
सीताराम
जयसियराम जयजय सियराम
जयसियराम जयजय सियराम,

जय सियराम जय जय सियराम

नाम 'प्रचारक' श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस

श्री सियालाल शरणजी महाराज उपनाम 'श्री प्रेमलताजू'

॥ श्रीः ॥

प्रेमलता पदावली।

श्रीसतगुरवेनमः।

श्रीसीतारामनामाभ्यांनमः।

पद मङ्गलाचरण।

भजुमन जनकनन्दिनि चरण॥ टेक॥

अरुण तलबर परम मञ्जुल, मधुर मङ्गल करण॥१॥
पीन पावन चिन्ह अङ्कित, बिबिधि बर आभरण।
पदज सुन्दर चारु नख शसि, कोटि आभा हरण॥२॥
ध्याइ जो पद शिद्ध मुनिजन, होत तारण तरण।
अर्टहि प्रमुदित अवनि सादर, कालहूको डरन॥३॥
पूज्यहरिहर अमर जो पद, बेद ब्रह्मा बरन।
कार्य कारण हेतु जिन्हिकर, पतित पावन परण॥४॥
बसत जाके उरसिनिशिदिन, चरण औढर ढरण।
धन्यतर बड़ भाग ताके, जात कापै ररन॥ ५॥
संसार सागर पोत अभिमत, देत अभरण भरण।

भरण पोषण हरण शृष्टिसु, दीनजन उद्धरण ॥६॥
गुण गेह ज्ञान सुभक्तिप्रद, घन बोध संशय दरण ।
मनबचन कर्म बिकार हर, सियलाल अशरण शरण ॥७॥

पद गजल (१)

मिथिला सुधन्य धन्य सिया जनक नन्दिनी ।
प्रगटी जहाँ सुख खानि आद्य जगत बन्दिनी ॥टेक॥
जैसी अनूप रूप सिया गुणनि आगरी, तैसी
अनूप भूमि जो मुनि मन सु फन्दिनी ॥१॥ सोहैं
तड़ाग बाग बिपुल कूप को गनै, सरिता बहैं
बरबारि लिये सुख सुकन्दिनी ॥२॥ भूले बिलोकि
रामलखन सहित निकाई, बरणै बिभूति भूरि को
तहँ की अमन्दिनी ॥३॥ जगजन्मि जाय जियत जीव
अधम कूरसे, देखी न जौन नैन से मिथिला सु
कन्दिनी ॥४॥ अलि प्रेमलता बादि सकल जन्म
गमायो, गाये न रामचन्द्र सिया सहित चन्दिनी ॥५॥

पद गजल ॥ २ ॥

भजि बार बार नाम सिया राम मोहिनी ॥टेक॥
सुखमा सलोने अङ्ग के लिखते बनें नहीं, लाजैं
उमा रमादि अमित रति सु रोहिनी ॥ १ ॥ भूषण

बसन् सुयोग सखिनि सुरुचि बनाये, लटकैं सु युग्म अलक जो बलदार सोहिनी ॥ २ ॥ सोहैं सु अलिनि मध्य सदा बुद्धिदायिनी, छबि रूप शील खानि जगत हित अकोहिनी ॥३॥ मनबचन कर्म कपट दम्भ छल बिहायकै, चितलाय सदा सेउ सर्ब सुख सँदोहिनी ॥ ४ ॥ अलि प्रेमलता शरणपाल सबल स्वामिनी, सियजू कृपालपर्म भक्त रुख सुजोहिनी ॥ ५ ॥

पद गजल ॥ ३ ॥

सिया के योग सुबर आली राम बिधना बनाये हैं ॥ टेक ॥ लखे हम आजुइ मग जाता, मनोहर श्यामल मृदुगाता, बराबर रहे लखन भ्राता मुनिन के सँग जु आये हैं ॥ १ ॥ पीतपट कसे कमर धनु बाण, लिये कर चले जाँय मस्तान, अनूपम अजब अनोखे ज्वान, हमारे हिय समाये हैं ॥२॥ सुहाई दिये खौरि बर भाल, मुकुट शिर लसे कंठ बन माल, झूमते चलें अनोखी चाल कामगज कोटि लजाये हैं ॥ ३ ॥ सखी पर शिव धनु कठिन कठोर, कुमर दोउ अति कोमल चित

थोर, पुलकि आँखि प्रेमलता कर जोर सुमिरि सुर सुकृत मनाये हैं ॥ ४ ॥

पद गजल ॥ ४ ॥

भरोसा दिल्में आता है सियाबर राम हावेंगे ॥ टेक ॥ लखनके छोट बीर भारी, ताडुका सेन सहित मारी, नारि पुनि गौतम की तारी, धनुष को तोरि बहावेंगे ॥१॥ कठिन धनु सहजहिं तोरेंगे मान भृगुपति को मोरेंगे, भूप कर जोरि निहोरेंगे, सकल हम मङ्गल गावेंगे ॥२॥ सखी ये दशरथ के जाये, यहाँ धनु तोरन ही आये, बचन ये सबके मन भाये, लाभ नयनों के पावेंगे ॥३॥ सुनैना धन्य जनक राई, सुता जिन्ह सीता सी पाई, सुकीरति प्रेमलता छाई, लोकतिहुँ मोद बढ़ावेंगे ॥४॥

पद गजल ॥ ५ ॥

गोर तनु सिया राम घनश्याम अनूपम जोरी सुखदाई ॥टेक॥ चन्द्रिका सिया शीस राजै, मुकुट मणि रघुबर शिर भ्राजै, रूपलखि काम कोटि लाजै सुभगता अङ्ग अङ्ग छाई ॥१॥ नासिका बेशर द्युत अनमोल, लसै उत अधर बुलाक सु डोल, श्रवण

इतफूल सु कुन्डल लोल, तेज लखि सडि तउ सर माई ॥२॥ सियागरगज मोतिन के जाल, बिभूषण बिबिधि राम उर माल जड़े मणि माणिक हीरा लाल, छटा केहि भाँति जाय गाई ॥ ३ ॥ जरकसी चोली इत सोहैं, राम तन जामा मन मोहैं, युगल छबि बरणैं कबि को हैं, जिये जन लोचन फलपाई ॥४॥ नीलपट ओढ़ें सियप्यारी, पीतपट रघुबर तन धारी, बिलोकत प्रमुदित नरनारी, पुलकि बलि प्रेमलता जाई ॥ ५ ॥

लावनी ॥ ६ ॥

पिया रँग रँगी सिया प्यारी, पिया सिय छबि की बलिहारी ॥टेक॥ कहूँ का अजब छटा आली निरखते हियरे में शाली ॥ चलें जब झमकि मत्त चाली। छिटकती तरवनि की लाली॥ नवल दोउ छैल छबीले यार। बिहरते सजि नखशिख शृंगार॥ दोहा—नख शिख अङ्ग अनूपम शोभा अमित अपार॥ करत बिहार दिये गल बहियाँ देखत बागबहार॥१॥ खिली जहँ बिबिधि फूलक्यारी॥ पिया सिय छबि की बलिहारी॥१॥ बिभूषण जन दूषण हारी। ललित

अँग अङ्ग सजे प्यारी ॥पगनि बर नूपुर अति सोहैं बीछियाँ अनवठ मनमोहैं ॥ पैजनी रुनक झुनुक बाजैं। मधुर धुनि सुनि सुनि घन लाजैं ॥ शब्द प्रिय पायलको सुनिकान । लाल मनबचन सुकर्म हुभान॥

दोहा । कड़े छड़े अरु साँकरे भूषण चरण सुयोग। ध्यावहिं जिन्हें सिद्ध योगी मुनि परिहरि बनिता भोग ॥ २ ॥ बिमल यश बदत बेदचारी ॥ पिया रँग रँगी सिया प्यारी॥२॥ महावर फबै युगल पग में । योग नहिं उपमा के जग में ॥ नखनि छवि लखी सोइ जानैं । भये मन मुदित सु मस्तानैं ॥ घाँघरा घेरदार सोहै । चीर छवि बरणै कबि कोहै॥जटित मणि हेमतार मोती । हो रही जगर मगरंजोती ॥

दोहा-चेतन अमल सु नवल नित भूषण बसन पुनीत॥ नवल अङ्ग सिय सखिनि सजाये लियो लखन मन जीत ॥३॥ प्रीति की रीति कछू न्यारी ॥ पिया रँग रँगी सिया प्यारी ॥३॥ हार उर कञ्चनमणि मय जाल । पँचलड़ी तिलड़ी हँसुली माल ॥ पोति की जोति भली भ्राजी । जोइ जिय पिय सु होत राजी ॥ भुजनि बरबाजू बँद झूलैं । हरैं अघ अग

णित जन भूलैं ॥ ललित कर कंकन मधुर चूरी। जटित मणि माणिक छबि भूरी ॥ दोहा ॥ गजरा छूनिर बँगलियाँ पहुँची मणि मुदरी हथफूल ॥ छाप छल्ला कर कंज सुमेहदी सब सुठौर अनुकूल ॥४॥ आरसी छबि निरखन वारी ॥ पिया रँग रँगी सिया प्यारी ॥४॥ श्रवण कल करणफूल झुमका निरखि मन प्रीतमको पुलका ॥ चन्द्रिका अमल शीश राजै। महा द्युति भानु कोटि लाजै ॥ राखरी शीश फूल भावै। भाल बर बेंदी छबि पावै ॥ बुलाकी नक बेसरि अनमोल। चिबुक पर श्याम बिन्दु बरगोल॥ दोहा ॥ कनकफूल मणि जटित बन्दियाँ बारीं करण सु जोड़। तन मन बारि रहे रघुनन्दन जनक लली के होड़ ॥५॥ रेख दृग काजर की कारी ॥ पिया रँग रँगी सिया प्यारी ॥ नीलपट ओढ़ें सुख दाई। परम छबि अङ्ग अङ्ग छाई ॥ उपरनासुरँग ज़री जरतार। लगे मणि माणिक रतन अपार ॥ सितारे चमकि रहे न्यारे। फँसे जनु जाल अमित तारे॥ मधुर मुश्किाय सु बोलैं बोल। जाँयँ बिकि राम लला बिनुमोल ॥ दोहा ॥ तत सुख ललना र.श

लहैं अकथ अनन्द अपार ॥ प्रेमलता गुरु चरण कमलपर बार बार बलिहार ॥६॥ लखाई सु छबि मोदकारी ॥ पिया रँगरँगी सिया प्यारी ॥ सिया सिय छबि की बलिहारी ॥६॥

पद लावनी चाल ॥७॥

नाम की रटना करि पाये, राम जो ब्रह्म बेदगाये ॥ टेक ॥ जनकपुर बना बेष साजैं । कनकमणि मण्डप तर राजैं ॥ बनी सिय बाम भाग सोहैं । मदन रति लखि छबि बहु मोहैं ॥ माधुरी अंग अंग छाई । कहौं तेहि कवन भाँति गाई ॥ दोहा ॥ श्यामल गौर सुहावनी जोरी परम उदार ॥ ब्याह साज साजैं शुभ भ्राजैं शुभगासन सुखसार ॥१॥ हो रहे सबके मन भाये । नामकी रटना करि पाये ॥ राम जो० ॥ १ ॥ शिरनमणि मौर चंद्रिका फूल । कलंगी तुर्रा उत सुखमूल ॥ लटकते मौंतिन के गुच्छा । दोउन के दोउ दोउ दिशि स्वच्छा ॥ जड़ाऊ कुण्डल उत झलकैं । तरकियाँ झुमका द्युत हलकैं ॥ बंदियाँ जटित हेम बारीं । लसैं सिय काननि मुख प्यारीं ॥ दोहा ॥ केशर खौर ललाटदोउ

लसी बसी मन मोर ॥ कनकतार कण तेहि पर झलकत-बिन्दुशिरी चितचोर ॥ २ ॥ भौंहँ मद मदन चाप नाये ॥ नामकी रटना करि पाये ॥ रामजी० ॥२॥ नयन चहुँ छबि निधि कजरारे। करुण रससाने अति प्यारे ॥ नाशिकनि मणि नथुनी अनमोल। अनूपम सुधासने मृदुबोल ॥ दशन द्युति लखि दामिनि घनमें। छिपी डरि निकसति छण छण में ॥ ललित मुख लाल चबाये पान। हरत मुनि मननि मन्द मुशिकान ॥ दोहा ॥ सुकृत सिंधु दुहूबिंदु बर चिबुकनि बिच अभिराम ॥ झिलमिलात जनु उभय तेजकी राशि पीत अरु श्याम॥३॥ निरखि जिय महाँ मोद छाये ॥ नामकी रटना करि पाये ॥रामजी० ॥३॥ कंठ कलभूषण बनमाला। हारमणि मोतिनके जाला॥ बाजु भुज अङ्गद रतन जड़े। ककनियाँ कंकण कलित कड़े॥ मुदरियाँ अँगुरिन छाप छला। चुरीं सिय करनि सु चौंसठिकला॥ रुचिर कर कंजनि मेंहदी लाल। रची जनु जग सुखमा कौंजाल॥दोहा-कटि लहँगा किंकिणि शिर चूनरि पँचरँग मोल अपार ॥ पीताम्बर उतप्रीति बढ़ा-

वन जामा तिमि जरतार ॥ ४ ॥ उपरना दोउन ओढ़ाये । नाम की रटना करि पाये ॥रामजो०॥४॥ चरण चहुँ चहु फल के दानी। ध्यावते जिन्हि कहँ शिव ध्यानी ॥ पावते कीउ गुरु मुख प्रानी। रटहिं जे नाम टेक ठानी ॥ स्वयं जे ब्रह्म बने ज्ञानी । बिमुखते इन्हते अभिमानी ॥ परति नहिं सूझ लाभ हानी । अभागी सुनत न शुचिबानी ॥ दोहा-भुक्ति मुक्ति ऋधि शिद्धि निधि, रति गति भगति प्रतीति ॥ वेद ब्रह्म अवतार ज्ञान गुण अग जग जीव सुरीति ॥ ५ ॥ सकल ये इन्ह ते प्रगटाये नाम की रटना करि पाये ॥रामजो० ॥५॥ धन्यते नर बर अनुरागी । भजत चहुँ चरण तर्क त्यागी यही बड़ भजन भावना ध्यान। बखानत सन्त सुवेद पराण ॥ करिय सिय रामनाम मुख गान। धरिय उर दृढ़ चरणनि को ध्यान ॥ लही जिन इन्ह चरणनि की ओट । सही ते फिरि न कठिन यमचोट॥ दोहा सहज अरुण तल रचित सु मेहदी, अरु यावक रचिदीन ॥ भूषित बिबिध सुभूषणनि पुनि अड़तालीस सुचीन॥६॥ दुसह दुःख हरत हिये ध्याये ।

नामकी रटना करि पाये ॥रामजो०॥६॥परम धनि बड़भागिनि ललना। बिसरतीं दम्पति पद पलना॥ जन्मफल निकट निबसि पावैं। युगल छबि लखि लखि हरषावैं॥ करनि नित कोमल पद परसैं। दरश लगि जेहिके मुनि तरसैं॥ लड़ावहिं लाड़ सुविधि नाना। मुदित मन करि करि गुण गाना॥ दोहा-जिन्हकी कृपा कटाक्षदुक, ब्रह्मादिक सुरबृन्द॥ चहत सो बिहरहिं अलिनि सङ्ग दोउ मिथिलापुर सुखकंद॥७॥ प्रेमके फंदनि अरुझाये। नामकी रटना करि पाये॥ राम जो ब्रह्म बेद गाये॥ ७॥ नवल सिय दुलहिनि दुलहाराम। नवल अलि सेवहिं पद बसुयाम॥ नवल सुखसाज समाज सभोग। नवल रस रास बिभव संयोग॥ नवल अँग रँग ढँग सङ्ग सुभाग। नवल नित रानि राउ अनुराग॥ नवल बन बाग भूमि नव कुञ्ज। नवल सर सरित सुपावन पुञ्ज॥ दोहा॥ सिय पिय नवल बिहार थल, अनुपम अमल अपार॥ बिहरहिं जहँ दोउ मुदित अलि निसँग, सूरति परम उदार॥ ८॥ दिये गरबाँहिं सुमन लाये। नामकी रटनाकरिपाये॥रामजो०८॥

उड़ावत कबहुँ प्रिया के भौंर । लाल निज कमल करनि गहिं चौंर ॥ चढ़त कहुँ सियकर कर धरि महल । करत पिय प्रेम विवश सियटहल ॥ बिलोकहिं यह सुख दृग भोगी । अलीं रसरसिकन नर योगी ॥ अगम अति पुरुषन कौं यह ध्यान । तजे बिनु त्रय तनु जड़ अभिमान ॥दोहा॥ रसिक संत गुरु कीजिये, जो जानत यह भेद ॥ सखी भाव दृढ़ धारि मारि मन, सेइय चरण अखेद ॥८॥ भरमिये जनि जग भरमाये । नामकी रटना करिपाये ॥ रामजो॥९॥ करिय जो कहैं रसिक गुरु सन्त । गुणिय रटिनाम सुगुण सिय कन्त ॥ रहिय नित तेहि रस में माते । त्यागि जगलोक लाज नाते ॥ लीजिये शुभ सम्बन्ध लिखाय । समझिये खूब सुतेहि चित लाय॥ अपनपौ अरपि गुरुहिं निष्काम । बसै निज दृष्ट धाम अभिराम ॥ दोहा ॥ भीजै रास सुरङ्ग में छीजै बिषय बिशाल । रीझै तब सिय लाल शरण दै, क्षणमें करै निहाल॥ मोहवश जो तू बिसरायें । नामकी रटना करिपाये ॥रामजो ब्रह्म बेदगाये॥१०॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद (८)

सजन सँग उरझि रहो प्यारी ॥ टेक ॥

यह संसार असार जानि जिय, सुरझी मतवारी
॥टेक १॥ सिय वल्लभ पद कमल अमल अति। गति
प्रद भय हारी ॥ उरझि रहहु तिन्ह सङ्ग सुरतिया,
पल न होउ न्यारो ॥२॥ तन धन धाम धरणि सुत
परिजन, जग विलाश भारी ॥ बनितादिक बहुभोग
रोग सम, तजि भजि सुख कारी॥३॥ छण छण छीजत
जात सु आयू, ज्यों सरिसर बारी ॥ परिहरि विलम
होउ पिय सनमुख, लाज कुपट टारी ॥४॥ स्वामिनि
सिय सु सुभाव बिचारहु, तजि गलानि सारी ॥
प्रेमलता प्रभु प्रेम सुतरु चढ़ि त्यागहु फलचारी॥५॥

पद ॥ ९ ॥

सियबर रंग रँगे दोउ नैना ॥ टेक ॥

श्यामल अमल अनूप सु अदभुत, त्रिभुवन अस रँग
हैना ॥१॥ यहि रँगमें जो रँगे बिलोचन, तेहि कलि
काल ठगैना ॥ सूझहिं असुझ गुप्त नाना रँग, जो मुख
बरणि सकैना ॥२॥ पीतरंग सिय स्वामिनि जूको,
श्याम राम सुख दैना ॥ पीत श्याम रँग रँगे रसिक

जन, तन मन बसनसुबैना ॥३॥ युगल रंग रँगि युगल
उपासक, दशदिशि पावहिं चैना । परमानन्द भरे
महि बिचरहिं, रटत सुनाम सुखैना ॥४॥ स्वप्नेउ पाँव
न देत कुमारग, लोभ मोह गत मैना । श्रीसियराम
स्वरूप सन्त सोइ, सकल गुणन के ऐना ॥५॥ माँगि
खात मधुकरी मुदितमन, काहुते दैन न लैना । प्रेम
लता प्रभुभक्ति भाव भट, एक ढंग दिन रैना ॥ ६ ॥

पद ॥ १० ॥

युगल छबि कैसी बनी अलबेली ॥ टेक ॥
नख शिख अंग अनूप मनोहर, पावनपर्म सहेली ॥१॥
अवलोकहु भरि नैन सु पुनि पुनि, लोक लाज हठि
पेली । रघुनन्दन घनश्याम सलोने, तिमि सिय सुभग
रसेली ॥२॥ प्रणत पाल सुखधाम शीलनिधि, चित
वनिप्राण ठगेली । जिन्हकर नाम सुमिरि भवसागर,
जात सन्त जन रेली ॥ ३ ॥ यह सुख बिमुख सहत
नर बहु दुख, करि करि कर्म हठेली । घेरत आइ
कठिन यमगण तब, दैहैं कोउ न हथेली ॥४॥ अस
जिय जानि चेति चित आतुर, तन मन गुरुपद मेली ॥
लीजै शुभ संबन्ध लिखाइ सु, जग सुख लखि गुरु

डेली ॥५॥ रटिय सदा सिय राम नाम मुख प्रणकरि दुख सुख झेली । जन्म लाभ पैहौ अन यासहि, लखिय खेल यहु खेली ॥६॥ सेइय रशिक सन्त निशि वासर, नाते नेह सकेली । प्रेमलता उर रूप प्रकाशै नाशै मोह अँधेली ॥ ७ ॥

पद ॥ ११ ॥

युगल छबि प्यारी लगै मन भावै ॥ टेक ॥ श्याम गौर सुखधाम कामप्रद, देखतही बनिआवै ॥१॥ अङ्ग अङ्ग पर रति अनङ्ग बहु, जनु बिनुमोल बिकावै ॥ अद्भुत अकथ अपार माधुरी, कवन भाँति कोउ गावै ॥ २ ॥ रघुनन्दन सिय जनक नन्दिनी, स्वप्नेउ जो उरलावै । छूटै जन्म मरण भव बन्धन, जियत परम पद पावै ॥३॥ शिव बिरञ्चि सनकादि शेष मुनि, कृपा कटाक्ष मनावै । जप तप नेम योग व्रत करि करि, निशि बासर जेहि ध्यावै ॥४॥ सोइ प्रभु प्रगट जासु बलमाया, कपि ज्यों जगहि नचावै ॥ तासु छटा लखि नेकु नयन भरि, सब दुख दुसह नशावै ॥ ५ ॥ जिन्हकर नाम पतित पावन जपि, व्याधउ ब्रह्म कहावै । भजि अनुराग सुमिरु तेहि

आदर, प्रेमलता समुझावै ॥ ६ ॥

पद ॥ १२ ॥

युगल छबि मनमें लगै अति प्यारी ॥ टेक ॥
राम श्याम तनुलसत पिताम्बर, सियतनु गोरनील भल सारी ॥ १ ॥ श्रीजनकलली कर कञ्ज बिराजे, दशरथ सुत धनु शरकर धारी ॥ राम महाबलबीर शिरोमणि, तैसहि सिय स्वामिनि सुकुमारी ॥ २ ॥ राम प्राण की प्राण जानकी, सिय रघुबर ते हैं नहिं न्यारी । यह सम्बन्ध अखण्ड अनादी, को जानै महिमा यह भारी ॥३॥ रशिक जनन के जीवन धन दोउ, प्रणत पाल प्रभु भव भय हारी । बैठे रतन शिँहासन प्रमुदित, प्रेमलता दोउ गरभुजडारी ॥४॥

पद गजल ॥ १३ ॥

जोड़ी बनी सुहावनी सिय रामलाल की ॥
छबि चुइरही अँग अङ्ग से दोउ शरण पालकी ॥ टेक ॥
कल क्रीटमुकुट सुभग शीश चन्द्रिका लसै, तारीफ कोइ कैसे करै लोचन विशालकी ॥ १ ॥ कुण्डल बुलाक बेसर झुमका सुकर्णफूल, लटकैं लटै बल्दार चारु असित बालकी ॥ २ ॥ कंठा कलित मणि

जाल हार पँचलड़ी हमेल, तिसपर बहार हो रही
अति सुमन मालकी ॥ ३ ॥ बाजू बरा भुज चूरियाँ
अङ्गद कड़े अमोल, कर कञ्जलाल कञ्जकली सहित
नालकी ॥४॥ ओढ़े सुनील पीत बसन ललित जर
कसी, धनुबाण लिये अनुपम् उपमान ढालकी ॥५॥
सुबन् प्रमोद कुञ्ज दोउ रोशन्में घूमते, बलिहार अली
प्रेमलता मस्त चाल की ॥ ६ ॥

पद ॥ १४ ॥

मन भावै हमें मिथिला की गली ॥ टेक ॥
अलिनि सङ्ग बिहरत जहँ निशिदिन, प्रमुदित श्री
मिथिलेश लली ॥१॥ उमा रमादिक करत खवासी,
सुरनरमुनि की कहा चली॥उमगत परमानन्द दशो
दिशि, खिलि रहि सरनि सुकञ्ज कली ॥ २ ॥ परिपूरण
धन धाम ज्ञान करि, नाहिन कहुँ अस पुन्य
थली । भंजि शंभु धनु राम बरी जहँ, आदि शक्ति
सिय बय नवली ॥३॥ नर तनु पाय न लखेउ नयन
जेहिं, जनक नगर सुखमासु भली । प्रेमलता सो
जाय जियतजग, कहहिं सन्त मुनि शिव अमली॥४॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

वार्ता ।

अब श्रीकाशीपुरी में सम्वत् १८७३ के शाल में श्रीगंगाजीकी प्रबाह बढ़ी, तब श्रीकाशी बासिन् को बड़ी तकलीफ पावते देखिकर श्री १०८ श्रीग्रन्थ कर्ता जू महाराजने श्रीसिवजीसे विनय किये, तब तुरन्त श्रीगंगाजी घट गईं सो पद यह है—यथा—

पद ॥ १५ ॥

हरिय अब शिव सबकी हैरानी ॥ टेक ॥

भागीरथी प्रबाह बढ्यो अति, चहुँदिशि फैलो पानी । रोकेउ पन्थ न अन्त नीरको, को जानै का ठानी ॥१॥ खसे सदन वहुबदन मलिन जन, भाखत आरत बानी । बाँसन चढ्यो बारि कोसन लगि, कृषी कृपाल नशानी ॥२॥ बासन बसन अशन बिनु केतिक, लोगन की भइ घानी । फिरत किते सँग लिये युवतिसुत, खटला सहित गलानी ॥३॥ बाराणशीपुरी प्रिय तुम्हरी, बेद पुराण बखानी । निब सहु उमा सहित सुत परिकर, जानि खास रजधानी ॥४॥ सोइ काशिहिं चह ग्रशन गंग जनु, हे शिव औढर दानी । बरजहु बेगि महा दुखजीवनि, होत

हानि जिन्दगानी ॥५॥ बहेजात बहुदेश दयानिधि
होरहि ऐंचा तानी । व्याकुल कहहिं कहा करिहैं
बिधि, सोचहिं निशि दिन प्रानी ॥ ६ ॥ हटत न
घटत बढ़त नित नूतन, जग क्षति हित प्रगटानी ।
सहत कलेश पाख दिन गै चलि, सुनतिन बिनय
दिमानी ॥ ७ ॥ योगी जपी तपी सन्यासी, भूपति
पंडित ज्ञानी । काहू की न चली कछु करनी, बूड़ी
सुमति सयानी ॥८॥ राउरहाथ अनाथन की गति,
पतिराखहु असजानी ॥ शिवशङ्कर श्रीबिश्वनाथ
ये, नाम हिये निजआनी ॥९॥ श्रीसियराम नाम
जापक तुम, अग्र ग्रन्थ ध्रुव ध्यानी प्रेमलता हर
हरहु विश्व दुख, जलकृत बाधा भानी ॥ १० ॥

कुण्डलिया ।

सम्बत् ओनइस सत सुभग शाल त्रिहत्तर केर ।
भादों बढ़ि भागीरथी , देश बुड़ाये ढेर ॥ देश
बुड़ाये ढेर, घेरि घर झने गिराये । अगणित कीट
पतङ्ग मरे बहु फिरै तिराये ॥ निज निज तनकी
परी मिटी सबकी सब सम्मत् । प्रेमलताजिवबचै
करैं नर नारि सुसम्मत ॥१॥

पद (१६)

सखि मन भाये स्वामि हम पाये ॥टेक॥

सुख निधान घन श्याम वरण वपु, राम नाम श्रुति गाये ॥ श्रीदशस्यन्दन सुवन सरल चित, सुन्दर सहज सुहाये ॥१॥ शरण पाल सर्वज्ञ सुखद शुचि, सुयश चारु जग छाये ॥ प्रीति रीति जानत जनकी रुचि, मातु कौशिला जाये ॥२॥ निर्गुन सगुन उभय के नायक, जो हर हृदय समाये ॥ गोद्विज सन्त भूमि हित लागिसु, पर नर तनु प्रगटाये ॥३॥ बारेहि तजि सुख सदन मातु पितु, गुरुहित बनहिंसिधाये ॥ धरि धनु बान हरे सबके दुख, दुष्टन के मद नाये ॥४॥ गौतम तिय भइ शिला शाप वश, तारेउ चरण छुआये ॥ पठैदई पति लोक दयानिधि, दारुण दोष नशाये ॥५॥ खंडि धनुष सुख दीन बिदेहहिं, बिबुध सुमन झरि लाये॥ हरषेउ भक्त भूप लखि प्रभुबल, कपटी नृप घबराये ॥६॥ जग बिजयी भृगुनाथ परसुधर सुनि धनु धुनि तुर आये ॥ निरखि प्रभाव गयेउ निज धनुदै, बिनय भाखि सकुचाये ॥ ७ ॥ श्रीसिय बरी राम नय

नागर, आनँद उर अधिकाये ॥ प्रेमलता अलि मङ्गल गावहिं, रूप सुदृग अरुझाये ।।८।।

पद लावनी चाल (१७)

प्रीति मन समुझि बूझि करिये ।
निर्दयी कपटिन ते डरिये ॥ टेक ॥

मीत बनि करैं दगाबाजी । लखतके भले महापाजी ॥ करैं दिल बातों से राजी । मलिन मन सुभग साज साजी ॥ बड़ाई जेहिते खल पावैं । प्रथम हठि तेहि कहँ बिनसावैं ॥ उदर लगि व्याकुल नित धावैं । भजन तजि भव प्रपंच भावैं ॥ दोहा-सोवत खोवत ऐस बिनु बैस बिहीन बिचार॥ खीजत सुनत सुनीति अभागी नख शिख भरे बिकार ॥१॥ फन्द जनि ऐसनिके परिये । प्रीति मन समुझि बूझि करिये ॥२॥ ईष्टपद बिमुख विषय रागी । बनाया वेष उदर लागी ॥ रँगा नहिं मन कपड़े रङ्गे । फिरैं जग बहुतेरे नङ्गे ॥ मूढ़ नहिं पापों से डरते । मन्मुखी कारज बहु करते ॥ वेषलै सतगुरु ते त्यागैं । अभागी भोगन में पागैं ॥ सीख शुभ करत नहीं काना । सिखावत गुरुहिं कुटिल

छाना ॥ कपट प्रभु सतगुरु ते राखैं। हिये कछु मुख सु और भाखैं। पदारथ ठग पन करि लेते। सर्ब नहिं अर्पि गुरहिं देते ॥ आलसी मूरख गौं घाती जरावैं निशिदिन गुरु छाती ॥ दोहा-जहाँ गये तहँ तस बने बहुरूपी अस बानि। भजन भाव नहिं रंक टेक उर, अहंकार की खानि ॥ २ ॥ जानि अस तिन्हि कहँ परिहरिये, प्रीति मन समुझि बूझि करिये ॥ २ ॥ बेषगुरु प्रभु को अपमाना। करहिं ते सहहिं शोक नाना॥ दोष जे सतगुरु में देखै। आपहीं उत्तम करि लेखै ॥ तजहिं गुरु मंत्र तिलक माला। परहिं ते घोर बिपति जाला ॥ बचायो नर्क जात जोई। परम हित गुरु सम नहिं कोई ॥ कुटिलता तेहि गुरु सन करते। जीव ते दुसह ज्वाल जरते ॥ प्रीति की रीति नहीं जानैं कही सत गुरु की नहिं मानैं ॥ प्रीति की छींट न तनु लागी। कहावत जगमें अनुरागी ॥ चहैं गति ऊँच नींच करनी। खलन की गति न जाय बरनी॥ दोहा-जरहिं जरावहिं आन उर कहि कहि निरस कुबैन। हित कारिनि ते बैर बढ़ावहिं लखहिं क्रोध

भरि नैन ॥३॥ प्रेम करि तिन्ह सँग नहि जरियै। प्रीति मन समुझि बूझि करिये ॥४॥ कठिन अति प्रेम प्रीतकी धार। मारि उर घाव जाय कढ़ि पार ॥ दुखावै निशि बासर छाती। प्रगट नहि पीर लखी जाती ॥ जियत जो जरैं धुवाँ नहिं हीय। मीत बिनु नीक न लागै कोय ॥ हाय मुख स्वांस गरम आवै। सुरति नित करिकरि गमखावै॥ सिखावन सुनत नहीं काना। करत नहिं काम ज्ञान ध्याना ॥ पढ़े पंडित पोथी पाना। कहावत जग में बहुदाना॥लगै जब प्रेम प्रीति के बान। होंहिं तब बुध जनहू नादान॥ फजीहत होय जगत में खूब। मिलै जो नालायक महबूब ॥ दोहा-प्रेम करिय तौ करियँ छाँड़ि छल गुरुपद कमलनि बीच॥ प्रेमलता दुखसहे समुझि करिप्रीति जगतकी नीच॥४॥चेतिचित राम नाम ररिये॥प्रीति मन समुझि बूझिकरिये॥३॥

पद (६८)

भयो अब मैं सब भाँति निकम्मा ॥ टेक ॥ विपुल दिवस दुख सह्यो दह्यो उर, करि करि हम्मी हम्मा ॥ अन्तकाल कोउ काम न आवत जातन संग

छदम्मा ॥१॥ स्वारथके सब सगे मातुपितु, सुतहित
मामी मम्मा ॥ करत शनेह नारि नर तब लगि, जब
लगि घर में जम्मा ॥ २ ॥ शुभ अरु अशुभ कर्म दोउ
बन्धन, सबविधि जानि अगम्मा त्यागि उभय नित
रटत मुदित मन, श्रीसियराम सुनम्मा॥३॥को करि
कष्ट मरै लघु जीवन, सहिबर्षा हिम घम्मा ॥लहिसिय
लाल शरण सहि बहु दुख को सुख वैतनु चम्मा ॥४॥

पद (१८)

भयी अब मैं सब भाँति सु सुख़िया ॥टेक॥
पावत कहुँ तिहुँ भाग बरावर, कहुँ जल रोटी रुखिय।
नशी शुभा शुभ चाह दाह प्रद, उभय लोक सुख
भुखिया ॥१॥ कोउ अरुझे घर मन्दिर मधि कोउ,
निरखे मैं दोउ दुखिया॥ दोउ बन्धन में परे मोह
बश, सहत बिपति नित चुखिया ॥२॥ क्षण सुख लागि
मरत जन्मत नर, सेवत जननी कुखिया ॥ चाबत चयेड्ड
सप्रीति ज्ञान बिनु, ज्यों पशु छोही उखिया ॥ ३ ॥
सतगुरु साँचे मिले भागवश, रामरूप मोहिं तुषिया॥
दीन्हसुबोध बिचार चारु दृढ़, नाशेउ धोखाधुखिया।
॥४॥ कहेउ सुमिरु सिय लाल शरण नित, नाम मंत्र

मणि मुखिया ॥ तजि जग जाल सुबैठि इकन्तहिं
प्रमुदित मन करि तुखिया ॥ ५ ॥

पद (२०)

शुभा शुभ दुखदाई ब्योहार ॥ टेक ॥

अज्ञ अकोबिद अल्प बुद्धि सोइ, पशुपामर अबिचार
बिधि निषेध करि कर्म चहत जो, जान घोर भवपार
॥१॥ नाव पुरान बोझि बहु पाथर, चढ़ि पुनि सह
परिवार ॥ चाहैं कुशल सुकर्ण धार बिनु, बहत महा
नदधार ॥२॥ श्रद्धा नाव कर्म पाथर दोउ, जीर्ण
कठिन बिनुसार ॥ मोह महा नद कर्ण धार गुरु, सो
न मिल्यो दिल्दार ॥३॥ बड़े भाग छूटे जु लोह को,
बेड़ी गृह जंजार ॥ तौ अस्थान सोन की बेड़ी, परे
पगनि अति भार ॥४॥ साधु भये पर नश्यो न बन्धन
हरष शोक मदमार ॥ कबहुँन बैठि इकन्त रटे सुख
युगल नाम सत्कार ॥५॥ वेद पुराण सन्त सुर भाषत
अरुझौ नाम मझार ॥ चाहहु जो कलिकाल सुगति
सुख, मिलन सुखिय भरतार ॥ ६ ॥ सुनत न सीख
विषय वशअमि हित, सेवत कर्म कलार॥मागत भीख
मन्द सो तजि जनु निकट परोस्यो थार ॥७॥ करत

न दृढ़ विश्वास पढ़त बहु, पोथिन फाँकत छार ॥
प्रेमलता नर नाम रटे बिनु, जैहैं यम आगार ॥८॥

पद (२१)

पिय मेरे सुखद मलिन मति मोरी ॥टेक॥
कबहुँ न हिलिमिलि चली बलम सँग, चितइ न नयन मरोरी ॥ लखेउ न मुख कहुँ टारि कपट पट निशि ज्यों चन्द्र चकोरी ॥ १ ॥ प्राण नाथ मोहि दीन्ह सकल सुख, खींच लई निज ओरी ॥ तदपि न मैं कछु कीन पिया हित, सुरति न सपनेउँ जोरी ॥२॥ प्रभु नाते सब जग मोहि मानत, मैं तिन्हिसों चहुँ तोरी ॥ कञ्चनकरी काँच कौड़ी ते, बहु बन्धन ते छोरी॥ ३ ॥ नामरूप निज बेष कृपा करि, दीन सीख नहिं थोरी ॥ धाम निवास रशिक सन्तनको साथ सो दीन्ह अखोरी ॥४॥ युगयुग जिवौं सुखी रघु नायक, श्री मिथिलेश किशोरी॥ प्रेमलता अलि अबुध शरण सिय, राखिय पियहिं निहोरी ॥५॥

पद राग कजरी (२२)

कजरा कत्ल् करे पिय तेरो मेरो जियरा बशकीनों ॥टेक॥ सोहै शीस जड़ाऊ ताज, कुण्डल कानों में

भलभ्राज, सुखमा छाई बेअन्दाज, पान मुख चाबे रँग भीनों ॥१॥ जरकसी जामा श्यामल अंग पहिरे पीताम्बर कटि तंग, उपरना सब्ज सु अनुपम रंग, रूप लखि रति पति भा हीनों ॥२॥ कन्ठ में कन्ठा उरमणि जाल, हार बर हीरों का बनमाल, उभय दिशि खाय रहे बल बाल, काँध धनु बाण सुकर लीनों ॥३॥ बदत मिलि मिथिला पुरकी नार लाल तेरी चितवन है तरवार, बिहँसि अलि प्रेम लता मन मारि कियो तुम अपने आधीनों ॥ ४॥

पद (२३)

कठिन ये दुखद रोग उर केरे ॥ टेक ॥

क्षणमें करत अनर्थ प्रबल अति, रहत दिवश निशि घेरे ॥ टारे टरत न मरत करत मुनि, यदपि उपाय घनेरे ॥१॥ नाना तनु धरि हरत भजन धन, सहसा परहि न हेरे ॥ प्रभु सन लगन छुड़ाय बनावत बरबश जनन सुचेरे ॥२॥ काम को मद मोह लोभ छल, दम्भ कपट बिनु टेरे ॥ आय चढ़त शिर सुकृत नशावत मानादिक बहुतेरे।।३॥ आश त्राश तृष्णा ईर्षादिक, नींद पिशाचिनि मेरे, पाछे परे रहत निशि

बासर चितवहिं नयन तरेरे ॥४॥ हे सिय स्वामिनि हरहु हेरि निज, ओर कुरोग सबेरें ॥ प्रेमलतहिं दुख देत रटत तब, नाम सुबिचन बड़ेरे ॥५॥

पद (२४)

बसो उर मेरे सखि यह जोरी ॥टेक ॥

श्याम वरण रघुबर धनुधारी; जनक लली सिय सुन्दर गोरी ॥१॥ सोहत शीश किरीट चंद्रिका, कर्ण फूल कुन्डल निरखोरी ॥ खौर ललाट लसे दृग अञ्जन, मुख भरि पान लेत चित चोरी ॥२॥ उर बन माल सुलाल जटित मणि, भुजन बाजु बर बयश किशोरी ॥ कर कंकण मेहदी कर चुरियाँ, कटि किंकिणि छबि बरणैं कोरी ॥३॥ नीलाम्बर इत ललित घाँघरो, उत पटपीत प्रभा नहिं थोरी॥ नख शिख अङ्ग अनूप बिलोकिसु अमित कामरति मति भइ भोरी ॥४॥ बैठे मुदित दिये गर बहियाँ अलिगण बिपुल खड़ी चहुँ ओरी ॥ प्रेमलता बत रात परस्पर, बिहँसि बिहँसि के चख मुख मोरी॥५॥

पद (२५)

युगल छबि सालि गई उर गहरी ॥ टेक ॥

लोक लाज तजि फिरौं दिमानी, उठै दरद की लहरी ॥१॥ जबते लखी दिये गर बहियाँ सिय सैयाँ चख कहरी ॥ तब ते चढ्यो अमल अँग अनुपम, उतरत तहिं अठ पहरी ॥२॥ बिसरेउ साधन कर्म धर्म ब्रत, जाति पाँति घर दहरी ॥ ज्ञान ध्यान जप योग नेम तप, बहे प्रेम की नहरी ॥३॥ जित देखौं तित परैं नजर दोउ, मिथिला अवध सुभहरी॥ जिन्ह कर नाम रटैं निसि वासर, पारबती शिव जहरी ॥४॥ कोउ कह क्रूर कुटिल कायर भल, कह कोउ आँधर बहरी॥ तेहि कर सोच रञ्च नाहिन मोहि लखि जग जाल कचहरी ॥५॥ लागी लगन अडिग सिय बर ते, पाइसु सतगुरु महरी॥ प्रेमलता सियराम नाम की, ध्वजा सर्ब पर फहरी ॥६॥

पद (२६)

भयो अब मन मेरो सन्यासी ॥ टेक ॥

भगवाँ भजन भाव भगवत को, भस्म भर्म भव खाशी ॥१॥ दया दण्ड कर धारि चाहना, चिन्ता चोटी नाशी ॥ जाति जनेऊ तज्यो जानि जिय, अहंकार की राशी ॥२॥ कृपा कमण्डल काँख सुभौरी

झीनी सुरति प्रकाशी ॥ मागत मौज मधुकरी प्रमुदित, काया काशी बासी ॥ ३ ॥ ध्यान धारणा नाम निरन्तर श्रीसियराम उपासी ॥ ओंकार सोहं जिन्हि के बश, गति कैवल्य सुदासी ॥४॥ बन्दत चरण कमल ब्रह्मादिक सुर शङ्कर कैलाशी ॥ पर ब्रह्म सोइ राम द्रवे बिनु, जीव न पर पद जासी॥५॥ महिमा अगम अपार अनूपम, बरणत सहस अठासी प्रेमलता तेहि भजत जासु पद, भक्ति सुकामदुहासी॥६॥

पद (२७)

उपासक सोइ जो नाम रटै ॥ टेक ॥

प्रथम तजै जग जाल जहाँ लगि, गुरुपद कमल सटै॥ कंठी तिलक मंत्र माला दृढ़, बैष्णव बेष ठटै ॥१॥ जो गुरु कहैं करै सोइ सोइ शिष, स्वप्नेउँ नाहिं नटै ॥ करि सेवा सम्बन्ध लिखावै प्रण करि कैढिग डटै ॥२॥ सीखे भेद भाव बर नाना, जेहि फिरि मन न हटै॥ श्री सियराम बिहार भक्ति रस तन मन बच लपटै ॥३॥ अनायाश गुरु कृपा अनूपम, अनुभव सुख प्रगटै ॥ होइ अनन्य उपासक साँचो, भ्रम तम तोम फटै ॥४॥ ममता मोह कोह

कामादिक, तेहि उर पुनि न खटैं ॥ परमानन्द रूप निशिबासर, प्रमुदित अवनि अटै ॥५॥ दम्पति बिमल बिनोद पग्यो नित, तत्सुख दृगन चटै ॥ तारण तरण भयो जेहि सेवत, प्रेमलता दुखकटै ॥६॥

पद (२८)

कठिन अति प्रेमनेम की रीति ॥ टेक ॥

हानि लाभ जन सोइ जानत जो, जोरि निवाहत प्रीति । बिसरि जात गृहरागरंग सुख लाज सुनीति अनीति ॥१॥ जग निज सहित हिराय होत जब, प्रियपद सदृढ़ प्रतीति । भूख प्यास भय नींद बिनाश्रम, लेत सनेही जीति ॥२॥ हँसत कबहुँ रोवत व्याकुल प्रिय, मिलन बियोग सुचीति । बिचरत अवनि अशङ्क रङ्क ज्यों, जानत ईति न भीति ॥३॥ निन्दा अस्तुति बाद स्वाद बहु, छल कामादि सहीति । प्रेमलता प्रीतम सुनाम बल, गावत सुन्दर गीति ॥४॥

पद (२९)

चलत सियाराम नामकी रेल ॥ टेक ॥

बानी परा प्रथम इष्टेशन, पश्यन्ती दूसर तहँ मेल । मध्यम तीसर चौथ बैखरी, पटरी प्रीति प्रेम अलबेल

॥१॥ श्रद्धातार सुरति शिंगलबर, लालटैन लयतृष्णा तेल। अहंकार इञ्जन इञ्जिनियर, दृढ़ विश्वास सुठेल ॥२॥ मन बाबू चित चतुर सिपाही, बुद्धि, सुभण्डी कर महँ लेल। उच्चारण सोइ शब्द सुहावन, गर्जन सीटी सोइ जब देल ॥३॥ श्रीगुरु दीन पास सम्बन्ध सु, पाइ त्यागि जग जेल। जीव मुसाफिर बैठि सपरिजन प्रमुदित पियपुर गेल ॥४॥ नासेउ आवागमन भवन लहि, परमानन्द अपेल। प्रेमलता प्रिय प्रिया सङ्ग मिलि, खेलत बहुबिधि खेल ॥५॥

पद (१०)

गोरे घनश्याम राम श्याम सिया गोरी ॥टेक॥

मैं निरखेउँ निज नैन अलीरी, मण्डपतर बरजोरी ॥१॥ दुलहा राम जानकी दुलहिनि, सुखमा सुखद अथोरी। अङ्ग अङ्ग पर रति अनङ्ग दोउ, बारिय अमित करोरी ॥२॥ अवलोकति सिय सकुचि राम मुख, राम सु सिय मुख ओरी। युगल माधुरी पियत सु परिकर निशि जिमि चन्द्रचकोरी ॥३॥ श्रीमिथिलेश भवन मङ्गलमय, लेत सुरति चित चोरी। कोकबि बरणिसकै छबि अनुपम, सारद मतिभइ भोरी ॥४॥

बिरच्यो कोउ जनु बिधि बिचित्रपुर, त्रिभुवन मोद बटोरी ॥ उपमा अकथ अलौकिक आनंद, उमगत खोरी खोरी ॥ ५ ॥ देत निछावर मुदित नारिनर, आशिष भरि भरि झोरी ॥ प्रेमलता चिरजियहु अवध नृपसुत श्रीजनक किशोरी ॥६॥

पद (३१)

सिया जू आजु गावत नइ नइ तान ॥टेक॥

सरस सुहावन सुखद मनोहर, जो न सुनी कहुँ कान ॥ १ ॥ छम् छम् छननन अलिगण नाँचहिं, बाजत ताल बँधान ॥ कमला बिमला चन्द्र कलादिक, वारति तन मन प्रान ॥२॥ बन घोसा अलि चमर चलावति, हेमा देति सुपान ॥ छेमा छबि सुबिलोकवि ठाढ़ी जै जै करति बखान ॥ ३ ॥ श्रुति कीरति उरमिला माण्डवी, सीखति सियसंग गान ॥ करहिं अलापन श्रवण हाथ धरि, सुनि छूटहिं मुनि ध्यान ॥४॥ बरषहिं सुमन प्रशंसि शिद्ध सुर, प्रमुदित चढ़े बिमान ॥ प्रेमलता सिय रूप नाम धनि, आदि मध्य अवसान ॥ ५ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद (३२)

ऐसे जीव न रामहिं भावत ॥ टेक ॥

बञ्चक बेष बनाय भकत को, लोगन ठगि ठगि खावत ॥१॥ भीतर भरी कुटिलता अनहित, बाहिर हित दरशावत ॥ बिरचत नाना रूप उदर लगि, द्वार द्वार बिल लावत ॥२॥ थोरउ भजन करत कहुँ परबश, कहि कहि सबहिं सुनावत ॥ बिनु बूझे कहि पाप आन कर, भली भाँति प्रगटावत ॥ ३ ॥ झूंठ साँच बहु ज्ञान ध्यान कहि, बाद बिबाद बढ़ावत ॥ सारासार विचार न रञ्चौ, ब्याकुल निशि दिन ध्यावत ॥४ ॥ आशा डोरि बाँधि कामादिक, बहुविधि नाँच नचावत ॥ ग्रश्यो मोह मानादि शीस लगि, कबहुँ न हृदय थिरावत ॥ ५ ॥ पढ़ि सुनि कछुक पुराण वेदमत, सन्तन ज्ञान बतावत ॥ आपु न सुने सीख सुन्दर जी, कहि सुसाधु समुझावत ॥६॥ दुखमें दुखी होत अति सुख में, फूल्यो उर न समावत ॥ लीलन चहत सुमेर लोभ बश, खात न कबहुँ अघावत ॥७॥ विषय भोगरत जरत तापतिहुँ, बातन शिन्धु थहावत ॥ तोर मोर करि

मरयो रटे नहिं, प्रेमलता जेहि गावत ॥ ८ ॥

पद ॥ ३३ ॥

ऐसे सन्त जात हरि धाम ॥ टेक ॥

सुनत न कहत कबहुँ पर निन्दा, लोभ मोह गत काम ॥१॥ लखत न दोष गहत गुण सबकर, जननी सम पर बाम ॥ पर दुख दुखी सुखीपर सुख लखि, इन्द्रीजित रतनाम ॥२॥ गावत सुनत पुलकि प्रभु लीला, उर सिय सुन्दर श्याम ॥ शरणागत विश्वास एकरस प्रमुदित मन बशुयाम ॥३॥ तजि अनीति जग नीति प्रचारहिं, शीलवान गुणग्राम ॥ चाह रहित निर्लेपि दक्ष शुचि, निश्किञ्च बिनुठाम ॥४॥ मन बचकर्म अनन्य भाव दृढ़, बोलहिं बचन ललाम॥ अभय अमान सुबोध मनावहिं, सोवत जागत राम ॥५॥ बिनु कारण हित सकल जीव के, देत सबहिं बिश्राम ॥ प्रेमलता कहि ज्ञान ध्यान बहु, हरत घोर भवघाम ॥ ६ ॥

पद ॥ ३४ ॥

ऐसे परम्हँसनि पै छार ॥ टेक ॥

खात मलाई दूध जलेबी, घूमत गली बजार ॥१॥

कपड़ा रँगे रँगे नहिं मन को, मूड़ मुड़ाये बार ॥
ऊपरते बर बेष बनाये, भीतर भरयो बिकार ॥२॥
मारत गाल दिवसनिशि जहँ तहँ, अज्ञानी अतिचार ॥ जेहि तेहि भाँति हरै परधन मन, तकहिं
पराई दार ॥ ३ ॥ तजे मोह बश कर्म धर्म शुभ,
विषय न तजे गमार ॥ तेल फुलेल लगाय न्हात
तनु, मलि मलि साबुन खार ॥ ४ ॥ कहनि रहनि
में भेद सौगुनों, केवल कपट अगार ॥ राम भजन
के परम आलसी, भोजन के हुसियार ॥ ५ ॥ प्रभु
के एकौ काज न आवहिं, स्वयं बने करतार ॥
बोलहिं बैन काक कूकरइव, बूझ न सारा सार ॥६॥
देह मरोरि चलहिं कुंजर ज्यों, अभिमानैं आधार॥
नकलीरूप बनाय करहिंनित, भक्षाभक्ष अहार ॥७॥
एकै ब्रह्म कहहिं सब जग में, जड़ चैतन्यमझार ॥
ऊँच नीच नहिं प्रेमलता कोउ, को बूड़ै को पार ॥८॥

पद ॥ ३५ ॥

कीन्ह का कौल गर्भ में जाय ॥ टेक ॥

रटिहौं नाम जगत नाते तजि, निशिदिन प्रभु मन
लाय ॥ सकल प्रपञ्च बिहाय नाय नित, भजिहौं

होहु सहाय ॥ १ ॥ त्राहि त्राहि अब हरहु कुसङ्कट, पाहि पाहि रघुराय ॥ भजिहौं तुमहिं सुसाँच कहत प्रभु, सपथ रावरी खाय ॥ २ ॥ बारहिं बार पुकार करी अति, आरत बचन सुनाय ॥ दीन बन्धु करि कृपा गर्भ में, दीन्ह सुदर्शन आय ॥ ३ ॥ कीन उदरते बाहिर आतुर, बहु बिधि ज्ञान दृढ़ाय ॥ बाहिर होत ग्रस्यो त्रय नाते, पिता पुत्रअरु माय ॥ ४ ॥ इन्हते अमित गनै को जेहिमहँ, जीव रह्यो अरुझाय ॥ भूल्यो कौल करार गर्भको, देह गेह धन पाय ॥ ५ ॥ अबहूं चेति अचेत त्यागिसुत, बनिता घरअरु भाय ॥ फूंकि सकल धन थूंकि जगत पर, प्रभुपदरहु लपटाय ॥ ६ ॥ निवसि सजाती सङ्ग सदा शुचिं, सुख सोहाग अधिकाय ॥ बिषय भोग यह नाश मान करि, मरत न कोउ अघाय ॥ ७ ॥ प्रभुहित तजे अनेक नृपति गृह, बरबश सुख समुदाय ॥ प्रेम लता जानौं सो सब तुम, तरे नाम गुण गाय ॥ ८ ॥

पद (३९)

पण्डित पोथी पढ़िका कीना ॥ टेक ॥

निशि दिन दाँतकटाकट करिकरि, सारा सार न

पीना ॥ भजनसार सब ग्रन्थ पुकारत, तामें चित नहिं दीना ॥ १ ॥ लालच लोभ कोह कामादिक, तजेउ न औगुन तीना ॥ ज्ञान विचार न लेश बकत बहु, बाद विवाद नवीना ॥ २ ॥ सिखवत आनहिं बैठि ऊँच थल, आपु विषय लवलीना ॥ अति आशक्त सदन युवतिनि सुख, मूरख ज्यों जल मीना ॥ ३ ॥ नित्यकर्म बलि सन्ध्या बन्दन, तर्पण होम बिहीना ॥ धावत फिरत दशो दिशि व्याकुल, इन्द्रिनिके आधीना ॥ ४ ॥ बिनु गुरु ज्ञान गुमान भरयो उर, प्रभु पद रति मति छीना ॥ गुण उन्मत्त न सुनत सिखावन, अहंकार अति पीना ॥ ५ ॥ समुझत नहीं मूढ़ ममता बश, सतगुरु शब्द सुझीना ॥ प्रेमलता सियराम न सुमिरे, पाय सुजन्म नगीना ॥ ६ ॥

पद (३७)

सुरति करुरे मन गर्भ कुशूल की ॥ टेक ॥

रोवत रह्यो टँगो उलटो नित व्याकुल लै लै हूलकी ॥१॥ सही कठिन जस बिपति उदर में, उपमा नहिं तेहि तूलकी ॥ तब तू प्रभु सन बिनय भाखि बहु, नाम सुरटन कबूलकी ॥ २ ॥ बाहिर कीन्ह

तज्यो तेहि कहँतू, बड़ी बात है भूलकी ॥ अबहूँ चेतत सुमिरु सीतावर, सठ सिख सुनु सुख मूल की ॥३॥ बिषय भोग तजि लाज काज घर सङ्गति प्रभु प्रतिकूलकी ॥ प्रेमलता सोइ सजा समुझ नतु, पैहै हुकुम अदूल की ॥ ४ ॥

पद (३८)

प्रीति करिको न कठिन दुख पायो ॥ टेक ॥

ब्रजबनिता लखि रूपमाधुरी, प्रभु सन नेह लगायो ॥ तन मन धनदै भईं बावरी, लाज काज बिसरायो ॥ १ ॥ सो कपटी तजि तिन्हें निठुर ह्वै मथुरापुरी सिधायो ॥ अमिय छीनि बिष सरिस बिषम जनु, लिखि करि योग पठायो ॥२॥ चकई भई चन्द्र छबिके वश, अतिसय प्रेम बढ़ायो ॥ तन मन सुरति बिसारि बिलोकति, सहि दुख जन्म नशायो ॥ ३ ॥ दीप शिखा लखि ललकि प्रेमकरि, मिलन पतङ्ग सुझायो ॥ रह्यो करी न कानि दीप जहँ, सो निज प्राण गमायो ॥ ४ ॥ चातक तजि जल आन पान हित, स्वाति स्वाति रटलायो ॥ बरसत मेघ उपल तेहि ऊपर, चाहत नेम घटायो ॥५॥

रागश्रवण करि प्रेम बिवश हुइ, मृग कुफन्द अरुझायो ॥ प्रेमलता तनु तजै सलिल बिनु, मीन न जल तेहि ज्यायो ॥ ६ ॥

पद (३८)

प्रभु भजन बिना सब जन्म गयो ॥ टेक ॥

नरतनु दीन कृपालु कृपा करि, जेहि लगि सो न भयो ॥ भूलि रह्यो लखि जग प्रपंच मन, सुनत न बहु सिखयो ॥ १ ॥ बरणत वेद पुराण सुखद मग तेहि पथ मन न दयो ॥ सेयेउ सन्त न कबहुँ कपट तजि, हरि गुरुपद न नयो ॥२॥ परिहरि निकट नाम अमृतनद, मृग जल चह अँचयो ॥ कबहुँ न भयो निशोच पोचउर, नित तिहुँताप तयो ॥३॥ करत कर्म जस तस पावत फल, लुनत सुनिज करबयो॥ प्रेमलता सोइ चतुर जीवजग, नाम नेम जिन्ह लयो ॥४॥

पद (४०)

गयो सब जन्म सम्हारत गेह ॥ टेक ॥

प्रभु गुरुसन्त चरण नहिं सेयेउ, अनुपम लहि नरदेह ॥ १ ॥ बरण्यो नहिं सियराम नाम कहुं, भादों कर जिमि मेह॥ होत न विषय बिराग मनो-

रथ, बाढ़त जात अछेह ॥२॥ परिहरि राम भक्ति चिन्तामणि, सेवत कर्म कुखेह ॥ तन धन धाम लाभ भोगनिते, राखत अति अनेह ॥३॥ द्रवत न हृदय कठोर कुलिशसम, फूटत होइ न बेह ॥ तजि अस जीवनि जगहिं भजिय हरि प्रेमलता मत येह ॥४॥

पद (४१)

जे नर नाम रटन में काँचे ॥ टेक ॥

पावत ते सुख सुगति न सपनेउँ, फिरत सदा मग नाँचे ॥ १ ॥ श्रीसियराम नाम सम साहिब, अपरन सुन्दर साँचे ॥ परिहरि तिन्हें जीवहत भागी, भूत पिशाचनि राँचे ॥ २ ॥ अधम उधारण विरद लोक तिहुँ, रामनाम के माँचे ॥ सुमिरत सुलभ होत जेहि सब सुख कह श्रुति रेख सुखाँचे ॥ ३ ॥ नाम विमुख कलि सहहिं दुसह दुख, जरहिं मनोरथ आँचे ॥ पावहिं नाम प्रसाद सन्तजन, बिपुल भोग बिनु याँचे ॥ ४ ॥ रटेउ न जो सियराम भयो तो, कहा पढ़े अरु बाँचे ॥ प्रेमलता अरुझे भोगनि जन, खाते निशिदिन धाँचे ॥ ५ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद (५२)

तजत नहिं राम कबहुँ ससुरारि ॥ टेक ॥

नित नवनेह पहुनई नित नव, नित नव लखि मनुहारि ॥ १ ॥ सासु ससुर कर भाव अनूपम, अनुपम सरहज गारि ॥ बेदौके मंत्रनि ते लागत, अधिक राम कहँ प्यारि ॥२॥ अनुपम बाग भूमि सरसरिता, अमल अनूपम बारि ॥ अनुपम बन बिहार लतिका तरु, झुकि रहि अनुपम डारि ॥ ३ ॥ अनुपम कन्द मूल फल बिन्जन, बिबिध भाँति तरकारि ॥ दधि चूरा कर स्वाद अनूपम, अमियउ लागत खारि ॥४॥ श्रीलक्ष्मीनिधि आदि सार बहु, दासी दास सुझारि सुन्दर चतुर रहहिं जुगवत नित, मनरुचि पुर नर नारि ॥५॥ अस सुख कहाँ अवध अमरावति, त्रिभुवन कहहु बिचारि ॥ भोगत जस ससुरारि कुँवर चहुँ पितु गृह सुरति बिसारि ॥ ६ ॥ श्रीमिथिलेश सुनयना जूकै, प्रेमहिं सकत न टारि ॥ प्रेमलता तेहि लागि बसत पिय, मिथिला सिय उर धारि ॥७॥

पद (५३)

मिथिला तू सब गुणनि भरी ॥ टेक ॥

जन्मी जहाँ आय सिय स्वामिनि, सबकी बिपति हरी ॥ १ ॥ धन्य भाग भये जनक सुनयना, धनि हसहूँ सगरी ॥ सिय नाते छूटे भवबन्धन, जन्म मरण भय टरी ॥ २ ॥ धनुष यज्ञ बिरचेउ मिथिलापति, त्रिभुवन खबरि करी ॥ तोरन चाप महीप जुरे बहु, पर नहिं पूर परी ॥ ३ ॥ व्याकुल भये जनक सिय तन लखि, नृपन शक्ति धनु दरी ॥ रामचन्द्र उठि भञ्जि धनुष तब, बिनु श्रम सियहिं वरी ॥४॥ जय जयकार भई दशहूँ दिशि, सो सुख जात न ररी ॥ लखेउ सुबहुरि बिबाह नयन भरि, बड़ भागिनि हमरी ॥ अनुपम बना बने रघुनन्दन, सिय स्वामिनि बनरी ॥ अनुपम साज समाज सुसमधी, लग्न योग तिथि धरी ॥६॥ मानहु सुकृत बेलि मिथिला की, अभिमत फलन फरी ॥ उमगत परमानन्द सकलदिशि, ऋधि सिधि बहु उछरी ॥७॥ सबके प्राण अधार रामसिय, सबकर जीवन जरी ॥ कीन्ह बिबाह चरित्र अनूपम, जहँ नरदेह धरी ॥८॥ सो पुर भूमि देश धनि बासी, तिन्ह सम नहिं सुरसरी ॥ अस बिचारि जपि नाम सीयपुर, बसति प्रेमलतरी ॥९॥

पद (४४)

काया कञ्चन केर न भाई ॥ टेक ॥

हाड़हिं पिंजर बँध्यो नश्यनिते, ऊपर चाम मढ़ाई ॥ रुधिर पीब कफ मास मूत्र मल, भरयो बरणि नहिं जाई ॥ १ ॥ आदि अन्त दुख रूप बखानत श्रुति पुराण मुनि राई ॥ आमय ग्रशित काल बश निशि दिन, छीजत क्षण बिनशाई ॥ २ ॥ खोआ खीर खाँड़ घृत रबड़ी, माखन दूध मलाई ॥ अवामगद खात बहु व्यन्जन बिबिध भाँति पुष्टाई ॥ ३ ॥ चाहत लटै घटै नहि कबहूँ, रोगउ ग्रसै न आई ॥ करतौ अमित उपाय न चूकत, चढ़ति आय बिरुधाई ॥ ४ ॥ जानहु तेहि कर दशा भली बिधि, प्रगट कहौं का गाई ॥ खातौ पियत होत ज़रजर तनु, दिन दिन दुख अधिकाई ॥ ५ ॥ तजत अनंग संग इन्द्रीगण, सुनत न परत दिखाई ॥ येतेउ पर ममता बिस्तारत, मौत रही शिर छाई ॥ ६ ॥ बूझत नहीं तीन पन बीते, आइ गई चौथाई ॥ तजौं अबहुँ जग भजौं छाड़ि छल, सिय बर जनक जमाई ॥७॥ जिन्हि कर नाम पतित पावन अति, [illegible]

गति पाई ॥ गर्भ माहि जिन्ह साहि कीन मम, तहँ को रह्यो सहाई ॥८॥ भूल्यों मैं सठ हाय तिन्हें लखि, जगत जाल प्रभुताई ॥ प्रेमलता अस उर गलानि करि, भजै जो लेइ बनाई ॥ ९ ॥

पद (४५)

जियरा एकै देउँ केहि केही ॥ टेक ॥

जेहि जेहि दियो जानि हित सब बिधि, दुख दीन्यों तेहि तेही ॥ १ ॥ स्वारथ के सब सगे जगत में, का बिरक्त का गेही ॥ क्षण में होइ प्रसन्न पूजियत, क्षण शिर डारत खेही ॥२॥ झूठे नेह लगाय बिसारेउ, सियबर परम शनेही ॥ प्रेमलता भजु अजहुँ जागि तेहि, जिन दीन्ही यह देही ॥ ३ ॥

पद (४६)

बसे बहु अवगुण मोरे घट में ॥ टेक ॥

मारे मारत न टरत होत हठि, बाधक नाम सु रटमें ॥ १ ॥ हटकत करत सुसङ्ग भजन ब्रत, अरु भावत अटसट में ॥ बरियाइँ चाहत मोहिं बेचन, ठेलि ठगनकी हटमें ॥२॥ जो सुसङ्ग वश बने शुकृत कहुँ, नाश करहिं सठ चटमें ॥ लखि नहिं परत

रहत तनु भीतर, ज्यों सुक्षीरतरु बटमें ॥३॥ स्वप्नेउ मनहिं न देत लगन खल, सियवर नागर नटमें । बिषयनि सों अति प्रेम सुनितनव, प्रीति सुभोजन पटमें ॥ ४ ॥ पढ़त सुनत नहिं गुनंत लिख्यो जो, चारि अष्ट दश षटमें ॥ प्रेमलता जन सहत दुसह दुख, फसे जगत झंझटमें ॥ ५ ॥

पद (४७)

आलश लागै नाम रटनमें ॥ टेक ॥

बातनि में अति निपुण सचेत सु, भोजन स्वाद चटन में । भजन भाव पथ अज्ञ सु पण्डित युवतिनि अङ्ग सटनमें ॥ १ ॥ हरषत पहिरि बिभूषण तन महँ, प्रेम सु बिबिध पटन में । जगते होत बिराग न कबहूँ, अरुझयो महल अटन में ॥२॥ मैं अस करिहौं अवसि बखत पर, बार न लगत नटन में ॥ बाहर ते शुचि साधु बने पर, अनरथ भरे घटन में ॥३॥ वैरागी को वेष बनाये, कञ्चन धरे जटन में ॥ रञ्चौ ज्ञान बिचार न तत्पर, भक्षा भक्ष गटन में ॥४॥ भजत न नाम काम मद सुरुचि सुअङ्ग, राग उबटन में ॥ चाह चूहरी मरत न

जिन्हिते, गने जात सुभटनमें ॥ ५ ॥ भजन बश्य
भगवान लिख्यो यह, चहुँ श्रुतिशास्त्र षटनमें। प्रेम
लता तेहि त्यागि चहत सुख, मनमुख ज्ञानछटनमें ॥६॥

पद (४८)

मंहल की टहल करिय चितलाय ॥ टेक ॥
सुर दुर्लभ मानुष तनु पायेउ, कहत सन्त श्रुतिगाय
॥ १ ॥ आलश त्यागि सु प्रात काल उठि, लागि
गुरुन के पाय ॥ तन कृत करि पुनि बैठि सुआसन,
कहुँ इकन्त थल जाय ॥२॥ युगल नाम लय लाय रटै
मुख, ऊँचे स्वर हरषाय। मन चित करि थिर मूँदि
नयन दोउ, आशा नींद बिहाय ॥३॥ सावधान होइ
निज स्वरूप लखि, पंचीकृत बिसराय। नख शिख
किये शृङ्गार लिये कर, सेवा शुचि निरभाय ॥ ४ ॥
सेवत जो दम्पतिपद प्रमुदित, अलिगन सँग सुखदाय।
कञ्चन भवन सुदिव्य मणिन मय, रचना
अनुपनिकाय ॥५॥ बिहरहिं जहाँ सदा सिय पिय
सँग, बन उपबन बहुताय। नित नूतन मुद मोद
प्रकाशत, चहुँदिशि सुखरह छाय ॥ ६ ॥ भोग राग
शृङ्गार आरती सयन केलि बर भाय। करहिं करा

वहिं प्रभुहिं सहचरी, रुख लखि रीझि रिझाय ॥७॥
समय २ जेहि कुंज जाँयँ तहँ, परिकर सनमुख आय ।
प्रेमलता नइ अर्घ पाद्य दै, हँसि सँग जात लिवाय॥८॥

पद (४९)

उमरिया बीती जात दिवाने ॥ टेक ॥

करु सत संग रशिक सन्तन को,सुखप्रद बेद बखानें ॥१॥ प्रभु अनुकूल सुहोउ जोउ अब, कितने दिवश सिरानें । तजि प्रतिकूल कुकर्म भर्म प्रद, धरु गुरु चरण अयानें ॥२॥ करु सेवा बर बिनय दीन होइ, भाखि बचन रस सानें । श्रीसियराम सुरहस अनूपम बिनु सतगुरु को जानें॥३॥जो कछु कहैं तत्व करुणा निधि श्रीगुरु सो उर आनें। सावधान चित मनन करै नित, अरुझै वही ठिकानें ॥ ४ ॥ रषना नाम सनेम रटै बहु, बिषय बासना भानें । यहि बिधि होइ बिमल उररे मन, तब प्रभुपद पहिचानें॥५॥नाते नेह देह भरि जगके, सोउ स्वारथ लपटानें। सङ्ग न आवत जात बिचारि सु होत न कबहुँ अपानें ॥६॥ तिन्ह सँग तू सुख मानि रह्यो इत, कौल करार भुलानें । प्रेमलता जब जैहै पिय ढिग, बचिहै कौन बहानें ॥७॥

पद (५०)

जन मन रञ्जन राम सियाबर साँचे मनके याररे॥टेक॥
दम्भ कपट छल हठ तजि भजहिं जे तिन्हपर करत
सु प्याररे ॥ १ ॥ गोद्विज देव निगम सन्तन हित
लेत बिबिध अवताररे ॥ मारि असुर सुखदेत जनन
अति हरत सकल महि भाररे ॥ २ ॥ चाहत काय
कलेश न युगवत मनकी बारहिं बाररे ॥ हनूमान
सन कह्यो ऋणी मैं तेरो सभा मझाररे ॥३॥ करनी
कुटिल न लखहिं बखानत जनगुण बार हजाररे ॥
बिनु श्रम सुमिरत नाम होत बश अस प्रभु परम
उदाररे ॥ ४ ॥ करहिं कठिन तप योग सहहिं दुख
नर बिनु ज्ञान बिचाररे ॥ काल कर्म गुण ग्रसे फिरहिं
जग-भंटकत मूढ़ गमाररे ॥ ५ ॥ गुरुपद बिमुख न
सन्त सङ्ग रुचि जानत सारा साररे ॥ मनमुख साधन
करत ठानि हठ बूड़हिं ते मझधाररे ॥६॥ प्रभु सुभाव
निज कर्म आनि उर अबहूँ त्यागि बिकाररे ॥ प्रेम
लता सियरामनाम रटि उतरु घोर भव पाररे ॥७॥

पद ग़ज़ल (५१)

फकीरी में मजा जो है सो कहने में न आता है॥टेक॥

पलक् में मुद जो होता है खलक् में सो न पाता है-नाम बशुयाम सियबर को ललित रसना से गाता है ॥ १ ॥ रूप हिय में सुचिन्तनकर, स्थूलरु सुक्षम कारण पर, निरखि ललि लाल परात्पर तर, मेहर मुर्शिद मनाता है ॥ २ ॥ रङ्ग सतसङ्ग हिय रँगिके फिकर फानी जगत तजि के, प्रेम की साज अँग सजि के, नाम प्रेमी कहाता है ॥ ३ ॥ धाम प्रीतम निवस्ते हैं, किसी से कुछ न चहते हैं, मौज हरदम सुलहते हैं, सुयश प्यारा सुहाता है ॥४॥ कहो अब क्या रहा बाँकी, महरि जब कीन गुरुसाकी, प्रभा बढ़ि प्रेमलतिका की, युगल कीरति सुगाता है ॥५॥

कवित्त (५२)

सखी प्रति सखी बचन ॥

कौशिलाकुमार ये अनूपरूप जौन सखी श्यामलघु गौर औकिशोर बयसवाले हैं ॥ ताडुका सुबाहु आदि मारि विप्र काज किये गौतम की तिया तारि पाप पुञ्ज वाले हैं ॥ बीरन के बीर धीर बालक नृपाल जूके देखत के छोट पै समूह तेज वाले हैं ॥ भञ्जहैं पिनाक अनायास ही सो साँच कहौं प्रेम-

लता राम तीनि लोकते निराले हैं ॥ १ ॥ मेलिहैं
अवश्य सिया राम के सुकंठ माल हर्षि हैं बिलोकि
लोग पुण्य पुञ्ज वाले हैं ॥ बाजिहैं निशान नाक
नाँचिहैं सुदेव बधू बर्षिहैं सुजान बिबुध सुमन माल
हाले हैं ॥ भागिहैं महीप जो बिमूढ़ कुटिल भाग
हीन पागिहैं सुरूप सन्त प्रेम नेम पाले हैं ।। हारि
हैं सुपर्सुराम प्रेमलता साँच कहै बात यही राम
तीनि लोक ते निराले हैं ॥ २ ॥

पद ग़ज़ल (५३)

बाँकी अदा सियलाल की दिल् बीच बसीहै ॥टेक॥
शिर पेंच चित्र रङ्गका बाँधे सम्हारि के, तिस्पर
झुकी कलङ्गीरी मन्हरन लसी है ॥ १ ॥ अल्कें
अनूप कुण्डल हलकैं कपोल पै, नयना सलोने मद्
भरे मति मोर डसी है ॥ २ ॥ सुन्दर ललाट
तिलक् झलक् नाशिका मोती, मुख चन्द चारु अनु-
पम् अन्मोल हँसी है ॥ ३ ॥ कण्ठा सुकण्ठ कलित
सुभग् जाल परा है, झूलैं हिये मणि माल कनक्
तार गँसी है ॥ ४ ॥ काँधे धरे धनुबान करनि
मुद्रिका कड़े, जामा ललाम पीत पट सुकमर कसी

है ॥ ५ ॥ सुखमा सुअङ्ग अङ्ग की कहते बने नहीं, अलि प्रेमलता नखशिख लखि रूप फँसी है ॥६॥

जय सियराम जय जय सियाराम ।

पद (५४)

आरती करत जनक पुरनारी ॥ टेक ॥

भूषण बसन निछावर करि करि लेत ललकि बलिहारी ॥१॥ अवलोकति सिय सखिनि सहित छबि बैठीं कनक अटारी ॥ बरषहिं सुमन सुन्दरी प्रमुदित निमि कुल कल उजियारी ॥२॥ चढ़ी झरोखनि उझकहिं भागिनि झरफ उघारि उघारी॥ मानहु दमकहिं विपुल तड़ित नभ जलद सुपटल बिदारी ॥३॥ परमानन्द भरी गावहिं सब मधुर मधुर धुनिगारी ॥ जनु बरषहिं घन गरजि मनोहर मृदु मङ्गल मय बारी ॥४॥ बाजहिं भेरि सङ्ख सहनाई, पणव निशान अपारी ॥ झाँझ मृदङ्ग मजीरा नूपुर किङ्किणि कङ्कण तारी ॥ ५ ॥ नाचहिं नाक नटी ललनागण पुर प्रमोद अति भारी ॥ श्रीसियराम बिवाह महोत्सव, उमगि भरयो दिशिचारी ॥६॥ श्रीमिथिलेश राय धनि रानी, धनि पुरबासी झारी ॥ प्रेमलता

सिय प्रगट होइ जहँ, कीन चरित सुखकारी ॥७॥

पद (५५)

रटतौ नाम न सुख उर सरसत ॥ टेक ॥

केवल सो कारण मन मुखता भली भाँति ते दरशत ॥ १ ॥ निज निज बिषय निरत इन्द्रीगण, मन भोगनि लग तरसत ॥ संयम नेम तितिक्षा सम दम, करि न कबहुँ आकर्षत ॥ २ ॥ तजत न दश अपराध नामके, दीन दुखिन कहँ धरषत ॥ पर सुख देखि जरत मनहीं मन, बिपता लखि हिय हरषत ॥३॥ अनाचार आलसी अशुचि अति, तेहि लगि आमय गरसत ॥ गुरुपद प्रेम न संग कथा शुचि, सुनंत न कहि कछु बरषत ॥ ४ ॥ निन्दा अस्तुति झूँठ बाद बहु, बकि बकि बानी झरसत ॥ धन हित धावत बिकल काम बश, परतिय अङ्गनि परसत ॥५॥ रटत न नाम अनन्य भाव धरि, जन हित मारग अरसत ॥ प्रेमलता बिश्वास हीन नर कर्म काठ घुँघरसत ॥ ६ ॥

पद (५६)

लाजत मूँढ़ न साधु कहावत ॥ टेक ॥

पहिरि शिंह कों बेष लोभ लगि, कूकर अस जग धावत ॥१॥ तजि सियराम नाम ऋधि सिधि हित, भूत पिशाच जगावत ॥ दाम बटोरि सुधाम सम्हारत, ब्याज तिब्याज कमावत ॥ २ ॥ भोगत आप न देत सु हरि हित, सन्तनहूँ न खवावत ॥ नाना बिधि ब्योहार वृथा करि, दुर्लभ बयस बितावत ॥३॥ लेत जाइ सम्बन्ध भाव बिनु, डोलत सबहिं दिखावत ॥ लेशहु ताकर सुख न आचरण, स्वप्नेउ उर सरसावत ॥ ४ ॥ निन्दा अस्तुति बाद झूँठ छल कपट दम्भ मद भावत ॥ सम सन्तोष बिचार दया दम, मन महँ कबहुँ न लावत ॥५॥ सुनत न सुन्दर सीख मोहबश, आपहिं आप जनावत ॥ भजन करत अलसाय अशन हित, भोरहिं रारि मचावत ॥६॥ अन्तर मलिन बैन अतिपावन, कहि बहु ज्ञान दृढ़ावत ॥ करनी कुटिल कठोर नीच अति, करि खल धर्म नशावत ॥ ७ ॥ परम अगम कलि योग ध्यान ब्रत, हठ करि शीस उठावत ॥ संग्रह त्याग कहा नहिं जानत, बातनि बिधिहिं हरावत ॥ ८ ॥ सुनत न राम चरित भवमोचन, जो त्रयताप नशा

वत ॥ रटत न नाम काममद सादर, प्रेमलता समुझावत ॥ ८ ॥

पद (५७)

लखी जिन्ह मूरति परम उदार ॥ टेक ॥ जनक लली सिय रूप गुणाकर, श्रीअवधेश कुमार ॥ १ ॥ सो किमि कहहिं मूक जिमि स्वादहि सज्जन ज्यों उपकार ॥ करहिं न प्रगट सन्त ज्यों-भजनहिं, जानि सारको सार ॥ २ ॥ जगते दशा बिलक्षण तिनकी, होत सु बिमल बिचार ॥ तोर मोर फिरि कहाँ बिबिधिमत, जाति कर्म ब्योहार ॥ ३ ॥ फस्यो कीर इव मोह पींजरे, स्वारथ में हुशियार ॥ लोभ बिबश नाचत मर्कट अस, कहत लखे करतार ॥ ४ ॥ प्राकृत नारि नरन की छबि लखि, पट भूषण शृङ्गार ॥ तेहि अनुमान कहत कबि पर छबि, अनुपम अकथ अपार ॥ ५ ॥ परम गुप्त रस रहस अलौकिक, रशिकन मन आधार ॥ बिनु जाने अनुभवहिं मन्द मति, कहि खल करत उघार ॥ ६ ॥ सतगुरु कृपा कटाक्ष लख्यो जिन, वह सुख एकौ बार ॥ भाषत सो न मुदित महि

बिचरत, कोउ कोउ कोटि मझार ॥७॥ सखी भाव शुचि तत्सुख भोगी, निज सुख जानत छार ॥ छके रहत निशि दिवस एक रस, षट रस लागत खार ॥८॥ रटहिं नाम अभिराम निरन्तर, तजि ममता मद मार ॥ प्रेमलता निर्लेप निष्किंचन, परहिं न भव भ्रम जार ॥ ९ ॥

पद (५८)

डरत मन बरणत युगल बिलाश ॥ टेक ॥ होत बड़िन की बात गुप्त अति, प्रगटै तो लहै त्राश ॥ १ ॥ कहत आन होइ जात आनही, होत रसा आभास ॥ मौन रहै लखि मुदित नीक सोइ, कहि न करै परकाश ॥ २ ॥ जाने बाढ़त हर्ष जनाये, होत सु हृदय हराश ॥ अस बिचारि जो चतुर उपासक, बागहिं भेद न खास ॥ ३ ॥ कहहिं न खोलि मर्म निज प्रभुकर जहँ तहँ दासी दास ॥ जुगवत तिन्हे प्राण सम सो नृप, करत अधिक बिश्वास ॥ ४ ॥ जो प्रभु सर्व चराचर नायक, घट घट जाकर बास ॥ बरषत मेघजासु डर निशिदिन बहत पवन उस्वास ॥ ५ ॥ पालत हरि बिधि भरत

पाइ दुख, काल करत संग्राम ॥ सबहिं नचावत नाथ लखत कोउ, बिरले सहि परिहास ॥ ६ ॥ रँगे रहत तेहि रंग साधि जन, तजि प्रपंच जग आस ॥ प्रेमलता रटि नाम देह भरि, पहुँचत पुनि प्रभुपास ॥ ७ ॥

पद (५८)

देखो देखो सुमन का बँगला बना ॥ टेक ॥ अवलोकत अपहरत अमंगल, होत हृदय आनन्द घना ॥ १ ॥ बिरचित बिबिध रंग के फूलनि, सुन्दर सुखद बितान तना ॥ रचना अकथ अलौकिक अनुपम, मनहुँ सकल सुख सुकृत सना ॥ २ ॥ चकित होत सुर सिद्ध बिलोकत, अचरज अति बिधिहू के मना ॥ मन गुण पार अगम प्रभु महिमा, बिश्व बिमोहन चरित ठना ॥ ३ ॥ शेष गणेश दिनेश गिरा शिव गावत जेहि गुण ग्राम गना ॥ अगजग ईश अनन्त सु प्रेरक, मायापति जेहि जगत जना ॥ ४ ॥ सोइ सिय राम दिये गल बहियाँ, कुशुमासन पर सुख अपना ॥ बैठे प्रेमलता प्रमुदित मन, अलि गण नाचहिं छुम छनना ॥ ५ ॥

पद (६०)

बाँका बँगला बना अलि फूलों का ॥ टेक ॥
सुन्दर सुखद विशाल अनूपम, कारण मंगल मूलों का ॥ १ ॥ खम्भा कलित कपाट द्वार बर, मोहत मन प्रति कूलों का ॥ जालिदार महिराव झरोखा, कलश हरण हिय हूलों का ॥ २ ॥ ध्वज पताक फहरात सोह जनु, गोहरावत भव भूलों का ॥ तोरण बन्दनवार सु गुच्छा लटकहिं सुमन अखूलों का ॥३॥ राजत सुभग सिंहासन दम्पति, साज सु सजें अतूलों का ॥ प्रेमलता अलि अमित सु प्रमुदित, सेवहिं रुख लखि दूलोंका ॥ ४ ॥

पद (६१)

प्रभुके अगम चरित श्रुति गावत ॥ टेक ॥
करत कहा करिहैं का आगे, यह न भेद कोउ पावत ॥ १ ॥ आदि मध्य परिणाम गुणन जेहि, सुरनर मुनि भरमावत ॥ विधि हरि हर जग पूज्य कहावत, तिन्ह कहँ नाच नचावत ॥ २ ॥ भृकुटी निरखत काल कठिन जो, जीव चराचर खावत ॥ क्षण में उद्भव करहिं शृष्टिप्रभु, पालत बहुरि नशावत ॥३॥

अति आचरज जनित सब लीला, कौनिउ बिधि न बुझावत ॥ कबहूँ होत अनूप ज्ञान लखि, कबहूँ भ्रम उपजावत ॥४॥ करत जोग जप कर्म धर्म बहु, साधन जनु तन तावत ॥ पढ़त पुराण बेद बनि पंडित बाद बिबाद बढ़ावत ॥५॥ बैठि इकन्त जीति इन्द्री मन, योगिउ जेहि नित ध्यावत ॥ होत न बिमल बिवेक कबहुँ उर, शील बिचार न आवत ॥६॥ श्रीगुरु देव कृपाल कृपा बिनु, जीव न प्रभु मनभावत ॥ प्रेमलता निशि दिवश जानि अस, सतगुरु कृपा मनावत ॥७॥

पद (६२)

स्वामी श्रीरामचन्द्र स्वामिनी सियाजू ॥टेक॥ वेद ब्रह्म करत गान, सुर नर मुनि धरत ध्यान, श्याम गौर छबि महान, पार ना लियाजू ॥१॥ करत चरित चारु सार, विरद लागि बारबार, दीन बन्धु अति उदार, परण जो किया जू ॥२॥ अवध धाम रामजाय जनक नगर सीय आय, लेत जन्म बेद गाय, क्षीर सो पिया जू ॥३॥ परम शक्ति सहित भ्रात, प्रगट ब्रह्म लोक ख्यात, भक्त हेतु, चरितव्रात, करि सु सुखदिया जू ॥४॥ खलनि मारि सुगति दई, जयति सकल भुवन

भई, परसि चरण धाम गई, बिप्र की तिया जू ॥५॥ देवदनुज लोकनाथ, शम्भु शेषनाइ माथ, बर्णत सब राम गाथ नाम लै जिया जू ॥६॥ जनक शोक सन्त ताप, बिप्रगर्ब नृपन दाप, दूरि कीन भंजि चाप, लाज राखिया जू ॥७॥ सुरन सुमन बृष्टि करी प्रेमलता बिपति टरी, रामचन्द्र सीयबरी, मुदित भो हिया जू ॥८॥

पद (६३)

दशरथ सुत राम सिया जनक की दुलारी ॥टेक॥ नख शिख शोभा अपार, लाजत लखि कोटि मार बरणत छबि बारबार शारदा उहारी ॥ १ ॥ भूषण मणि जाल माल, लसत बिबिध जटित लाल, नैन कञ्ज ललित भाल, तिलक मोद कारी ॥ २ ॥ गौर बरण सिया राम सुभग अङ्ग मेघ श्याम, पीत बसन उत ललाम, इत सुनील सारी ॥३॥ राजत सुख गुण निधाम, सेवति पद बिपुल बाम, सीता कर कमल राम धनुष बाण धारी ॥४॥ सुर नर मुनि धरत ध्यान कीरति कल करत गान, प्राण के सुप्राण ब्रह्म ब्रह्म के अधारी ॥५॥ शरणपाल अति उदार हरण हेतु भूमि भार, करत चरित चारु सार, बदत नित पुरारी

॥६॥ प्रेमलता सोच त्यागि, युगल चरण कमल पागि, जपि सु नाम जीह जागि, दमनदोषभारी॥७॥

पद ॥ शयन समय के (६४ ॥

राजत सेज दिये गल बहियाँ ॥ टेक ॥

आलश बश दोउ झुकत परस्पर, परमानन्द मोद मन महियाँ ॥ १ ॥ चहुँदिशि खड़ी अली अवलोकति, छबि अनूप उपमा कहुँ नहियाँ ॥ बड़भागिनि सब तत सुख भोगहिं, निबसहिं निकट जन्म फल लहियाँ ॥२॥ दम्पति प्रेम सुपगीं रँगीं सब, निरस कथा नहिं जहियाँ ॥ परम बिचित्र चरित्र सु नूतन करत बिपुल प्रभु तहियाँ ॥ ३ ॥ योग यज्ञ जप ज्ञान ध्यान बहु, साधत नर दुख सहियाँ ॥ सो सुख अगम सु सखी भाव बिनु, अमरनि हूँ कहँ अहियाँ ॥ ४ ॥ जानत रशिक भेद यह कोउकोउ, गुरु प्रशाद दुख दहियाँ ॥ प्रेमलता ते लोक बेद मत, तजि प्रभु रँग रँगि रहियाँ ॥ ५ ॥

पद प्रभाती (६५)

मातु सुनैना सियहिं जगावैं जागुजागु मेरी प्यारी।टेक।

भोर भयो गायक गुण गावैं, निमिकुल यश

बिस्तारी ॥१॥ उमा रमा शारद सनकादिक, संकर
नेजा धारी ॥ दरश लागि सब द्वारे ठाढ़े पुर बासी
नर नारी ॥२॥ जै जै कार करहिं सुर किन्नर, चढ़े
बिमाननि भारी ॥ दासी दास खड़े सेवा में, निरखु
नयन पट टारी ॥ ३ ॥ अस्तुति करत सन्त मुनि
द्विज बर, वेदनि मंत्र उचारी ॥ आलश त्यागि सु
जागु लड़ैती, बिटिया मैं बलि हारी ॥ ४ ॥ दधि
चूरा पकवान मिठाई, बाल भोग सुख कारी ॥ मेवा
कन्द बिबिध कमला दिक, लै आईं भरि थारी ॥५॥
जागि उठी सुनि बचन मातु के, लखि भये सकल
सुखारी॥प्रेमलताउरलायचूमिमुख,अम्बगोदबैठारी॥६॥

पद प्रभाती (६६)

एक दिना सिय बड़े भोर उठि कहति जागु
मेरी माता ॥टेक॥ भोजन दै उठि भूख लगीमोहिं,
घीव खाँड़ अरु भाता ॥१॥ धरि धरि अंग हुली
सति खीसति, कहि कहि तोतरि बाता ॥ दाँतनि
काटति डाँटति पुनि पुनि, कहति जीव मम जाता
॥२॥ सुनि रानी अति प्रियवर बानी, जागी हिय
हरषाता ॥ आतुर लई उठाय लाय उर, मुदित भई

लखि गाता ॥३॥ जोइ २ कह्यो दियो सोइ, सोइ करि भोग सुताता ताता ॥ पाय अघाय सखिनि सँग प्रमुदित, भाजि चली पुलकाता ॥४॥ पितु ढिंग गई लई नृप लाय सु, हृदय बूझि कुशलाता ॥ सुन्दर वदन निहारत इकटक, लोचन मन न अघाता ॥५॥ भाग सराहि मनाय ईष्ट निज़, संकर सुमिरि विधाता ॥ उठेउ समोद गोद सीतै लै, द्वार चले सँग भ्राता ॥ ६ ॥ दिये दान बहु खोलि खजानें, मणि गण बसन बनाता ॥ प्रेम लता धनि धनि मिथिला पति, कहहिं देव दिन राता ॥ ७ ॥

पद प्रभाती (६७)

प्रातकाल उठि सियहिं जगावै गाय गाय गुण मैया ॥टेक॥ टारि टारि पट बदन विलोकति दोउ कर लेता बलैया ॥ १ ॥ रटन लगे सियराम सन्तजन, राम्हन लागी गैया ॥ काग कपोत कीर किलकारहिं, सुनु चिरियनि चुहुँ चैया ॥ २ ॥ चले जात द्विज करत वेद ध्वनि, कमलाके अन्हवैया ॥ जागि उठे नर नारि नगरके, द्वारे मंगन अैया ॥ ३ ॥ भूपति निकट बुलावन आयेउ, ठाढ़े श्रीनिधि भैया ॥ उदै भयेउ

रवि किरण प्रकाशी, नाशी रैनि जुन्हैया ॥ ४ ॥
मुख मज्जन करि भोजन कीजै, जो रुचि होय अघैया॥
मेवा मगद मलाई रबड़ी, दधि चूरा सुमिठैया ॥ ५ ॥
सुनि जननी के बैन नैन पट, खोलि मधुर मुशुकैया ॥
प्रेमलताअलिजगी जानिसिय बाँटनलगी बधैया॥६॥

पद प्रभाती (६८)

प्रातकालउठिरानिसुनैनाकहति जागुसियलाली ॥टेक॥
भोर भयो पंछी गण बोले, कोयल बोलत काली ॥ १ ॥ दुरेउ नखत तम निशा सिरानी, छिपी चन्द्र उजियाली॥ कला हीन लखिशसितजि चकई पियहिं मिलन कहँ चाली ॥२॥ सुन्दर सुमन बिविध बिधि चुनि चुनि, बागन केरसु माली ॥ गुहि गुहि माल लिये बहु आवत, राज भवन भरि डाली॥३॥ सियसिय कहि सारिका पुकारहिं, जो तू हित करिपाली ॥ कमला खड़ीलिये कर भोजन, भरि कंचन की थाली ॥ ४ ॥ बहुमेवा पकवान मिठाई, दधि चूरा पय छाली ॥ उठि कछु खाउ धोइ मुख जो रुचि उदर भयेउ अब खाली ॥५॥ जागि उठी मुशिकात

बात सुनि, लखि भइ अम्ब निहाली ॥ प्रेमलता अलि लियेउ गोद इक, प्रौढ़ा भाग सुशाली ॥६॥

पद प्रभाती (६८)

जगेउ जगत पति सिय रघुनन्दन अलिगण जय जय कीना ॥टेक॥ बैठारेउ उठँगाय बलिस्तन, दम्पति प्रेम अधीना ॥१॥ झुकि झुकि परत कछुक आलश बश, जगमग करत नगीना ॥ अवलोकहिं अलिनयन परम छबि, सफल मानि निज जीना ॥२॥ परमानन्द मगन परिकर सब, जस अगाध जल मीना ॥ नाचन गावन लगी विमल गुण, प्रमुदित राग सुझीना ॥ ३ ॥ धधकिटि धधकिटि बजत मृदंग सु, सरस मजीर सु बीना ॥ छुम् छुम् छननन नूपुर बाजत देत ताल लय लीना ॥ ४ ॥ हाव भाव सहचरी दिखावहिं, तन में बहत पसीना ॥ नृत्यत जनु बहु राग रागिनी, होत न कोउ अँग हीना ॥५॥ होत दङ्ग लखि सुर किन्नर मुनि, रम्भादिक गति छीना ॥ प्रेमलता अलि रीझि लाल ललि, सखिन अपन पौ दीना ॥ ६ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद प्रभाती (७०)

प्रातकाल लखि कहहिं अलीगण जागिय युगलकिशोर जू ॥टेक॥ आलस तजहु प्राण जीवन धन, रैन रही अब थोर जू ॥ १ ॥ बाजन लगेउ निशान गोपुरनि, जनु श्रावण घनघोर जू ॥ कोयल काग कोकिला कुक्कुट, बोलहिं शुक पिक मोर जू॥२॥ सुर गंधर्व नाग किन्नर मुनि, गावहिं गुण भयो भोर जू ॥ बिरदावली बिमल बन्दीजन, बदहिं सुबन्दी छोर जू ॥३॥ करहिं वेद धुनि बिप्र मनोरम, अगणित पुर चहुँओर जू ॥ बिकसेउ जलज बिपुल सर सरितनि, चन्द्रहिं तज्यो चकोर जू ॥४॥ हिंसहिं तुरँग पील चिक्कारहिं, गैया राँभहिं जोर जू ॥ नगर नारि नर द्वार खड़े प्रभु, दरश लागि चित चोर जू ॥ ५ ॥ जागि उठेउ बर बिनय श्रवण सुनि, बचन अमियरस बोर जू ॥ जय जयकार कीन्ह परिकर गण, निरखि सुछबि तृण तोर जू ॥ ६ ॥ भूषण बसन सँभारि सेज पर, बैठारेउ सनिहोर जू॥ प्रेमलता दोउ झुकत परस्पर दम्पति श्यामलगोर जू

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद प्रभाती (७१)

प्रातकाल करि बिनय जगावहिं सिय रघुबरहिं सुदासी ॥ टेक ॥ गाय गाय गुण विमल कहहिं अब, उठहु नाथ सुखरासी ॥ सेवा लिये खड़ीं सब ललना, प्रभु दर्शन की प्यासी ॥ १ ॥ मलिन भई शशि किरण कृपा निधि, दुरेउ नखत निशि नाशी ॥ भोर जानि पंक्षी गण बोलहिं कमलन कली बिकाशी ॥ २ ॥ चढ़े बिमाननि करहिं सुमन झरि, सुर सुरलोक बिलासी ॥ द्वार खड़े जय जयति पुकारहिं, नर नारी पुर बासी ॥ ३ ॥ बन्दीजन मन मुदित उचारहिं, बिरुदावली सुखासी ॥ करहिं बेद ध्वनि श्रवण सुखद अति, मुनि गण सहस अठासी ॥ ४ ॥ जागि उठे सुनि बचन परम प्रिय, भक्त बछल खल नाशी ॥ प्रेमलता अलि करहिं आरती, अगणित उमा रमासी ॥ ५ ॥

पद प्रभाती (७२)

सजि सजि भूषण बसन सहचरीं कनक भवन पगु धारो ॥ टेक ॥ शयन किये सुख पुञ्ज कुञ्ज जेहि, सियप्यारी पिय प्यारो ॥ तेहि मंदिर ढिग

जाइ सकल मिलि, नृत्य गान अनुसारो ॥ १ ॥ छम्छम् छननन नूपुर बाजहिं, सुखद सुराग उचारो ॥ भोर भयो उठि करिय नाथ अब, सफल सुजन्म हमारो ॥२॥ कहहिं मधुर मृदु बयन बिनय करि, हे प्रभु नयन उघारो ॥ दरशन की प्यासी सब दासी, ठाढ़ी रोकि सुद्वारो ॥३॥ बोलन लगे बिपुल पंछी बन, बाजन लगेउ नगारो ॥ बिकसन लगेउ सुकमल सरनबहु, मधुप सुकरहिं गुँजारो ॥४॥ चंद्रकला भइ मलिन दुरेउ तम, रबि प्रभाव बिस्तारो ॥ पुर नर नारि बिप्र बन्दी जन, सोर मचायेउ न्यारो । सुनि प्रिय बचन प्रेम रस साने, मुष्किानेउ पट टारो ॥ उठे हरषि दोउ लाल काल लखि, भोर भानु उजियारो ॥६॥ जगे जानि सुखखानि अलिनि उर, उमगेउ आनँद भारो ॥ प्रेमलता अवलोकि परम छवि, प्रभुपर तन मन वारो ॥७॥

पद प्रभाती (७३)

प्रात समय उठि सियहिं जगावति रानि सुनयना माई ॥टेक॥ टारि टारि पट मुख अवलोकति, बार बार बलि जाई ॥ १ ॥ गोल कपोल अधर

अरुणारे, चिबुक बिन्दु झलकाई ॥ कमल नयन नासिका मनोहर, भौंह वंक झुकि आई ॥२॥ सुभग ललाट कुटिल कच सघनसु, अनुपम सुन्दरताई ॥ स्वासाद्वार सुगन्ध सुरेलैं, निकसि रही सुखदाई ॥३॥ ठगिसी रही मातु मुख छबि लखि, मनहुँ रंकनिधि पाई ॥ बार बार निज भाग सराहति, उर आनन्द बढ़ाई ॥४॥ चिरजीवै यह कुमरि सदा सुख, हे महेश गणराई ॥ यहि अनुरूप होय घर बर जहँ, करिये तहाँ सगाई ॥५॥ करति बिचार सुविबिधि छकी छबि, प्रेम मगन हरखाई ॥ चूमति बदन सूँघि शिर पुनि पुनि, ललकि ललकि उर लाई ॥ ६ ॥ उदय भानु लखि मानि भूप भय, उठी हृदय सकुचाई ॥ वारि बसन मणि भूरि सुभूषण, सिय पर दिये लुटाई ॥ ७ ॥ मधुर मधुर कहि बचन सेजते, जननी ललिहिं उठाई ॥ प्रेमलता लै गोद मोद भरि, शुचि जल उवटि न्हवाई ॥८॥

पद प्रभाती (७४)

प्रातकाल जागे रघुनन्दन स्वामिनि सिय गइ सोई ॥ टेक ॥ कर सरोज धरि चिबुक बिलोकत,

मुख मयंक चख दोई ॥ १ ॥ अनुपम अकथ अपार
देखि छबि, छके अपनपौखोई ॥ तजि निमेख अँग
अंगमाधुरी, लागउ इक टक जोई ॥२॥ टारतअलक
सुधारत भूषण, बसन उढ़त खुशबोई ॥ धनि धनि
भाग सराहत आपन, कोमल अंगनि टोई ॥ ३ ॥
जागि न उठै सुडरहिं प्रेम बश, निकट न अलिगण
कोई ॥ मनहीं मन मनाय याँचहिं बर, बिधि सन
भोरन होई ॥४॥ झाँकहिं खड़ी झरोखनि ललना,
खिरकिन लगि लगि गोई ॥ प्रेमलता·अलि पियति
नयन पुट, यह रस तजि जग छोई ॥५॥

पद प्रभाती (७५)

प्रात काल जागे सुख पागे स्वामिनि सिय
रघुराई ॥ टेक ॥ जय जय कार करहिं ललना·गण,
आनँद उर न समाई ॥ १ ॥ हेम थार सब सौभनि
भरि भरि, कुंजन ते हरषाई ॥ गावत गीत सहचरी
प्रमु दित, कनक भवन जुरिआई ॥ २ ॥ नख शिख
किये शृङ्गार शुभगतन, बरणि कवन बिधिजाई ॥
उमा रमा रति शची सारदा, जिन्हके सम न तुलाई
॥ ३ ॥ दम्पति रूप रँगीं सब नागरि, जुगवत,

रहहिं सदाई। निज निज सेवा लिये खड़ी सब, उझकहिं झरफ उठाई ॥ ४ ॥ कीन प्रवेश पाइ रुख भीतर, करि प्रणाम गुणगाई। भूषण बसन सँभारि सेज दोउ, बैठारेउ सुरिझाई ॥५॥ आलश बश चख झुकत परस्पर, पुनि पुनि लेत जम्हाई। प्रेमलता छबि निरखि अनूपम, जन्म लाभ अलिपाई ॥ ६ ॥

पद प्रभाती (७६)

प्रात समय उठि हरखि निरखि मुख पतिहिं जगावति सीता ॥ टेक ॥ आलस तजि अब उठहु प्राण पिय, चहुँदिशि भयेउ उजीता ॥ १ ॥ दुरेउ नखत रबि किरण प्रकाशी, शसि भा तेज रहीता ॥ रजनी जनित तिमिर नाशेउ जिमि, पाय सु राज अनीता ॥ २ ॥ बिकसेउ पंकज मधुप गुँजारहिं, कुमुदिनि भयेउ सभीता ॥ प्रात जानि चकई निज पति मन, मिलेउ॰ सु जाइ सप्रीता ॥ ३ ॥ करहिं वेद ध्वनि बिप्र नगर बहु, गावहिं कामिनि गीता ॥ रटहिं नाम लय लाय सन्त जन, श्रवण सुनहु मम मीता ॥ ४ ॥ बाजन लगे बाजने बहु बिधि, ठाढ़ेउ द्वार अतीता ॥ बिरुदावली बन्दि उच्चारहिं, दोउ

कुल केर पबीता ॥ ५ ॥ सुनि सिय बचन सुखैन नयन पट, खोलि सु करवट लीता ॥ उठे बहुरि सुशिकात प्रात लखि, अलिगण जय जय कीता ॥६॥ सुख मज्जन करि बोलि मागने, दान मान बहु दीता ॥ प्रेमलता प्रभु बैठि सिंहासन, कियेउ सकल मन चीता॥

पद प्रभाती (७१)

जागेउ प्रात सिया रघुनन्दन सुनि बहु शब्द सुहाना ॥ टेक ॥ बीण मृदंग संख सहनाई, बाजहिं बिपुल निशाना ॥ बोलहिं खग बहु नचहिं छमा छम, देव बधू करि गाना ॥ १ ॥ पढ़हिं बेद बर बिप्र बंदिजन, बिरुदावली बखाना ॥ पुर नरनारि सुसोर मचायेउ, भोर जानि उठि नाना ॥२॥ दरश लागि सुर शिद्ध नाग मुनि, आयेउ चढ़ि सुबिमाना ॥ जय जयकार करहिं नभ ठाढ़े, बर्षहिं सुमन सुजाना ॥ ३ ॥ ललना गण मन, मुदित हजारनि सेवा लिये अपाना ॥ कहहिं मधुर प्रिय बचन उठिय प्रभु, नाथ सुभयेउ बिहाना ॥ ४ ॥ उठेउ हरखि ललिलाल बिहँसि दोउ, कुण्डल कच अरुझाना ॥ अद्भुत अकथ अपार सुलखि छबि, सखि

समाज हरषाना ॥५॥ सुरझावति कोउ बसन सम्हारति
करि निज भाग सराना ॥ मंगल थार दिखाय
धरति कोउ, सजति आरती आना ॥६॥ सावधान
पधराय आरती, कीन सुबेद बिधाना । प्रेमलता
बहुबारि बिभूषण, दियेउ द्विजनि कहँ दाना ॥७॥

पद गजल (७८)

दिल्में बसी दिल्दार की छबि माधुरी आली ॥टेक॥
शिर पै जड़ाऊ ताज लसै कानमें कुंडल्, हल्के
बुलाक नाकमें मुख पान की लाली ॥ १ ॥ भौंहैं
बिशाल बंक बड़े नैन रँग भरे, सोहैं ललाट खौर
अलक झलकती काली॥२॥कंठा अनूप माल गरे पदिक
हार है, यज्ञोपवीत पीत हरे तड़ित उजाली ॥३॥
जामा अमोल जर्कसी तनु चुस्त बना है, पटुका
किनारदार छटा देत निराली ॥४॥ काँधे धरे धनु
बाण हाथ कमर कसी है, बैठे युगल् किशोर आजु
पर्म खुशाली ॥५॥ हँसते सुमन्द मन्द गरे बाँह दिये
हैं, ठाढ़ी अली चहुँओर नवल नेह सों पाली ॥६॥
अलि प्रेमलता चरण बन्दि अर्ज गुजारी, सुमिरों
सदा सियराम त्यागि कर्मकुचाली ॥ ७ ॥

पद (७९)

श्रीकनक भवनमें बिहरत सीताराम ॥ टेक ॥
श्यामल गोर अनूप अमल तनु, शोभा अमित कोटि रति काम ॥१॥ रत्न सिंहासन कल्पसुतरुतर, राजत युगल मुदित सुखधाम । धनुष बाण कर कंज सुशोभित, आभूषण पट बिबिधि ललाम ॥२॥ बैन मधुर मुशिकान मनोहर, चितवनि ललित सुजन अभिराम । नखशिख अंग सुभग शुचि सुन्दर, करत सुचरित नवल गुणग्राम ॥३॥ सेवा बिधि परवीन चतुर सब, चन्द्र मुखी बहु नवल सुबाम । दम्पति चरण कमल बिधिनाना, सेवहिं सो सब सुख बशुयाम ॥४॥ चामर व्यजन अतर कोउ मेवा, पान दान कोउ सुमन सुदाम । छत्र छड़ी कोउ नीर सुगंधित, निरखति छबि कोउ गोर सुश्याम ॥ ५ ॥ निज निज काज निरत ललना गण, अस्थिति चहुँ दिशि निज निज ठाम ॥ प्रेमलता कोउ परम रँगीली, रहहिं निरन्तर मुदित सुनाम ॥६॥

पद (८०)

जोमन सीतारामहिं गावै ॥ टेक ॥
तौ केहिलागि सहै दुखनाना, दुसह बिपत्ति सतावै

॥१॥ जो आचरण बिचारि सुआपन, उर प्रभु कृत चितलावै। तौ ममता मद मोह लोभ लगि, द्वार द्वार कत धावै ॥२॥ जो नाते परित्यागि जगत के, प्रभुपद प्रीति बढ़ावै। तब क्यों योग बियोग जनित दुख, सहि सहि जन्म नशावै ॥३॥ जो बनितादिक भोग विषय सुखदुखसम जानि बहावै। लाज बिहाइ सहित इन्द्री गण, तौ कत नाच नचावै ॥४॥ जो दुख सह्यो उदर अति दारुण, स्वप्नेउ सो शुधि आवै। तौ सुख धाम बिसरि सीतापति, जग बिलाश कत भावै ॥५॥ जो सियरामनाम कलि महिमा सुनि निज हृदय यिरावै। तौ कत प्रेमलता स्वारथबश, साधन देव मनावै ॥६॥

पद (८१)

कलियुग सीताराम अधार ॥ टेक ॥

नहिं जप योग नेम ब्रत साधन, भक्ति न बिरति विचार ॥ १ ॥ कर्म धर्म तप तीरथ संयम, करत न बिकसत सार ॥ ज्ञान कठिन मख ध्यान न अर्चन भजन भाव अविचार ॥ २ ॥ तोष बिवेक न शील दया दम, श्रवण न चरित उदार ॥ नहिं सतसंग सुजन सेवकाई, मन मुख सब व्योहार ॥३॥ अस्थिर

चितरु बुद्धि मन नाहीं शरणागति अहँकार ॥
कलिमल ग्रसित सकल शुभ साधन, बिकल सहहिं
दुख भार ॥ ४ ॥ कपट दम्भ छल लोभ मान उर,
ब्यापि रहेउ मद मार ॥ भूलि गयो निज रूप मोह
बश, फुर मान्यो संसार ॥ ५ ॥ सुर दुर्लभ तनु पाइ
निरत शठ, बिषय कुभोग गमार ॥ जेहि लगि
सहत यद्यपि दुख नाना, तदपि न करत सम्हार ॥ ६ ॥
गर्भ बास दुख दुसह दह्यो जब, प्रभु सन कीन्ह
पुकार ॥ रटिहौं नाम दिवस निशि तजि सब, पुनि
पुनि कीन्ह करार ॥ ७ ॥ प्रसव पवन तब प्रेरि कृपा
निधि, काढ्यो तोहि भग द्वार, ॥ प्रेमलता सो
ज्ञान गमायो, वेदन सह्यो अपार ॥ ८ ॥

पद (८२)

मोह बश मूढ़ नाम बिसरायो ॥ टेक ॥

भूलि गयो दुख दुसह गर्भ को, बिषय कुभोग
लुभायो ॥ १ ॥ इन्द्रिनि बिबश सहत दुख नाना,
रोग बियोगनि तायो ॥ जोरे नाते नेह अमितसठ
जग ब्योहार बढ़ायो ॥ २ ॥ ब्याकुल फिरत उदर
हित निशि दिन, सहज स्वरूप गमायो ॥ फिरि

फिरि चलत जानि खल तेहि पथ, जेहि पथ अति दुख पायो ॥ ३॥ नाचत ही बहु जन्म मरयो सठ, कबहुँ न चितहिं थिरायो ॥ स्वारथ लगि परलोक परम सुख, अपने करनि नशायो ॥ ४ ॥ जिन्ह के हित तू राम बिमुख होइ, बहु बिधि पाप कमायो ॥ ते खल कुटिल भये कब तेरे, अन्तौ तोहि जरायो ॥ ५ ॥ देखत सुनत प्रगट जड़ चेतन, काल सकल जग खायो ॥ तदपि न तजत मन्द ममता मद, प्रेमलता समुझायो ॥ ६ ॥

पद (८३)

जो जन सीताराम न जानें ॥ टेक ॥

तौ कत जन्म लीन जड़ जगमें, जीवत मुये समानें ॥ १ ॥ नरतनु पाइ मन्दहत भागी, बिषय भोग अरुझानें ॥ जाय जियत कूकर सूकर सम महा मोह मद सानें ॥२॥ परिहरि नाम सुलभ सद सुख प्रद, करि साधन हठ ठानें ॥ सो जनु बारि बिलोय चहत घृत, ऐसहिं कहत सयानें ॥३॥ परम सुहित सियराम नाम कलि, बेद पुराण बखानें ॥ सो परित्यागि भ्रमत जग निशिदिन, कबहुँ न हृदय

थिरानें ॥४॥ नाशहिं जन्म अकाय बिचारत, बिबिध उपाय अयानें ॥ शुभ उपदेश सुनत नहिं मानत, सहज स्वरूप भुलानें ॥ ५ ॥ उदर हेतु सठ धावत चहुँदिशि, सेवत द्वार बिरानें ॥ राम कथा सतसंग बिसार्यो, दुखद बाद मन मानें ॥ ६ ॥ सीखे बेद पुराण बिबिध मत, सार न कछु उर आनें ॥ जरत सदा त्रयताप मोहबश कर्म कीच लपटानें ॥ प्रेमलता यमलोक जाइ ते, शिर धुनि धुनि पछितानें ॥

पद (८४)

कलियुग साधन सकल बिहाई ॥ टेक ॥

गावहिं नाम चारु चिन्तामणि, निशिदिन भाव बढ़ाई ॥ १ ॥ मान मोह ममता मद परिहरि, जग ब्योहार बड़ाई ॥ तात मातु युवती सुत बान्धव, नाते नेह सगाई ॥२॥ श्रवण कथा मुख नाम मनोहर, सन्त संग सुखदाई ॥ मन बच कर्म हरण अघ नर्मद, सतगुरु पद सेवकाई ॥३॥ हारहिं जन्म अकारथ हठबश, कलियुग नाम न गाई ॥ साधन कठिन करत दुख पावत, अन्तौ होति हँसाई ॥ ४ ॥ सुधा होय बिष बरु हिम पावक, तड़िता मेघ थिराई ॥

सिन्धु तजहिं मर्याद न अचरज, गति साधन कठिनाइ ॥५॥ पाप पयोधि मीन इव जीवन, अहंकार अधिकाइ ॥ योग यज्ञ जप तप ब्रत नाना, करतौ अघ न सिराइ ॥६॥ कर्म ज्ञान दम धर्म न अर्चन, आदि बिघ्न बहुताइ ॥ प्रेमलता कलि नाम निरुपधि, अभिमत प्रद रटु भाइ ॥ ७ ॥

पद लावनी (८५)

भूलि जनि भर्म जाल प्यारे । सुमिरु सिय. राम बेद सारे ॥ टेक ॥ छोड़ि दे नर्क कुआँ नारी । तोड़ि दे जक्त मोह भारी ॥ मातु पितु बंधु सुवन जेते । सगे सब स्वारथ के तेते ॥ जगत में मीत नहीं कोई । सन्त सियराम नाम दोई ॥ दोहा ॥ दुर्लभ नर तनु पाइ गमावै, समुझत नहीं गमार ॥ तजि सियराम नाम सत संगति, चाहत भोग विकार ॥ मूढ़ता टरत नहीं टारे । सुमिरु सियराम वेद सारे ॥१॥ जिन्हें तू हित करि पहिचानें । बुराई सो तेरी ठानें ॥ समुझ तू अपने मन माहीं । हेतु बिनु हितू जगत नाहीं ॥ मीत सुत बनिता पितु माई । मतलबी भरे सुहृद भाई । दाम बिनु काम न कोउ

आवै। बात यह प्रगट बेद गावै ॥दोहा॥ अज्ञ दशा में गयो लरिकपन, तरुणाई बश काम। वृद्ध भये तनु काँपन लागै, फिरि कब रटिहौ नाम ॥२॥ खौंसि धन खैहैं घर वारे। सुमिरु सियराम बेद सारे॥३॥ उमरिया छण २ छीज़त जाय। शीश पर मौत रही मड़ राय ॥ कालकेदिन आये नेरे। चेत अब लागु कहे मेरे ॥ रटन करु सियाराम इकतार। उतरना जो चाहै भवपार ॥ त्यागि जग नेह गेह झगरे। विषय सुख ममतामद सगरे ॥दोहा॥ रटि अखण्ड सियराम नाम नित, करु संतन सत संग। श्रवण कथा सुनिसार हृदय धरु, प्रेमलता नव रंग ॥ ३ ॥ पढ़े नित अनुपम दिल्दारे। सुमिरु सियराम बेद सारे ॥ भूलि जनि भर्म जाल प्यारे ॥ ३ ॥

पद गजल (८६)

चरचा हमारी आपकी हरतर्फ छारही। चित चोर जरा हेरतो हँसि लौलगा रही ॥टेक॥ घर घर गली बाजार हाट बाट जहँ तहाँ, यारी मुझे ये आपकी जल्वा दिखा रही॥१॥जाहिर हुई संसार में प्यारे की मोहब्बत, दुनियाँ अनेक रंग की बातें बना रही

लागी लगन महबूब से सर जान के बदले, राची सु अंग अंग में लहरें उठारही ॥ अलि प्रेमलता भूले सब, रंग जक्त के। सूरत मेरे सरकार के दिल् में समा रही ॥ ५ ॥

पद लावनी (८७)

बदनाम किया दिल्दार मोहब्बत तेरी। मोहि अब न तजिय करि छोह जानि निज चेरी ॥ टेक ॥ तन मन से मैं सरकार तिहारे दासी। हो चुकी ललन् जनि तजो अवध पुर बासी ॥ १ ॥ दरशन बिनु अँखियाँ तरसि रही सुख रासी। मन मोहन प्यारे लाल राखु निज पासी ॥ अब मिलो सनम् चित चोर लाव जनि देरी। बदनाम किया दिल्दार मोहब्बत तेरी ॥ २ ॥ श्रीदशरथ राज किशोर अरे निरमोई। गर डारि प्रीति को जाल गयो कित सोई ॥ पिय मैं अबला अज्ञान न जानेउँ तोई। परि बेदरदी के फन्द लाज सब खोई। पिय प्राण दान देउ आय कहौं अब टेरी। बदनाम किया दिलदार मोहब्बत तेरी ॥३॥ जिस दिन् से लागी लगन् आपसे प्यारे। तिस दिन् से दुश्मन् भये लोग जग

सारे ॥ अब तुमहुँ रहे मुख मोरि हाय दिल्दारे । पिय बिसरेउ कर धरि शीस बचन जो हारे ॥ अपनाय न त्यागहु नाथ बिरद निज हेरी । बदनाम किया दिल्दार मोहब्बत तेरी ॥४॥ यह प्रीति रीति अति कठिन परम दुखदाई । छण छण में करै बिहाल शोक सरसाई ॥ प्यारे के मिलन बियोग विघ्न बहुताई । परि प्रेम पंथ सियलालशरण शिर जाई ॥ यह पंथन कादर काम भजै मुख फेरी । बदनाम किया दिल्दार मोहब्बत तेरी ॥ ५ ॥

पद (८८)

राजिव लोचन राम सियाबर प्यारे ॥टेक॥

अधम उधारण नाम काम प्रद, हठि हठि अघी उधारे ॥ पावन होत पतितहू बारक श्री सियराम उचारे ॥ १ ॥ गावत बेद पुराण दिवश निशि, शंकर शेष पुकारे । नाम रटन सम अपर न शाधन जानहु जाननि हारे ॥ २ ॥ सो सुनि समुझि शरण तकि आयेउँ, अब न बने प्रभु टारे ॥ यद्यपि मलिन कुटिल खलकामी, अवगुण भरे अपारे ॥ ३ ॥ प्रभु समर्थ मैं जीव कहावों, ग्रस्यो मोह मद मारे ॥

सुधा सिन्धु तजि नाम रूप तब, पियत फिरौं जल खारे ॥ ४ ॥ साधन हीन दीन अति कादर आय परयो अब द्वारे ॥ श्रीगुरुदेव कृपालु कृपाते नाथ नशे दुख सारे ॥ ५ ॥ मोह नदी अति अगम सु दुस्तर, बूड़त लग्यो किनारे ॥ सो केवल सिय लाल शरण यह नाम नाव निस्तारे ॥ ६ ॥

पद (८८)

करौं का भजन बनत नहिं राम ॥ टेक ॥

तजे मातु पितु बंधु युवति जन, जेहि लगि सुहृद सु धाम ॥१॥ मिथ्या बेष बनाय कहावत, जगमें साधु सु बाम ॥ बिषय भोग पर सुरुचि नई नित, लोलुपता वशु याम ॥ २ ॥ कबहुँ न होइ सुचित्त बिचारयो, निज पर रूप ललाम ॥ भजे न कबहुँ इकंत बैठि सुख, सियबर सुन्दर श्याम ॥ ३ ॥ रटे न मूढ़ मलिन मन कबहूँ, छाँड़ि कपट छल माम ॥ प्रणत पाल सब भाँति सुखद जो, पावन परम ललाम ॥ ४ ॥ अति निलज्ज सन्तोष न लावत, बिकल भ्रमत हित दाम ॥ श्रीगुरु सन्त नाम तजि सादर, सेवत निशिदिन चाम ॥ ५ ॥ त्यागि प्रथम

ते है बहुरि गहत जनु, जारि बसावत ग्राम ॥ खात बमन करि कुटिल स्वान ज्यों, स्वारथ रत बश काम ॥ ६ ॥ अधम अचेत कुमति कादर अति, सहत घोर भव घाम ॥ प्रेमलता शठ इन्द्रिनि प्रेरेउ, मन न लहत बिश्राम ॥ ७ ॥

पद (८०)

मूढ़ मन समुझत नाहिं दिवानों ॥ टेक ॥ चलना है बड़ि दूर पिया पुर, मारग अगम बखानों ॥ बिनु तहँ गये प्राण प्रीतम बिनु, तिहुँ पुर नहीं ठिकानों ॥ १ ॥ झूठे नाते नेह जगत के, तिन सँग तू अरुझानों ॥ मानि अपन पौ सहत कुसाँसति, निज पर रूप भुलानों ॥२॥ बेद पुराण पुरारि पुकारत शेष गणेश जहानों ॥ भजन सार संसार शोकप्रद, जानतहू नहि जानों ॥ ३ ॥ कहत सुनत बहु कथा कहानी, ममता मद लपटानों ॥ रटत न नाम काम तरु सादर, कादर कुमति अयानों ॥ ४ ॥ मारत मौज खात ठगि ठगि जग, पहिरि फकीरी बानों ॥ बाद बिवाद करत नहिं हारत, भजन समय अलसानों ॥ ५ ॥ स्वारथ लागि बिकल निशिवासर,

फिरत न कबहुँ थिरानों ॥ प्रेमलता गुरुदेव कृपा
लहि परम तत्व पहिचानों ॥ ६ ॥

पद (८१)

ऐसे साधुन को तजु संग ॥ टेक ॥

गाँजा चरस तमाल संखिया, खात पियत बिष भंग
भजन भाव को मर्म न जानैं, राख लपेटे अंग ॥१॥
कान फटा खोउ जटा धरै शिर, रटत न नाम सु
रंग ॥ शिश्नोदर हित व्याकुल निशि दिन, ज्ञान
बिचार न ढंग ॥ २ ॥ करहिं उपाधि व्याधिवत
नाना, सबसों ठानत जंग ॥ बड़े बलिष्ट अनिष्ट बि
बादी, भक्ति सुपंथ अपंग ॥ ३ ॥ करत भजन युत
दंभ दिखाऊ, मन घूमत ज्यों चंग ॥ लोभी लम्पट
दाश आंश के, कहहिं बचन बरि बंग ॥ ४ ॥ सुनैं
कतहुँ वर भोज भँडारा, उर अति बड़े उमंग ॥
प्रेमलता संतोष न सम दम, तनमें भरयो अनंग ॥५॥

पद (८२)

ऐसे सन्तन को करु संग ॥ टेक ॥

श्री सियराम नाम गुण महिमा, भाषहिं सुनहिं
अभंग ॥ रँगे रहत नित नाम रूप रँग, शीतल सु

हृद सुढंग ॥१॥ जो कोउ जाय निकट आरत जन,
रँगहिं तहि निज रंग ॥ कपट दम्भ नहिं आश
त्राश जग, मन चित जीत्यो जंग ॥ २ ॥ चलहिं
सुपंथ अनीति न भावत, नम्र बचन शुचि अंग ॥
कहनि रहनि समुझनि शुठि करनी, सुखद सबहिं
जस गंग ॥ ३ ॥ रहहिं असंग रटहिं निशिबासर,
नाम सुसहित उमंग ॥ निज पर रूप बोध बिधि
नीके, बिषय भोग पथ पंग ॥ ४ ॥ कर्म योग मत
बिबिध बासना, ममता मोह अनंग ॥ तजे सकल
लखि प्रगट काल ज्यों, दीपक जोति पतंग ॥ ५॥
सीताराम अनन्य भाव धरि, बिचरहिं अवनि अलंग॥
प्रेमलता दृढ़ टेक एक उर, चढ़ी रहति ज्यों चंग ॥

पद (८३)

जपहु कस न जेहि जपत महेशू ॥ टेक ॥
अब अब करत गये दिन केते, शिरहु भये सित
केशू ॥ परत न पूर मिटत नहिं चिन्ता, चाहे होन
नरेशू ॥ १ ॥ मरे मरत मरिहैं अब हमहूँ, यह नहिं
लखत गधेशू ॥ देह धरे कर लाहु लियो तिन्हि,
जे भजि मरे रमेशू ॥ २ ॥ लायो को ले गयो बहुरि

को, संग धाम धन देशू ॥ जस आये तस गये बिपुल भरि, बनि २ धनिक प्रजेशू ॥ ३ ॥ कबहूँ नर्क स्वर्ग पुनि कबहूँ, कबहूँ गर्भ प्रवेशू ॥ जन्मत मरत कर्म बश पुनि २ यहि बिधि धरि बहु बेषू ॥ ४ ॥ रटेउ न नाम देह धरि कबहूँ, तजि धन धाम सठेशू ॥ अमर होत जपि जाहि जीव जग, साखि सु प्रगट खगेशू ॥५॥ प्रथम पूज्य पद लह्यो जानि जेहि, त्रिभुवन माहिं गणेशू, जासु प्रभाव धरै शिर बिनु श्रम, प्रेमलता महिशेषू ॥ ६ ॥

पद लावनी (८४)

आचरज लख्यो एक भारी। जगतमें दुखिया नर नारी॥ टेक॥ फँसे जन बिषय भोग माहीं। रटत सिय राम नाम नाहीं॥ चहहिं सुख बैठि तालछाहीं दुसह ज्वर जरत दिवश जाहीं॥ शीश धुनि पुनि२ पछिताहीं। मोह मग चलत न सकुचाहीं॥ दोहा॥ सुगम पंथ सियराम नाम कलि, गावहिं बेद पुरान॥ चलहिं न मूढ़ मोह बश कल्पहिं, मारग बिबिधि मलान॥ १॥ उमरिया बीति गई सारी। जगत में दुखिया नरनारी॥ १॥ मनावत मूढ़ नाम तजि

देव । बचन मन कर्म नेम करि सेव ॥ ग्यान रत कोउ तीरथ चारी । कर्म करि कोउ चह दुखटारी ॥ योग जप साधन कोउ ठाने । पाठ कोउ पूजहिं रुचि माने ॥ पढ़ैं कोउ यंत्र तंत्र टौंना । मंत्र कोउ साधैं व्रत मौंना ॥ दोहा ॥ तप समाधि कोउ जोग रसायनि, करहि कठिन हठ ठानि । सुख न लहहिं सिय राम नाम बिनु, अन्तहोइ हितहानि ॥२॥ नाम बिनु सहहिं यमन मारी । जगत में दुखिया नरनारी ॥२॥ करैं कोउ भक्ति भावना हीन । मनोरथ मनके महा मलीन ॥ जीव गुरु बिमुख बिषय आधीन । सुगति किमि लहै पाप अति पीन ॥ प्रबल अघ सागर जन मन मीन । बिलग किमि होइ मरे दुख दीन ॥ कठिन कलिकाल सुकपट प्रवीन ॥ किये सत मारग मति गति छीन ॥दोहा॥ भजन भाव आचार धर्म सब, ग्रसे लोभ मद काम ॥ पराधीन अति हीन स्वकर्तब, तेकि देइँ बिश्राम ॥३॥ रटे बिनु नाम सु हितकारी । जगत में दुखिया नर नारी ॥३॥ मीत बिनु कारण सबही के । नाम वर बरण चारि नीके ॥ प्राण के प्राण जीव जीके । बिभूषण भक्ति सु युवती के ॥

सुमिरि भये ब्रह्म बालमी के। हरे कलि संकट तुलसी के॥ परम हित पारबती पी के। नाम बिनु सब साधन फीके॥दोहा॥मथि पुराण इतिहास संहिता, रामायण षट चारि। सार नाम सियराम जानि जिय, सन्त न लीन्ह निकारि॥४॥ कर्म करि लहहिं न धनुधारी जगतमें दुखिया नरनारी॥३॥ रटे सियराम नाम जोई तरे भव संशय नहिं कोई॥ सकल तजि नाम निरत होई। पूजिबे जोग जीव सोई॥ नामरस पियत जियत ओई। अपर बिनु ऐश बयस खोई॥ प्रगट यह बात न कलि गोई। नाम बिनु नशे लोक दोई॥ दोहा–सकल आश बिश्वास त्यागि भजु, नाम अखंड सनेम। प्रेमलता सिय पियपद पंकज, अवसि होय दृढ़ प्रेम॥ ५॥ परम सुख पावहिं अधिकारी॥ जगत में दुखिया नर नारी॥५॥

पद (८५)

जोरी लखो सियराम की कैसी बनी नीकी। उपमा न बने देत रति सु कामकी फीकी॥ टेक॥ बैठे प्रशन्न मानस मड़प् अनूप में। हेरैं परस्पर माधुरी सुख सार अमीकी॥ १॥ जैसे सखी घन

श्याम बरण रामलाल हैं। तैसी सु तड़ित् बर्ण सिया भावती जीकी ॥ २ ॥ लर्झर किये शृँगार लटनि अतर चुइ रहा। मुशिकात खात पान हरत जरनियाँ हो की ॥३॥ ठाढ़ी अली चहुँओर लिये सौंझ बिलोकैं बाँकी छटा मन मोहिनी पिय लाड़िली सीकी ॥४॥ हर्षैं निहारि भाग बिबुध तिय सु अलिनि के। चेरी करैं बिधि प्रेमलता जनक ललीकी ॥

पद (८६)

(मिथिलापुर बासिनी वचन)

बाँके नयना न मारो अवध छैला ॥टेक॥

हमहैं नारिपराये घरकी, समुझिलगो पिय निजगैला ॥१॥ नेह लगाइ अवध चलि जैहौ, करिके हमार तन मन मैला॥२॥सासु ननद के चोराचोरी, आई हौं प्यारे भरन घैला॥३॥प्रेमलता पिय प्रीति कठिन है, विसरि जात सब सुख फैला॥४॥ बाँकेनयनानमारोअवधछैला॥

पद (८७)

हँसि हेरो न प्यारे पराई नारी ॥टेक॥

तुमहौ पूत पराये लालन, हम अबला पर घर बारी ॥१॥ नाहक नेह लगाइ छबीले जैहो अवध चलि

धनुधारी ॥ २ ॥ प्रीति की रीति कठिन तुम जानत, उप जावत उर दुख भारी ॥ ३ ॥ लागत नीक नेह बिछुरत जब, करत दुर्दशा अति भारी ॥४॥ प्रेमलता तौ प्रीति करिय प्रिय, जीन करो हमको न्यारी ॥ ५॥

पद (९८)

गजबीले छबीले तिहारे नयना ॥टेक॥

चंचल चोरि हमार चित लीनों, परत नहीं अब टुक चैना ॥१॥ राग रंग घर द्वार न भावत, बिकल रहै मन दिन रैना ॥२॥ जो पिय प्यारे अवध चलि जैहो, प्राण बियोग सहै ना सहै ना ॥३॥ मन्द मन्द मुशिकाय रसीले, घायल कीन चलाय सैना ॥ ४ ॥ प्रेमलता नृप लाल न त्यागो, मन मोहन जिय सुख दैना ॥ ५ ॥

पद (९९)

सिया प्यारी को दूल्हा अजब आली ॥टेक॥

माथे मौर अनूपम सोहत, लट लटकायें युगल काली ॥१॥ खौर ललाट ललित केशर की, कानों में कुंडल कनक बाली ॥२॥ नयनों में सुरमा सुभग नाशा मणि, होठों पै प्यारी रचाये लाली ॥३॥ श्यामल अंग बिभूषण साजें, जामा सु पीत मधुर चाली ॥४॥ पटुका सु

रँग कस्यो कटि तट बर, कर शर चाप काँध घाली॥५॥
प्रेमलताअलिरूपमनोहर, हेरैं अटन चढ़ि तजि जाली॥६॥

पद राग मलार (१००)

देखो सखि श्याम बना बनि आये ॥टेक॥
दशरथ सुत घन श्याम काम मद, मातु कौशिलाजाये ॥१॥ शिर सोहै सोनेको सिहरो, मणिझब्बा मनभाये। केशर खौर ललाट लशी अति, मुख भरि पान चबाये ॥२॥ करणफूल नाशामणि हलकैं, नयन बिशाल सुहाये॥ कंठ बिभूषण भूषित अनुपम, भुजनि बाजुछबि छाये ॥३॥ कर कंकण मेहदी मणि मुदरी, लेत सुचितहिं चुराये॥ कटि पटपीत मनोहर जामा, दुति दामिनि मद नाये॥४॥ उबटित अंग अनंग लजावन, भावत जात न गाये॥ अनुजन सहित तुरङ्गन चढ़ि, २ आनँद उर अधिकाये॥५॥ संग बरात वंशिष्ट अवध पति, बिरद बंदि सुख पाये॥ प्रेमलता मिथिलेशभवन कहँ, जात चले हुलसाये॥६॥

पद (१०१)

भगति की महिमा नहिं जानी ॥ टेक ॥
योगी यती तपी सन्यासी, पंडित तापस ज्ञानी

॥१॥ देखत सुनत सकल जग जानत, भक्ति महा मुद दानी ॥ निदरहिं तदपि मूढ़ ममता बश क्रूर कुटिल खलमानी ॥ २ ॥ भक्ति बिबश भगवान देह धरि बहु बिधि लीला ठानी ॥ सहित बन्धु सिय राम भक्ति हित, बन बसि बिपदा भानी ॥३॥ भक्ति विमुखबनि परम सुन्दरी, सूपनखा ललचानी ॥ नाक कान बिनु कीन लखन तेहि, निरखि सीय मुशिकानी ॥ ४ ॥ निशिचर बधि खग धाम पठायो, कीन्ह क्रिया निज पानी ॥ पुनि सबरी घर जाइ भक्ति वश, खायेउ बेर बखानी ॥५॥ शिद्ध मुनीश अरण्यनिवासी, बेद परायण ध्यानी ॥ शवरिहिं धन्य धन्यकरि जानेउ, निज हित मानि गलानी ॥६॥ हम भरि जन्म योग जपतप व्रत, कीन कहावत ज्ञानी ॥ राम मिलन को मरम न जान्यौं, जाति पाँति उर आनी ॥ ७ ॥ भक्तिहेतु हति बालिदीन्ह गति, सुग्रीवहिं रजधानी ॥ अंगद को युबराज दीन प्रभु, समुझि भक्त की बानी ॥८॥ सेतु बाँधि दल साजि लंक पति, हत्यो राम धनु तानी ॥ भक्तहिं राज अकंटक दीन्हों, रिपु कुल की करि हानी ॥ ९ ॥ आयेउ अवध भक्तकारज करि, कुशल मातु हरखानी ॥

प्रेमलतायह भक्ति सुमहिमा, समुझिनाम अरुझानी॥

पद (१०२)

बाँकी झाँकीं बनी सिय रघुबर की ॥ टेक ॥

बैठे रतन शिंहासन हेरत, प्रमुदित छबि सुपरस्पर की ॥ १ ॥ रघुबर गर सिय बाँह सुशोभित, सिय गर भुज नट नागर की ॥ क्रीट मुकुट शिर सुभग चंद्रिका, खौर लशे कल केशरकी ॥२॥ पान खात मुशिकात मनोहर, कुण्डल हलक झलक तरकी ॥ राजत नील पीत पट अनुपम, अशित चारि बर लट लरकी ॥३॥ भूषण बिपुल अमोल सु अंगन, सुमन सुमाल गुही करकी ॥ पहिरायेउ रचि रुचिर सहचरी, निरखि सु रुचिसिय धनुधरकी॥४॥भाग सुहाग बिलोकि अलिनिके, हरखति घरनि हरीहर की॥याँचति यह बरदान मनहिं मन, चेरि होयँ हम सिय घर की ॥५॥ सेवैं दम्पतिचरणकपलनित, लखिसुखमासखिदिलभरकी॥ प्रेमलता प्रभु राम सुस्वामी, स्वामिनि सिय सचराचर की

पद (१०३)

मेरो मन विषय तजत नहिं राम ॥ टेक ॥

धायो फिरत स्वान ज्यों निशि दिन, तजि प्रभु

पद सुख धाम ॥ १ ॥ समुझायो बहु भाँति न मानत, निज हठ ठानत बाम॥ मैंमैं मोर तोर तैं करि सठ, नाश्यो जन्म तमाम ॥ २ ॥ साधन धाम मूल सब सुखको, कहत सन्तत बनाम॥ रटत न तेहि लय लाय मन्दमति बकत बाय बशु याम ॥ ३ ॥ बानों पहिरि सु बड़ो घरन को, पाइ अनूपम ठाम॥ तदपि न लजत लोभबश लोलुप, करत लघुन के काम ॥ ४ ॥ ऊपर ते शुचि साधु कहावत, मलि मलि धोवत चाम॥ भीतर कपट दंभ मद मत्सर वसहिं बिरचि उर ग्राम ॥ ५ ॥ भजन करत अलसात उदर हित रहत बटोरत दाम॥ प्रेमलतहिं प्रभु पाहि उबारहु, सिय बर सुंदर श्याम ॥ ६ ॥

पद (१०४)

तिहारो प्रभु अधम उधारण नाम ॥ टेक ॥

बरणत बेद पुराण महातम, निश दिन ललित ललाम. ॥ १ ॥ परिकर चारि यदपि जग तारण, नाम रूप गुण धाम॥ तदपि सुकारण नाम सुलभ शुठि, जनहित अति अभिराम ॥ २ ॥ देहु नाथ करि कृपा सु यह बर सिय बर, सुंदर श्याम॥ रटौं नाम तब संत संग रहि, प्रभु दित मन बशु याम ॥ ३ ॥ परि हरि बाद विषाद विविध मत,

विषय मोहमद काम ॥ सुमिरौंसदा निरन्तर नामहिं, तजि जग धनसुत बाम ॥४॥ कठिन योगजप तपसाधन ब्रत, सुर बहु ठाकुर ठाम ॥ द्रवत न बेगिअंत लघु सुख प्रद, सेवत छीजहिं चाम ॥ ५ ॥ देखत सुनत सुकर्म धर्म गति, शिधि न होत बिनु दाम ॥ प्रेमलता कलि नाम परम हित हेतु रहित गुणग्राम ॥ ६ ॥

पद (१०५)

सुरतिया रहु निशोच प्यारी ॥ टेक ॥

निमि बंशिन घर जन्मसमायिको, मिथिला कलिमल हारी ॥ १ ॥ जीजी सिया राम बर जीजा, अवधपुरी ससुरारी ॥ मुग्ध अवस्था तत्सुख भोगी, चिन्मय देह तुम्हारी ॥ २ ॥ सेवा लिये रमो दम्पति सँग, अष्ट कुंज मुद कारी ॥ बिबिध सुसाज अनूप सहचरीं, सजैं समय अनुसारी ॥ ३ ॥ सोतुम लखो झखोजनि सजनी, तजि कुचालि दुखदारी ॥ अनमिल रहे मिले से सब सन, नाम नेम दृढ़ धारी ॥ ४ ॥ तनधन ते सन्तन की सेवा, मनते तत्व विचारी ॥ प्रेमलता गुरुचरण कमल पर, बारबार बलिहारी ॥ ॥ ५ ॥

पद (१०६)

दरश कब दैहो प्रीतम प्यारे ॥ टेक ॥
कौल करार बिसरि कित छाये, तलफत प्राण हमारे ॥
चितवत पंथ रहत निसि बासर, बिरह अगिनि नित
जारे ॥ १ ॥ लोग कहत यह भइल बावरी, सुनत न शिख
मन वारे ॥ नींद न रैनि भूख नहिं वासर, बिसरि गयेसुख
सारे ॥ २ ॥ परत न चैन प्राण प्रीतम बिनु, टरत नहीं
दुख टारे ॥ प्रेमलता अलि कठिन प्रेम पथ, कादर
लखिहिय हारे ॥ ३ ॥

पद (१०७)

बिसरि जनि जैयो सिय बर प्यारे ॥ टेक ॥
यद्यपि कुटिल कर्मबश भर्मत, श्रीपद कमल बिसारे ॥
तदपि न आनभरोसनाथमोहिं, चिततचरिततिहारे ॥ १ ॥
प्रथम कृपा करि शरण दीन जस, तस बनिहै अबता-
रे ॥ जानहु नाथ नामकी महिमा, अगणित अधम
उधारे ॥ २ ॥ गावहिं वेद पुराण प्रतिग्या, शंकर शेष
पुकारे ॥ तजहिं न राम शरण आये पर, जो द्विज को-
टिउ मारे ॥ ३ ॥ लखहिं न जनके दोष दयानिधि, स्व-
प्नेउ उर न बिचारे ॥ साखी देत सुकन्ठ विभीषण,
कपिहिं अपन पौ हारे ॥ ४ ॥ निकट रहो बरु दूरि देह

यह, जो हरि गुरु रखवारे ॥ प्रेमलता तौ शोच न रंचौ नशहिं अमंगल भारे ॥५॥

पद (१०८)

अलि देखो लहरियाँ सरयू की ॥ टेक ॥

कलिमल हरणि सुमंगल कारी, पतियाँ मनोदिलभर जू की ॥१॥ भ्रमर तरंग उमंग अनूपम, केलि कलित सियबर जू की ॥ नीर सधीर गँभीर सुहावन, दरश परस अघहर जू की ॥२॥ शब्द सुखद अति होत मनोहर, मुरनि चलनि जलचर जू की ॥ प्रेमलता मन मुदित भयोलखि, बारि ब्रह्म छबि पर जू की ॥३॥

पद (१०९)

लखा हम अद्भुत जगत प्रपञ्च ॥ टेक ॥

देखत की चिकनाई केवल, भीतरसार न रञ्च ॥ १ ॥ कठपुतरी इव विकल दिवस निशि, नचहिं जीव बहु नञ्च ॥ मोह पासमें बँधे बखानत, हमहम हमहम हञ्च ॥२॥ नाना बिधि व्योहार रते सब, जेहि तेहि विधिधन सञ्च ॥ कटि कटि मरत जासु हित संग सो, जात न एकौ फञ्च ॥३॥ सेवत गुरु पद सन्त न सुमिरत, नाम हरण भव अञ्च ॥ धर्म विमुख नर चहत परम पद, बैठि

सु ऊँचे मञ्च ॥ ४॥ कौड़ी देत कबहुँ जो हरिहित,
तौ मणि प्रथमहि जञ्च ॥ सठ स्वारथ परि पक्क
सदा पै, परमारथ पथ कञ्च ॥५॥ पशु पच्छिन के
सरिस आचरण, शृङ्गपूँछ बिनु चञ्च प्रेमलता रचि
मानुष तनु विधि, मनहुँ लिये पुनि बञ्च ॥६॥

पद (११०)

उपासक असल राम के कोई ॥ टेक॥

बसैं बिलग मन मारिईष्ट पुर, लोक कल्पना खोई ॥
माँगि खाँय मधुकरी रटैं मुख, सिय सह आखर दोई
॥१॥ नाते नेह देह के दुख सुख, तजेउ सकल टकटोई॥
परमा नन्द कन्द लहि नामहिं, बैठे अभयसु होई॥२॥
आश न त्राश हुलाश नयो नित, भाव सु राखत गोई॥
गुरु पद कमल अमल धरि दृढ़ उर, रहत सु जहँ तहँ
सोई ॥३॥ जगत जाल कहँ लखत कालसम, प्रभुता
कहँ बदबोई॥ पूतनि भूत नारि लखि साँपिनि, तजत
अहित निज जोई॥४॥ बेद कथित नर कर्म धर्म बहु
मरे मरहिं सिर ढोई॥ प्रेमलता रटि नाम तरहिं भव,
आशक मम मल धोई ॥ ५ ॥

पद (१११)

बँधे चहैं कुशल बिषय बंधन में ॥टेक॥

हम हम करत जात निशि वासर, मोह अधिक अति तन में॥ जेन केन विधि दाम बटोरत, प्रीति न हरि हरि जन में॥१॥ बारि बीचि सम बिषय तरङ्गैं उठ्यो करैं छण छण में॥ कहत करत हमहूँ प्रभु सुमिरन, सदा निरन्तर मनमें॥२॥ घरमें बनत भजन जो सो कहुँ, कहत बनैगो बन में॥ शुधि न रहति देहौ की बैठत, जब सु युवति लरिकन में॥३॥ कथनी कथै बनाय सु कल्पित, जिमि शिशुगण फागनमें॥ बीर स्वाँग जिमि भाँड़ बनावत, लरि न सकहिं ते रण में॥४॥ कबहूँ हर्ष शोक अति कबहूँ, भोगत गृह खन खन में॥ तदपि न तजत मरत पिसि अन्तौ, सहि दुख ज्यों घुन अन में।५। भेटनकह जो प्रभुहिं गेहबसि, बकहिं सो जिमि कोउ सनमें॥ सुन्यो न देख्यो लहेउ कतहुँ कोउ, दूध अजा गर यन में॥६ मन अरुझेउ मायिक बहु धंधनि, केवल तनु अरचनमें॥ राखहिं ते न लहहिं सपनेउँ शुभ, गति जिमि मणि अहि फनमें॥७॥ करहिं न जब लगि नाम नेह में,

चातक की जिमि घनमें॥ प्रेमलता सियराम न तबलगि
मिलत कहूँ करि पन में ॥ ८॥

पद (११२)

मतनि में परम हंस मत सार ॥टेक॥

जो पै गुरुमुख होय वैष्णवी, सहित सुग्यान विचार ॥ निज
पर रूप सु बोध भली विधि, नाम रटन आधार॥ १॥
सारा सार विवेक एक रस, विमल बिराग उदार॥ निज
प्रभु मय देखहिं जड़ चेतन, रहित मोह मद मार ॥ २॥
अगुण सगुण सियरामहिं जानत, छानत बहुत न छार॥
मन बच कर्म अनन्य उपासक, मानत रस शृङ्गार ॥३॥
परब्रह्म सियराम स्वामि मम, सेवक मैं सविकार॥ भूलि
परयो प्रभु चरण मोह निधि, सह्यो सदा दुख भार ॥४॥
अपनायेउ अब मोहि कृपा करि, तोरि सकल जगजार॥
दीन सुग्यान भक्ति निज जन लखि, कीन घोर भव पार
॥५॥ अस बिचारि दृढ़ धारि अटहिं महि, प्रमुदित तजि
व्योहार॥ दशहूँ दिशि तिन कहँ मङ्गल मय, नाम निरत
उजियार ॥६॥ पहिरि गूदरी टोप परिहरे, बसन अशन
बहुखार॥ प्रेमलता बसि बिलग मधुकरी, माँगि खात
इकबार॥ ७॥

पद (११३)

सुनो अब श्री बैष्णव कर लक्षण ।। टेक ।।

श्रीसियराम अनन्य उपासक, रटत सु नाम अनुक्षण ।।
अपर देव देविन के सपनेउ चाहहिं तेप्रति पक्षन ।। १ ।।
गुरु मुख लीन जो बेष धरयो दृढ़, ततुबेत्ता सु अदक्षन ।।
देखि चलहिं महि पियहिं छानि जल, भक्षाभक्षहिं भक्षन ।। २ ।। सन्त चरण अति प्रीति दयाउर, करहिं दुखिन कर रक्षन ।। भजन भाव गुण गोइ सु राखहिं, करत कतहुं पर तक्षन ।। ३ ।। तिब्र बिराग बिशुद्ध बोधबुधि काहुइकी अस स्वच्छन ।। परम कृतग्य गहहिं सबके गुण, देखहिं पर अघ अच्छन ।। ४ ।। सबहिं मान प्रद आपु अमानी, भूलिहु कुपथ निगच्छन ।। प्रेमलताकहि कहँ लगि बरणौं, बैष्णव गुण सु बिचक्षण ।। ५ ।।

पद (११४)

चलो अब माँगि मधुकरी खैये ।। टेक ।।

दुखदाई ब्योहार शुभाशुभ, तिनके निकट न जैये ।। बैठि बिलग मन मुदित दिवसनिशि, नामकाम प्रद गैये ।। १ ।। जपतप योग यग्य ब्रत साधन, करि न कठिन दुख पैये ।। कर्म धर्म दम दया दान कलि, इन्हके कर न बिकै-

ये ॥ २ ॥ अर्चन ध्यान बिधान अगम अति, केहि विधि
चित्त थिरैये॥ सब परिहरि सियराम नामरटि, जियकी
जरनि जुड़ैये ॥ ३ ॥ वर्णन वेद नाम की महिमा, सुनि
गुनि तेहि उरलैये ॥ जेमके न विधि रटि सु तरिय भव,
काहुइ तेनडरैये॥४॥कोउ कछु कहै सहिय सबकी सब,
सबको भली मनैये ॥ लघु जीवन जग जानि चेति अब
प्रभु पद पंकज ध्यैये ॥ ५ ॥ पहिरि गूदरी टोप कोप
तजि, मन इत उत न डुलैये ॥ धामहिं बसि गाइय
सुख नामहिं यहिविधिजन्म वितैये ॥६॥ तजियन बेष
सु टेक बैष्णवी, संशै शोक नशैये ॥ प्रेमलता सिय
पिय तमाल तरु, लहि सु ललकि लपटैये ॥ ७ ॥

पद (११५)

चलो अब नाम रटैं मेरे भाई ॥टेक॥
लोकलाजतजिजातिगेहकुल, कर्म धर्म पितुमाई। साधु
भये सेयेउ बहु साधन, बिपुल दिवस मन लाई ॥ १ ॥
आराधे बहु देबि देवता, मंत्र यंत्र समुदाई ॥ शिद्ध
साधु मुनि जन सन्यासी, बन्देउ करि सेवकाई ॥ २ ॥
पढ़े पढ़ायेउ ज्ञान ध्यान बहु, बेद पुराण अघाई ॥
सीखे सुने गुणों बहु गाथा, सन्तन के ढिग जाई ॥३॥

जप तप बर्त सुतीर्थ किये बहु, खेती बनिज चेराई ॥
पहिरे भूषण बसन करे बहु, भोजन भोग लगाई ॥४॥
दिये लिये बहु दान यान बहु, चढ़े पाइ प्रभुताई ॥ खेले
खेल लखे बहु कौतुक, जबते देह सु पाई ॥५॥ सुखन
भयो अस कतहुँ लह्यो जस, नाम शरण में आई॥ किये
बहुत श्रम प्रथम नाम बिनु, बाढ़ति गई बियाई ॥६॥
सतगुरु दीनदयाल मिले मोहिं, दीन्ह सु नाम लखाई॥
कह्यो रटौ लयलाय जाइ नित, तजि जग बिषय बड़ाई
॥७॥ पैहौ परमानन्द दशौ दिशि, प्रीति प्रतीति
सुहाई॥ प्रेमलता अनयास भेद भ्रम, जैहैं बिपुल न
थाई ॥८॥

पद (११६)

सुमिरु मन सीताराम सु नाम ॥ टेक ॥

होइ अमान खोइ ममता मद, तन धन धरणी धाम ॥१॥
नाते नेहदेह के जानहु अन्त न आवत काम॥ स्वारथ के
सब मीत जगत में, मातु पिता सुत बाम ॥२॥ मैं अरु
मोर तोर तैं करि करि, बितवहिं जन्म ललाम ॥ पछि
तैहैं भरि पेट अभागे, शिर धुनि धुनि परिणाम ॥३॥
गर्भ बास में कौल कीन्ह जो, सो बिसर्यो अभिराम ।
रटिहौं नाम काम परिहरि सब, लय लगाय बशु याम

॥४॥ अजहूँ चेति बाट हरि हेरत, कृपा सिन्धु सुख धाम॥ प्रेमसुलता तीर अघ अगणित, छमि हैं सुन्दर श्याम॥५॥

पद॥११७॥

सुमिरु मन श्री सियराम उदार॥ टेक॥

देखत सुनत गुणत बिधि नाना, समुझत नाहिं गमार॥१॥ शिश्नोदर लगि बिमुख होइ सठ, सहत सदा दुख भार॥ सुत पितु मातु मीत धन दारा, मानि लिये हितकार॥२॥ ममता मोह लोभ छल सानों, भूले ज्ञान बिचार॥ सत संगति हरि भक्ति बिसारी, फसि मायिक ब्योहार॥३॥ अचल बास पियधाम काम तजि, कीजे सबसुखसार॥ प्रेमलताप्रीतमतमाल लसि, सुफलफलो प्रिय प्यार॥४॥

पद (११८)

चेतचेत मनमूढ़ सबेरो सुमिरि नाम सुखमूलारे॥ टेक॥

लख चौरासी भर्मत डोले, सहत बिबिध बिधि शूलारे॥१॥ सुर दुर्लभ मानुषतन पायो, होहु स्वामि अनुकूलारे॥ त्यागु जगतब्योहार शोक मद, विषयभोग लखि तूलारे॥२॥ जागु जागु बहु दिवस मोहनिशि, सोयो आतम भूलारे॥ छण छण छीजत जात सु आयू, समुझि फिरै क्या फूलारे॥३॥ करु सत संग साधु गुरु सेवा, जरै सक-

ल अघ शूलारे॥ रटु सियराम नाम निशि बासर, भव निधि कर जो पूलारे॥४॥ स्वर्ग जाइ सुख भोग खसै पुनि, नर्क सहै यम हूलारे॥ जन्मत मरत दुसह दुख पावत, फिरत मोह बश बूलारे॥५॥ स्वारथ रत गुरुज्ञान ध्यान गत, करत मन मुखी गूलारे॥ बंचक बेष बनाइ उदर हित, उलटो टँगि टँगि झूलारे॥६॥ धन हित धावत फिरै दशो दिशि, बनेउ भजन पथ लूलारे॥ प्रेमलता प्रभु बिमुख अभागी, फाँकी बहु बिधि धूलारे॥७॥

पद लावनी (११८)

मन रटिले सीता सीता॥ टेक॥

सुरदुर्लभमानुषतनु पायो, बड़ेभागसद ग्रन्थनि गायो, तू अचेत ह्वै भर्म भुलायो, जन्म जात सब बीता॥१॥ सुतपितुमातुभवनपरिवारा, बिछुरतमिलत, सुबिबिध प्रकारा, स्वारथ रत जग बेद उचारा, कहत भागवत गीता॥२॥ मैं अरु मोर तोर दुखदाई, माया मोह कपट कुटिलाई, काम कोह मद मान बिहाई, भजु सिय नाम समीता॥३॥ भूख प्यास भय नींद बिहारा, सब योनिन में मिलतगमारा, भजन हेतु यह नरतनुधारा, होइ सजग गहु नीता॥४॥ अबहूँमानि हारि जगभगते,

ध्यान लगाव मूढ़ सिय पगते, निकरि जाय भ्रम अघ रग रग ते, पावै सुगति अभीता ॥ ५ ॥ करु सत संग सदा सु सुख रूपा, हरण कलेश दोष दुख धूपा, बहुरि न परब घोर भवकूपा; उपजै प्रीति प्रतीता ॥ ६ ॥ यह जग सिय भृकुटि बिलाशा, थिति पालन होत बिनाशा, नित कँपत काल जेहि त्राशा, दश चारि भुवन जो जीता ॥७॥ सिय जू समदेव न दूजा, नहिं योग यग्य ब्रत पूजा, कोउ हरत न श्रम बिनु रूजा, सब निजनिज स्वारथ चीता ॥ ८ ॥ जग जन्म बादि सो लीना, सीता पद प्रेम न कीना, श्री रामहुँ जासु अधीना, बिनुकारण जग हित कीता ॥ ९ ॥ बहु निर्गण सगुण ध्यावैं, सिय मर्म न गुरु बिनु पावैं, अलि प्रेम लता समुझावै, नहिं नाम अमी रस पीता ॥१०॥

पद (१२०)

रटु नित नाम युगल भव तारण ॥टेक॥

गुरु मुख होउ बेगि तजि आलस, सुदृढ़ नेम करु धारण ॥१॥ जहँ तहँ बैठि गाल जनि मारै, बातन में कछु सारन ॥ बीती जात बयस बिनु ऐसहिं, चेतत अबहुँ गमारन ॥ २ ॥ जप तप योग जाग साधन ब्रत, बरणत बेद अपारन ॥ सेवतहू कलि देत न सुख सिधि, बिच बिच

बिघन हजारन ॥३॥ नाति अमित सकल स्वारथ रत, हेतु रहित कोउ यार न ॥ सुर मुनि शिद्ध नाग नर किन्नर, करत न बिपति निवारन ॥ ४ ॥ श्रीसिय राम नाम सम दूसर, को त्रिभुवन दुख टारन ॥ बिनु श्रम देत परम पद आदर, केवल करत उचारन ॥ ५ ॥ महा मंत्र सत कोटि सुनत जग, श्रम दायक भ्रम डारन ॥ प्रेमलता कोउ नाम सरिस कलि, सुलभ न सुखद उदार न ॥ ६ ॥

पद (१२१)

सुमिरत नाम सन्त कोउ प्यारा ॥ टेक ॥

बिबिध बाद मत मान बड़ाई, तजि जग मोह पसारा ॥ १ ॥ तन मन बचन रँगे एकै रँग, ब्रत अनन्य हिय धारा ॥ स्वप्नेउ आन उपाय न चिन्तत, तजि श्री नाम उदारा ॥ २ ॥ रटत सदा लय लाय निरन्तर, जीति मोह मद मारा ॥ प्रमुदित बैठि इकांत मारि मन, निरखत युगल विहारा ॥ ३ ॥ अशन शयन लघु बचन सुखद मृदु, बोलहि सहित बिचारा ॥ मायिक भोग बिषय इंद्रिन कर, ते सब लागहिं खारा ॥ ४ ॥ छके रहत निशि बासर तत्सुख, तन सुख जानत छारा ॥ कहनि रहनि बिपरीति लोक ते, घूमत ज्यों मतवारा ॥ ५ ॥ अभय

अरोष अमान दक्ष शुचि, भाविक बिगत बिकारा ॥ सुख सियराम नाम रस चाखत, भावत बास उजारा ॥ ६ ॥ बिचरत अवनि असंग मुदित मन, जग प्रपंच ते न्यारा ॥ नाम प्रताप घोर भव निधि ते, जिन्हि निज आतम तारा ॥ ७ ॥ अचल ज्ञान गुरु देव कृपा ते, प्रगट्यो उर अतिभारा ॥ कोटिन बिघ्न करे किन कोऊ, टरत न केहु बिधि टारा ॥ ८ ॥ कपट दंभ छल छाँड़ि प्रबल कुल, कानि लाज पट फारा ॥ प्रेमलता प्रीतम निज पाया, श्री अवधेश दुलारा ॥ ९ ॥

पद (१२२)

सुमिरत नाम निरन्तर कोई ॥ टेक ॥

ज्ञान बिचार सुदशा बिलक्षण, जेहि कर जगते होई ॥ १ ॥ निन्दा अस्तुति हर्ष शोक भय, तन सुख मायिक जोई ॥ तजत सकल व्योहार जानि जिय, आयू जात सुखोई ॥ २ ॥ देह गेह परिवार सगाई, नाते नेह सुटोई ॥ नाशवान सब स्वारथ रत निज, तजे अहित लखि सोई ॥ ३ ॥ तात मातु प्रिय सखा सनेही, सबबिधि आखर दोई ॥ स्वपने उपरत न कर्म कीच में, रहत अपनपौ गोई ॥ ४ ॥ कंचन काँच काठ ज्यों कामिनि, प्रीति प्र-

तीति निचोई ॥ परम अकाम नाम रत पंडित, पर अघ डारत धोई ॥ ५ ॥ साधन बिपुल न योगध्यान रुचि, ऋधि शिधि जानत छोई ॥ प्रेमलतासिय राम प्रेम सर, तन मन रहे समोई ॥ ६ ॥

पद गजल (१२३)

भजु मन सु बचन काय सिया राम बावरे ॥ टेक ॥ संसार घोर धार जीव डूबते परे, अज्ञान बिवश मोह त्यागि नाम नावरे ॥ १ ॥ मन भूलि भर्म जार भार शीस उठाया, दुर्लभ शरीर पाय सदा नाम गावरे ॥ २ ॥ मैं मोर तोर करत बादि तोर तू नहीं, बिनु नाम सियाराम के सुजन्म जावरे ॥ ३ ॥ तजि कर्म धर्म योग जाप नेम साधना, सिय राम नाम करु सु जाप सहित भावरे ॥ ४ ॥ धन धाम बाम सुवन जग्त मान बड़ाई, बिहाय सिया राम काम कछु न आवरे ॥ ५ ॥ परलोक लोक शरण पाल हरण शोक के, सुख धाम सिया राम से न स्वामि पावरे ॥ ६ ॥ यह नर शरीर भरत खंड पाय सुरसरी, बाजी सम्हारि खेलि अब न हारि दावरे ॥ ६ ॥ अलि प्रेमलता सुमिरु नाम बिगरिऊबने, गुरु देव के सु चर्ण कमल अमल ध्यावरे ॥ ७ ॥

पद (१२४)

नाम बिनु नहिं कोउ साथी सगो ॥ टेक ॥
स्वारथ के सब मीत लोक में, बार बार तोहि ठगो ॥
तूं भूल्यो अज्ञान मोह निशि, सोवत कबहुँ न जगो
॥१॥ सुर दुर्लभ तनु दियो तोहि जो तजि तेहि भोगनि
पगो ॥ सहत दुसह दुख उदर हेतु बहु, फिरत दशो
दिशि बगो ॥ २ ॥ कहत संत सुख सुकृत चहहु जो तौ
यहि मारग लगो ॥ रटहु नाम करि नेम सु दृढ़ उर,
सपने हूँ जनि डगो ॥ ३ ॥ नाम प्रभाव सु प्रवल चहूँ
युग, पोथिनि में जगमगो ॥ पढ़ि सुनि गुनि सोइ नाम
रटहु नित, जग प्रपंच ते भगो ॥४॥ काच किरच सम
शिधि साधन बहु, नाम अमोल सु नगो ॥ बाँधो गाँठि
प्रोढ़ जुगवहु तजि, कर्म धर्म जल झगो ॥५॥ नाम सु
रशिक अदंड अबन्धन, फिरहिं बरद जिमि दगो ॥
प्रेमलता कोउ काज सु तिन्हकर, कतहुँ न रहत खगो ६

पद गजल (१२५)

रटै जा नाम को प्यारे सदा हित जो चहै अपना
॥टेक॥ मनुष तनु बड़े भाग पाया, बिबुध दुर्लभ सु बेद
गाया, दीन हरि करि अहेतु दाया, भजो तेहि जक्त

लखि सपना ॥ १ ॥ दुखद सब नेह अरु नाते, भले के सगे स्वार्थ राते, नामबिनु काम नहीं आते, समुझि अस नाम हीं जपना ॥ २ ॥ गर्भ में कौन रहा संगी, सहे अहँ शोक बहु जंगी, सिया बर राम रण रङ्गी, छुड़ाया आय हरी तपना ॥ ३ ॥ परा अब मोह के फन्दे, बिसरि गये राम सो बन्दे, लिये बहु सोखि सुछल छंदे, शूल निज हाथनि सगु बपना ॥४॥ उठाया लोक भार कन्धे, उदर हित करै कठिन धन्धे, करत नहिं जीभ पर अन्धे, विश्व भर नाम अस्थपना ॥५॥ सुनत नहिं श्रवण सन्त बानी, बिमल जो करै क्लेश हानी, प्रेम लतिका सुमोद सानी, चहत तजि तिसय भवहिं टपना ॥ ६ ॥

पद गजल (१२६)

सुमिरि सिय राम को प्यारे उतरु भव शिन्धु के पारा ॥ टेक ॥ कौल करि क्या तू आया है, करत क्या प्रभुहिं भुलाया है, लिया तोहि बाँधि माया है, डारि सिर मोह को जारा ॥ १ ॥ यहाँ कहु कौन है तेरा, समुझि सुनि श्रवण बचन मेरा, फिरत क्यों भया बिषय चेरा, कौल कित गर्भ का टारा ॥ २ ॥ रचै लहि दाम धाम नाना, खरीदै अश्व भूमि याना, भरे उर मलिन

कपट माना, उठाया काँध लोक भारा ॥३॥ लखै नहिं
अल्प जिन्दगानी, जात ज्यों बहे पवन पानी, करत
निज करन सु सुख हानी, ईष्ट सम सेइ सुत दारा ॥ ४ ॥
बनाया मित्र शत्रु कोई, शुभा शुभ गहे कर्म दोई,
सहत दुख दुसह बिमुख होई, प्रभू ते भर्म का मारा ॥५॥
हँसत जब तब सु लाभ होवै, हानि में शिर धुनि धुनि
रोवै, जन्म सब यही भाँति खोवै, रटत नहिं नाम बेद
सारा ॥ ६ ॥ गई सो गई बयस नीकी, अजहुँ ले शरण
सिय पीकी, त्यागि अलि प्रेमलता फीकी, बासना
भोग ब्योहारा ॥ १० ॥

पद (१२७)

जेहि भाँति बनैं तेहि भाँति बनाव ॥टेक॥

बहुत दिनन ते बिगरति आई, अबकी सम्हरि सु
खेलिये दाव ॥ सुर दुर्लभ नर देह दई प्रभु, बकि बकि
बाद न ताहि नशाव ॥ १ ॥ नाहक करत बिलम्ब चेति
अब, सुनि गुनि पावन मोर सिखाव ॥ यह जग जाल
ख्याल को कौतुक, तजि तेहि साधु शरण में आव ॥२॥
पूत भूत सम बामा बाघिनि, तिनके सँग जनि नेह
बढ़ाव ॥ आदि मध्य परिणाम प्राण के, गाहक ते अस

मनहिं बुझाव ॥ ३ ॥ श्री गुरु चरण हरण दुख दारुण,
मन बच क्रम तजि भर्म सो ध्याव ॥ सन्त संग शुचि
गंग सुहावन, प्रमुदित नित तेहि मध्य नहाव ॥ ४ ॥
सुनि सिय राम कथा श्रुति नयननि, रूप सुलखि मुख
नामहिं गाव ॥ ठाटि सुबैष्ण वेष टेक धरि, जग जीवन
फल पाइ अघाव ॥ ५ ॥ गज गणिकादि अजामिल से
खल, भल गति पायेउ नाम प्रभाव ॥ रटि सोइ श्री
सियराम नाम मुख, इत उत चित सपनेउ न डुलाव
॥ ६ ॥ मान मोह मद कपट दंभ छल, परिहरि काम
कुसंग दुराव ॥ प्रेमलता गहु गुण तजि औगुण, स्वारथ
लगि काहुइ न सताव ॥ ७ ॥

पद (१२८)

भेद कोउ रशिकन को का जानें ॥ टेक ॥

मन बच कर्म रँगे सिय बर रँग, सहज स्वरूप समानें ॥
रटहिं नाम सियराम निरन्तर, बिचरहिं महि मस्तानें
॥ १ ॥ लोक वेद त्रय गुण ते न्यारे, केहि बिधि कोउ
पहिचानें ॥ प्रभु अनुकूल रहहिं सजि बैष्णव, साज
अनूप सयानें ॥ २ ॥ श्री गुरु सन लहि भाव अनूपम, भव
भ्रम भेद भुलानें ॥ तजे बाद बहु स्वाद शोक मय, भजन

जाल अरुझानें ॥३॥ कोउ मन मुख गुरु मुखी कहै कोउ, साधु असाधु बखानें ॥ सुनि न बिषाद हर्ष उर तेहि कर, लखहिं न दोष बिरानें ॥ ४ ॥ बिषई जीव पीव पद परि हरि, माया मद लपटानें ॥ हम हम करि धन धाम सम्हारत, भोगन हाथ बिकानें ॥ ५ ॥ गृही बिरक्त भक्त मत लब के, भे तजि धर्म अपानें ॥ हरि गुरु सन्त सु शास्त्र न चीन्हहिं, निज निज स्वारथ सानें ॥ ६ ॥ परमारथ पथ बिमुख मन्द मति, सठ मन मुख हठ ठानें ॥ झगरहिं मूढ़ शुद्ध सन्तन ते, बोलहिं बचन कुहानें ॥७॥ कुटिल कर्म करि करि तनु पोसहिं, पहिरि फकीरी बानें ॥ ते किमि लखहिं नाम रशिक न गति, प्रेमलता चित आनें ॥ ८ ॥

पद गजल (१२९)

भावे मुझे सिय लाल के अंगों की निकाई ॥ टेक ॥

देखी सुनी न आजुलों जोड़ी कहूँ ऐसी, अद्भुत्छटा अनूम श्याम गोर सुहाई ॥ १ ॥ नारीं नरीं सु किन्नरीं देवीं दिमाक दार, वारौं अनन्त कोटि सिया रूप पै लाई ॥२॥ तैसे कुमार कोटिन् गुण रूप आगरे, अवधेश के फर्जन्द पै दीजे सु लुटाई ॥३॥ छींटी छटाँक एक लै

छबि, शिन्धु ते लखी, फैली सोई तिहुँलोक में नर नारियाँ पाई ॥ ४॥ जब तक् लखी न नैन ते सियराम माधुरी, तब तक् बसी संसार की मन बीच लुनाई॥ ॥ सद्गुरु कृपा सु प्रेमलता पाइ रटे नाम, निरखै सदाँ दिलदार की ओ जात ना गाई ॥ ६॥

पद गजल (१३०)

रटिये सदा सिय राम ये अक्षर स्वच्छन्द हैं ॥ टेक॥ साधन बिधान हींन सुखद सर्ब गुण निधान, सुन्दर सुजान सरल सत्य हरण फन्द हैं ॥ १॥ देखे सुनें सु ग्रन्थ मंत्र यंत्र तंत्र देव, सुधर्म कर्म ज्ञान योग परे मन्द हैं ॥२॥ निजनिज सु शक्ति हींन बेद कथित सुभद जे, कलिकाल के प्रभाव भये दिन्के चन्द हैं ॥ ३ ॥ गावैं कबिन्द सन्त सेष शंभु नारदादि, बिश्राम धाम नामके गुण सुकृत कन्द हैं ॥४॥ रटतेजु नाम सर्ब काम तजि सु लय लगाय, पाते सु तिहूँलोकमें सज्जनअनन्द हैं॥५॥ बिचरैं स्वतंत्र अवनि नाम रशिकजन् मगन्, अभिमतसु काज मन्के होते न बन्द हैं ॥ ६॥ अवलंब एक प्रेमलता नाम का लिया, जिसने सोई सियराम के आये पसन्द हैं ॥

जय सियराम जय जय सियराम

पद (१३१)

रटै तब ललकि ललकि सियराम ॥टेक॥

गुरु मुखता जब प्रगट होइ उर, नशहिं मोह मद काम ॥ करहिं समर्पण गुरुहिं सर्व तजि, मनमुखता दुख धाम ॥ १ ॥ पाहि पाहि कहि त्राहि त्राहि प्रभु, श्री गुरु चरण ललाम ॥ गहि सेवैं रहि निकट दीन होइ, मन बच क्रम बशु याम ॥२॥ तत्त्व बेत्ता गुरु देव सुरुचि लखि, देइँ कृपा करि नाम ॥ जेहि बिधि कहहिं रटत तेहि तेहि बिधि, जरहिं न पुनि भव घाम ॥ ३ ॥ पावहिं परमानन्द अनूपम, सिय बर सुन्दर श्याम ॥ मंगल मोद दशोदिशि तेहि कहँ, स्वबश होइ मन बाम ॥ ४ ॥ ज्ञान बिचार फुरहिं नित नूतन, सुख सुलहैं सब ठाम ॥ प्रेमलता श्री गुरु कृपाल कर, कंज बिकै बिनु दाम ॥५॥

पद (१३२)

रटहु सिय राम ललकि ललकारि ॥ टेक ॥

गुरु मुख होउ त्यागि मन मुखतहिं, राग रोष भ्रम टारि ॥ परिहरि बहु संकल्प बिकल्पनि, कामादिक रिपु मारि ॥ १ ॥ श्रीगुरु बचन सरल शुचि सुख प्रद, सत्य सु सुनि उर धारि ॥ रहि अनुकूल चरण सुखमूलनि,

सेइ निजातम तारि ॥ २ ॥ रटहिं रटावहिं नाम सु गुरु सोइ, तिन्ह पर तन मन बारि ॥ टारे टरिय न करिय कहहिं सोइ, सहि शिर मारिउ गारि ॥ ३ ॥ सकल धर्म मय नाम जानि जिय, गावत बेद प्रचारि ॥ रटु रसना लय लाय निरन्तर, बादि जनमु जनि हारि ॥ ४ ॥ सुनि सुनाय जेहि अधम गये बहु, प्रभु पुर पातक जारि ॥ नाम प्रभाव प्रगट चहुँ युगमें, देखु सु नयन उघारि ॥ ५ ॥ बालमीकि भये ब्रह्म नाम रटि, अजर अमर त्रिपुरारि ॥ प्रेम लता पायो परमानँद, नाम नेम अनुसारि ॥ ६ ॥

पद (१३३)

चहत मोहिं मन प्रभु बिमुख करयो ॥ टेक ॥

परक्यो रहत बिषय भोगनि ते, कबहुँ न पेट भरयो ॥ जानि जानि अघ करत कुटिल अस, सहज स्वभाव परयो ॥ १ ॥ बिनु कारण पर द्रोह अनल में, निशि दिन जात जरयो ॥ कामादिक निसंग पुनि अतिसय, राखत प्रेम खरयो ॥ २ ॥ जो वे कहत, करत यह सोइ ठग, रहत कुपथ दिशि ढरयो ॥ भजन करत अलसात कुटिल अति, गर्भ कौल परि हरयो ॥ ३ ॥ शिश्नोदर को भयो सु चेरो, स्वारथ दृढ़ उर धरयो ॥ समुझायो बहु ज्ञानध्या

न कहि, पै निज टेक न टर्यो॥४॥ बिबिध उपाय करत तन सुख हित, साहब डर न डर्यौ॥ करत न कान संत गुरु शुचि शिख, दैहै भव न तर्यो॥५॥ हुलसत अनुचित करत मरत जब, शुभ कृत कहुँ अनु सर्यो॥ प्रेमलतहि सिय पाहि चाहि अब, नामौ देत न रर्यो॥६॥

पद (.१३४)

लखी सिय प्यारे की अलकैं॥ टेक॥

तबते भइ बौरी सी डोलौं, परत नहीं पलकैं॥१॥ चिकनारी कारी नागिनि सी, झल झल झल झलकैं॥ कोमल कुटिल कहर की पुरियाँ, हलर हलर हलकैं॥२॥ काननि ते प्यारी पिय दोउ दिशि, कल कटि लगि डलकैं॥ पटतर पावन मिल तिन जोग सु, खोजि फिरी खलकैं॥३॥ देखत हू पुनि पुनि देखन हित, ललकि ललकि ललकैं॥ प्रेमलता चख फँसेउ सु अलकनि, बिलगत छण दलकैं॥४॥

पद (१३५)

कठिन षट कामादिक रिपु भारी॥ टेक॥

छिपे रहत जिमि पय मधि माखन, काया नगर मझारी॥ लखि न परत अति झीन पीन पै, बिनु कारण

अपकारी ॥ १ ॥ सन्तन हूँ कहँ नाँच नचावत, प्रगटि सु समय बिचारी ॥ अपर जीव लखि पीव बिमुख सब, स्ववश किये नर नारी ॥२॥ धर्म कर्म गुण ग्यानादिक शुभ, साधन सुखद अपारी ॥ नाश किये सब के सब सुकृत पाप प्रंपच पसारी ॥ ३ ॥ श्री मन्माया कटक बिकट के, सेनप रहत अगारी ॥ अतिसय प्रबल प्रचंड प्रतापी, बिश्व गरद करि डारी ॥४॥ टारे टरत न मरत सु मारे, हारे बिपुल खिलारी ॥ सनमुख होइ सु कवन बीर जग, जड़ चेतन तनु धारी ॥ ५ ॥ नारदादि मुनि मनन शील बहु, माया कटक निहारी ॥ थर थर कँपहिं सिद्ध सुर ईश्वर, ब्रह्मादिक त्रिपुरारी ॥ ६ ॥ उबरत सो जेहि कृपा दृष्टि करि, हेरहिं सिय सुकुमारी ॥ प्रेमलता निज नाम रटाइ सु, लेनि जनन निरुआरी ॥७॥

पद (१३६)

बोलु सिय राम नाम दिल खोलि ॥ टेक ॥

अभय होउ उर धोउ खोउ जनि, बयस सु ऐस अमोलि ॥ १ ॥ सारा सार सुनत नित कानन, गुनत न समुझि ठठोलि ॥ नाम रटन को कौल कीन तेहि बिसरि गई मति भोलि ॥ २ ॥ अजहूँ सजि बिश्वास नाम रटु,

ललकि न इत उत डोलि ॥ सुधा सरिस नर तनु यह पायो, तेहि महँ बिष जनि घोलि ॥ ३ ॥ नाम उचारण परम भजन कलि, बदत बेद सब पोलि ॥ प्रेमलता कहु सार लह्यो केहि, कर्म कदलि तरु छोलि ॥ ४ ॥

पद (१३७)

भजे बिनु सिय पद नहिं कल्याण ॥ टेक ॥

साधिय कोटिन योग जज्ञ ब्रत, कर्म धर्म दम दान ॥ नाना देव अराधि मरिय बरु, करि करि अर्चन ध्यान ॥ १ ॥ सिव बिरंचि सुर मुनि सन कादिक, शुचि जन साधु सुजान ॥ सेवहिं सिय पद कमल भृङ्ग इव, निशि दिन तजि मद मान ॥ २ ॥ जनक ललिहिं तजि चहत भये जे, मुक्त सु प्रभु प्रिय प्राण ॥ ते मति मन्द निरय गामी शठ, आतम हन अज्ञान ॥ ३ ॥ मन बच कर्म करहिं जे शुभ कृत, सिय पद बिमुख मलान ॥ फलत न सो श्रुति बदत द्रवत नहिं, स्वप्नेउँ श्री भगवान ॥ ४ ॥ पूरण ब्रह्म परेश पुरातन, गावत जिनहिं पुराण ॥ जुगवत रहत सदा सो सिय रुख, कृपा कोर मुशिकान ॥ ५ ॥ अस बिचारि जे तज्ञ रशिक तजि, संशय शोक सयान ॥ गुरु सिख मानि शरण सिय, जूके, भयेउ बजाइ निशान ॥ ६ ॥

सहचरि भाव धारि दृढ़ सुमिरत, नाम करत गुण गान ॥ प्रेमलता रक्षक सिय स्वामिनि, राम प्रिया सुख खान ॥ ७ ॥

पद (१३८)

कहल अब कब मनिहै मन मोर ॥ टेक ॥

साधु स्वभाव सुधरि दृढ़ रटु सिय, राम नाम चित चोर ॥ श्री सद गुरु पद कमल अमल उर, ध्याव सदा हित तोर ॥ १ ॥ सन्त सजातिनि संग निवसि सुख, तरु भव सागर घोर ॥ बादि गये बहु जन्म बीति बर, भोगत भोग कठोर ॥ २ ॥ सुर दुर्लभ तनु दीन दयानिधि, कीन कृपा नहिं थोर ॥ तेहि प्रभु कहँ भजु त्यागि कपट छल, सुख पैहै चहुँ ओर ॥ ३ ॥ पूरण ब्रह्म ईश ईशन के, त्रिभुवन बन्दी छोर ॥ माया गुण गोतीत धाम जेहि, होत न जहँ निशि भोर ॥ ४ ॥ श्री मिथिलेश लली सँग बिहरत, तहँ नित नृपति किशोर ॥ दम्पति रूप अनूप सु सेवति, प्रमदा अमित करोर ॥ ५ ॥ चिन्तन करु सोइ चरित मोद प्रद, सुनि गुनि मोर निहोर ॥ प्रेमलता नियरान चौथपन, सहत कठिन झकझोर ॥ ६ ॥

पद (१३९)

लुटै सिय राम नाम धन लूटि ॥ टेक ॥

लूटत जे लूट्यो जे लुटिहैं, जन धन नाम अखूटि॥ साँचे साहु कहत श्रुति सोइ जग, आवति कबहुँ न टूटि ॥१॥ लोक लाज तजि स्वर्ग नर्क डर, नाम सुधन नित जूटि ॥ पछितैहै नतु अन्त अभागी, जब तनु जैहै छूटि ॥२॥ संच्यो जेहि न नाम धन अनुपम, भाग गये तेहि फूटि॥ बकि बकि बाद. अमर दुर्लभ बपु, नाशत भूसहिं कूटि ॥ ३ ॥ खीजत अति परि जाय जो कबहूँ, ब्योहारनि में तूटि ॥ प्रेमलता बिसरी मूलइते, नाम सजीवन बूटि ॥ ४ ॥

पद (१४०)

सन्तन नाम की लूट मचाई ॥ टेक ॥

धाम काम बनिता सुत बन्धन, मातु पिता हित भाई॥ जगत जाल दुख रूप जानि जिय, मायिक सुख बिबुधाई॥ १॥ परि हरि सकल सु राम नाम धन, लूटत हिय हरषाई ॥ सुनत न लखत दोष काहुइ के, सम दरसी अधिकाई ॥ २ ॥ नाम रटन में निपुण दिवस निशि, रटहि लल कि लय लाई॥ कोउ कछु बकै झकै बरु कोउ कछु, दुखवै कोउ दुख दाई ॥३॥ कोउ कह रटो नाम मन में जनि, मरहु वृथा चिचियाई ॥ रीझत लखि जियकी प्रभु जीमें, सीता पति रघुराई ॥४॥ कोउ कह भज धातू

सेवा है, बदत बेद बुध गाई ॥ कोउ कह कर्म किये बिनु कहुँ कोउ, पायेउ सुमति सुहाई ॥ ५ ॥ तिन्ह कर कथन न सुनहिं करहिं जे, श्री सियराम रटाई ॥ चहुँयुग तीनि काल तिहुँ लोकनि, नाम कथा रहि छाई ॥ ६ ॥ पढ़ी सुनी समुझी जिन्ह गुरु मुख, तुलसि दास कबिताई ॥ प्रभु प्रशाद सिय राम नाम की, सो कछु महिमा पाई ॥ ७ ॥ नाम प्रसाद तरे अधमाधम, गणिका सदन कसाई ॥ यमन अजामिल गीध व्याध खल, गज ग्रह मीरा बाई ॥ ८ ॥ राम नाम महिमा की सकत न, रामहुँ करि सुबड़ाई ॥ बिषयिनि कहँ अति अगम बिचारहु, मति भोगनि अरुझाई ॥ ९ ॥ नाम प्रभाव जानि जन साधन, ताखे धरे उठाई । प्रेमलता संतन की महिमा तेहिते बरणि न जाई ॥ १० ॥

पद (१४१)

हिय बाँकी अदाँ दरशाया करो ॥ टेक ॥

धरि धनु बाण प्राण प्रीतम मम, दोषों को दूरि भगाया करो ॥ अघ औगुण की खानि जानि मोहिं, प्यारे न ताया तपाया करो ॥ १ ॥ सिय नाते नातौ पिय तुमते, बिनती सुनि गुणि दाया करो ॥ हे चित चोर हमहिं

मिथिलहिं तजि, अन्त न आया जाया करो ॥ २ ॥
श्रीमिथिलेश लली सँग हिलिमिलि, अलियन के
मन भाया करो ॥ कंचन बन कमला तट कुञ्जनि,
नित नव मौज उड़ाया करो ॥ ३ ॥ कोमल महि
बिचरहु सर सरित सु, भरेउ बिमल नित न्हाया करो॥
दधि चूरा भूपोदनादि बहु, अशन अमी सम खाया
करो ॥ ४ ॥ अस सुख कतहुँ न पैहौ लालन, यह निज
मनहि बुझाया करो॥ सारिन की गारिन सुनि सपनेउ,
रोष न चित मित लाया करो ॥ ५ ॥ जानहु तुम सिय
स्वामिनि के गुण, कहि कहि हमहिं सुनाया करो॥
जेहिविधि तुम्ह रीझहु दोउ सियपिय, सोइ करि कृपा
बताया करो ॥ ६ ॥ हम अबला अज्ञान अलायक, प्रभु
सब लायक भाया करो ॥ अलियन की भलि गलियन
बनि ठनि, रशिक राज नित आया करो ॥ ७ ॥ चातक
चख चकोर पिय तिन्हि कहँ, स्वाती छबि सु पियाया
करो ॥ रस भरि चितवन हेरि हेरि हँसि, कछु न कछू
बराया करो ॥ ८ ॥ और कछू चाहत नहिं तुमते, मन्द
मन्दमुशि काया करो॥ प्रेमलता ससुरारि निबसि
सुख, अनुपम तुरँग न चाया करो ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सासु ससुर कर नेह अति, तुमपर प्यारे लाल ॥
प्रेमलता ससुरारि रहि, कीजिये तिन्हैं निहाल ॥१॥
प्रेम भरे परि कर बचन, सुनि हिय हरषे राम ॥
प्रेमलता जैहौं न कहुँ, तजि मिथिला निज धाम ॥ २॥

पद (१४२)

रघुबर अति बिचित्र तब माया ॥टेक॥

सुर नर मुनि सचराचर जेहि बश, नाँचत नाँच निकाया ॥ बिधि हरि हरहु सभीत रहहिं नित, कालहु जो जग खाया॥१॥बरणत शेष गणेश महात्तम, बेद पुराणनि गाया ॥ परम अगाध अनूप चरित जेहि, पार न कहुँ कोउ पाया॥२॥सुरिय नरिय निशिचरिय सु माया सब बिधि अगम अथाया॥प्रभुमाया सब के उर प्रेरक, करति सदा मन भाया ॥ ३॥ छणमें अमित लोक रचि प्रगटति, बिनु श्रम परम सुहाया॥ नाना बिधि रस भोग सुभा शुभ, गुण मय लै सु बनाया॥ ४ ॥ कर्म धर्म जप जोग यज्ञ व्रत, स्वर्ग नर्क प्रगटाया ॥ धाम सु क्षेत्र तीर्थ साधन बहु, जाल बिरचि जग छाया ॥ ५ ॥ बिबिधि पदारथ अशन बसन बर, भूषण भूरि गढ़ाया

बिबिध बिटप फल फूल मूल दल, धन सु धान उपजाया ॥ ६ ॥ नाते नेह गेह ममता मंद, तेहि महँ जिव अरुझाया ॥ हम हम करत जरत जन तिहुँ ज्वर, फिरत दशो दिशि धाया ॥ ७ ॥ भोगत भोग गये चलि तिहुँपन, कबहुँ न पेट अघाया ॥ समुझि न परत झूठ का साँचहिं, निज पर रूप भुलाया ॥ ८ ॥ भव बिलाश लखि लपटि रह्यो मन, धंधा काँध उठाया ॥ छूटै नाथ कृपाल करहु जब, हेतु रहित तुम्ह दाया ॥ ९ ॥ रटवाइय सिय सहित नाम निज, गुणातीत रघुराया ॥ बिघ्न बराय जराय शुभाऽशुभ कर्म शरण में आया ॥१०॥ शुभ साधन श्रुति कथित कीन बहु, तीर्थन तनु अन्हवाया ॥ सुख न लह्यो कहुँ नाथ नाम बिनु, बादि सु जन्म नशाया ॥ ११ ॥ श्री सियराम नाम निर्मायक, रटि गुरु देव बताया ॥ गहु सियलाल शरण दृढ़ मन, क्रम, वचन सुभाव सचाया ॥ १२ ॥

पद गजल (१४३)

उलटा सबी करतार कार बार कर दिया ॥टेक॥

जरता रहा त्रयताप ते गृह कूप में परा, सीतल् किया सब तौर से मन मोद भर दिया ॥ जाता रहा करिकर्म

कुटिल घोर नर्क को, बदले में तिसे रहने को अपना सुघर दिया ॥ २ ॥ बक्ता रहा बक बाद बादि जिस जबान से, तिस्पै कृपानिधान नें निज नाम धर दिया ॥ ३ ॥ फिरता रहा संसार में टुकड़ों के वास्ते, तिस्को बिपुल अशन् बसन् जेवर सु जर दिया ॥ ४ ॥ चलता रहा हठि मन्मुखी प्रतिकूल पंथ जो, दिखलाय तिसे गुरुमुखी सुन्दर डगर दिया ॥६॥ देनी थी उभय लोक में जिस्को कड़ी सजा, अपनाय तिसै आप अभय दान बर दिया ॥७॥ जो जो रहे अपकार सो उपकार गिन् लिये, बदले प्रभू अपमान के सु मान तर दिया ॥८॥ किसमुह से करै आरजू अलि प्रेमलता नाथ, बोई रही बिष बाटिका अमिफल सु फरदिया ॥ ९ ॥

पद (१४४)

अगम अति सिय सिय बरके ख्याल ॥टेक॥

नेति नेति कहि निगम बखानत, इक रस जो तिहुँ काल ॥ १ ॥ जोगी जपी तपी संन्यासी, कबि काबिद बक ब्याल ॥ जात न जे तेहि सर बिहरत जहँ, रशिक सु संत मराल ॥ २ ॥ बिधि हरि हर सुर शिद्ध नाग मुनि, सकल शृष्टि बश काल ।। नाँचहिं नट मर्कट इव

अरुझे, सब सिय माया जाल ॥३॥ कर्म धर्म गुण ज्ञान ध्यान रत, जे जन जग कंगाल ॥ पावहिं ते सपनेउँ न देश वह, रशिकन को सु रशाल ॥४॥ रटहिं सु जे सियराम काम तरु, डारि गरे बिच माल ॥ छापि भुजनि धनु बान स भूषण, ऊर्ध पुन्ड दै भाल ॥५॥ प्रीति मान शुचि सन्त शनेही, श्री सत गुरु के लाल ॥ तिन्हैं सुलभ सब भाँति सुखद प्रभु, लीला करन निहाल ॥६॥ त्रिगुणातीत पतीत उधारण, कारण परणत पाल ॥ प्रेमलता के प्राण नाथ दोउ, रघुरनन्दन सिय बाल ॥७॥

पद (१४५)

दीन्ह सब सुख साधुनि भगवान ॥टेक॥

रुचि अनुकूल चरण वर वाहन, चलहिं चालमस्तान॥ तस सेवक दोउ हाथ दिये प्रभु, सुन्दर सब सुख दान॥१॥ सारा सार लखन को लोचन, चरित सुनन हित कान॥ चन्दनादि निज माल प्रशादहिं, सूँघन हित दिये घ्रान॥२॥ मुख सु दियो निज मुख प्रशाद वर, भक्षण बिबिधि विधान॥ रसना नाम रटन कारण अरु, करन सु गुणगण गान॥३॥ नरतनु जों अति अगम सुरन कहँ,

सब साधन गुण खान॥ दियेउ अनूपम अमल बोध उर, भगति बिचार सुग्यान॥ ४॥ निर्बन्धन महि अटन सु चहुँ फल, करतल दशहु दिशान॥ बिनु पहिचान जात जहँ पावत, सन्त सु आदर मान॥ सर्बस दीन सु सन्तन कहँ प्रभु, गावत बेद पुराण॥ आपहुँ रहत सदा तिन्हि के बश, सेवत ज्यों तनु प्राण॥६॥ करत कहत सोइ सन्त शनेही, प्रिय न सु तिन्हि सम आन॥ प्रेमलता अस जानि सन्त पद, सेवहु नित कल्याण॥ ७॥

पद (१४६)

देउ प्रभु सन्तन बिमल बिचार॥ टेक॥

बिरचेउ अङ्गबेष बैष्णव को, सब बिधि अमल उदार॥ तजेउ मातु पितु सदन शनेही, लीन सु शरण तुम्हार॥ १॥ फिरि २ फसत असत भोगनि बन, डसत मोह मद मार॥ ठगत अबोध जानि दंभादिक, मायिक कपटागार॥२॥ ऊपर ते शुभ यत्न करत बहु, उर ग्रह परम अँधार॥ बसहिं तहाँ बहु चोर मोर प्रभु, केहि बिधि होइ उबार॥३॥ करिय सु कृपा प्रकाश नशहिं तम, कठिन अमंगल भार॥ राखहु नाथ लाज निज पन को, सिय बल्लभ सुख सार॥४॥ सन्त नाम जस बेष

चहिय तस, करनी गुण व्योहार ॥ जो प्रतिकूल शूल
सम तौ प्रभु, साधु सो जगत मझार ॥ ५ ॥ एक अबुध
चलि कुपथ करहिं कछु, परबशहू कृत खार ॥ लाजहिं
तौ शुचि सन्त बेष सब, बिमुख उड़ावहिं छार ॥ ६ ॥
अच्युत कुलसु अबोध नाथ तब, पतितन कर निस्तार ॥
प्रेमलता केहि भाँति सु ह्वै है, यह उर सोच अपार ॥ ७ ॥

पद (१४७)

जीव ते ब्रह्म बना सन्यासी ॥ टेक ॥
बिसरि गयो सब कौल भर्ग को, परि माया की फाँसी ॥
बिरचत महल अटारी ऊँची, राखत तेहि महँ दासी
॥ १ ॥ तज्यो जनेऊ शिखा कटाई; द्वैत बुद्धि नहिं नाशी ॥
भगवाँ पहिरि दंडकर धारयो, मन क्रम बचन बिलासी
॥ २ ॥ बिमल बिबेक बिहीन बादरत, चाहत मुक्ति सु
खासी ॥ लोभ मोह वश नाँच नँचत नित, होत न कबहुँ
सुपासी ॥ ३ ॥ निर्गुण भुस कूटत निशि बासर, तजि
सर्गुण सुख रासी ॥ परि हरि जिमि कोउ बिपुल पदारथ,
चाटै पालरि बासी ॥ ४ ॥ प्रभु दासनि सों अटपट बोलत,
को जानै का भासी ॥ जिन्हकी महिमा अगम कहहिं
श्रुति, करत सो तिन्ह की हाँसी ॥ ५ ॥ भक्ति प्रधान

ज्ञान तेहि आश्रित, बरणत सुमति प्रकाशी। प्रेमलता येहि भावहीन जे, ते नर आतम ज्ञाशी ॥ ६ ॥

पद (१४८)

बता तू कबते ब्रह्म बना ॥ टेक ॥

झूलत रह्यो गर्भ में उलटो, मल मूत्रनि अँग सना ॥ इक इक छणहिं कलप समबितयो, पायो अति दुख घना ॥ १ ॥ दीन मलीन खीन परबश तनु, परयो जहाँ अनमना ॥ तहँ न रह्यो अस ज्ञान ध्यान तब, रंचहु ब्रह्म पना ॥ २ ॥ रोवत जात रहे निशि बासर, रक्षक नहिं कोउ जना ॥ कीन्ह सहाय तहाँ को तेरी, को वह कष्ट हना ॥ ३ ॥ तेहि प्रभु को कर याद मन्द मति, तजि यह मत जो ठना जीव न होइ ब्रह्म बातनि ते, जिमि सुमेर रज कना ॥ ४ ॥ जिमि कोउ रंक चहत सुर भोजन, मिलत न मागे चना ॥ तिमि अति अगम सु ब्रह्म होन हित, मूढ़ मनोरथ भना ॥ ५ ॥ इंद्रिनि बिबश बिकल नित दश दिशि, डोलत ऐंचा तना ॥ कुटिल कर्म करि २ तनु पोषत, तकत पराई धना ॥ ६ ॥ भजु सिय राम नाम तरु भवनिधि, सुनि गुणि प्रभु गुण गना ॥ प्रेमलता पिटि है नतु यमपुर, पनहिन शिर छण छना ॥ ७ ॥

पद (१४८)

चलो चलि रटत सदा सिय राम ॥ टेक ॥

यह संसार असार बगीचा, माया मय दुख धाम ॥ ममता कोट खिच्यो चहुँ दिशि ते, अति बिस्तरित ललाम ॥ १ ॥ मोहादिक नव बिटप रंग बहु, बेलि सु अनुपम बाम ॥ पुत्रादिक बहु सुमन सुहावन, फल कटु केवल काम ॥ २ ॥ कुंज पुंज शुभ अशुभ बासना, मोहत मनहिं तमाम ॥ क्यारी कर्म कला फुलवारी, फूलि रही सब ठाम ॥ ३ ॥ त्रिष्णा त्रिबिधि बयारि सु छाया, नींद सुप्रद बिश्राम ॥ भोग बिलास बिहार बहार सु, बिबिधि भाँति चित्राम ॥ ४ ॥ माली काल कराल करत रहे, काट छाँट बशु याम ॥ अरुझ्यो जीव पथिक लखि रचना, बिसरि गयो सिय श्याम ॥ ५ ॥ धर्म द्वार तहँ लगे भर्म पट, खुलै रटै जब नाम ॥ जगत बाग ते निकसे बिनु नहिं मिलत सु प्रभु गुण ग्राम ॥ ६ ॥ स्वप्नेउँ नहिं यहि बाग परम सुख, विकयो जहाँ बिनु दाम ॥ प्रेमलता प्रिय अब न बिलम करु, छण छण छीजत चाम ॥ ७ ॥

पद (१५०)

देह के दुख सुख जात न गनें ॥ टेक ॥

आवत सुख जब मगन होत अति, अकड़ि चलत बनि बनें ॥ चाहत सदा सुखहि सबही विधि, ऊँच नीच सब जनें ॥ १ ॥ दुख आवत तब दूर होन हित, करत उपाय घनें ॥ हास विलाश हुलाश भुलावत, होइ बैठत अनमनें ॥ २ ॥ ज्ञान मान सुख शोक गनहिं सम, जे सियबर सुख सनें ॥ अज्ञ दुखी दुख में अति सुख में, बिबिधि बितान ठनें ॥३॥ दुख सुख पाप पुन्य माया कृत, बिपुल न जात भनें ॥ प्रगटत दुरत रहत रबि निशि सम, समय समय अपने ॥ ४ ॥ फुर भासत जग भोग रोग तिन्हि, जे फुर जानत तनें ॥ गुरु मुख तजि दुख सुख मय तिहुँ बपु, रटत नाम छण छनें ॥५॥ गुणातीत तनु पाय सन्त भव, जीति नाम बलरनें ॥ प्रेमलता तिहुँकाल एक रस, रहत चबाय सुचनें ॥६॥

पद ॥ १५१ ॥

रटत सिय राम गये दुख दूर ॥ टेक ॥

रहत न लेश कलेश देश चहुँ, पावश में जिमि धूर ॥ नाशहिं मोह तिमिर तिमि बिनु श्रम, उदय होत जब सूर ॥ संशय शोक बिलोकि जात जिमि, सत गुरु गुण भरि पूर ॥ अभिमानिन को गरत धरम पुर, जिमि

सब गरब गरूर ॥२॥ भाजत भभरि निरखि जिमि निशिचर, हनुमत लाल लँगूर ॥ हाँक सुनत तिमि श्रवण मान मद, होत खलन के चूर ॥३॥ प्राकृत नगर नारि जिमि जाइ न, नाँचहिं जहँ नव हूर ॥ खोजेहु मिलत अनीति न जेहि जिमि, न्यायी नृपति हजूर ॥४॥ फुरत न जिमि सर्वज्ञ स्वामि ढिग, सेवक फैल फतूर ॥ ऋतु बसन्त जिमि पाइ पात पकि, झरहिं बात सँग भूर ॥५॥ श्री सियराम नाम सब सुख निधि, परम सजीवन सूर ॥ रटिय जानि अस अवसि परै लखि, सिय रघुनन्दन नूर ॥६॥ चहुँ युग तीनि काल तिहुँ लोकनि, नाम प्रभाव सुफूर ॥ जाने बिनु साधत बहुसाधन, प्रेमलता नर कूर ॥७॥ दोहा—नाम रटहिं रटवावहीं, भावहिं सबके हीय ॥ प्रेमलता शुचिसन्तते, पावहिं श्री सिय पीय ॥१॥

पद गजल ॥१५२॥

डारी गरे सिय राम के जयमाल सुहाई ॥टेक॥

हरखे बिलोकि देव मनुज मुनि सु सिद्ध सन्त, जय जय पुकारि दुन्दुभी बहु भाँति बजाई ॥१॥ बर्षैं प्रशून माल विबुध किन्नरी नाचैं, बाँचैं सुबिप्र वेद भेद भाव बताई ॥२॥ जोरी अनूप गोर श्याम सीय राम की, निरखैं

खड़े नर नारियाँ छबि जाइ न गाई ॥३॥ गावैं सुगीत भामिनी बहु काम कामिनी, लाजैं अपार हेरि सियाराम निकाई ॥४॥ अद्भुत सजे शृङ्गार सियाराम बेदिका, ठाढ़े उतारैं आरती अलि यूथ बनाई ॥५॥ सियराम रूप भूप जनक रानि सुनयना, लखि के खुलाय कोष दियो द्रव्य लुटाई ॥ ६ ॥ नभ नगर यही प्रेमलता शब्द हो रहा, जीवो सुखी सियराम की जोरी सु सदाई

पद ॥ १५३ ॥

डरो जनि साँची कहो चहुँ भैया ॥ टेक ॥

लाज को काज यहाँ नहिं लालन, यह तुम्हरी ससुरैया ॥ १ ॥ द्वै गोरे द्वै श्याम सलोने, जोरी अति सुखदैया। अचरज लागत हमहिं लाल जी, गोर बरण पितु मैया ॥२॥ कारण कवन बखानि कहहु जो, जानहु तपनि बुझैया ॥ तुम बिनु यह सन्देह छबीले, दूसर नाहिं नशैया ॥ ३ ॥ पति बरता तुम्हरी सब माता, त्रिभुवन में यश छैया ॥ श्यामल गोर सुवन कस आये, है कछु अवसि खुटैया ॥ ४ ॥ सुनि सरहज सारिन की बातें, रघुबर मृदु सुशुकैया ॥ प्रेमलता लखि छबि तन मन धन वारि, सुलीन्ह बलैया ॥५॥

पद (१५४)

सिया जू चलीं डारि जय माल ॥टेक॥

पूरण काम भये रघुनन्दन, मिट्यो हिये को शाल ॥१॥
ठाढ़े मुदित बेदिका पर जनु, रबि रजनी को काल ॥
बिकसेउ निरखि साधु मुख पङ्कज, सकुचेउ कुमुद
भुआल ॥२॥ बरषि सुमन सुर मुनि मन हरषहिं, नाचहिं
गावहिं बाल ॥ बाजहिं बिपुल निशान नगर नभ, झाँझ
मृदङ्ग सु ताल ॥३॥ मङ्गल मोद उछाह समात न, त्रिभु-
वन आनँद जाल ॥ अभिमत दान देत सब लहि लहि,
याचक भे दिशि पाल ॥४॥ प्रेमलता मिथिला पुर
बासिनि, सजि सजि कंचन थाल ॥ करहिं आरती
आरत हर की बारि सुमणि गण लाल ॥५॥

पद (१५५)

बना बने श्याम बनी सिय गोरी ॥ टेक ॥

सियसी सिया राम से रामहिं, त्रिभुवन इन्ह सम को री
॥ १ ॥ नखशिख अङ्ग अनूप सुहावन, मन भावन बर
जोरी ॥ अवलोकहु भरि नयन युगल छबि, लोक लाज
त्रिण तोरी ॥ २ ॥ ब्याह साज दोउ सजैं लजैं लखि,
रति पति अमित करोरी ॥ छबि शृङ्गार सोह जनु तनु

धरि, सुखमा सुखद अथोरी ॥ ३ ॥ बिधि हरिहर सुर शिद्ध नाग मुनि, मति गति लखि भइ भोरी ॥ परम अलौकिक कुवँरि कुवँर सखि, लीन सुचित बित चोरी ॥ ४ ॥ धनि मिथिला मिथिलेश सुनैना, सकल सु सुकृत बटोरी ॥ विरचेउ जो सो धनि धनि हम तुम, जिन्ह यह सुखमति बोरी ॥ ५ ॥ प्रेमलता अलि याचहिं विधि सन, यह बर बर भरि झोरी ॥ युग युग जियो सुखी रघुनन्दन, श्रीसिय स्वामिनि मोरी ॥ ६ ॥

पद (१५६)

भमरिया लेत सिया रघुबीर ॥ टेक ॥

बेद विधान सु बेद बखानत, धरि बर बिप्र सरीर ॥ १ ॥ बिबिधि बेषधरि बिबुध नाग मुनि, पहिरि सुभूषण चीर ॥ सखिन सहित सु जनक भवन में, जुरेउ भई अति भीर ॥ २ ॥ सब कर नैन मराल पियहिं शुचि, सिय रघुबर छबि छीर ॥ मायिक कर्म ज्ञान गाथा लखि, अगुन तज्यो सो नीर ॥ ३ ॥ श्रीसियराम बिबाह अनूपम, हरण हिये की पीर ॥ अवलोकहिं तजि सकल अपन पौ, इकटक मन करि थीर ॥ ४ ॥ हरषित नाँचहिं गाय गाय गुण, रटहिं नाम ज्यों कीर ॥ बिधि सन मागहिं बसहिं

सदाहम, श्रीसियराम सु तीर ॥ ५ ॥ बाजत बाजन बिपुल सु कंकन, पग नूपुर मंजीर ॥ नभ अरु नगर सु मच्यो कुलाहल, बहत सु सुखद समीर ॥ ६ ॥ जिन्ह न लख्यो सिय व्याह महोत्सव, प्रेमलता मति धीर ॥ श्रीमिथिला पुर प्रगट सु तिन्ह की, फूटिगई तकदीर ॥ ७ ॥

पद (१५७)

मण्डप तर राजत सिय रघुनाथ ॥ टेक ॥

त्रिभुवन छबि शृङ्गार सुभग जनु, प्रगट भये दोउ साथ ॥ १ ॥ विधि हरि हर सुर शिद्ध नाग मुनि, नावहिं जेहि पदमाथ ॥ सोइ प्रभु जनक द्वार याचक बनि, सिय हित ओढ़ेउ हाथ ॥ २ ॥ दीन दान सिय रतन सु रामहिं, गहि कुश कमलां पाथ ॥ जयति भई तिहुँ लोक जनक कर, गावहिं सब गुण गाथ ॥ ३ ॥ पूरण काम राम भये सिय लहि, भट जिमि धनु शर भाथ ॥ प्रेमलता सियराम सजीवन, तेहि बिनु जन्म अकाथ ॥ ४ ॥

पद (१५८)

सिया की निरखत राम निकाई ॥ टेक ॥

थकित होत चख प्रति अँग अङ्गनि, तजि निमेष चपलाई ॥ १ ॥ भूषण युत पद कमल लाल पुनि, यावक

की अरुणाई ॥ मधुर मंजु अति मृदुल मनोहर, रेखन
की छबि छाई ॥ २ ॥ अवलोकत मन मधुप लाल को,
बर बस रह्यो लुभाई ॥ ध्यावत हृदय मूँदि दोउ लोचन
देह दशा बिसराई ॥ ३ ॥ सियस्वामिनि लखि पिय
जिय की गति, परम चतुर हरषाई ॥ इत उत निरखि
झटकि पट आतुर, दीन सुपतिहिं जगाई ॥ ४ ॥ गुरु
पितु ससुर समाज निकट लखि, कछुक लाज उर आई ॥
लगेउ बिलोकन बहुरि सिया तन, उपमा जात न गाई
॥५॥ कोमल करनि जड़ाऊ चुरियाँ, मणि मुदरी सुख
दाई ॥ कंकण कल हथ फूल आरसी, मेहदी अलिनि
रचाई ॥६॥ नख शिख अकथ अगाध अलौकिक, अनुपम
सुन्दर ताई ॥ पियत नयन पुट बारि अपन पौ, करि
निज भाग बड़ाई ॥७॥ करत बिचार मनहिं मन रघुबर
आनँद अँग न समाई ॥ प्रेमलता केहि सुकृत मोर जेहि,
सियसी दुलहिनि पाई ॥ ८ ॥

पद (१५८)

निरखु सखि सिय रघुबर को रूप ॥टेक॥

ब्याह साज साजें दोउ नख शिख, एकते एक अनूप
॥ १ ॥ करति आरती निवछावर कोउ, बारति सूसर

सूप ॥ कोउ बड़भागिनि चमर चलावति, महँकावति
कोउ धूप ॥२॥ हास्य कुशल एक बाम राम ढिग, जाइ
खड़ी गुप चूप ॥ कहेउ लेउ मुख पान लालजी, खाइ
दीन हँसि पूप ॥३॥ परमानन्द लहत लखि छन छन,
सुकृत सिन्धु दोउ भूप ॥ प्रेमलता यह सुख न पगे
जे, परहिं ते नर भव कूप ॥ ४ ॥

पद—भोजन समय की गारी ।

सिया सँग जेंवत राज कुमार ॥टेक॥
बिविध भाँतिके व्यञ्जन साजि सु, भरि ल्याईं अलि थार
साग सलोने मधुरे रुचिगर, चटनी चटक अचार ॥१॥
मोवन मिली सोहारी प्यारी, खीर मशाले दार । सू-
पोदन घृत पगी फुलकियाँ, पापर निबुआ खार ॥ २ ॥
सोंधी कढ़ी पकौरिन मिश्रित, दधि चूरा उपहार ।
खाजा खुरमा ललित इमरती, मगद सु बरफी ढार ॥३॥
अशन अमीसमस्वादभरे सब, परसहिं अलि करि प्यार
देत लेत मुख कौर परस्पर, हिलि मिलि दोउ सरकार
॥४॥ सियरुख लखि बहु साज सम्हारि, सु ढोलक झाँझ
सितार। हरषि निरखि छबि ललना लालहिं, हँसि हँसि
गावहिं गार ॥ ५ ॥ सुनहु रसिक मणि राम श्याम तुम

शृङ्गी ऋषि के सार। तात एक सोउ बूढ़ लाड़िले, सात
सौ मातु तुम्हार॥६॥ केहि बिधि सबहिं सु तोषत होइ
हैं, अचरज हमहिं अपार। जानहु तौ तजि लाज कहहु
पिय, प्यारे प्राण अधार॥७॥ पूर न परत करत मन
मानी, रानी करम छिनार। तेहि लगि कोउ गोरे कोउ
कारे, जाये पूत सुभार॥८॥ अज बकरा को नाम बंश
तेहि, गुरु गणिका को यार। शृङ्गी ऋषिहिं ब्याहि दइ
भगिनी, बरबश लखिकुल भार॥९॥ अज मायेउ प्रथमहिं
अबलन पर, बल तुम्ह जायेउ जार। प्रेमलता सब
अगुन सगुन भये, सियनाते एक बार॥ १०॥

पद (१६०)

परस्पर चितवत दोउ चित चोर॥ टेक॥

सिय तन राम रामतन सियजू, सकुच भरे दृगकोर॥१॥
मंडप तर बैठे एक आसन, हिलिमिलि श्यामलगोर॥
नील जलद ढिगमनहुँ सु दामिनि, लसत बसत मन
मोर॥२॥ विधि बिधान गुरु बिप्र करावहिं, प्रेम प्रमोद
न थोर॥ गावहिं गीत सुभाभिनि बाजहिं, बाजन जनु
घन घोर,॥३॥ बिरुदावली सु बेद बखानहिं, बहु बिधि
बन्दी छोर॥ दम्पति रूप अनूप बिलोकहिं, बार बार

त्रिण तोर ॥ ४ ॥ जय जय जय सिय जनक किशोरी, जय अवधेश किशोर ॥ जय सियराम काम परि पूरण, कहहिं सकल चहुँ ओर ॥५॥ निज निज इष्टनि सन सब याँचहिं, करि करि बिनय निहोर ॥ यह सिय राम माधुरी सूरति, परहिं न कबहूँ भोर ॥ ६ ॥ अवलोकनि बोलनि दोउन की, मनहुँ अमी रस बोर ॥ प्रेमलता बारिय तेहि ऊपर, साधन अमित करोर ॥ ७ ॥

पद (१६१)

चटपटी लगी मिलन की मनमें ॥टेक॥

दय गर बाँहि चिबुक धरि कर कब, बतरैहौं लगि तन में ॥१॥ मंडप तर बैठे रघुनन्दन, लखत सियहिं छण छण में ॥ एकएक पलक बरषसम बीतत, सूरन कर जिमि रण में ॥२॥ उठत प्रीति कीलहर छिपति पुनि, दामिनि जिमि नभ घन में ॥ अनुचित गुनि अति नेह प्रियापर प्रगटावन बुध जनमें ॥ प्रेम भरयो उर अधिक समात न पयजिमि महिषी यन में ॥ अरुझि रह्यो पिय चित सिय अंगनि, लोभी मन जिमि धनमें ॥ ४ ॥ बढ़त देखि सिय नेह सु पिय को; बिन्ध्याचल जिमि बनमें ॥ भावघटज करि प्रगट दबायो, कहि कछु कर दरपन में ॥ ५ ॥ अब

लोकहिं अलि चतुर खड़ी छबि, बड़ भागिनि अवलन में ॥ प्रेमलता सिय प्रेम पगीं सब, बिषई जिमि भोगन में ॥ ६ ॥

पद (१६२)

सिया छबि निरखत नख शिख राम ॥ टेक ॥

पूरण भागभये सबही बिधि, पाइ सु अनुपम बाम ॥१॥ मणि खम्भन प्रतिबिम्ब झलक दोउ, सुन्दर गोर सु श्याम ॥ अवलोकत तहँ दुलहिनि सिय की, मूरति परम ललाम ॥ २ ॥ लाजत निज अँग हेरि श्यामरँग, सिय तनु जनु दुति दाम ॥ मनहीं मन बलि जात बारि बहु, आपु सहित रतिकाम ॥ ३ ॥ मूँदि नयन कहुँ हृदय नेह बश, मृदुल मंजु सिय पाम ॥ ध्यावत लाय जानि निज सर्वस, जपि रसना सिय नाम॥४॥ श्रवण लगाय सुनत कहुँ नूपुर, ध्वनि गावत जनु साम॥ परसि होत कहुँ कर सुकृतारथ, पिय सिय अँग सुख धाम ॥ ५ ॥ चतुर सखी लखि कहति मर्म लगि, कान सुनिय गुण ग्राम ॥ सेवहु सिय पद प्रेमलता बसि, श्रीमिथिला बशुयाम ॥

पद (१६३)

मन मन के मनोरथ मनके हैं ॥टेक॥

कुटिल कठोर अगम अति बोझिल, दुख दायक सब

जनके हैं ।।१।। कितने मरे परे पचि कितने, फिरत कितै जग धनके हैं ।। कितने पचत बिचारे निशि दिन भये जीव बन बन के हैं ।।२।। दूबर जीव मनोरथ मोटे, नये नये छण छण के हैं ।। उठत न तदपि तजत खल खैंचत, चींटी जिमि अन कनके हैं ।।३।। दानव देव मनुज मुनि पशु खग, चेतन जहँ लगि तनके हैं ।। नाँचत सकल मनोरथ के बस, कपि जिमि बाँधे पन के हैं ।।४।। चिन्तहिं कोउ शुभ अशुभ सुखद कोउ, कोउ लोभी अन धनके हैं ।। जियहिं न तिन्ह बिनु जीव मनहु जिमि लघु शिशु गण बिनु थन के हैं ।।५।। जापक जे सिय राम नाम के, गायक प्रभु गुण गण के हैं ।। प्रेमलता ते मन सु मनोरथ, जीतहिं भट जिमि रन के हैं ।।६।।

पद (१६४)

सुमिरु सियराम रसनियाँ खोटी ।।टेक।।

मुख मंदिर में बैठी चाखति, बिबिधि सुस्वाद खसोटी ।।१।। खाटे मीठे और चरपरे दधि चूरा घृत रोटी ।। माँगि माँगि नित खात उदर भरि, रचि प्रपंच जग पोटी ।।२।। रटति न नाम बिबाद बकति बहु, देखत की अति छोटी ।। पछितैहै परिणाम नाम बिनु जैहै यमपुर

ओटी ॥३॥ बादि बेष बैराग भजन बिनु, अचला लाँग
लँगोटी ॥ बादि रखाये जटा फटाये कान, कटाई
चोटी ॥४॥ बादि चुनावत अटा सेज पर, सुख मानति
का लोटी ॥ पैहै अति दुख दुसह नाम बिनु, गीध न
खैहैं बोटी ॥ ५ ॥ सुख हित करति उपाय अमित जनु,
जियब बरष सत कोटी ॥ झूठ साँच कहि कहि जेहि
तेहि बिधि, गाड़ति धन महि जोटी ॥ ६ ॥ अइहैं एक
न काम अन्त जब, धरिहै यम गण झोटी । प्रेमलता
सिख मानि अजहुँ भजु, नाम न परिहै टोटी ॥ ७ ॥

पद (१६५)

रसनियाँ साधि रही कस मोना ॥टेक॥

रटहु न श्री सिय राम सु नामहिं, फिरि न जनम अस
होना ॥ १ ॥ नाम सरिस कोउ सुखद न साहिब,सुहृद
चतुर्दश भोना ॥ सुमिरति तिन्हें कस न हत भागिनि,
तजि जग स्वाद सलोना ॥२॥ हित अनहित टुक हेरि
हिये निज, करु अब कालि परोना ॥ रटु सिय राम
नाम निशि बासर, बय सु जात जिमि पोना ॥ ३ ॥
पढ़ति पुराण गढ़ति बहु बतियाँ, सीखति जादू टोना ॥
चढ़ति न भजन पंथ सुख चाहति, याचति चाँदी सोना

॥ ४ ॥ नाम सुधारस चाखि पीवनित, भरि भरि श्रवण सु दोना । नतरु भोगिहै बहुरि दुसह दुख, लख चौराशी योना ॥५॥ मीठे बचन बोलि भजु सियबर, नृप दशरथ के छोना । उतपति पालन नाश जासु डर, होत तोर पति तोना॥ ६॥ तिन्ह बिनु भोग बिषय रस भोजन, जानत जन जिमि बोना। मन बच कर्म रँगे जे प्रभु रँग, जग सुखते करिगोना॥७॥ स्वाद निबश भइ बिमुख सु पियसन, चाटति पशु जिमि नोना। प्रेमलता सियराम रटेबिनु, पैहै गति बिधि कोना ॥८॥

पद (१६६)

बनत कछु बात न प्रभु कहते ॥ टेक॥

अति करालं कामादि अनल महँ, बहुत दिना गये दहते ॥१॥ नाम महातम सुनत जपत मुख, दुसह कलेश न रहते। कारण कवन रटत सोउ निशिदिन, भव साँसति जन सहते ॥ २ ॥ सब सुख सुलभ होत यह सुनियत, रसना नाम सु गहते। कवनिउँ बिधि कोउ रटै कटै अघ, मुद मङ्गल नर लहते॥३॥ रति गति भगति भूति ऋधि शिधि निधि, अपर सुजब जेहि चहते ॥ पावत सोइरटि नाम जीव फिरि, तृष्णा सरित न बहते॥४॥

बूझि न परति नाथ तुम्हरी गति, केहि लगि पाप न जहते॥ जानि परति कछु कृपा सिन्धु अब, शरणागत कहुँ यहते ॥५॥ कहहु तो दीन बन्धु कोउ पायो, माखन बारि सुमहते ॥ लायकता होती जो हममें, तौ कुकर्म हरनहते ॥६॥ रक्षहु नाथ परिक्षा तजि जन, बहु विधि डाहनि डहते॥ प्रेम लता प्रभु पाहि प्रणतहित, काहेन बेगि उपहते ॥७॥

पद (१६७)

भटकि जनि जा मन के भटकाये ॥ टेक ॥

श्री सतगुरु पद धरि सुहिये दृढ़, रटु नामहि लै लाये १। समझि बूझि मनकी करतूतें, सपनेउँ कहुँ सुख पाये ॥ कोटिन बार मरे तनु धरि धरि, भयेउ न मन के भाये ॥२॥ होत न थिर मनभूत कबहुँ कहुँ, सुनत न सीख सिखाये॥ बारि वीचि सम बिबिधि मनोरथ, उठत जाहिं किमिगाये ॥ ३ ॥ करत सन्त बहु यतन यदपि जो, बेद पुराण बताये॥ तदपि न तजत कुबानि कुटिल निज, चाहत जनन गिराये ॥ ४ ॥ करि बहु योगयज्ञ जप तप ब्रत, जे कोउ सुकृत कमाये॥ बरबश तिन्हे पटकि मन मनमुख, मारग सकल नशाये ॥५॥ छण सन

मुख छण बिमुख बनावत, जीवन लखि असहाये ॥ अनुचित उचित करत नहिं देरी, मारत अन्तरघाये ॥६॥ मन मलीन की संग कियो जिन्ह, ते भव सिन्धु डुबाये ॥ जरत तहाँ त्रयताप बिकल नित, फिरत दशो दिशि धाये ॥ ७ ॥ जिन्ह गुरु मिले भाग बश अस जिमि पद्मपत्र जल जाये ॥ प्रेमलता तेहि शरण बचेजन, मन ते मोद बढ़ाये ॥ ८ ॥

पद (१६८)

सिया रामहिं रटै जेहि भाँति बनैं ॥ टेक ॥

गुरुमुख सुनि गुनि हृदय धारि दृढ़, जग प्रपंच तजि नेम ठनैं ॥ १ ॥ पोथिनि मैं लिखि भरे ऋषी गण, अपर युगन के धर्म घनैं ॥ तिन्ह महँ भटकि मरो जनि तुमहूँ कहत यही शुचि सन्त जनैं ॥२॥ योग यज्ञ अर्चादि सुसाधन, कलियुग महँ बुध करत मनैं ॥ जेहि युग को जो धर्म करिय सोइ, पाप पंक सब जीव सनैं ॥३॥ प्रथम युगन के धर्म रहे जे, कलियुग तिन्हे अधर्म गनैं ॥ तजि सियराम नाम जो साधन, साधत उठि तेहि आप हनैं ॥४ अस बिचारि तजि मान मानिये, सीख सु जो कलिराय भनैं ॥ केहि लगि मुक्ति बारि हित गिरिपर

बादि नखन बहु कूप खने ॥५॥ दुखदाई शुभ अशुभ जानि सब, नाते नेह सुतिया तनें ॥ प्रेमलता होइ बिलग निरन्तर, सुमिरु नाम मुख छनें छनें ॥६॥

पद (१६८)

गुरु बिनु बोध करै जग कौन ॥ टेक ॥

प्रबल प्रताप प्रभाव सुगुरुको, प्रगट चतुर्दश भौन ॥१॥ भयो न है कोउ गुरु समान कहुँ, आगेहू नहिं हौन ॥ गुरु महिमा अति अगम बखानत, बेदहु साधी मौन ॥२॥ गुरु उपदेश अदोष अनूपम, जिमि तायो शुठि सौन, जो उर धर्यो तर्यो सो भवनिधि, कर्यो अमरपुर गौन ॥३॥ कटु करतूति कुटिलता तिन्हपर, चलत न जादू टौन ॥ श्री गुरु मुखनि तमकि ताक्यो चह, जग बिधि शृड्योन जौन ॥ ४ ॥ गुरु बिनु सकल सुसाधन सीठे, जिमि सुअशन बिनु लौन ॥ गुरु बिमुखनि प्रभु लखत न कबहूँ, नर जिमि कूकर बौन ॥ ५ ॥ निगुरनि कतरि कतरि यम चीरत, दाँतनि जिमि दातौन ॥ प्रेमलता अस जानि करिय गुरु, जन्म जात जिमि पौन ॥६॥

पद (१७०)

लखैना हानि लाभ कहा मेरी ॥ टेक ॥

पढ़त पुराण बेद बूझत नहिं, सार मोह मति घेरी॥१॥ आतुरता अति पाप करन में, करत भजन में देरी ॥ दुरजन को उपदेश धरत उर, शुचि सिख देत सुफेरी ॥२॥ युवतिनि अंग उमँग अवलोकत, सन्तन नयन तरेरी ॥ मन मुख मतो मानिनित नाँचत, सहि सहि विपति घनेरी॥३॥ केतिक बार ठग्यो मन तबहुँन, चेतत जीव सबेरी ॥ घेरि घेरि मार्यो मारत अब, जिमि बन मृगहि अहेरी ॥४॥ भरमायो बहुयोनि बिमुख करि, प्रभुते कुमन ठगेरी॥ सोचिन तबहुँ भजत जिव पिउ पद, तजि संगति मन केरी ॥५॥ मन मुख मनकी मानि मानि शिख, भयेउ दुर्दशा तेरी ॥ प्रेमलता हित तोर सु सतगुरु, अनहित तिन्हैं लखेरी ॥६॥

पद (१७१)

सन्तो मन के मते न चलना ॥ टेक॥

बरणत सन्त पुराण बेद कबि, मनमुख लहत सु थलना ॥१॥ भरमत बिबिधि जीव बहु योनिन, जिन्ह के सतगुरु बलना । जन्मत मरत दुसह दुख सहि सहि बूझत मन के छलना ॥२॥ खन ऊपर खन नीचे पटकत, चाहत कबहूँ भलना । छनमें देत नशाय सुकृत सब, जेहि समान

कोउ खलना ॥३॥ चपल उते चंचल अति अथिर, होत सु एकौ पलना ॥ मनके मते चले चलिहैं जे, चलत सुपावत कलना ॥४॥ मनमुख तजि सियराम रूप छबि, तकत पराई ललना । तिन्ह सँग फँस्यो जीव तेहि मिलत न, नरतनु केर सुफलना ॥ ५ ॥ गुरुमुख होइ भजहु सियरामहिं, जेहि न होइ जग जलना । मनमत मानि कटावहु पुनि पुनि, बादि यमन कर गलना ॥६॥ पुनि पुनि जाइ नरक दुख भोगत, होत हथेली मलना । प्रेमलता मन मते सुजनपरि, फँसहु मोह दल दलना ॥७॥

पद (१७२)

होत उर पुर मन बुधि की रारि ॥ टेक ॥ बुद्धि अंश श्री जनकलली की, मन अन कहत मुरारि ॥१॥ चोर जार सिर शिखामणी तेहि नामसु कह्यो पुरारि ॥ श्री गोपाल सहस्र नामनि मधि, देखहु नयन उघारि ॥ २ ॥ बुद्धि सुसचिव जीव नृप तेहि कर, मन प्रधान धुँ धँकारि ॥ इंद्रिनि सँग मिलि जीव सुपरजहिं, चाहत देउँ उजारि ॥३॥ भावत काम क्रोध मद मत्सर, कपट दंभ छल धारि ॥ ज्ञान बिबेक बिचार सु समदम, डरपत तिन्हैं निहारि ॥४॥ बुद्धि बसावहि

सुगुन जानि हित, अनहित अगुन बिचारि॥ मन मलीन
लखि बिषय हानि निज, तिन्ह सँग लेत बिगारि।।५।।
बुद्धि चहहिं कल्याण जिवी की, मन चह डारौं मारि॥ बु-
धि माने गुरु सन्त सीख शुचि, मन मतंग दइ टारि।६।
बुद्धि कहै सियराम नाम रटु, जग सुख सकल बिसारि॥
मन भाखै भोगन के ऊपर, भजन भाव सब बारि ॥ ७ ॥
बुद्धि कहति बिनु भजन परब भव, यम गण खैहैं फारि ॥
प्रेमलता मन कहत करब का, भव ते आतम तारि ।।८।।

पद (१७३)

कपट या मनके कोउ कोउ जानैं ॥ टेक ॥
सत गुरु मिले जिन्हें परि पूरण, जस श्रुति सन्त बखानैं॥
पारस भाग ग्रन्थ के ज्ञाता, लोक कथा बिलगानैं॥१॥
श्रीसियराम रटत रटवावत, इन्द्री जीत सयानैं॥ सम-
दरशी शुचि सरल उपासक, आशक असल दिवानैं।२।
तिन्हके शरण होइ सब अरपे, परमातम करि मानैं॥ सेवैं
चरण कमल तजि दुरमति, तब मन मत पहिचानैं ॥३॥
जब यह जीव होत श्रीगुरुमुख, तबमन निज हठ ठानैं ॥
जेन केन विधि चहत बिगारन, हरिगुरु ते उर आनैं॥४॥
भावत भजन न भक्ति भाव जेहि, ज्ञान विराग बखानैं॥

बरवश पतित बनावत जीवनि, छलि कछु सुकृत बहानें ॥५॥ करत बिघ्न बहु भाँति भजन सँग, बनत सुजो न ठिकानें ॥ भरमावत लै जाइ दशौ दिशि, फिरत मगावत द्वानें ॥६॥ पाप प्रपञ्च भोग भल लागत, तिन्ह दिशि जीवनि तानें॥ पटकि सु प्रभु अनुकूल पंथते, केवल कलि मल सानें ॥ ७॥ जे साँचे गुरु शरण सुलहि सिय, राम नाम अरुझानें ॥ प्रेमलता ते मन मतङ्गते, बाचे फिरत फुलानें ॥ ८॥

पद (१७४)

कठिन अति या मनको परिवार ॥ टेक ॥

कामादिक षट बंधु प्रबल अति, व्यापि रहेउ संसार ॥
दंभ द्वेष पाखण्ड कपट छल, सुवन पाँच हुशियार॥१॥
पापपिता त्रिष्णा महतारी, दुरमति नारि गमार॥ नींद बहिन आलस बहनोई, भगिना भोग बिहार॥२॥ भुवा कुतर्क अनीति भतीजे, बैर बिरोध विकार ॥ मनमुखता लोलुपता मौसी, मौसा दुख अविचार॥ ३ ॥
अहंकार काका कुटिलाई, काकी परम छिनार ॥ निन्दा सुता अबोध जमाई, तिन्ह पर प्रेम अपार ॥ ४ ॥
दुविधा सासु ससुर अपकारी, सारी भूल कुठार ॥ भूठ

सार सरहज मलीनता, निबसत हिये मझार ॥५॥ मामा
मान कुममता मामी, नित नइ रूप अगार ॥ नाती
पोता कुटिल मनोरथ, देत जनन दुख भार ॥६॥ कहँ
लगि कहौं गनाय अपारन, मनके नाते दार ॥ बड़े ब-
लिष्ट अनिष्ट ईष्ट रिपु, सृष्टि रचेउ करतार ॥७॥ भजन
भाव धन लूटि लेत हठि, झोंकि सु नयननि छार ॥ बर
बश पकरि बुड़ावत जीवनि, भवसागर मझ धार ॥८॥
बिरले भागि बचे इन्हते जिन्ह, पुरयेउ गर्भ करार ॥
प्रेमलता गुरुदेव कृपा लहि, परेउ न पुनि जग जार ॥९॥

पद (१७५)

सन्तो त्यागिय संग मलीन ॥ टेक ॥

पशु पामर जन संग शोक प्रद, उपजति बुद्धि न झीन
॥१॥ काम कपट कलवार कशाई, क्रोध सु दाया हीन॥
मोची मोह कुममता मोचिनि, लोभ लुहार सु चीन॥२॥
मुसल्मान् मद मत्सर मानरु, भंगी भर्म सु पीन॥ धोबी
द्वेष दंभ छल धीमर, मारि खात मन मीन ॥३॥ तन
चिन्ता धन चाह चपलता, चूक चमारिन दीन॥ कठिन
कुतर्क तमोलिन तेलिनि, तृष्णा दुखद नवीन॥४॥ गर्व
गुमान ग्वार गूजर ठग, लेत भजन धन छीन ॥ बढ़ही

बैर बिरोध दुसाधिनि, दुबिधा दुर्गति कीन॥५॥ निन्दा
नींद डौमिनी दारुण, झूठ कुम्हार कठीन॥ अहंकार अँ
गरेज अधर्मी, जीवनि करत अधीन ॥६॥ मन मृग बुरे
मनोरथ ते बहु, पशु पक्षी बिधि तीन॥ खर कूकर सूकर
बक बायस, बाज करत तनु छीन ॥ ७॥ इन्हते बाचि
भजे जे सियबर, सब बिधि धर्म धुरीन ॥ प्रेमलता गुरु
देव दया ते, सन्त सभा आशीन॥ ८॥

पद (१७६)

संग अति बिमुखन को दुखदाई ॥ टेक ॥

मनके दास भये जे डोलत, बैष्णव बेष बनाई । पोषत
तनु, मोसत शुचि सन्तनि, बाद विषाद बढ़ाई ॥ १ ॥
दम्भ द्वेष पाखंड प्रगट करि, जीवनि देत भुलाई॥ आपु
गये शुभ कर्म धर्म ते, अपरहु दिये नशाई ॥२॥ कल्पित
कथा बनाय सुनाइ सु, लोगनि लेत लुभाई ॥ ठगि ठगि
खात हुहातरु सोवत, भजन भाव बिसराई ॥ ३ ॥
चाल चलन ब्योहार कपट मय, परत सु सन्त लखाई॥
बोलत बचन मधुर मोरनि जिमि, हृदय कुटिलता छाई
॥४॥ हितकारिनि सों बैर बढ़ावत, सुनत न सीख सुहाई॥
संत संग हरि कथा होत जहँ, भूलिहु सुनत न जाई॥५॥

चेला चेली मूँड़ि मगावत, अशन बसन बहुताई ॥ जो
न देइ तो कोपि डरावत, झूठे दोष लगाई ॥ ६ ॥ तिन्ह
कर भजन बेष लखि सुन्दर, भूलहु जनि ललचाई ॥
पछितैहौ न तु अन्त पीटि शिर, बादि सु जन्म गमाई
॥ ७ ॥ उत्तम कुल में दाग लगावत, मनमुख मूड़ मुड़ाई ॥
प्रेमलता उर पुर न बोध बर, ऊपर परम सफाई ॥ ८ ॥

पद (१७७)

मानिये जनि बिमुखनि की बात ॥ टेक ॥
सीतल सीख देइँ तो तजिये, जानि अनल ते तात
॥ १ ॥ ज्ञान बिराग दृढ़ाय छुड़ावत, राम नाम ते नात ॥
नाना बेष बनाय मनोहर, जगतहिं ठगि ठगि खात
॥ २ ॥ भजनानन्द सन्त से भाषत, मलि मलि धोवत गात ॥
भीतर भरी कुटिलता नश २, सो न तिन्हे दरशात ॥ ३ ॥
चाल मराल काकबक करनी शुचि सिख सुनत कुहात ॥
सन्त सभा हरि कथा होत जहँ, भूलिहु भटकि न जात
॥ ४ ॥ रचि रचि झूठ प्रपंच बखानत, सुनि सुनि जन भरमात
॥ स्वारथ में लटपट मन बचननि, परमारथ झलकात
॥ ५ ॥ बैर भाव जीवन में राखत, चाहत निज कुशिलात
॥ पर हित हानि आपनी मानत, लाभ सु पर हित

घात ॥६॥ परके रहत बिषय भोगन सँग, भात खात इत
रात प्रेमलता मन मुख तन मुख लगि, करत बिबिधि
उतपात ॥ ७ ॥

पद (१७८)

मिटै ना मन की दौरा दौरी ॥ टेक ॥
श्री सियराम रूप पद परिहरि, पूजत गौरा गौरी॥१॥
रटत न मुख सियराम नाम करि, सर्ब आश इक ठौरी॥
सुख हित यतन करत दुख पावत, मति की गति भइ
बौरी ॥२॥ मनकी मानि बिमुख गुरु प्रभु ते, होइ परत
जन भौरी ॥ जन्मत मरत बिबिधतनु धरि धरि, जाय
जाय यम पौरी॥३॥ पोथी पढ़त सुनत बय बीती, आय
गई शिर धौरी ॥ भयेउ न बोध प्रमोद मलिन उर, देह
दशा भइ औरी ॥ ४ ॥ लहहिं न चैन रैन दिन मन मुख,
युवती जिमि लरि कौरी ॥ स्वारथ लगि दुखवत जन
जहँ तहँ, करि नित झौरा झौरी ॥५॥ कर्म कथा लाकरी
बीनि बहु, बाँधि धरी शिर मौरी ॥ ढोये फिरत मूढ़ता
बश सठ, पर स्वरूप बिसरौरी ॥ ६ ॥ गौर श्याम छबि
लखत न थिर ह्वै, भालन केशर खौरी ॥ प्रेमलता ओढ़े
नीलाम्बर, सिय पिय पीत पिछौरी ॥ ७ ॥

जय सियराम जय जय सियराम

पद-(१७९)

लखत कोउ मन माया के छलना ॥ टेक ॥

नाना रूप बनाय ठगत नित, चलन देत बुधि बलना ॥ १ जिन्ह जिन्ह को बश किये तिन्हे शुभ, सिखवन लागत भलना ॥ भजनहु करत चलत पै मनमुख, पथ पावत तेहि फलना ॥ २ ॥ मन माया के बिघन अनूपम, बूझत चित चंचलना ॥ मृग जल सम फुर जानि पचत जन, होत जहाँ जिउ जलना ॥ ३ ॥ लघु ते लघु दीरघ ते दीरघ, बिघन भेद सुख दलना ॥ सत गुरु कृपा पाइ चीन्हे जे, तजत नाम एक पलना ॥ ४ ॥ गुरु बिनु करहिं सुकर्म धर्म बहु, तिन्ह कहँ मुद मङ्गलना ॥ सपनेउँ मिलत न खिलत कमल उर, छुटै कबहुँ कलि मलना ॥ ५ ॥ मन परिहरै न माया मायहिं, मन बिनु परै सु कलना ॥ इन्ह दोउनिके परम प्रेम बिच, जीव भये घर घलना ॥ ६ ॥ बाहर भीतर ब्यापि रहे दोउ, तिल भर खाली थलना ॥ प्रेमलता पै सत नामिनिकी, ओट चलत छल खलना ॥ ७ ॥

पद (१८०)

फकीरी निवहि जाइ तब जानों ॥ टेक ॥

सतगुरु कृपा पाइ जो इक रस, ठहरे अन्त जहानों ॥ पावै

तौ परलोक लोक सुख, अनुपम अचल ठिकानों॥ १ ॥
नतरु प्रथम वैराग चढ़त अति, जोनहिं जात बखानों॥
भावत अशन बशन शुचि सँगहु न, जहँ तहँ रहत छि-
पानों॥२॥ बहुरि त्यागि सो बिरति फिरति मति, बै-
ठत रचि अस्थानों॥ मूड़ि शिष्य दश बीस कहत पुनि,
बचवा अन धन आनों॥ ३॥ सेवहु साधु गुरू गोविन्द
पद, पहिरि सु वैष्णव बानों॥ तजि अधर्म अनुसरहु ध-
र्म पथ, सीख हमार सुमानों॥४॥ कोउ मानत कोउ करत
अवज्ञा, तेहि पर जरत अयानों॥ द्वैत बुद्धि उर धसी न-
शी वह, बिरति बिषय लपटानों॥५॥ शुभते भई अशुभ
मन मनसा, भजन भाव बिसरानों॥ सेवत सन्त बहानों
केवल पोषत पेट अपानों ॥६॥ धन हित भयो बावरो
डोलत, दश दिशि ऐंचो तानों॥ सम सन्तोष दयादम
बिसरेउ, निज पर रूप भुलानों॥७॥ सब विधि बन्यों दास
इंद्रिनि को, प्रभु पद ते बिलगानों॥ युगवत गयो जन्म
लोगनि रुख, मुख मलीनता सानों ॥८॥ खींजत सुनि
सियराम नाम यश, अस माया अरु झानों॥ प्रेमलता
छलि बिमुख कियो मन, सो न मूढ़ पहिचानों॥ ८ ॥

जय सियराम जय जय सियराम

पद (१८१)

सुभट सोइ जो निज मनहिं पछारै ॥ टेक ॥

सोइ ज्ञानी सोइ गुणी गनी सोइ, धनी सुबेद पुकारै ॥ सोइ बुधवन्त सन्त सिय कन्तहिं, प्रिय जो मन मद मारै ॥१॥ परमहंस पंडित उद्दण्डित सोइ जो मनहिं सम्हारै॥सोइ न्यायी नृप जीति मनहिं निज, उरकारा ग्रह डारै ॥ २॥ जोगी जपी तपी सोइ त्यागी, जो मन छलहिं निवारै ॥ भजनानन्द भगत सोइ भाविक, भगवत ही न बिसारै ॥३॥ सोइ ध्यानी धर्मज्ञ बिबेकी, जो मन कपट बिचारै॥सोइ दयालु दानी उदार अति, मनते जीवन तारै ॥ ४ ॥ काल दूत मन भूत कठिन खल, सुकृत बनाइ बिगारै ॥ चलत सुपंथ सुजीवनि बरबश, धरिधरि गर्दन टारै ॥ ५ ॥ थिर न होत पल एक कबहुँ कहुँ, निशि दिन छाती जारै॥अघ अवगुननि बटोरि धरत उर, गोइ न तिन्है उघारै ॥ ६ ॥ मन रिपु विजय किये बिनु चाहत, पावन जे भव पारै॥ते जनु टूटै करनि मौढ़ तरु, पकरि कुबुद्धि उखारै ॥७॥ सब करतूति बृथा बिनु टारे, मन कुमनोरथ भारै ॥ प्रेमलता जेहि बश जन ब्याकुल, बिसरेउ गर्भ करारै ॥ ८ ॥

पद (१८२)

करत क्यों तब लगि निज गति आशा ॥ टेक ॥
जबलगि मन न होइ श्री गुरमुख, परिहरि बिषय बिलासा॥१॥
तन वैष्णवी सदन में निवसत, मुशलमान मन खाशा॥
कपटी कुटिल कसाई कञ्जर, उपजावत बहुत्राशा ॥२॥
चाहत बकर बड़ाई भक्षण, ममता मीन दुराशा ॥
तृष्णा तीतर लोभ लवा धरि, मारि करत इक ग्रासा॥३॥
बैर बटेर गर्ब गो हति नित, खात मान मृग मासा ॥ खोटीं
चाह अनेक न चिड़ियाँ, पकर्यो करत अयासा॥४॥
मद मदिरा पी जीवत निशि दिन, तेहि बिनु होत उदासा
॥ संग्रह करत यही नित सामा, धरत यतन करि पासा ॥५॥
कामादिक छल कपट दम्भ हित, जानि सु हृदय निवासा॥
देत सप्रेम बुलाय चहत जे, आतम बुधि को नाशा ॥ ६ ॥
ज्ञान बिबेक बिचारादिक गुण, किये यथा तृण घासा॥
ब्याकुल रहत दबे मन के डर, सकत न करि सु प्रकाशा ॥७॥
मन मुख मन अति प्रबल करत सोइ, स्वारथ रत जोइ भासा॥
प्रेमलता गुरु प्रभु श्रुति शुचि सिख, सुनत न करि विश्वासा॥ ८ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद (१८३)

तजेउ जो मन न कुटिलता कूर ॥ टेक ॥

तौ कत गेह त्यागि साधुनिको, बेष बनाये रूर ॥ १ ॥
आड़बन्द कोपीन कमण्डल, शीस जटा अँग धूर ॥
धारयो बृथा न मनहिं सु धारयो, जो सुख दुख कीमूर
॥ ॥ कहा कीन्ह तजि शिखा सूत्र द्विज, तुरक रखाय सु
नूर ॥ मन मतङ्ग केबश होउ नाँचत, जिमि घन निरखि
मयूर ॥ ३ ॥ पढ़े बेद षट शास्त्र बादि बहु, सीखेउ फैल
फतूर ॥ परमहंस त्यागी बनि बादहिं, बसत नगर ते
दूर ॥ ४ ॥ करत भजन बैराग जोग जप, परत न कबहूँ
पूर ॥ कर्म धर्म तप दान सु साधन, साहि न होत हजूर
॥ ५ ॥ सब करतूति बादि शुचि मन बिनु, बरणत संत
सु सूर ॥ प्रेमलता मनमुख सुख लहहिं न, सुयश सुसुम
ति सहूर ॥ ६ ॥

पद (१८४)

मनके कठिनं कुतर्क लहरिया ॥ टेक ॥

ब्याकुल करत चढ़ति जब अँग जिमि, कारे केर
जहरिया ॥ १ ॥ शुभ उदेश मंत्र नहिं मानत, उमगत
प्रबल नहरिया ॥ हानिलाभ शुचि अशुचि न बूझत
देत मचायकहरिया ॥ २ ॥ कामादिकन संग लै बैठत, उर

ग्रह करि कचहरिया ॥ भजन भाव शुभ कर्म धर्म तजि तकत पराइ महरिया ॥३॥ अपने कर दोउ लोक नशावत, भावत पाप पहरिया ॥ हठ बश सहत यदपि नाना दुख, परि भव सरित गहरिया ॥४॥ मन भोगी तन योग कमावत, बेष बनाय बहरिया ॥ स्वारथ रत नाँचत निशि बासर, घर घर द्वार द्वहरिया ॥५॥ रटत न श्री सियराम नाम मुख, बैठि सु सीतल छहरिया ॥ प्रेमलता प्रिय ईष्ट पुर निबसि, मिथिला अवध सहरिया ॥ ६ ॥

जय सियराम जय जय सियराम।

पद (१८५)

परम सुख पावहुगे मन जीते ॥टेक॥

जेहि लगि यतन करत सुर नर मुनि, करम बचन अरु ही ते ॥ १ ॥ अघ अवगुन छेदन हित शस्त्र सु, तीक्षण अति बरछी ते ॥ जेहि उर बश्यो बच्यो सो जग कृत नेकी और बदी ते ॥२॥ चाखत गुरु मुख सो सुख स्वाद सु, मीठो अधिक अमीते ॥ मन मुख जन परि मन के फंदनि, खात कर्म फल तीते ॥ ३ ॥ हम हम करि सब जन्म नशावत, मनसुख जीव सभीते ॥ गुरु मुख रटि सुनाम निर्मायक, जीते काल बलीते ॥४॥ मन माया के

बीच परे ते, बिमुखभये सिय पी ते॥ गुरु मुख जीति उभय प्रमुदित नित, गावत प्रभु गुण गीते ॥ ५॥ मनमुख मरत कठिन करनी करि, परत नर्क सुख रीते ॥ गुरुमुख करत चरित अति कोमल, बिशद मनहुँ नवनी ते ॥६॥ मन मुख जन पछितात पीटि शिर, अन्त सु अवसर बीते ॥ प्रेमलता गुरुमुख सुख भोगत, होत न कबहुँ दुखी ते ॥ ७ ॥

पद (१८६)

सरस अति सिय जू को सिय नाम ॥ टेक ॥

कोमल कलित मधुर मन भावन, दावन दुख सुख धाम ॥ १ ॥ अमित प्रभाव रटत प्रगटत उर, भाव सु चाव ललाम॥ उमगत आनँद शिन्धु दशोदिशि, मंगल आठो याम ॥२॥ सिय सिय नाम जपत पियहू हिय, दशरथ सुत श्रीराम ॥ रीझत अति सिय राम नाम सुनि; देत सकल मन काम ॥३॥ ज्ञान बिराग योग जप तप व्रत साधन शिद्ध तमाम ॥ सुलभ होत बिनु यतन जपत सिय सहित राम बिनु दाम ॥ ४ ॥ श्री सिय नाम रूप गुण महिमा, सतगुरु बिनु नर बाम॥ लखि न सकहिं सपनेउँ निज बुधि

बल, सेवहिं जे तनु चाम ॥ ५ ॥ सोइ सीता सोइ सिया जानकी, भेद न भाषत साम ॥ प्रेमलता जे भेद बखानत, ते न लहहिं शुभ ठाम ॥ ६ ॥

पद (१८७)

श्री सिय नाम परम हित मेरे ॥ टेक ॥

राम सहित रटि जिन्हे तरत जन, भव सागर बिनु बेरे।१। त्रिगुण मई माया वरवश सब, जीव किये निज चेरे ॥ नाचहिं ते बहु विधि निसि वासर, काल कर्म गुण घेरे।२। जरत सदा त्रय ताप पापरत, खात फिरत भट भेरे ॥ रटत न श्रीसिय राम नाम मुख, सुख सिधि चहत अनेरे ॥ ३ ॥ आपगये अरु घालत आनहिं, अस चरित्र जिन्ह केरे॥ साधु बेष धरि कुटिल कर्म रत, रहत काल कलि चेरे।॥४॥ जेन केन विधि भजन नशावत, करि कुकर्म बहु तेरे।। मन मुख ज्ञान निरूपहिं हठि निज, घुरकत नयन तरेरे ॥५॥ जानतनहिं सियराम नाम की, महिमा मूढ़ बड़ेरे॥ प्रेमलता तजि तिन्हे भजिय सिय, नाम राम सह टेरे ॥

पद (१८८)

रामके छापि भुजनि धनु बाण ॥टेक॥

बाँये धनुष बाण बर दाहिन, सीतल तप्त समान॥

पीत बरण श्रीराम सुरज के प्रेमिनि के प्रिय प्राण ॥१॥ तिलक मध्य श्री परसु चंद्रिका, सिय शिर भूषण जान ॥ धारहिं ते प्रिय परम रामके, गावत वेद पुराण ॥२॥ तस सु मुद्रिका सिय कर भूषण, जीवन को सुखदान ॥ नयन निकट दोउ दिशि जो धारहिं, लहहिं ते भक्ति महान॥३॥ युग भूषण सिय युग रामा युध, युगल नाम सुखखान॥ पञ्चसु मुद्रा पञ्चायुध ये, छापहिं रसिक प्रधान॥४॥ पीत तिलक श्री लाल बिन्दु तर, पञ्चायुध सज्ञान ॥ धारहिं दृढ़ श्रीराम उपासक, शृङ्गारी नहिं आन॥५॥ निन्दहिं ते शठ सहहिं दुशह दुख, आदि मध्य अवसान॥ ईष्ट विमुख अघ रूप अभागे, जीवत ज्यों खर स्वान॥६॥ पंचायुध पूजहिं जे धारहिं, करहिं नामगुण गान ॥ बिचरहिं महि प्रिय सियरामहिं ते, जिमि मुख लोचन कान ॥७॥ पंचायुध विनु व्यर्थ सु वैष्णव, धर्म कर्म जप ध्यान॥ प्रेमलता सो मिलहिं होयजब, रशिकन ते पहिचान ॥८॥

पद (१८८)

नाम की सरबर करत न राम ॥ टेक ॥

जानत नामराम की गति सब, राम न नाम सुगतिगुण

ग्राम॥१॥ऋषि सँग राम स बंधु जाइ बन, हति खलगण तारी मुनि बाम॥ नाम रटत दुख दोष दुराशा, नशहिं सुजनमन लहहिं बिराम॥२॥राम जनकपुर जाइटोरि धनु, ब्याहि सु सिय भये पूरण काम॥ नाम सुमिरिश्रम रहित मोह धनु, भंजि सुगति जन लहहिं ललाम ॥३॥ दण्डकबन बसि राम सु पावन, कीन हते खल गणमल धाम॥जन मन श्रमित किये जग पावन, जपत जीह भव तारक नाम ॥ ४॥ शबरी गीध कपीश बिभीषण, राम कीन्ह श्रम रहित सकाम ॥ हेतु रहित प्रभु नाम जपत जन, पावहिं अचल अनूपम ठाम ॥५॥सेतुबाँधि हति असुर पाइ सिय, आयेउ अवध राम घन श्याम ॥ प्रेमलता जपि नाम अभयजन, प्रमुदित अवनिअटहिं बसु याम॥६॥

पद (१८०)

रसना काहे न नामहिं गावति ॥ टेक ॥

बकत वृथा बक बाद दिवस निशि, निलज लाज नहिं आवति॥१॥ परम रसाल नाम चिन्ता मणि, त्यागि कुभोगनि धावति॥ धिक तव जन्म बैठि मुख मन्दिर केहि लगि ताहि लजावति॥२॥ज्ञान बिराग भक्तिकी महिमा,कहिआनहिं समुझावति॥खटरस निरतआपु

निशि बासर,द्वारद्वार बिललावति॥३॥दुग्ध धेनु महिषी ज्यों आनहिं,अवति आपु भुस खावति॥ परउपदेश कुशल त्यों रसना,बकिबकि राग बढ़ावति॥४॥बेद पुराण भागवत गीतहिं,पढ़िपढ़ि स्वाद नपावति॥नाम सनेह निरस हत भागिनि,रटि कटु परहिं जरावति॥५॥ कबहुँन बैठि इकन्त छाँड़ि छल, राम नाम लय लावति॥जेहि बश देवदनुज किन्नर मुनि,ब्रह्म शृष्टिजो जावति॥६॥ सुमिरत सुखद सुलभ फल चारिउ, भगति सरस उर छावति॥ प्रेमलता सियराम निरन्तर, रटु अब तोहि मनावति॥७॥

पद(१८१)

रसनियाँ रटु नामहिं निशि भोर॥ टेक॥

लोक सुयश परलोक सुगति प्रद,सबहिं भाँति हिततोर॥१॥ सीताराम नाम रस जो जन, तिनहिं सो सुखचहुँ ओर॥नाम सनेह हीन जड़ जगमें, पावत शोक न थोर॥२॥वेद पुराण सार सन्तनको, नाम परम चितचोर॥ भजनशिरो मणि सुलभसकलबिधि, नामसुबन्दीछोर॥३॥ कठिन काल मल कोष जानि जिय, ममता ताग बटोर॥सर्ब आश तजि नाम निरन्तर, सुमिरि विनय

सुनि मोर॥४॥चारि खानि बहु योनि जनमि जहँ, जन
दुख पावत घोर॥रटत न नाम काम परि पूरन, हठ बस
जरत कठोर॥५॥अबहुँ त्यागि भव भोग विषय रस, भजु
श्री श्यामल गोर ॥ प्रेमलता मत मानि परम हित,
पुनि पुनि करउँ निहोर ॥ ६ ॥

पद (१८२)

रसना क्यों न रटत सिय राम ॥टेक॥
सीतापति रघुनाथ भजनबिनु, दुख पैहै परिणाम ॥१॥
सुर दुर्लभ तनु दीन्ह कृपानिधि, हेतु रहित सुखधाम ॥
भजसि न ताहि त्यागि नाना मत, पूरत जो मन काम॥२॥
यह कलि काल नाम तजि दूसर, नहि कोउ ठाकुर ठाम॥
समुझि सचेत होउ अबहूँ सजि, सुमिरण आठो याम ॥३॥
भ्रमत वृथा खल काँच किरच लगि, तजि मणि नाम
ललाम ॥ प्रेमलता सिख मानि त्यागि भ्रम, भजु सिय
सुन्दर श्याम ॥४॥ पद (१८३)

रसना राम नाम नित गावहु ॥ टेक ॥
बादि अलाप कलाप दुखद रटि, राग बिराग बढ़ावहु
॥ १ ॥ पावहु दुख परिणाम दुखद जब, जेहि तेहि दोष
लगावहु॥निज कृत कर्म जनित फल भोगत, शिरधुनि

धुनि पढ़ि तावहु ॥ २ ॥ सन्त पुराण बेद मुनि सम्मत, सो तुम सुनो सुनावहु॥ तदपि न विषय मोह ममता मद, तजहु यदपि दुख पावहु ॥३॥ हेतु रहित सब भाँति परम हित, निपटहि सो बिसरावहु ॥ कायर कूर कपूत कुठाकुर, निशदिन तिन्हे मनावहु ॥४॥ सुख न जहाँ लवलेश काल तिहुँ, तहँ तुम मनहिं पठावहु॥ भजहु न नाम चारु चिन्तामणि जाय सुजन्म गंमावहु ॥ ५ ॥ अब बिलम्ब तजि जनकसुतापति, प्रेमलता सुरिझावहु॥ मुक्तिद्वार लहि नर शरीर यह, जेहि फिरि नरक न जावहु ॥ ६ ॥

पद (१८४)

रसनियाँ नामरटे सुख पैहौ ॥ टेक ॥

सोवहु पाँय पसारि मोह निशि, जो न नाम सुख गैहौ ॥ तो तुम जाय जन्मि जगती तल फिरि फिरि यम पुर जैहौ ॥१॥ लागत नीक बिषय रस दुख प्रद, जो न उदर भरि खैहौ॥ डरिहौ चलत कुपन्थ अहर निशि, तौ केहि लगि न जुड़ैहौ ॥ २ ॥ रटिहौ नाम अकाम छाँड़ि छल सन्त चरण शिर नैहौ ॥ तौ कि परब भव कूप अगाधहिं जीवनि जो न सतैहौ ॥ ३ ॥ प्रेमलता धन पाय त्यागि मद, भूखेहिं भोजन दैहौ ॥ तौ कि बिकल ह्वै दीन स्वान इव, द्वार द्वार बिललैहौ ॥ ४ ॥

पद (१८५)

रसनियाँ नाम रटहु मुद दानी ॥ टेक ॥

लाभ न अपर नाम सुमिरन सम, बिसरन सरिस न हानी ॥ अस जिय जानि मानि शिख सादर, सुमिरहु त्यागि गलानी ॥ १ ॥ घोर गर्भ हित कीन तोर अति, दारुण बिपता भानी ॥ शठ न भजत केहि लागि ताहि अब, जात सु वयस सिरानी ॥ २ ॥ बिसरि नाम खल काम परायण, भयसि कवन सुख जानी ॥ गृहा कूप दुख रूप काल तिहुँ, तहँ तू ने रति मानी ॥ ३ ॥ सुत बनितादि सगे स्वारथ के, परमारथ गुरु ज्ञानी ॥ प्रेमलता चित चेति सम्हरि अब, भजु श्री सारँग पानी ॥ ४ ॥

पद (१८६)

रसनियाँ काहे न नामहिं जपत ॥ टेक ॥

सुमिरत नाम अयास कपट छल, कामादिक खल कपत ॥ कलिमल जनित अमित अघ दारुण, तेउ सब जहँ तहँ छपत ॥ १ ॥ अधमउ सुमिरि नाम निशि बासर अति अपार भव टपत ॥ नामहीन पढ़ि वेद पुराणनि, मोह नदी महँ खपत । २ । राम नाम अति प्रबल दिवाकर भुवनचतुर्दश तपत । उदय सदा नहिं अस्त काल तिहुँ,

मोह निशा लखि चपत ॥३॥ चहुँ युग प्रगट प्रताप नाम जग, सुमिरि ऊँचथल थपत । प्रेमलता तजि ताहि बाम-पथ, चलत अभागी अपत ॥४॥ पद (१८७)

रसनियाँ नाम रटत अलसाय ॥ टेक ॥

खीर खाँड़ दधि दूध मलाई, भोजन विविध बनाय ॥ खाइ उदर भरि स्वादि स्वाद बश, कोसनि दौरी जाय ॥ १ ॥ लहत न हार चहत नित नूतन, खट रस रुचि अधिकाय ॥ स्वारथ बिबश बिकल इद्रिन हित, करत अनेक उपाय ॥ २ ॥ पर दारा धन निरखि मनहिं मन, महा मन्द ललचाय ॥ छण सुख लागि दुसह दुखनाना सहत न तदपि अघाय ॥ ३ ॥ सोवत खात हँसत बागत सठ, तिहुँ पण दियेउ नशाय ॥ अन्तउ घोर नर्क भय भारी, सहिहै यम पुर जाय ॥ ४ ॥ जहँ न मीत सुत बंधु नारि धन, माय न बाप सहाय ॥ तहँ सिय राम सुनाम परम हित, प्रेमलता कह गाय ॥ ५ ॥

पद (१८८)

रसनियाँ काहे न नाम उचारो ॥ टेक ॥

लोलुप भयेउ लोभ लालच बस, जाय सुजन्महिं हारो ॥ कामद घन दारिद दुकाल हर, सो तुम निपट बिसारो

॥१॥ लघु जीवन जिय जानि भजहु नित, सियबर प्रीतम प्यारो ॥ काल कराल शीश पर नाचत, मूढ़ गाल जनि मारो ॥ २ ॥ सुत बनिता धन धाम बिषय सुख, दुख सम जानि निवारो ॥ जो आपन भल चहहु सकल बिधि, मोर कह्यो चित धारो ॥ ३ ॥ सुमिरहु नाम चारु चिन्तामणि, नाते सब परिटारो ॥ सेवहु सन्त अनन्त छाँड़िछल, पटकि लाज को भारो ॥ ४ ॥ ऊँच कहाय कवन सुख जो पै, निज आतमा न तारो ॥ प्रेमलतामैं मोर तोर करि, रागरोष जिय जारो ॥ ५ ॥

पद (१६८)

रटहु किन जिभिया सीताराम ॥ टेक ॥

जो रसना सियराम न गैहौ, बिवश होइ मद काम ॥ तो पछिताइ अघाइ भली बिधि, दुख पैहौ परिणाम ॥ १ ॥ सुरदुरलभ तनु पाइ अरे मन, भजेउ न सुन्दर श्याम ॥ स्वारथ बिबशस्वरूप न चीन्ह्यो नाशेउ जन्म ललाम ॥ १ ॥ बोवत बीज बबूर बहेरा, खान चहत फल आम ॥ करनी कठिन करत यमपुर की, जान चहत हरिधाम ॥ ३ ॥ यह कलि काल न साधन दूसर, सुख प्रद ठाकुर ठाम ॥ अस बिचारि सिय राम नाम भजु, प्रेमलता बशु

याम ॥४॥

पद (२००)

जय जय सियराम नाम सर्ब लोक स्वामी ॥ टेक ॥

हेतु रहितहित उदार, धर्मकर्म बेद सार, जपत जगत मोहजार पार होत बामी ॥१॥ परम तत्व जानि सन्त जपत मुदित रहि इकन्त, करत मनन मोद अन्त, उर सु भक्ति जामी ॥ २ ॥ सुमिरि नाम सुख निकेत, अवनि अटत जन सचेत, परम सुगति अवसि लेत, लोक बेद नामी ॥ ३ ॥ राम नाम गुण निधान, रटत शेष शिव महान, नारदादि मुनि सुजान, गरुड़ सर्व गामी ॥४॥ सर्ब काल सर्ब देश, सुलभ नाम रहित क्लेश, सर्ब जीव हित रसेश, सर्ब काम दामी ॥५॥ आश त्राश जग बहाइ, रटत नाम सुमन लाइ, सिय सु राम रूप पाइ, होत सोअकामी॥६॥कलि न योग यज्ञ जाप, प्रेमलता शमन ताप, राम नाम करु अलाप, साधु की गुलामी

पद (२०१)

रटहु मन राम-नाम सुख दाता ॥ टेक ॥

सीतासहित रहितमदमाया, जो चाहहु कुशलाता।१। बेद पुराण पढ़त नहिंजानत, प्रभु रीझन की बाता।। ऊँच कहाय सु पाँव पुजावत, लोभ कपट छल राता ॥२॥

इंद्रिनि के हित बिषय भोग बश, भव निधि गोता खाता ॥ मन मुख ग्यान ध्यान कहि बहु विधि, जग जीवनि भरमाता ॥३॥ मानि रह्यो सुख सदन मोहबश जोरि लियेउ बहुनाता ॥ अन्त समय कोउ काम न आवत, जननि जनक सुत भ्राता ॥ ४ ॥ तन धन धाम धरनि पुर परिजन, संग न आवत जाता ॥माया जाल देखि जनि भूलै, सुमिरि नाम जन त्राता ॥५॥ जिन्हि के हित सब जन्म नशायो, राम बिमुख दुख पाता ॥ ते सबतब हित हानि करैया, प्रेमलतहि दरसाता ॥६॥

पद (२०२)

राम रस पीओ रे भैया ॥ टेक ॥

शमन ताप दुख दोष नशावन, भव रुज हरनैया ॥१॥
गरी बदाम मुरब्बा किसमिश, मिश्री खाँड़ मिठैया ।
दाख अनार अँगूरन आमनि, अस रस मधुरैया ॥२॥
दधि माखन घृतखीर सुखोवा, रबड़ी दूध मलैया ॥
श्रीसियराम नाम रटना सम, सरस नहीं गुण दैया ॥३॥
श्रीफल जम्बु पनस नारंगी, कदली कन्द खवैया ॥
पावहिं सोन स्वाद सुख सपनेउ, जो सियराम रटैया ॥ ४ ॥ भक्ष्य भोज्य बर लेह्य पेह्य जो, षटरस के भुग

तैया॥नाम रटन सम स्वाद न पावहिं,करहिं जो कोटि उपैया ॥ ५ ॥ बनिता भोग विषय रस नाना, परिहरु जीव जरैया ॥ सीताराम रटहु निशि बासर, मङ्गल मोद बढ़ैया ॥६॥ रामनाम रस पियत जियत सोइ,अपर सु जन्म नशैया ॥ प्रेमलता चित चेति निरन्तर, भजु सियजनक जमैया ॥ ७ ॥

पद गजल ॥२०३॥

आधार रामनाम का कलि में प्रधान है ; साधन्तमाम गौण में जप योग ध्यान है ॥टेक॥ संयम समाधि सत्य शील सौचते परे,कलि कर्म धर्म पर्म अगम भक्ति ज्ञान है ॥१॥ आचार प्रेम नेम छेम सम सु दम नहीं,बर भावना बिचार हीन यग्यदान है ॥२॥ नरयजन भजन सन्त संग करत लाजहीं, वैराग भाग हीन भरे मोह मान हैं ॥३॥ बियोग योग राग रोष मगन बापुरे, भूले निहारि जक्त जाल काल तान है ॥४॥ उपदेशि बार बार कह्यो गुरुदयालु ने, अलि प्रेमलताएक आश गतिन आन है ॥५॥

पद गजल (२०४)

रटुनाम सियाराम त्यागि लोक लाज है॥ धन धाम

बाम नामहींन शोक साज है ॥ टेक ॥ सुन्दर शरीर पाय मूढ़ मुफ्त गमावै, अज्ञान जानि बूझि के करता अकाज है ॥ १ ॥ मरना जरूर जानता पर मानता नहीं, जीने का ठाट ठाटता सुखका समाज है ॥ २ ॥ मसलन्लगाके बैठता करने को हाकमी, भूला करार गर्भका शिर पहिरि ताज है ॥ ३ ॥ सुख साहिबी संसार में दिन तीन चार की, परता बहोरि नर्क में नर बे लिहाज है ॥ ४ ॥ परिलोकलाज फन्द अन्ध जन्म नशाया, सुमिरे न सियाराम जो करता सुराजहै ॥ ५ ॥ अलि प्रेमलता जागु भागु मोह जाल से, घूमे सदा कराल शीस काल बाज है ॥ ६ ॥

पद गजल (२०५)

सियराम नाम जक्त में सब धर्म मूल है। करते न मान मान मोह बिबश भूल है ॥टेक॥ धन धाम धरनि घरनि पुत्र भर्म जाल है। परित्यागि भागि जागि अन्त देत शूल है ॥ १ ॥ सुख साज राज काज लाज कर्म जक्त के। सियराम नाम प्रेम हींन सर्ब धूल है ॥३॥ साधन्समाधि ज्ञान ध्यान यज्ञ जाप जे। सियराम नाम रहित जानि ब्योम फूल है॥५॥ आये यहाँ जिस्काम को करनाजरूर

है। चलना अखीर होयगा तजि तनु सुथूल है॥५॥ अलि प्रेमलता बदत सन्त बेदहू कहैं। सियराम नाम प्रबल अनल पाप तूल है॥ ६॥

पद गजल (२०६)

कलिनाम सियाराम को केवल अधार है। मन लाय सदा प्रेम से रटु बार बार है ॥ टेक॥ तप योग यज्ञ जाप ज्ञान ध्यान दान ये। अर्चन सुभक्ति भाव भजन बे बिचार है॥१॥ विराग शील सत्य सौच सम दया नहीं। श्रद्धा बिहीन धर्म कर्म सीश भार है॥ २॥ छल कपट दम्भ मान मोह छोड़ि कीजिये। सियराम नाम जाप सन्त सङ्ग सार है॥३॥ सुन्दर सुजान सुलभ सबल सरल रस भरा। कल्याण धाम राम नाम हित उदार है॥४॥ पर्लोक लोक शोक शमन भवन मोदके। भजु आठ याम बाम दाम तजि विकार है॥५॥ संसारभरन हरण शरण पाल नामके। बरणे पुराण बेद सन्त गुण अपार है॥६॥ अलि प्रेमलता मनुष जन्म पाय नेम से। रटता न राम नाम तौ जीवन्पै छार है॥७॥

पद गजल (२०७)

कलि में प्रधान रामनाम हरण द्वन्द हैं।

करुणा निधान परम सुलभ सुख सुकंद है ॥ टेक ॥ हैं
जीवके सुजीव नाम प्राण प्राण के। प्रमोद के निधान
ब्रह्म पर स्वछन्द हैं ॥ १ ॥ संसार शोक दमन शमन
मोहमार के। रटते न कपट छाँड़ि जीव भाग मन्द हैं
॥२॥ सियराम नाम सुख बिहाय कर्म योगते। कल्याण
चहत मूढ़ परे कर्म फन्द हैं।३। हैं सर्ब नाथ सर्बकाल काल
काल के। सियराम नाम भक्त हेतु प्रद अनन्द हैं ॥ ४ ॥
स्वामी समर्थ नाम सों न देव दूसरो। जो देत सर्ब काम
जौन जन्पसन्द है ॥५॥ गुरु देव बार बार कही रामनाम
के। अलि प्रेमलता बश्य सियाराम चन्द हैं ॥ ६ ॥

पद गजल (२०८)

कलि नाम सियाराम को सुपर्म धर्म है ॥ टेक ॥
साधन्समाधि ज्ञान ध्यान समसुदम जिते। तप योग
यज्ञ जाप त्याग कठिन कर्म है ॥ १ ॥ ब्रत यंत्र तंत्र मंत्र
दान भक्ति भावना। श्रद्धा बिधान हींन अगम सुनत
नर्म है॥२ ॥ करत बिबिधि यत्न जीव हित अराम के।
तजि राम नाम मूढ़ परे भूलि भर्म है ॥ ३ ॥ बक्ता पुराण
बेदकी सु निपुण बाद में। रटती न रामनाम तो सु जीह
चर्म है ॥४॥ सिय रामनाम रटत जौन मुदित जीवते।

सियराम नाम त्यागि दुखित होत पर्म है ॥५॥ जीते सु
राम नाम जापि सन्त जक्तसे। राखी कहाँ न रामनाम
भक्त शर्म है ॥६॥ परिताप पाप कुटिल कर्म जनित सीतके।
सियराम नाम शमन प्रबल अनलगर्म है ॥ ७ ॥
सम्सेर रामनाम सियानाम ढाल है। अलि प्रेमलता
पहिरि अङ्ग रटन बर्म है ॥ ८ ॥

पद गजल (२०८)

कलि नाम सियाराम के सु मोद भर्ण हैं ॥ टेक ॥

सुनत गुनत जपत रटत सरस गुण भरे। सुन्दर सुखैन
सरल परम चारि बर्ण हैं ॥ १॥ सुभक्ति मुक्ति भुक्ति देत
भूरि भोग जे। संताप शोक शमन त्रिबिधि पाप हर्ण
हैं ॥ २॥ रठत फटत कपट कुपट कठिन कर्म के। सुभानु
भाग उदित होत भर्म हर्ण हैं॥ ३ ॥ बैराग योग जगत
भगत कलुष जीवके। सियराम नाम रटत जौन ठानि
पर्ण हैं ॥ ४ ॥ बिनु दाम काम अशन बसन देत लोकमें।
परलोक सिया राम नाम सुढर ढर्ण हैं ॥ ५ ॥
बिहाय जक्त जाल ख्याल नाम जापिये । धन धाम
काम त्यागि के आखिर तौ मर्ण हैं ॥ बरणे पुराण बेद
सन्त शंभु सारदा। स्वभक्त हेतु रामनाम भूप कर्ण हैं

॥८॥ तजि राम नाम हेरिये न सुगति दूसरी। अलि प्रेमलता सुखद सिया लाल शर्ण हैं॥८॥

पद गजल ॥२१०॥

जय जय सियराम नाम शरणपाल प्यारे ॥टेक॥

दीन बंधु बन्दि छोर, बदत बेद बिरद तोर, बूड़त भव धार घोर अमित अघोतारे॥१॥ माया मन गुणनि पार कर्म धर्म भक्ति सार, महिमा अद्भुत उदार, भणत शेष हारे ॥२॥ अखिल लोक करन भरन, हरन धरन शोच दरन, राखिये निज चरण शरण परन सत्य वारे ॥३॥ प्रगट गुपुत युगल रूप, पार ब्रह्म के अनूप, तिन्ह के सिर आप भूप, अनुग ते तुम्हारे ॥४॥ जापक उर श्रम बिहीन, आवत लखि प्रीति पीन, अगुण सगुण युग प्रवीन, देत मोद भारे ॥५॥ नारद शिव बालमीक, हनुमदादि कहत ठीक, सुमिरि नाम कारुणीक, राम धाम जारे ॥ तुलसिदास जपि सुनाम, अपने बश कीन राम, पूरे कलिमन सुकाम, प्रगट लोक सारे ॥७॥ प्रेमलता तजि विकार, रटि सुनाम बार बार, लाज काज पटकि भार, लोभ मोह मारे ॥८॥

जय सियराम जय जय सियराम।

पद ग़जल ॥ २११ ॥

जय जय सियराम नाम सकल मोद दाता ॥ टेक ॥
सुमिरत प्रति स्वास स्वास, जरत पाप आश आश,
रीझत सियराम खाश, जगत पिता माता ॥ १ ॥
कर्म के लिखे कुअङ्क, रटत नाम कटत बङ्क,
समाधान होत शङ्क, उघरि कपट जाता ॥ २ ॥ नाम
को विहाइ कर्म, करत भरत शोक पर्म, नाशत नहिं
मोह भर्म, जीव सुख न पाता ॥ ३ ॥ कर्म धर्म योग
ध्यान, तीरथ जप यज्ञ दान, भुक्ति मुक्तिभक्ति ग्यान,
नाम को न पाता ॥४॥ धन्य जो सुधारि नेम, रटत नाम
सहित प्रेम, पैहैं कलि काल क्षेम, नाशि बिपति व्राता
॥ ५ ॥ बिलग बैठि आठ याम, लय लगाय रटत नाम,
त्यागिं लोक लाज काम, टूक मागि खाता ॥ ६ ॥
रामरूप जगतसोइ, ताके समतर नकोइ, आदि मध्य
अन्त होइ, वही लोक त्राता ॥ ७ ॥ प्रेमलता ठानि
टेक, रटिये सियराम एक, साधन सिथितजि अनेक,
कहत बेद ज्ञाता ॥ ८ ॥

पद गजल (२१२)

सबसे मुझे प्यारी लगी सियराम की रटन् ॥ टेक ॥

साधे अनेक साधन् बाधा मिटी नहीं, पाये कलेश खूबही जो जाय ना बरन् ॥१॥ खाये सुने न कौनके धक्के कड़े बचन, नायो न शीस कौन को ग्रह पेट के डरन् ॥२॥ सन्तों के निकट जाय कही बिपतिते कह्यो, हनुमन्त निकट बैठि घोखु नाम आखरन् ॥३॥ सन्तों के बचन मानिठानि पर्ण नेम से, रटने लगा सियराम नाम मोद मन्भरन् ॥४॥ जो जो रही अभिलाष लाख लाख भाँति से, पूरी करी हनुमन्त जू ढरि अपनी ढरन् ॥५॥ काढ्यो कृपाल कठिन ग्रहा अन्ध कूप से, कीनो स्वछन्द फन्द नाशि जीव की जरन् ॥६॥ पहुँचाय अवध धाम दियो बेष गुरु मिलाय, कंठी सु तिलक छाप पाप ताप त्रय हरन् ॥७॥ सुमिरो यही सियराम नाम सतगुरू कही, निर्भय अटो महि मौज से सियलाल के शरन् ॥८॥

पद ग़ज़ल (२९३)

प्यारे तिहारे नाम की बलि जाउँ बार बार ॥ टेक॥ देखे सु नेन आज़ुलों साहिब तिलोक में, पौसे पतीत क्रूर कुटिल जीव बे बिचार॥ १ ॥ दीन बंधु शरण पाल बिरद नाम के। गावें पुराण बेद सन्त पावते न पार ॥२॥ तारे अनेक अधम जात घोर नर्क से

एक बार भी मरते समय जिसने किया पुकार ॥ ३ ॥ कर्तै सुकर्म धर्म कठिन योग यज्ञ जाप, सियराम नाम छाँड़ि ते नरनारि हैं गमार ॥ ४ ॥ हरि गुरु कृपा सु पाइ लगे मन जो नाम में, नाशैं विकार भार सकल जक्त मोह जार ॥ पावै सु पीव जीव रटै नाम लय लगाय, देखै युगल विहार अली प्रेमलता सार ॥ ६ ॥

पद गजल (२१४)

हर वक्त सियराम की लागी झरी रहै ॥ टेक ॥

टूटै न तार यार तैल धार की तरह, मुखमें अखण्ड नामकी रटना भरी रहै॥१॥रटने सु नाम आप का हरि आपने दिया,याँचे सु देव भर्त खण्ड नर शरीर है ॥२॥ रटिये सदा अस जानि सियाराम नामहीं,येही सु भक्ति सार सुखद जग करीर है ॥३॥ लीजै सु बेगि बेष त्यागि लोक लाज काज, सजिये फकीरी साज मौज हर घरी रहै ॥४॥ कंठी सु तिलक छाप शीस टोप दै ज़बर, करमें कमंडल कण्ठ में गुदरी परी रहै ॥५॥ राजी रहै अलि प्रेमलता पिय रजाय में,लपटी रहै मति नाम से फूली फरी रहै ॥ ६ ॥

पद गजल (२१५)

प्यारे लगैं आखर मुझे सियराम नाम के ॥ टेक ॥

अच्छे अनूप मधुर मंजु सुगम गुण भरे, कारण सुधर्म कर्म श्री साधन्तमाम के ॥ १ ॥ चैतन्य चतुर चट्पटे चहुँ फल सु चारि के, दाता विधाता यथुर धनु अथर्ब सामके ॥ २ ॥ पावन्परेश पूरे पर पंच ते परे, पामर पतीत पाल प्राणपति निकाम के॥३॥ ज्ञानी गरू गँभीर गुरु सु गति गरीब के, गावैं गिरा गणेश गीत गुणनिधाम के॥४॥सुमिरैं सु साधु सन्त शेष सुजन सुर समाज, सेवैं सुखेन संभु सदा सहित बाम के॥ भाई भतीज भानजा भगिनी सु भारजा, भजिये न भूलि भक्ति ये भारी सुदाम के ॥ ६ ॥ समुझो गुणो सुनो सु बात प्रेमलता की, पैहो सु छेम प्रेम नेम नाम राम के ॥ ७ ॥

पद (२१६)

श्री सियरामैं रटहु मन मेरे ॥ टेक ॥

सुर दुरलभ मानुष तनु प्रभु तोहिं दियो तासु फल लेरे ॥१॥ बाद बिबाद बिषाद बढ़ाव न, समुझि नाम चित देरे ॥ तजि कुसङ्ग गृह कूप शोक मद, रहु सन्तन के नेरे ॥ २ ॥ बेद पुराण संहितनि मुनि गण, बरणेउ मत बहु तेरे ॥ ते न हरहिं दुख करहिं न जन हित, धर्म कर्म कलि घेरे ॥ ३ ॥ परिहरि लोक लाज ममतामद, गहु

सु चरण गुरु केरे ॥ रटु सिय राम नाम तरु भव निधि, प्रेमलता कह टेरे ॥ १ ॥

पद (२१७)

रटु सियराम त्यागि जग झगरो ॥ टेक ॥

साधन बिपुल कठिन कलि मारग, नाम सुखद शुचि रुचिर सुदगरो ॥ १ ॥ काम क्रोध मद मोह लोभ ठग, बैठे हैं रोकि धरम पथ सगरो ॥ अवसर पाइ बटोहिहि सों अति, करहिं सो कुटिल आय बहु रगरो ॥ २ ॥ श्री गुरु कृपा पाय सन्तन सँग, निबसि जो रटहिं नाम मुख अगरो ॥ पावहिं ते निरबिघ्न सु सज्जन, यह कलि काल परम प्रिय नगरो ॥ ३ ॥ राम नाम मग ठग न लगत कोउ, प्रबल प्रताप जगत यश बगरो ॥ प्रेमलता तेहि बिमुख न सुख शिधि, जेहि भजि पाइ परम गति खगरो ॥ ४ ॥

पद (२१८)

नाम बिनु जीवन जात चलो ॥ टेक ॥

मैं अरु मोर तोर तैं बन्धन, मायिक लखि न रलो ॥ १ ॥
सुत पितु मातु बन्धु युवती जन, सब ठग तोहि छलो ॥
तू भूल्यो हित मानि मोह बश, लखत न अपनो भलो
॥ २ ॥ नर शरीर बर भरत खंड लहि, परम पुनीत थलो ॥

पाइ न रटे नाम सुख सागर, सठ त्रय ताप जलो ॥ ३ ॥
पछितै है मन भली भाँति पुनि, अजहुँ सु ढरनि ढलो ॥
सुमिरि सु नाम चारु चिन्तामणि, समुझि हिये युग
कलो ॥ ४ ॥ करु सत सङ्ग त्यागि मनमुख मत, जेहिन
गलानि गलो ॥ प्रेमलता गुरु कृपा कोर लहि, सुख
लहि दुखहि दलो ॥ ५ ॥

पद (२१८)

नाम रटो नाम रटो नामरटो नामरे ॥ टेक ॥
गर्भ माहिं होय दीन, बार बार कौल कीन, बिसरयो
सो भाग हीन, मन्द बुद्धि बामरे ॥ १ ॥ सुन्दर नर देह
पाय, भूले जनि भर्म जाय, सुमिरि सुमिरि नेह लाय,
दीन बन्धु रामरे ॥ २ ॥ तात मात सुजन भ्रात, युवती
सुत जगत नात, स्वारथ रत बूझि बात, दुखद धरणि
धामरे ॥ ३ ॥ त्यागि सकल आश त्राश, करु इकन्त
सुथल बास, सियाराम सह हुलास, गाव आठ यामरे ॥ ४ ॥
बर्णत श्रुति शेष सन्त, रामनाम गुण अनन्त, रटत देत
सुगति अन्त, कौड़ी बिनु दामरे ॥ ५ ॥ सुलभ सुखद
अति उदार, धर्म कर्म बेदसार, करत घोर शिन्धु पार,
देत सर्ब कामरे ॥ ६ ॥ अजहूँ करि चेत मूढ़, तजि कुभोग

भयो बूढ़, समझि हिये भेद गूढ़, तपत त्रिबिधि घामरे ॥७॥ प्रेमलता योगध्यान, कलि न कर्म यज्ञ ज्ञान, व्यापेउमद मोह मान, जीव किये पामरे ॥८॥

पद (२२०)

रटना युगल नामकी नीकी ॥ टेक ॥

साधन रहित सुलभ सुख दायक, हरत ताप त्रय जीकी ॥१॥ हलिबो करै बैखरी मुखमें, केवल श्रद्धा हीकी ॥ सब धर्मनिते अधिक अधिकतर, साखि सु है तुलसी की ॥२॥ अमर भये शिव पाइ हलाहल पारबती प्रिय पी की ॥ नाम प्रभाव बढ़ी जग महिमा बाराणसी पुरी की ॥३॥ रटै सोइ अनुभवै परम सुख, धारा मनहु अमी की ॥ हित परलोक लोक सुख भरनी तरनी मोह नदी की ॥४॥ बरणत बेद पुराण सु महिमा चहुँयुग जोति जगी की ॥ खोलति कठिन कपाट हृदय के, जननी भगति गती की ॥५॥ सुनत देत गति रटत सुगम अति, बिषय भोग रस फीकी ॥ ज्ञान बिराग बिचार प्रवर्धक, पावन करन सुधी की ॥६॥ भाव कुभाव अनख आलसहू रटि गति होत अघी की ॥ जीवन मूरि जरी सबही बिधि, प्रेमसुलता अली की ॥७॥

पद (२२१)

आखर चारि नाम के नीके ॥ टेक ॥

सीताराम सु सियाराम बा, सुलभ सुखद सबही के ॥१॥
सीतल करैं सिकार हरै अघ, दीर्घ तकार अघी के ॥
दीर्घ रकार सुज्ञान प्रकाशक, मधुर मकार सती के ॥२॥
चारिउ फल के चारि कल्पतरु, सर जनु चारि अमी
के ॥ चहुँयुग चहुँश्रुति जोति जगमगी, कलि विशेष
हित जी के ॥३॥ बिनु सियराम न सपनेउ सुख शिधि,
लखो ग्रन्थ तुलसी के ॥ श्रमदायक जप योग यज्ञ व्रत,
नाम रहित सब फीके ॥४॥ पालक उभय लोक सुमिरत
सम, गति मद सूम सती के ॥ रति गति भगति
कला ऋधि शिधि पति, ज्यों बारीश नदी के ॥५॥
दयाधर्मं के बीज सुकारण, शिव बिधि बेद हरी के ॥
पावन पर्म मित्र जीवन धन, राम सु दाशरथी के ॥६॥
धनुष बाण धरि रहत सदा सँग, साँचे नाम जपी के ॥
प्रेमलता सियराम नाम बश, दूलहा जनक लली के ॥७॥

पद (२२२)

सुमिरि तू रसना श्री सियराम ॥टेक॥

कोउ कलु करै भरै पुनि मो सोद, तोय कहा कहु काम

॥१॥ नाना रंग रँगी दुनियाँ सब, कोउ दाहिन कोउ बाम॥ तेहि बिधि तू बहु बाद स्वाद तजि, रँगि निशि दिन रँग नाम॥२॥ सीताराम चरित्र श्रवण करु, लोचन रूप ललाम॥ निरखि सु निबसहु मुदित ईष्ट पुर, मिथिला अवध सुधाम॥३॥ जो जेहि भाव करत सो सोइ सोइ, सहि दुख सुख बशु याम॥ सन्त सु केवल युगल नाम रटि, पावत ऊँच सुठाम॥४॥ सब सुख सुकृत मोद मङ्गल नित, जहँ बिहरत सिय श्याम॥ प्रेमलता सोइ देश तोर तू, भूलि सहहि भव घाम॥५॥

पद (२२३)

नामरटि को न लह्यो पद पर्म॥ टेक॥

सादर जपत अयास कपट पट, फटत विनाशत भर्म॥ जेहि बश जीव परे भवसागर, करत बिबिधि विधि कर्म॥१॥ सहत दुसह दुख अज्ञ नाम बिनु, पावत कबहुँ न नर्म॥ नाना बिधि धन धाम सम्हारत, सेवत युवतिनि चर्म॥२॥ मन मुख साधन करत ठानि हठ, जाने बिनु कलि धर्म॥ गुरु पद बिमुख अजान लखैं किमि, नाम काम तरु मर्म॥३॥ सब बिधि सुलभ सुखद अघ मोचन, शुभ साधन कर बर्म॥ श्री सियराम नाम

श्रुति गावत, हरण ताप त्रय गर्म ॥ ४ ॥ अस बिचारि तजि सकल भरोसो, नाम निरन्तर रर्म॥ प्रेमलता प्रभु नाम कृपा ते, राखत जनकी शर्म ॥५॥

पद (२२४)

नामरटि को न गयो भवपार ॥टेक॥

निरखो ग्रन्थ अनेक खोलि चख, महिमा परम उदार॥ आगम निगम पुराण बखानत, नाम सकल सुख सार ॥ १ ॥ सुमिरत जेहि अनयास हिये के, उघरत कठिन किवार ॥ सूझत असुझ अबूझउ बूझत, होत सु बिमल बिचार ॥ २ ॥ अजामील जड़ यमन गीध गज, निरत मोह मद मार ॥ नाम प्रसाद सुलह्यो परम पद, रहे यदपि महि भार ॥ ३ ॥ कपि शवरी सुग्रीव विभीषण सुमिरि नाम ह्वैतार ॥ पायेउ प्रभु पर रूप अनूपम, सिय वल्लभ सरकार ॥ ४ ॥ नारद शिव सनकादि शेष शुक, त्यागि लोक सुख खार ॥ रटत सनेम सुनाम निरन्तर, जानि सकल बिधि यार ॥ ५॥ चहुँयुगतीनिकाल त्रिभुवन जो, भयेउ सुअधम उधार ॥ सो सब नाम कृपालु कृपा ते, विदित पुराण मझार ॥६॥ कलि विशेष नहिं अपर सुसाधन, केवल नाम अधार ॥

प्रेमलता सिय सहित रटिय नित, लखि शुभ गुणनि अगार ॥७॥

पद (२२५)

सुमिरि सियराम नाम तजि शङ्का ॥ टेक ॥

निजपर रूप बिचारि मारि मन, फिरत कहा क्यों रङ्का॥काल कराल ब्याल शिरऊपर ताकि रह्यो अति बङ्का ॥१॥नाम कृपा हनुमान् पयोनिधि,लाँघि जरायेउ लङ्का॥रावण मद मथि हते निशाचर,कियोकाल कर फङ्का॥२॥ सियहिं प्रबोधि पाय चूड़ामणि, चले बहुरि दै हङ्का॥ गिरे गर्भ थरहरे राति चर, दश कंधर अति भङ्का ॥३॥ नाम प्रभाव सु लखो खोलि चख, हंस होत बक कङ्का॥ को न लही रटि नाम बड़ाई, तरयो न को भव पङ्का॥४॥ अजामील यवनादि परम पद, लह्यो बजाइ सु डङ्का॥ मिटे कठिन दुख रूप नाम जपि, प्रेमलता बिधि अङ्का॥५॥

पद (२२६)

सुमिर सियराम नाम तू खूब ॥ टेक॥

मिलिहैं आपहि आइ यतन बिनु, रतन राम महबूब ॥१॥ अनायाश संसार शोक मद, जन्म मरण दुख धूब॥ नशिहैं निबसहिं ज्ञान भगति उर, अनुपम अकथ

अजूब ॥ २ ॥ नामहिं तजि कलि काल चहहिं जे, सुख नर ते बेकूब ॥ साधन करि करि मरत मनमुखी, मिटत न मन कीऊब ॥३॥ चहहिं तरण मुद भरण नाम बिनु, उलटि मरहिं भव डूब ॥ परिहरि नाम परोसो पारस, चरहिं कर्म जनदूब ॥४॥ हम हम करत जरत त्रयतापनि, बीतेउ जन्म बहूब ॥ प्रेमलता सियराम नाम नहिं रटत मूढ़ ज्यों सूब ॥५॥

पद (२२७)

सुमिरि सियराम नाम अब जागि ॥टेक॥

सोवत बीते अमित जन्म जग, जरत त्रिबिधि दुख आगि ॥ प्रबल मोह निशि नाम भानु बिनु, सकत न केहु बिधि भागि ॥१॥ सपने के परिवार श्नेही, तिन्हि सँग तू रह्यो पागि ॥ मैं मैं तू तू करि बर रावत, मरयो दशौ दिशि बागि ॥२॥ करत अनेक उपाय निरंतर तू जिन्ह के हित लागि ॥ परत न कबहूँ पूर कूर लखि, भरत न तृष्णा घागि ॥३॥ अस बिचारि सजि साज सु बैष्णव, धनुष बाण भुज दागि ॥ प्रेमलता चित चेति सबेरो, युगल नाम अनुरागि ॥४॥

पद (२२८)

सकल तजि नाम निरन्तर रटो ॥टेक॥

जबलगि तनमें प्राण जीह मुख,माहिं न तबलगि हटो॥
प्रमुदित बैठि इकन्त मारि मन,हुलसि हुलसि रस चटो
॥१॥ भूलि न परो बिषय के फन्दनि, जेहि तेहि बिधि
दिन कटो॥ तजत जाउ करि यतन अगुण नित, शुभ
गुण गणनि जटो॥२॥ छानि पियो जल देखि चलो
थल, भक्षा भक्ष न गटो॥परिहरि कपट कुसंग बिविध
मत, वैष्णव बेष ठटो॥३॥ बिषम भाव मद मान दम्भ
तजि, ईष्ट धाम महि अटो॥ श्रवण कथा मुख नाम
मनोहर, सन्त समाज सुसटो॥४॥प्रभु सन दृढ़ सम्बन्ध
जोरि जिय,जग सम्बन्धनि छटो॥कादरता करिदूरि
जन्म भरि, भजन समर महँ डटो॥५॥ मायिक सरस
पदारथ नाना,दुख प्रद तिन्ह सन फटो॥ उभय लोक
सुख सुगति चहहु तौ, नाम रटत नहिं नटो॥६॥ राखो
संयमसहित शरीरहिं,अधिक मोटाउ न लटो॥ अभय
अकिञ्चन असल फकीरी, करो समय अट पटो॥७॥
लखहुं न पर के दोष गहहु गुण, बिपति पराई बटो॥
प्रेमलता गहि चाल गरीबी, सुख युत आयू घटो॥८॥

पद (२२८)

सुमिरिय श्री सियराम नाम नित, सुख दायक

दुख भञ्जन हैं रे ॥ टेक ॥ सर्बेश्वर सब भाँति सुलभ शुठि, सरस शरण जन रञ्जन हैं रे ॥१॥ अधम उधारण बिरद बदत श्रुति, बन्ध बिमोचन खञ्जन हैं रे ॥ दर, शावत उर रूप मनोहर, कामादिक मद गञ्जन हैं रे ॥२॥ ज्ञान बिचार बिलोचन के हित, सुखद सुहावन अञ्जन हैं रे ॥ प्रेमलता मन मुकुर मलिन के, अमल अनूपममञ्जन हैं रे ॥३॥ पद (२३०)

रसनियाँ नाम सुखद सब तौर ॥टेक॥

लय लगाय रटु सदा मानि सिख, बाद स्वाद तजि बौर ॥ जन्म मरण दुख दुसह हरण कलि, नाहिन साधन और ॥१॥ काल ब्याल मुख बाय रह्यो तकि करिहै छण में कौर ॥ पालिय ताहि बिदारन के हित, बदनहिं नाम सु न्यौर ॥२॥ का सुख सोवति सुख मंदिर में, ओढ़ि बिषय रस सौर ॥ छण छण छीजत जात उमरिया भजु श्री श्यामल गौर ॥३॥ भय दायक रिपु भरे दशो दिशि, सुखद न कौनिउ ठौर ॥ जे न के न बिधि रटै नाम जो, मिलै भजन की दौर ॥४॥ सतगुरु कृपा नाम बल श्रम बिनु, जाय घोर भव पौर ॥ प्रेमलता श्रुति सन्त बखानत, नाम सकल शिर मौर ॥५॥

पद (२३१)

रटे बिनु नाम न कलि कल्याण ॥ टेक ॥

सतयुग त्रेता द्वापर युग मधि, पूजा मख अरु ध्यान ॥ बिधि वत करि जन तरत रहे भव, गावत बेद पुराण ॥ १ ॥ कलि युग आइ ग्रसे शुभ गुण गण;कर्मधर्म अभिमान ॥ अवगुन कीन्ह प्रगट दशहू दिशि, पाप भयो परधान ॥२॥ गयेउ पराय सकल साधन सिधि,भगति भाव बिधिज्ञान ॥ बूड़ेउ पाप पयोधि नारिनर, पावत कहुँ न ठिकान ॥ ३ ॥ हठकरि जो कोउ करत योग जप, कर्म धर्म तपदान ॥ निबहन देत न कोपि नशावत, हति कामादिक बाण॥४॥मोर राज कलि कहहिं नाम तजि, तरन चहहिं बिधि आन ॥ तेनर मूढ़मोह बश निशि दिन सहहिँ बिपति अयान ॥ ५ ॥सोइ मम बन्धु मित्र प्रिय परिजन, सुहृद सखा अरु प्राण ॥ रटत नाम जो परिहरि साधन, करि प्रभु गुण गण गान ॥ ६ ॥ पैहैँ सोइ सुख सुगति भगति मति, मङ्गल मोद महान॥नाम बिमुख ते सहहिं दुसह दुख, आदि मध्य अवसान ॥७॥अस बिचारि जे चतुर सन्त जन,सुनि कलि काल

बखान ॥ रटहिं निरन्तर नाम त्यागि भ्रम, बैठि सु प्रेमलतान ॥ ८ ॥

पद (२३२)

सकल पद वारौं नाम रटन पै ॥ टेक ॥

सुन्दरता त्रिभुवनकी वारौं, श्री सियराम छटन पै ॥ १ ॥ सप्त पुरी बैकुन्ठ आदि पुर, श्री मिथिला सु अटन पै ॥ वारौं बिपुल श्यामताई जिमि, श्रावण सजल घटन पै ॥ २ ॥ बेद पुराण सु सास्त्र मंत्र बहु, नाम सु बरण पटन पै ॥ वारौं बार अनेक गङ्ग जिमि, कमला सरित तटन पै ॥ ३ ॥ साधन ध्यान मोक्ष नवधादिक, भगति सु नाम सटन पै ॥ वारौं अमित जटा जटधर जिमि, शिव के सुभग जटन पै ॥ ४ ॥ असन बसन भूषण विभूति बहु, नामामृत सु चटन पै ॥ वारौं बिपुल अशित अहि शिशु जिमि, सिय पिय कुटिल लटन पै ॥ ५ ॥ बिद्या बिनय बिबेक जहाँ लगि, नर नागर सु नटन पै ॥ वारं प्रेमलता सबसब बिधि, नाम सु लय लपटन पै ॥ ६ ॥

पद (२३३)

रटे बिनु नाम न पैहौ राम ॥ टेक ॥

कोटिन जन्म जाँहि बरु सेवत, देवी देव तमाम ॥ १ ॥ साधि मरहु बरु जन्म अनेकनि, साधन बहु दुख धाम ॥

पढ़ि पढ़ि बरुक मरहु बहु पोथिन, अथ यजु ऋग श्रुति साम॥२॥यहकलि काल न साधनदूसर, तजि सिय राम सु नाम॥ सकल आश परि त्यागि रटहिं जे, लहहिं परम बिश्राम॥३॥ बिलग बिलग युग धर्म बिचारहु, हठ को है नहिं काम॥ ध्यान प्रथम युग कर्म सु दूसर, द्वापर अर्चन श्याम॥४॥ बर्तमान नृप नीति प्रजा जिमि, मानहिं तजि गति बाम॥ जोप्रति कूल करहिं कछु हठ बश, खैंचत तेहि नृप चाम॥५॥ तिमि कलि राज नाम गति केवल, अपर न ठाकुर ठाम॥ प्रेमलता गुरु चरण हृदय धरि, रटु सिय राम ललाम॥६॥

पद (२३४)

रटहु मन राम नाम दिन रतियाँ॥टेक॥

आलश नींद बिहाइ कपट छल, जगत जाल बहु बतियाँ॥१॥ गेह देह धन मातु पिता सुत, नारि बन्धु हित जतियाँ॥ अन्त समय कोउ काम न अइहैं, मरिहैं जब यम लतियाँ॥२॥ बिलग बैठि रटु नाम बिलम तजि, जो चाहै शुभ गतियाँ॥ सेउ सन्तगुरु चरण सरोरुह, करु जनि आलस घतियाँ॥३॥ परिहरि लाज उदर हित डोलत, जहँ तहँ काढत दतियाँ॥ चेतन असम

अनूप रूप निज, बिसरयो पाइ कुमतियाँ ॥४॥ गर्भ बास कर कौल सुरति करु, लिखि आयो जो पतियाँ ॥ भूल्यो का अवलोकि मूढ़ मन, जारत निसि दिन छतियाँ ॥५॥ सीखि साधु आचरण हरण अघ, तजि मन मुखता अतियाँ ॥ प्रेमलता बोरै जनि नैयाँ, भव निधि आपन हतियाँ ॥६॥

पद (२३५)

सुमिर सियराम नाम हर घड़ियाँ ॥ टेक ॥

आलस बश केहि लागि नशावत, मन मानुष तनु बढ़ियाँ ॥ ॥१॥ खात पियत सोवत बतियावत, निशि दिन जात सु कढ़ियाँ ॥ समुझत नहीं अचेत मोगरनि, कूटेंगे यम हड़ियाँ ॥२॥ बैठत फूलि तुरँग गज पीठनि, चलत टेककर छड़ियाँ ॥ परमारथ सियरामभजन पथ, तेहि पर कबहुँ न चढ़ियाँ ॥३॥ ग्रह कारज लवलीन निरन्तर, बिषयभोगमत्ति मढ़ियाँ ॥ रटेउ न श्रीसिय रामनाम मुख, बातें बिपुल सुगढ़ियाँ ॥४॥ पहिरत पुलकि सु बसन विभूषण, मणि मोतिन की लड़ियाँ ॥ मोह बिबश हित अहित न सूझत, मौत शीस पर खड़ियाँ ॥५॥ भजन भाव को मर्म न जान्यो, पोथी ब

हु बिधि पढ़ियाँ॥ प्रेमलता मत मानि अजहुँ करु, युगल नाम की झड़ियाँ॥६॥

पद (२३६)

सुमिर सिय राम नाम फिरि फिरियाँ॥ टेक॥

नरदेही करि कृपा दीन प्रभु अनुपम अब की बिरियाँ॥ नाशै जनि तेहि वृथा सुरति करु, गर्भ बास की किरियाँ॥१॥ तजि बिलम्ब करु यतन बेगि अब, आयू जात सु गिरियाँ॥ रटु सियराम नाम निशि बासर, केहि लगि लावत दिरियाँ॥२॥ कुटुमन के सँग मानि रह्यो सुख, भोगत नइ नइ तिरियाँ॥ मैं मैं करत मिल्यो तिन्हि सँग में, पर बश परिज्यों छिरियाँ॥३॥ बिसर्यो सहज स्वरूप शिंह वत, मोह जाल महँ घिरियाँ॥ बन्यों उदर की किङ्कर कादर, छाई हृदय अँधिरियाँ॥४॥ डोलत बोलत बयन भयावन, मन चित रञ्च न थिरियाँ॥ मुखिया बनि मति मन्द जगत को, भार उठायो शिरियाँ॥५॥ साधु कहावत भजन न भावत, नीकी लगत अमिरियाँ॥ घर तजि उड़ौ फिरै दशहू दिशि, मूरख ज्यों नभ चिरियाँ॥६॥ पुनि २ अज्ञ कर्म कोल्हुनि में, जात

भजन बिनु पिरियाँ ॥ प्रेमलता कोउ काम न आवत, लोक शनेह अखिरियाँ ॥ ७ ॥

पद (२३७)

सुमिर सियराम नाम पुनि पुनियाँ ॥ टेक ॥ मान बड़ाई ऋधि शिधि जग सुख, सब ये खुन खुनियाँ ॥ बिसरि जात जननिहिं सुत तेहि छण, कर गहि झुन झुनियाँ ॥ १ ॥ भूलन के ये पंथ जानि जिय, तजहु सुसिख सुनियाँ ॥ श्री सियराम नाम की छण छण, करत रहहु सुख धुनियाँ ॥ २ ॥ दुख दायक सियराम नाम बिनु, ऋधि शिधि साधन दुनियाँ ॥ नाम रटत पैहौ अनुपम सुख, कहहिं सन्त जन गुनियाँ ॥ ३ ॥ बनिहै नहिं कछु भजन भाव तब, जब तनु होइहै जुनियाँ ॥ निशि दिन छीजत देह दारु यह, लगी मौत उर घुनियाँ ॥ ४ ॥ रटत न नाम पाय नर तनु कलि, काम अनल बय हुनियाँ ॥ पैहैं ते परिणाम दुसह दुख, लुनिहैं सोइ जो बुनियाँ ॥ ५ ॥ लख चौराशी भारनि पुनि २ जनमि जनमि जन भुनियाँ ॥ प्रेमलता तजि नाम काम धुक, भखै कर्म कण चुनियाँ ॥ ६ ॥

पद लावनी (२३८)

सियराम नाम रटु मूढ़ पढ़ा क्या सीता, यह

मानुष जन्म सु पाइ व्यर्थ क्यों खोता ॥ टेक ॥ जिन्ह कों तू निशि दिन कहै मोह बश मेरे, सो सब स्वारथ के सगे नहीं कोउ तेरे ॥ आया क्या लेकर यहाँ जाय क्या लेरे, लखि खोलि हिये के नयन चरित प्रभु केरे ॥ जो करी सु गर्भ सहाय आय तब नेरे । जहँ घोर दुसह दुख सह्यो समुझि जिय येरे ॥ करि कृपा हरे परि ताप गर्भ के जेरे । अब तू तेहि बिसरत जात पेट के चेरे ॥ केहि लागि भोगता बिपति फिरे क्यों रोता । सियराम नाम रटु मूढ़ पड़ा क्या सोता ॥ १ ॥ आयो करि कहा करार गर्भ में भाई । प्रभु सन तू बारहिं बार बिनय बहु लाई ॥ अरुझि गयो इत आइ पाय ठकुराई । लिये जोरि नये जग नेह परम दुख दाई ॥ रँगि रह्यो नारि के रंग अङ्ग लपटाई । बय छण छण छीजत जात न परत लखाई ॥ सूझत नहि हानि न लाभ तरुणता पाई । अनयास बिषय में प्रीति होत अधिकाई ॥ नहिं सुनत सिखावन नीक खात भव गोता । सिय राम नाम रटु मूढ़ पड़ा क्या सोता ॥ २ ॥ नित पढ़ै सुनै बहु कथा व्यथा नहिं जावै । है आपन महा मलीन ज्ञान शुभ गावै ॥ करि कर्म कुटिल नादान सु जन्म नशावै । शुचि सन्त सभा

ढिग कबहुँ भूलि नहिं आवै ॥ संग्रहै अगुण गुण त्यागि कबहुँ जोजावै नहिं सुनै गुरु उपदेश बैठि औंघावै ॥ अरु लागि लागि पर कान अधिक बतरावै । कोउ कहै रहौ चुप सुनत बहुरि खिसियावै ॥ करनी बिनु बहु ग्यान कथै ज्यों तोता । सियराम नाम रटु मूढ़ पड़ा क्या सोता ॥३॥ अति निपटहि बिसरे नाथ हाय अज्ञानी । परि जाति पाँति के फन्द भयो अभिमानी ॥ श्री गुरु पद पंकज बिमुख बुद्धि बौरानी । उन्मत्त भयो जग फिरै मूढ़ हठ ठानी ॥ सुमिरत नहिं श्री सियराम नाम सुख दानी । जो मन माने सोइ करै परम हित जानी ॥ उर ज्ञान बिचार न लेश धूरि जिंदगानी । खर कूकर सम आचर्ण काक सम बानी ॥ बिनु भजे नाम बशु यांम जायगा जीता । सियराम नाम रटु मूढ़ पड़ा क्या सोता ॥ ४ ॥ मरना है बिश्वा बीस जान सब कोई । तद्यपि सुमिरत नहिं नाम काम प्रद जोई ॥ कोइ घर घर मागत भीख दुखित अति रोई । कोइ अश्व गजनि चढ़ि चलै बिसारि प्रभु सोई ॥ कोइ बिरचत घर अस्थान द्रव्य बहु खोई । बर्षनि को ठाटै ठाट रहब दिन दोई ॥ सेवत नहिं साधु सुजान गुरु मुखी होई । मुख रटत न

सीताराम त्यागि जग छोई ॥ अलि प्रेमलता प्रभुबिमुख जाय नित होता। सिय राम नाम रटु मूढ़ पढ़ा क्या सीता ॥ ५ ॥

पद (२३८)

बिसरि सियराम नाम जनि जाइ ॥ टेक ॥

यह बड़ शोच रहत निशि बासर, चित न अन्त अरुझाइ ॥ १ ॥ श्री सियराम सन्त सत गुरु पद, बन्दौं जन सुख दाइ। यह बर देउ कृपा करि मम मन, रटत न नाम अघाइ ॥ २ ॥ तजि प्रपंच जग जाल शुभाशभ, सदा रटौं लय लाइ। दुखी होइ बिनु नाम नाथ उर, रटत अधिक हरषाइ ॥३॥ मातु पिता सुत नारि शनेही, देह गेह धन भाइ। माया कर परिवार प्रबल यह, दुख प्रद मोह सहाइ ॥ ४ ॥ इन्द्रिनि के सुख भोग बिषय बहु, ममता मान बड़ाइ। सेवत कबहुँ न होइ तोष उर, अधिक अधिक लपटाइ ॥ ५ ॥ बिष मोदक ज्यों खात लगहिं प्रिय, पुनि शिर धुनि पछिताइ। बिबिध भोग त्यों देत अन्त दुख, प्रभु पद बिमुख कराइ ॥ ६ ॥ सहत दुसह दुख सदा मूढ़ मन, नाना तनु जगपाइ। मानत हारि न बिषय करत सठ, देत सुजन्म नशाइ ॥७॥ रटेउ न नाम काम प्रद कबहूँ, सादर सुरुचि बढ़ाइ। तोर मोर

करि मरत अभागी, बकत बृथा बहु बाइ ॥८॥ तरहिं कहत श्रुति सन्त नाम जपि, नरभव शिन्धु अयाइ। प्रेमलता बिनु योग यतन कलि, उलटो सूधो गाइ ॥९॥

जय सियराम जय जय सियराम

पद (२४०)

जगत सब राम नाम आधीन ॥ टेक ॥

भक्ति मुक्ति सुख सुकृत सु साधन, कर्म धर्म गुण तीन। बसत सुखी सियराम नाम महँ, जिमि अगाध जल मीन ॥१॥ बिधि हरि हर सुर सिद्ध नाग मुनि, जे गुण ज्ञान प्रबीन। भूतप्रेत गन्धर्ब चराचर, सकल नाम महँ लीन ॥२॥ माया ब्रह्म बेद बिद्या सब, मंत्र यंत्र बल पीन योग जग्य जप दान ज्ञान ब्रत, नहिं कछु नाम बिहीन ॥३॥ सम दम बिरति बिबेक बिचार सु, गुप्त प्रगट अति झीन। सरसत उर बिनु यतन किये बहु, रटत नाम रँग भीन ॥४॥ धनि धनि ते कलि काल सन्त जन, होइहैं कबहुँ दुखीन ॥ जिन्ह के बदन सदन निशि बासर, युगल नाम आसीन ॥५॥ सुमिरत नाम बढ़त मुद मंगल, होत न केहु बिधि छीन। बजत निशान नाम नेहिन घर, अपर फिरहिं जगदीन ॥६॥ जेहि सेवत दुहुँलोक परम

सुख, पावत ताहि न चीन। प्रेमलता ते जीव अभागी नरतनु धरि का कीन॥ ७॥

पद (२४१)

श्री सियरामैं रटत काहे नैयाँ ॥टेक॥

तजि जग जालजवाल शोक प्रद, बैठि सु सीतल छैयाँ॥ तपत वृथा त्रयताप मोह बस, भूलि गये सिय सैयाँ ॥ १ ॥ शिश्नोदर हित ब्याकुल निशिदिन, करत अनेक उपैयाँ॥ सुनत न सीख सरल सन्तन की, निरखत आन लुगैयाँ॥ २॥ अज्ञ दशा में गयो लरिकपन, भजेउ न प्रभु सुख दैयाँ ॥ तरुणाई बल बिबस भयो अति, मारि चलत कुदकैयाँ ॥ ३ ॥ खाय अघाय नींद भरि सोवत, खोवत बयस वृथैयाँ॥ बिषयनि संग प्रीति भोगन ते, कबहुँन पेट अघैयाँ॥ ४॥ स्वारथ लागि लाज परिहरि खल, द्वार द्वार बिललैयाँ॥ परमारथ पथ चलत सँकोचत, गर्भ कौल बिसरैयाँ॥ ५॥ सूझत नहिं कछु हानि लाभ निज, धन हित रारि बढ़ैयाँ॥ मैं मैं मोर करत जनु जग सब, चाहत शीस उठैयाँ॥ ६॥ लौकिक नाते नेह जार महँ, रोम रोम अरुझैयाँ॥ नट मरकट इव मूढ़ जन्म भरि, ते बहु नाच नचैयाँ

॥७॥ अबहूँ बूझि शीस बिरुधाई, चाहति प्रबल अवैयाँ॥ करु सतसंग सन्त गुरुसेवा, सब बिधि जानि हितैयाँ। ॥८॥ प्रभु पद बिमुख कीन्ह बहु धन्धे, पायेउ कछु न नफैयाँ॥ नाना योनि भ्रमत शठ हठ बश, जहँ तहँ धक्का खैयाँ॥९॥ जो चाहै दोउ लोक परम सुख, मङ्गल मोद बधैयाँ॥ तौ भजु नाम काम तरु सादर, प्रेमलता बलि जैयाँ॥१०॥

पद (२४२)

सुमिरिय सीताराम नाम नित, चितदै तजि जगकी ठकुराई॥ टेक॥ ज्ञान बिचार बिवेक बिमल उर, उदय होय ममता तम जाई॥१॥ बेद पुराण सु सन्त बखानत, अगम अपार नाम प्रभुताई॥ तारक भव हारक संसृति दुख, लोभ उदधि कुम्भज सुखदाई॥२ अगुन सघन बन दहन सु पावक, जगहित जनु सुरतरु सुरगाई॥ ईश शिरोमणि त्रिभुन कारण, अधम उधारण बानि सुहाई॥३॥ साधन हीन सुलभ सबही बिधि उभय लोक पालक पितु माई॥ सगुण अगुण दोउ ब्रह्म अगम अपि, प्रगटहिं नाम रटत लय लाई॥४॥ चहुँ युग नाम प्रभाव यदपि सम, कलि युग तदपि अधिक रह्यो छाई॥ विनु श्रम देत परम गति जीवनि, सादर

जपत लेत अपनाई ॥५॥ कलि न कर्म जप योग भगति रति, संयम नेम रहे सकुचाई ॥ केवल नाम अधार जानि जिय, भजहु सदा मन बच क्रम भाई ॥ ६ ॥ नामैं सेवा नामैं पूजा, नामैं मैं प्रभु रूप लखाई॥ नामैं ध्यान समाधि दान तप, नामैं रटु निशि दिन अधिकाई ॥७॥ कटिहैं बिधि निषेध दोउ बन्धन, लोक लाज कुल कानि ढिठाई॥ पैहै परमानन्द जियत जग, सुर दुर्लभ मानुष तनु पाई ॥ ८ ॥ नाम पिता गुरु मातु सखा हित, नाम सहायक नाम बड़ाई ॥ सर्बस नाम सकल सुख दायक, सब लायक लखि सुमिरु अघाई ॥ ९ ॥ जीवत सोइ जो रटत नाम मुख, अपर मृतक सम जियत बृथाई फिरत स्वतंत्र नाम जापक महि, नाम बिमुख रहे नर अरुझाई ॥ १० ॥ करत शोक प्रद कर्म धर्म बहु, क्षण सुख लागि गयेउ लपटाई ॥ समुझत नहिं निज हानि लाभ कछु, नाम बिना कृत सब दुबिधाई ॥ ११ ॥ अन्त समय कोउ काम न अइहैं चढ़िहैं शीस काल जब आई ॥ प्रेमलता सिय राम नाम तब, हरहि बिपति अघ ओघ नशाई ॥ १२ ॥

पद (२४३)

सुमिरु मन नाम सु करुणा कोष ॥ टेक ॥

मुखमंदिर में निबसति बाणी, जब लगि तनु कर होस ॥ १ ॥ प्रमुदित बैठि इकन्त नेमकरि, परिहरि अपर भरोस ॥ एक लाख अरु सहस पचीसहि, रटु नित नाशहिं दोष ॥ २ ॥ अनायास सरसहिं उर शुभ गुण, विमल ज्ञान सन्तोष ॥ नाम समान न कोउ शिधि साधन, शिंह सम न खरगोश ॥ ३ ॥ अस बिचारि रटिये सिय रामहिं, नतु रहिये खामोश ॥ सारहीन पोसे सब कर तब, दायक भ्रम अफशोस ॥ ४ ॥ नाम सुधा निधि त्यागि तृप्तिहित, चाटहिं जे नर ओस ॥ पावहिं ते कबहूँ न परम सुख, यह मत मोर सु ठोस ॥ ५ ॥ कर्म धर्म कलि काल उड़ायेउ, मारुत जिमि रुइ फोस ॥ यहि युग एक सुनाम करन हित, प्रेमलता तेहि घोष ॥ ६ ॥

पद (२४४)

बिसरु जनि नाम रटन पल पाव ॥ टेक ॥

सीताराम सुमिरु मन हरदम, सपनेउ जनि अलसाव ॥ १ ॥ मानुष तनु गुण ग्यान खान लहि, बादि न इतउत धाव ॥ गुरुमुख होइ बेगि रटि नामैं, दुर्लभ पायेउ दाव ॥ २ ॥ खानि पियो जल यलहिं देखि चखु, भक्षा भक्ष न खाव ॥ करि निर्वाह सुजेन केन विधि, महल अटा जनि

छाव ॥ ३ ॥ जीवन लखि अति थोर जगत सन, अधिक
न नेह बढ़ाव ॥ करि आयो का कौल गर्भ में, प्रभु सन
सो चित लाव ॥ ४ ॥ पर सुख निरखि हरखि पर गुण सुनि,
निज गुण सुनि सकुचाव ॥ साव धान होइ समझ
सार तू, आनहिं जनि समुझाव ॥ ५ ॥ करु सत
संग रशिक सन्तन कर, प्रमुदित नामहु गाव ॥
मायिक बिषय भोग दुख प्रद बहु, तिन्ह सन मनहिं
हटाव ॥ ६ ॥ बिगरति अमित जन्म ते आई, अब की
अवसि बनाव ॥ नतरु भोगिहै बहुरि कठिन सोइ, लख
चौराशी घाव ॥ ७ ॥ कलि न कर्म तप ध्यान योग जप,
साधन भक्ति न भाव ॥ केवल नाम अधार सकल बिधि,
साँच कहौं पतियाव ॥ ८ ॥ बेद पुराण सु सन्त पुकारत
नारदादि मुनि राव ॥ प्रेमलता सिय राम नाम रटु,
चित न अन्त भरमाव ॥ ९ ॥

पद (२४५)

सुमिरु मन राम नाम करु दाया ॥ टेक ॥
बिनय करौं कर जोरि पाँय परि, त्यागि मोह मद
माया ॥ १ ॥ स्वारथ के सब सगे जगत में, तिन्ह सँग तू
अरुझाया ॥ हम हम करत जरत तिहुँ तापनि, फिरत

दशो दिशि धाया ॥२॥ सुख के हेतु उपाय निरन्तर,
निशि दिन करत निकाया॥सुख निधानसियरामनाम
तजि, कोउ न कबहुँ सुख पाया॥३॥ लै जैहै का अन्त
शीस धरि, लेकर के क्या लाया॥समुझत नहिं अज्ञान
मोह बश, अतिशय भर्म भुलाया॥४॥शिश्नोदर को
दाश बन्यो सठ, सदा जहाँ जहँ जाया॥ कबहुं नलह्यो
बिराम भजन विनु, पुनि पुनि धोखा खाया॥५॥मानुषहू
तनु पाइ अभागे, रामनाम नहिं गाया॥ दो दिन
की जिन्दगानी के हित, बहु ब्योहारबढ़ाया॥६॥मोर
सदन युवती सुत सम्पति, मेरो कुटुम सहाया ॥ मेरो
बाग बड़ागखेत यह, कहिकहि जन्म नशाया॥७॥नित
नित नयो लोभ लालच उर, बाढ़त आइ सवाया॥नित
नित नये पदारथ भोगत, कबहुँ न पेट अघाया ॥८॥
स्वारथ लागि दुखावत आनहिं, कर्म कीच लपटाया॥
बिगत बिरागबिवेक नाथ निज, सीता पति बिसराया
॥९॥ अबहूँ मानि कही रटु सोइ जो, श्रीगरु देव बताया॥
प्रेमलता प्रभु नाम लाजते, काको नहिं अपनाया

पद (२४६)

पढो सियराम नाम की पटियाँ ॥टेक॥

सेइ साधुगुरु चरणहरणअघ,करहु न कारज घटियाँ॥ आयू धन लहि नाम सु सौदा, करिले सन्तन हटियाँ ॥ १ ॥ नरतनु पाइउ तरेउ न भवनिधि, बिषय पदारथ चटियाँ॥ भजन, कह्यो सो तज्यो मोह बश, जन्म मिलायो मटियाँ॥२॥भावत नित नव भोग सुभोजन, बाम बिभूषण जटियाँ॥ शाल दुशाल गलैचा तोषक, तकिया बसन सु खटियाँ॥३॥ चेतत नहीं अचेत काल शिर, छाय रह्यो बर भटियाँ॥ तजत न जग सम्बन्ध भजत नहिं, सियबर गुरुपद सटियाँ॥ ४ ॥ हाड़ मास के पिञ्जर पोसत, पर दुखकबहुँ न बटियाँ॥ पियामिलन हित बिरह प्रगट करि, उर कहुँ देह न लटियाँ ॥५॥ परम स्वतंत्रहोइप्रमुदित मन, प्रभु प्रिय धाम न अटियाँ॥ प्रेमलता धन्धे में बितई, बय सु नाम नहिं रटियाँ

पद (२४७)

रसना रटु सियराम यथारथ ॥टेक॥

सुर दुर्लभ नर देह पाइ कर, तेहि जनि खोउ अकारथ ॥१॥ मातु पिता युवती सुत बन्धव, चाहत निज निज स्वारथ॥हेतु रहित हित राम नाम कलि, अपर न कोउ परमारथ ॥ २ ॥ नाशवान यह जगत जहाँ लगि,

मायिक जिते पदारथ ॥ भोगि रह्यो तू तिन्हैं मानि
सत, आपहिं जानि कृतारथ ॥३॥ सेवत हरि गुरु सन्त
न सुमिरत, नाम सहित पुरुषारथ ॥ शुचि उपदेश सु
साधु बतावत, सुनत न समुझि अनारथ ॥ ४ ॥ कादर
बन्यो भजन पथ मन ज्यों, कुन्ती सुत लखि भारथ ॥
प्रेमलता गुरु रूप होइ हरि, समुझायो जिव पारथ ॥५॥

पद (२४८)

सुमिरु मन नाम निरन्तर साँचा ॥ टेक ॥
केहि लगि फिरै मोह ममता बश, उदर हेतु जग नाँचा
॥१॥ जो प्रभु करी सहाय गर्भ में, हरे सकल दुख धाँचा ॥
भजु तेहि तर्क बिहाय सर्ब सुख, पैहै तू बिनु याँचा ॥२॥
जीवन जात चलो अति अनुपम, जरत घोर भव
आँचा ॥ आदि मध्य परिणाम दुखद जे, तिन्ह के सँग
रँग राँचा ॥३॥ तजि सीताबर परम शनेही, जोरि
लीन हित काँचा ॥ प्रेमलता कहु लाभ लह्यो का, कबहुँ
न मुद मन माँचा ॥ ४ ॥

पद (२४८)

निडर सियराम नाम रटु भाई ॥ टेक ॥
सुख पैहै दोउ लोक शोक तजि, द्रविहैं सिय रघुराई ॥१॥

मंत्रयंत्र करतूति टोटिका जादू जग बहुताई ॥ भूत प्रेत
डाकिनी निशाचर, भालु बाघ दुख दाई ॥ २ ॥ दानव
देव पिशाच नव ग्रह, मायाबी अधिकाई ॥ रामनाम
जापक पर सपनेउ, करि न सकत कुटिलाई ॥ ३ ॥ ध्रुव
प्रहलाद कबीर कमध्वज, तुलसी सदन कसाई ॥
बालमीकि घटयोनि सूर सुक, नारद मीरा बाई ॥ ४ ॥
संकर शेषगणेश दिवाकर, षटमुख लही बड़ाई ॥ केवल
सो सियराम नाम रटि, कथा रही जग छाई ॥ ५ ॥
अजामील गज गीध नाम रटि, कहहु को न गति पाई ॥
अबिचल अघट नामकी महिमा, रामौं सकैं न गाई
॥ ६ ॥ मम स्वामी श्री राम बल्लभा, शरण बन्दि गृह
जाई ॥ बँधे बिमोचे सन्त नाम बल, प्रीति प्रतीति
दृढ़ाई ॥ ८ ॥ चहुँ युग तीनि काल त्रिभुवन में, नामिन
कीबनि आई ॥ प्रेमलतौ की बात भली विधि, बिगरिउ नाम बनाई ॥ ८ ॥

पद (२५०)

सोच तजि सुमिरु नाम मन मेरे ॥ टेक ॥
यह संसार मोह की फाँसी, श्रुति पुराण कह टेरे ॥ जिन्ह
कहँ तू अपने करि मानत, सो न काल तिहुँ तेरे ॥ १ ॥
जननी जनक बन्धु सुत बनिता, स्वारथ के सब चेरे

शिष्य सजाती सगे सनेही, भली भाँति हम हेरे ॥ २॥ प्रीति करिय तौ प्रीति करहिं पुनि, बैरी नयन तरेरे ॥ गाहक होत कुटिल प्राणन के, नाशक सुकिरत केरे ॥ ३॥ हेतु रहित हित प्रभु सीता बर, तिनहिं अपन पौ देरे॥ श्रीसियराम नामरटि सादर, जग जीवन फललेरे ४॥ जीव पीव पद बिमुख सहहिं दुख, काल कर्म गुण घेरे ॥ नाचहिं नाना योनि देह धरि, खात फिरहिं भट भेरे ॥५॥ तिन्ह कर तू रुख राखि चल्यो नित, गर्भ कौल तजि येरे ॥ अजहूँ चेति अचेत छाँड़ि छल, भजु सियराम सबेरे ॥ ६ ॥ सब सन नातो तोरि मोरि मुख, रहु सन्तन के नेरे ॥ प्रेमलता रटि नाम निवसि सुख, मिथिला अवध सुखेरे ॥ ७ ॥

पद (२५१)

सुमिरु सियराम नाम तू रसना ॥ टेक ॥

बार बार तोहि कहि समुझायेउँ, श्रवण सुनति सिख कसना॥ ॥ नर तनु धरि जनि बादि नशावै, पाइ ऊँच पद खसना॥ रस मय स्वाद बादि बहु दुख प्रद, तिन्ह के होउ स्व बशना ॥ २ ॥ यह संसार मोह कर दल्दल, ता मधि नाहक भसना ॥ गाउ सु नाम भाउ प्रभु गुरु

मन, बहुरि न होइ बिनशना ॥ ३ ॥ बोलु मधुर प्रिय बचन बिचारि सु कटु कहि काहुइ डसना ॥पैहै उभय लोक परमानँद, बरणि,सकै कोउ जस ना ॥ ४ ॥ सुत बित नारि भवन यम फाँसी,पुनि पुनि तेहि महँफसना कर्म कुकाठहि सुगति अनल हित,प्रेमलताकहत्रसना

पद लावनी (२५२)

सब पोथी थोथिन् को तजिकर वह पोथी पढु मन मेरें॥ षट दश अष्ट चारि सुर मुनि नित जिस्की महिमाकहटेरे।टेक।जोपोथीपढ़िशृष्टि रचैंविधिविष्णु पालना करते हैं। महादेव पढ़ि जिस पोथी को बिनु श्रम जग संहरते हैं ॥ जो पोथी पढ़ि कूदि नीर निधि महाबीर गिरिवर धारी। सियहिं प्रबोधि विध्वंसि बाटिका निशिचर बधि लंका जारी॥दुर्घटकाज किये दशशिर पुर लोक चतुर्दश यश छायो। लै चूड़ामणि गर्जि गगनचढ़ि कपिन सहित प्रभु पहँआयो ॥साजि सेन कपिबाँधि पयोनिधि चहुँ दिशिते लङ्का घेरी॥ हते निशाचर सहितदशानन नगर राम ध्वाई फेरी॥ सियहिंमिलाय स कुशललखन युतल्यायेप्रभुहिंअवध खेरे।सबपोथी०॥१॥जोपोथीपढ़िशेषधरहिंमहिघटज

शिन्धु अचवन कीन्हा। भानु सु करहिं प्रकाश त्रिपुर पद पूज्य प्रथम गणपति लीन्हा॥ जो पोथी पढ़ि देव ऋषी भये नारद सर्ब लोक गामी ः ध्रुव प्रहलाद पढ़ी सोइ पोथी प्रगट कीन्ह श्री पति स्वामी॥ बालमीकि भये ब्रह्म ब्याधते आदि कबी पदबी पाई। रामायण सत कोटि सुभग जिन्हि देव गिरा महँ रचि गाई॥ तुलसिदासजीपढ़ि सोइ पोथी राम चरित मानस भाखा। धर्म घोर कलि युग महँ जिस ने बर्णाश्रम सबकर राखा॥ जो कोइ पढ़ै नामकी पोथी सो सेवक प्रिय प्रभु केरे। सब पोथी० ॥ २ ॥ एक बार पढ़ि यमन अजामिल ग्राह सहित गज गति पाई। बार बार जो पढ़ै तासु बश होत सिया सह रघुराई॥ सुवा सहित पढ़ि गणिका तरिगइ कबीरपढ़ि चढ़ि धाम गये। तुकाराम श्रीनामदेव जी पढ़ि सोइ पोथी लीनभये॥ कामध्वज रैदास आश तजि जिस पोथी का पाठ किया। त्रिणसमान लखि जग प्रभुता जिन्हि प्रभुहिं अपनपौ अरपिदिया॥ पद्मनाभ जी पढ़ि सोइ पोथी कोढ़ी को काया दीनी। नर्क निवासिनकी कुलबाधा ऋतूपर्ण जीहारलीनी॥ बिना

मोलदेतेश्रीसतगुरुतदपिदेतनरभटभेरे।सबपोथी०॥३॥ सबरी गीध बिभीषणपायो जो पोथी पढ़ि परधामा। जो पोथी पढ़ि तरे निशाचर प्रभु सन्मुख करि संग्रामा॥ स्वामी युगल अनन्य शरण जू जो पोथी पढ़ि गुण गाया। लक्ष्मण किला अवध सरयू तट अंग्रेजों से पुजवाया॥ श्रीस्वामी श्रीराम बल्लभा शरण कृपानिधि गुरु मोरे। जो पोथी पढ़ि जाइ जेल महँ सन्तन के बन्धन छोरे॥स्वामी अग्र दास नाभा जू जो पोथी पढ़ि बिस्तारी। रशिक शृङ्गारी सन्तन महिमा त्रिकाल दरशी भेभारी॥ तारण तरण हुए ते जगके गये पार भवबिनु बेरे। सब०॥४॥ऋद्धि शिद्धिसम्पतिगुणप्रभुता बिद्या बिनय साधु ताई। ज्ञान बिराग बिचार सु जप तप भक्ति भावना सुखदाई॥ शुभ कृत कर्म धर्म षट सम्पति आय सकल उर बस्ते हैं। पढ़त जौन वह पोथी निशि दिन लय लगाय तनु कस्ते हैं॥ दुर्लभ कछु नहिं रहत तिन्हें जे वह पोथी नित पढ़ते हैं। परम पूज्य ते जन त्रिभुवन में होत ऊँच पद चढ़ते हैं॥ कृतयुग रही ग्यान को पोथी त्रेता कर्म यग्य जाला।द्वापर पूजा प्रगट भई लखि अब आयो युग कलि काला ॥

जो पोथी चहुँ युग में गति प्रद ता पोथी में चित देरे।सबपोथी०॥५॥ श्री कलि युग महराज राजका ऐन सुनो सब दै काना। जो चाहै शुभ सुगति भगति रति उभय लोक जन सुख नाना॥ पढ़ै नामकी पोथी केवल अटै अवनि होइ मस्ताना। करिहौं मैं ता जानकी रक्षा निशि वासर धरि धनु बाना॥ मोर राज बसि आन युगन कर जो पढ़ते पोथी पाना। स्वप्नेउ पैहैं कुशलन ते नर आदि मध्य अरु अवसाना। श्रीसियराम नाम की पोथी पढ़ै त्यागि छल अभिमाना। तीनि लोक दश चारि भुवन में तेहि सम प्रिय नहिं मोहि आना॥ नाम शनेही पूजनीय मम सत्य कहौं पुनि २ टेरे।सब पोथी०॥६॥ चारि बर्ण चहुँ बेद चारि फल चहुँ युग अरु आश्रम चारी।चारि अङ्क के मध्य सकल जग समुझहिं कोउ रटि अधिकारी॥द्वादसबर्ष सनेम नाम कर आखर घोखे जो कोई। अनायास छूटे भव बन्धन परमातम पावै सोई॥ सवालाखसियराम नाम यह रटै बैखरी बानी से। कहुँ इकन्त थल बैठिससंयम बचि बनिता जिव खानी से॥ तब मिलिहैं सुख स्वाद अनूपम खिलिहैं हृदय कंज प्यारे। प्रेमलता प्रभुरूप पाय

प्रिय ह्वै रहिहौ जग ते न्यारे ॥ कृपा कीन गुरुदेव दया निधि दीन नाम शिर कर फेरे । सब पोथी पोथिन् को तजि कर वह पोथी पढु मन मेरे ॥ ७ ॥

पद (२५३)

सुनों अब निज आतम को ग्याना ॥ टेक ॥

जेहिते मिटै द्वैत दुख दायक, अहंभाव अभिमाना ॥ १ ॥ पढ़त सुनत श्रुति शास्त्र संहिता, पंडित बिपुल पुराना ॥ बिमल बिवेक हींन पढ़ि २ श्रम, कीन न आतम जाना ॥ २ ॥ नरतनु जामा पहिरि आतमा, शक्ति बनी मरदाना ॥ सकल कार्य करि रही शिद्धि सोइ, शकति लखो धरि ध्याना ॥ ३ ॥ चमड़े पर लखि चिन्ह बनें नर, उर आचर्ज जनाना ॥ साहस अनृत चपलतादिक जो, गुण दशशीश बखाना ॥ आतम नारि पुरुष यह जड़तनु, जिमि तरवार सु म्याना ॥ तनहूँ पर झलकत लाजादिक, कुच सु नारि पहिचाना ॥ ५ ॥ चेतन शक्ति सकल घट माहीं, खेलि रही नहिं आना ॥ नारि रूप तेहिं लागि अजादिक, पुरुष एक भगवाना ॥ ६ ॥ सब परतंत्र स्वतंत्र आप वह, आदि मध्य अवसाना ॥ सब के पति रघुपति तेहि कारण, नाम सु धरयो महाना ॥ ७ ॥

यह तिय भावन आवत जब लगि, तब लगि फिरत भुलाना ॥ मृषा होत सब शुभ चीन्हें बिनु, आतम रूप अपाना ॥ ७ ॥ रटै नाम सियराम सुगुरु सन, पाय बैठि मैदाना ॥ प्रेमलता लय लाय लखै तब, निज स्वरूप मस्ताना ॥ ८ ॥

पद (२५४)

रटत सियराम पुकारि पुकारि ॥टेक॥

पावत ते दोउ लोक परम सुख, कहैं श्रुति सन्त पुरारि ॥ १ ॥ भूली सहज स्वरूप आतमा, पुरुष बनी है नारि ॥ पति बनि ठान्यों ब्याह तियनि सँग, आतम नरता धारि ॥ ममता मदपी भई दिवानी, कहति न बचन बिचारि ॥ ३ ॥ देह बुद्धि उर छाइ रही निशि, सबके अति अँधियारि ॥ आतम ज्ञान भानु बिनु हम हम, करि झगरत जग झारि ॥ ४ ॥ कोउ न सुनत समुझत शुचि बानी, ठानत उलटी रारि ॥ ध्यान ग्यान अज्ञान धारि उर, बिसरि गयेउ तरवारि ॥ ५ ॥ पढ़ि थोथी पोथिनि अभिमानी, भयेउ दीनता टारि ॥ परमातम आतम नहिं चीन्यों, गयेउ जनम सब हारि ॥ ६ ॥ रटै नाम सियराम पाय जो, सतगुरु शुचि मन मारि ॥ ७ ॥

होइ प्रकाश खुलैं आतम चख, निरखै पलक उघारि
॥७॥ सूझै तब निज रूप यथारथ, जेहि मति गति मन
पारि॥ प्रेमलता सियलाल शरण लहि, बिहरै गर
भुज डारि॥ ८॥ पद (२५५)

प्रथम करु आतम तत्व बिचार ॥टेक॥

रटु रसना सियराम नाम नित, गुरु मुख सुनि यकतार
॥१॥ जन्मत मरत दुसह दुख सहि२, धरि धरि तनु संसार
बैठि इकन्त बिचारि हृदय निज, को मैं बारम्बार ॥२॥
को मारत पालत जन्मावत, बपु दै बिबिधि प्रकार॥
गर्भ बास ते जन्म मरन लगि, को दुख सुख प्रद यार
॥३॥ केहि लगि भर्मत लख चौरासी, योनिन फाँकत
छार॥ को तोहि बाँधि कियो अपने बश, को अब
छोरन हार॥४॥ चेतन शक्ति रही तू प्रभु की, प्यारी
मन गुन पार॥ देह बुद्धि धरि हृदय बिसारयो, सहज
स्वरूप उदार॥५॥ नारि पुरुष को भाव मृषा जो,
सो शिर धरयो गमार॥ सीता पति पति साँचे सबके,
तिन्ह मन कीन बिगार॥६॥ बिनु बिचार बनि पुरुष
आतमा, बिमुख भई महि भार॥ प्रेमलता गुरु देव
मिलैं जो, नाशैं मोह अँधार॥ ७॥

पद (२५६)

आतम तोर पिया श्रीराम ॥ टेक ॥

तू दुलहिनि अरधङ्गिनि प्रभु की, चेतन अमल ललाम ॥ १ ॥ प्राकृततिय तनु धारि बिसरि तेहि, बनी अपर की बाम ॥ नर बपु धरि तिमि नर बनि बैठी; तजि पति सुन्दर श्याम ॥२॥ पति सेवा सुखते बिमुखानी मान्यो फुर तनु चाम ॥ नाशवान जग के नेहि निकर, बिकेउ मोल बिनु दाम ॥ ३ ॥ हम हम करि धरि पुरुष भाव उर, जो सब बिधि दुख धाम ॥ अहंकार अति प्रबल कर्म लघु; ग्रसेउ मोह मद काम ॥४॥ सख्य दास पुत्रादि भाव जो, यदपि होयँ निस्काम ॥ पति पत्नी सम्बन्ध समान न, सुलभ सुखद बशुयाम ॥५॥ अपर भाव नकली असली यह, सखीभाव अभिराम ॥ पुरुष एक रघुपति सु आतमा, नारीरूप तमाम ॥ ६ ॥ पुरुष भाव त्यागें बिनु आतम, परमातम बिश्राम ॥ पावति नहिं सपनेउँ जो कोटिनि, सेवै ठाकुर ठाम ॥ ७ ॥ ब्यापि रही घट घट अग जग बिच, आत्म शक्ति गुण ग्राम ॥ प्रेमलता सियराम रटे बिनु, भूलि गई निज नाम ॥ ८ ॥

जय सियराम जय जय सियराम।

पद (२५७)

चेति अब चेति सु पति पद पागि ॥ टेक ॥
सहज स्वरूप सम्हारि सु आपन, पुरुष भाव जड़ त्यागि
॥१॥ मोह नींद पगि बहु योनिन मधि, सोयेउ अबतौ
जागि ॥ गुरु द्वारा सिय पिया जगावत, केवल तब हित
लागि ॥ २ ॥ उठि नहाउ सतसंग नीर शुचि, जरहु न
पुनि अब आगि ॥ मानुष तनु लहि हिलि मिलि पिय
सों, अब न कुयोनिन बागि ॥३॥ आत्म शक्ति तब नाम
सु चेतन, जड़नि संग रहि पागि ॥ अबहुँ होउ अनुकूल
भूल तजि, पिय सु प्रेम अनुरागि ॥ ४॥ अपनैहैं तोहि
अवसि जानि निज, प्रियपत्नी बड़ भागि ॥ प्रेमलता
प्रभु श्रीसीता बर, कर्म कुलेखनि दागि ॥ ५ ॥

* दोहा *

रटत नाम सियराम मुख, भासत सहज स्वरूप ।
प्रेमलता अद्भुत अकथ, चेतन अमल अनूप ॥ १ ॥

पद (२५८)

हम हम करति बिसरि निज भरता ॥टेक॥
भूत प्रेत पूजन में पागी, नाना मत साधै सुख लागी,
एकै त्यागि बिपुल सँग रागी, रही प्रथम पति बरता

॥१॥ झूठे पुरुष नपुंसक नारी, झूठा जग नाते संसारी, तिन्हि में अरुझि भई दुखियारी, आतम तू बनि करता ॥२॥ जड़ माया मय सकल पदारथ, तिन्हि महँ चेतन शक्तियथारथ, ब्यापेउआइकरनपुरुषारथधारि हिये अनुचरता॥३॥भई अचेतन करि जड़ माया, भूलि गई निज पति रघुनाथा, समुझति अब न सुनति शुचि गाथा, गही कठिन उर नरता॥४॥हाड़ चाम की नश्वर काया, तामें बैठि सु प्रभु बिसराया, मिथ्या ममता मोह बढ़ाया, त्रिबिधि ताप तनु जरता ॥५॥ बाहिर भीतर माया जानों, बिद्या अपर अबिद्या मानों, पुरुष एक श्री राम बखानों, जो न जन्मता मरता ॥६॥ नारि वर्ग जहँ लगि तनु धारी, जड़ चेतन मय रचना सारी, प्रेरक पुरुष राम औतारी, जगपालक संहरता ॥७॥ जहँ लगि सृष्टि दृष्टि में आवै, माया सब प्रभु केरि कहावै, पुरुष रूप जो ताहि बतावै, सो नरकनि में परता ॥८॥ आतम शक्ति तिय परम सयानी, देह अबिद्या रूप बखानी, पुरुष कहहिं केहि कहँ अग्यानी, सो नहिं भेद उघरता ॥ ९ ॥ ममता मद पी भई दिमानी, आतम शक्ति नर बनी अयानी, सब की सब बिधि मति बौरानी, बिमल

न ज्ञान उछरता ॥ १० ॥ पिता पुत्र कोउ दास सखादी, बादि बने बहु पुरुष प्रमादी, आतम शक्ति स्वरूप अनादी, भूलेउ भर्म न टरता ॥ ११ ॥ रटै सदा सियराम सु नामा, लखै स्व आतम रूप ललामा, रीझैं तब प्रभु पूरण कामा, प्रेमलता फल फरता ॥ १२ ॥

पद (२५८)

आतम मेरो नाम मैं तो रामकी दुलँहिया ॥ टेक ॥

मेरे पतिकी प्रीति अपारी, मोपै कबहूँ करत न न्यारी, मैं तिन्हि त्यागि भई मतवारी, ओढ़ी कपट कुलँहिया[2] ॥ १ ॥ जबते ये नश्वर तन पाये, तबते नाना नाम धराये, झूठे माते नेह बढ़ाये, प्रभुते मिटी सुलहियाँ[3] ॥ २ ॥ जाति कर्म बर्णाश्रम धर्मा, धरेउ सीश आतम परि भर्मा, ऐसी परी नीचता गरमा, बनि गइ डोम जुलहियाँ ॥ ३ ॥ त्रियग योनि धरि बिबिधि शरीरा जन्मति मरति सहति बहु पीरा, बिसरेउ ज्ञान सु पति रघुबीरा, अहमिति अधिक उलँहिया ॥ ४ ॥ दई मोह बश प्रभु सन पीठी, मीठी रही भई सो सीठी, कोमैं हती गईसो दीठी, फूँकन लगी चुलँहिया

---

१ दुलही २ टोपी ३ सुलहनामा ४ जुलाहा ५ उमगी है ६ चूल्हा ।

॥ ५ ॥ नरता धरि उर नरकनि जावै, आतम सोइ प्रभु बिमुख कहावै, प्रेमलता टुक चेत न आवै, भयेउ सुबुद्धि लुलहिंया[1] ॥ ६ ॥

पद (२९०)

आतम अनेक दुख पावै तजि बलमा ॥ टेक ॥

पढ़ै सुनैं नित बेद पुराना, कोमैं प्रभु को सो नहिं जाना, नरता धरि निजरूप भुलाना, परी अविद्या छलमा ॥ १ ॥ कारण अरु सूक्षम अस्थूला, नाशमान तिहुँ तन दुख मूला, तिन्हि बश परिभइ प्रभु प्रतिकूला, फसी मोह दल् दलमा ॥ २ ॥ त्रिगुणातीताऽतीत स्वरूपा, महा शक्ति सुख रूप अनूपा, बिसरि परी जड़ सँग भव कूपा, सनी बिषय मद मलमा ॥ ३ ॥ जो तनु धरै बनै सोइ सोई, जड़ सँग मिलि चेतनता खोई, बिपति बेलि निज हाथनि बोई, जरि रहि अहं अनलमा ॥ ४ ॥ जड़ चेतन की गाँठी भारी, परी कठिन नहिं छूटनहारी बनैं नारि ते पुरुष अनारी पाथर परे अकलमा ॥ ५ ॥ जस चेला तस गुरू गमारा, आतम ज्ञान न बिमल बिचारा, हम हम करत फसे संसारा, उभय मीन जिमि

---

[1] लूली ।

जलमा ॥ ६ ॥ रघुपति रूप मिलं गुरु पूरा, करैं हिये को
तम सबु दूरा, होइ प्रकाश लखै निज नूरा, नशै पुरुष
पन पलमा ॥ ७ ॥ प्रेमलता पूरे गुरु पाये, नाम सुनिज
पर रूप लखाये, संशय शोक समूल नशाये, निबसि
मोर उर थलमा ॥ ८ ॥

पद (२६१)

भयेउ सब जग मनमुखिया घोर ॥ टेक ॥

सूझै नयन न श्रवण सुनैं कोउ करत आपनों सोर ॥१॥
भगवत धर्म हींन प्रगटेउ वहु, मत मनमुखनि कठोर।
बेष भजन प्रभुको नहिं जेहि महँ, रचत प्रपंच करोर
॥ २ ॥ भजन बेष गुरु बिमुख फिरत बहु, अगणित महि
जिमि ढोर। पगपग पर तिन्हि बिप्र बधादिक, लगत
पाप निशि भोर ॥ ३॥ गुरुबनि के पढ़ि ज्ञान मन मुखी,
भयेउ जीव बक मोर। हृदय आन मुख आन ध्यान रत,
मन कपटी चित चोर ॥४॥ श्रीबैष्णव गुरुराम मंत्र प्रद,
तजि भव बन्दी छोर। सहत कलेश गृही गुरुबनि बश,
परि परि जो घर फोर ॥ ५ ॥ बानों श्री सियराम प्रभू
को, कामद नाम अखोर। परि हरि तिन्हें भजत भूतनि
पद, भागहींन नर कोर ॥ ६॥ अहङ्कार रँग रँगेउ सु नख-

शिख, उर अबिचार न थोर। हमहम करि यम फन्द परेउ षठ, चलत न तहँ कछु जोर॥ ७॥ बिसरि निजातम रूप सु गुरु बिनु, खात बिपुल झक झोर। प्रेमलता शुचि सिख न सुनत जड़, चितवत स्वारथ ओर॥ ८॥

पद (२६२)

करिय गुरु बेगि सु नाम उपासी॥ टेक॥

इतउत भटकि वृथा जनि नाशहु, नरतनु बय सुखरासी॥ १॥ गुरुवनि के तजि ज्ञान मनमुखी, दुख प्रद सुकृत बिनासी। कठिन काल कलि निरखि होउ सिय, राम नाम बिश्वासी॥ २॥ भजन हींन गुरुवा बगरे जग, अगणित बाग बिलासी॥ लोभी लम्पट दाम काम हित, बिरचत बेष उदासी॥ ३॥ कोउ पण्डित कोउ जटिल तपस्वी, कोउ कोउ जोगाभ्यासी। कोउ कर्मी धर्मी कोउ ग्यानी, बैरागी सन्यासी॥ ४॥ बनें बजावत गाल भजन विनु, चाहत शुभगति खासी। भजन बिना सुख मिलत न सपनेंउँ, बरणत सहस अठासी॥ ५॥ भजन बिपुल नहिं रामनाम सम, कहि श्रुति संत प्रकाशी। बिधि बिनु रटत देत अगणित गति, चहुँयुग काम दुहासी॥ ६॥ श्री सिय राम नाम रस चाखउ, तजि तिय

नर्क कुआँसी । प्रेमलता सियलालशरण होइ भव
बन्धन कटि जासी ॥ ८ ॥

पद (२६३)

रसनि में राजा श्री शृङ्गार ॥ टेक ॥

अवतारी श्री राम रूपही, यह रस परम उदार । देखउ
ग्रंथ अनेक खोलि चख, हियके बारहिं बार ॥ १ ॥
बात्सल्य दासादि सु रस जे, ते अन्शज अवतार । अव-
तारीआधीन रहत सब, जानत बुध न गमार ॥ २ ॥ सिव
सु दास श्री बिष्णु सखारस, बात्सल्य बिधि सार
अन्तरयामी सान्ति रूप सो, व्यापेउ सबनि मझार
॥ ३ ॥ श्रीसियबर शृङ्गार मूर्तिके, सेवक ये सबिचार
अन्सनि सहित सु रुख लखि सेवत, प्रभुपद जगताधार
॥ ४ ॥ बिनु शृङ्गार सु ईष्ट उपासक, लगत अशोभित
खार । भूषण बसन बिहींन दिगम्बर, डोलत महि
जिमिभार ॥ ५ ॥ पुजत धारि शृङ्गार सु प्रभु उर, लागत
सबकहँ प्यार । मङ्गल मूरति होत कुरूपउ, अवगुन
दबत हजार ॥ ६ ॥ शृङ्गारिनकेपरम शृँगार सु, रामनाम
अबिकार । तेहिबिनु कहत सन्तश्रुति बुधसब, शृङ्गारि-
न पर छार ॥ ७ ॥ श्री शृङ्गार रूप रघुपति पति, सबके

सिरजन हार। प्रेमलता तिन्हि रामहुँ के पति, नाम सु मन गुन पार ॥ ८ ॥

पद (२६४)

लेहु सम्बन्ध सु गुरुहिं रिझाय ॥ टेक ॥

कंठी तिलक मंत्र मुद्रादिक, संसकार सुख दाय। श्री बैष्णव यह धर्म सनातन, बदतबेद बुधगाय॥ १ ॥ धारण करि निर्भय भव सागर, तरिय राम सिय ध्याय ॥ बिलम किये हित हानि होय अति, बयस सु बीती जाय ॥२॥ सहज स्वरूप सम्हारहु आपन, चेतन अमल अमाय तजि अस्थूल ज्ञान जड़ नश्वर, रशिक भावना पाय ॥३॥ श्री रस राज उपासक करि गुरु, रहुसु चरण लपटाय। आत्मबोध तिन्हि सन सु यथारथ, पैहौ द्वैत नशाय॥४॥ आत्मबोध बिनु सब रस बादी, बकत बादि बहु बाय। अहंभाव बिनु तजे न रीझत, जन पर सियरघुराय॥५॥ पतिपत्नी सबन्ध लिये बिनु, करिय सु यतन निकाय अहंभाव बिनशत नहिं जेहि बश, आतम गई भुलाय॥६॥ आत्मनिबेदन बिनु न मिलत प्रभु, पावत सुख न अघाय। अस बिचारि सखि भाव धरहु उर, सकल अभाव बिहाय ॥७॥ बिसरि निजातम रूप मोह

वश,भवनिधि गोता खाय। प्रेमलतहि गुरु कृपा मिले पिय, रहेउ मोद मन छाय ॥८॥

पद (२६५)

द्रवहु सब रशिक सन्त सुख दानी ॥ टेक ॥

भये अहहिं हुइहैं जे आगे, सियबर के अभिमानी। निजपर रूप अनूप बोध मति, रहति भगति रस सानी॥१॥ श्री रसराज शृँगार उपासक नारि,धर्म उर आनी।सेवत प्रभुहिं अनन्य भावधरि,जो सब गुण गण खानी॥२॥ पाँच तत्व के बनें पूतरा, तिन्हि में शक्ति सयानी।व्यापिरही तेहि लखत रशिक जन, पाइ सु सतगुरु ज्ञानी ॥ ३ ॥ देह बुद्धि दृढ़ धरी मोहवश, आतम रूप भुलानी। रघुपति पति तजि पुरुष भावउर धरेउ सु बुद्धि नशानी ॥४॥ नकली नर बनि जड़ अबिबेकी, अग्य सहत हैरानी।झगरत आत्मतत्व दरशिनते, सठ मनमुख हठ ठानी॥५॥ सम्बन्धी शृङ्गार सु रसके, सिय पियके प्रिय प्रानी। तिन्हकी समता योग न त्रिभवन, बदत बेद बुध बानी॥६॥ इन्हकी शरण लेउ हठ परिहरि,छन छन लखि हित हानी।रटहु नाम तजि पुरुष भावना,आत्मतत्व पहिचानी॥७॥ जब-

लगि भयेउ न सेव यथारथ, रशिकनि की करि कानी। तब लगि मिलत न राम सियाबर, मिटत न ऐंचा तानी ॥ ८ ॥ शृङ्गारिन की संगति सेवा, सकल कामदा जानी ॥ प्रेमलता नित करिय तरिय भव, सफल होय जिंदगानी ॥ ९ ॥

पद (२६६)

नाम नेम मेरो निवाहि दीजो प्यारे ॥ टेक ॥

श्री सियराम नाम महाराजा, रटउँ सु बैठि किनारे ॥१॥ सियामढ़ी मिथिला मन भावन, बिचरौं तजि मदमारे। बाराणसी अवध सुखदाई, राम सु नगर मझारे ॥२॥ जेहि बिधि रहत जहाँ प्रण करि प्रभु, निशि दिन शरण तुम्हारे। तेहि बिधि तहँ तहँ, रहहुँ देह भरि, यह बर देउ उदारे ॥ ३ ॥ तुम्ह सब भाँति समर्थ सु साहिब, निज जनके रखवारे। मैं जड़ जीव अजान अलायक, परेउ घोर भव धारे ॥ ४ ॥ श्रवण सुन्यो यश नाथ नाम तव, जो श्रुति शास्त्र उचारे। रामनाम जन को पण राखत, छमि अघ अवगुण सारे ॥५॥ अजामील अड़यमन नायका, मोसे अघी अपारे। अपनायेउ सियलाल शरण श्री नाम कुथङ्कट टारे ॥ ६ ॥

पद (२६१)

सन्तो शब्द सुनों सुखदाई ॥ टेक ॥

कोटिनि जन्म प्रयाग आदि सब, तीरथ विधिवत जाई। मज्जन पान करै धरिधरि तनु, देइ दान हरषाई ॥१॥ मन बच कर्म कपट तजि सेवै, साधु जन्म बहुताई। कर्म धर्म बहु अगणित युग जग, करै सु श्रद्धालाई ॥ २ ॥ सप्तपुरिनि महँ पद्म करोरनि, निबसय मोद बढ़ाई। अर्ब खर्ब युग साधै साधन, योग समाधि लगाई। ३ ॥ कोटिनि कल्प देवतनि अरचै, करै द्विजनि सेवकाई। पढ़ै कोटि बिधि की भरि आयू, बेदपुराण अघाई ॥ ४ ॥ कोटिनि जन्म करै जप तप ब्रत, कन्द मूल फल खाई । अमर होय परिवार सहित जग, त्रिभुवन प्रभुता पाई ॥ ५ ॥ जाति जनक जननी पद सेवा, सहित सुहृद हित भाई । करै कल्पषत कोटि बढ़ाय सुप्रीति प्रतीति सुहाई ॥ ६ ॥ मिटत न आवा गमन केर दुख, अधिक अधिक अरुझाई। बिनु सुमिरे सियराम नाम मुख, द्रवत न सिय रघुराई ॥७॥ नामरटे बिनु भव भ्रमबन्धन, कवनिउँ

बिधि न नशाई। असबिचारि सिय लाल शरणहोइ, कीजिये नाम रटाई।।८।।

पद (२६८)

गुदरिया भावती मन मोरे ॥ टेक ॥

खप्पर झोरी कमण्डलटोपा, धारितजौंनहिंभोरे॥१॥ मागि खात इकबार द्विवस महँ, बसत बिलग इक ओरे जाति पाँति कुल कुटुम सगाई, सब सन नाते तोरे ॥२॥ कर्म धर्म जप योग सुभाशुभ जानि कठिन कलि घोरे॥ त्यागि सकल सियराम नाममुख, रटत मुदितमनजोरे ॥३॥ परम प्रमोद भरे महि बिचरत परमानँद रस बोरे। सतगुरु कृपा न सोच रंचउर, निवसत युगल किशोरे ॥४॥ बिनु जानें श्री नाम महातम, बहु मत देवनिहोरे। सुखहित किये उपाय अमित पै, पाये शोक न थोरे॥५॥ सतगुरु राम सु शरण नामनें, सब बिधिबन्धन छोरे। लताप्रेम तरु पाय लपटि रहि मिटे जगत झक झोरे ॥ ६ ॥

पद (२६९)

नामरटु नामरटु नामरटु जियरा ॥टेक॥

स्वारथ के साथी सब मातु पितु भाई बन्द आदि अन्त

मध्य बूझि जारें तेरे हियरा ॥१॥ करम धरम योग ज्ञान ध्यान उष्ण अतिसाधन असाध्य लखि सुनत के सियरा ॥२॥ सुख में शनेही बने जग जीव धन हित दुख में परायँ कोऊ आवत न नियरा ॥३॥ पढ़त पुराण बेद नशत न खेद भेद पावत न नामरटे बिनु भव तियरा ॥४॥ बाहिर प्रकाश करैं भाषि इतिहास बहु भीतर अँधार बिनु गुरु ज्ञान दियरा ॥५॥ लोभ लगि लोलुप लबार लोग नाचियत ब्याकुल बिहाल मन चित नहिंयियरा ॥६॥ भजन बिहीन पीन भोगनि सु भोजन में खात ठगि ठगि जग दही दूध घियरा ॥७॥ सहत कलेश दोऊ लोक लेश सुख हित भोगत बहुरि फल निजकर कियरा ॥८॥ प्रेमलता भजत न गौरश्याम सीयराम काम मद राजैं तनु नील पट पियरा ॥९॥

पद (२७०)

कठिन सियराम नाम की रटना ॥ टेक ॥

कठिन फकीरी असल एक रस, बेष देह भरि ठटना ॥१॥
बिरद बाँधि जिमि बीर चढ़े रण, चहत न पाछे हटना।
डरत न लरत मरत सन्मुख हठि सीश जाय बरु कटना ॥२॥
जे मति मन्द दास इंद्रिनि के, कादर षट रस चटना।

निबहत ते न तहाँ तनुपोसक, करिकरि न्हातउबटना।३। जपतप योग यज्ञ ब्रत साधन, सहज सु तीरथ अटना। बेदपुराण शास्त्र बहुपढ़िबो, सुगम सुराग उघटना ।।४।। कर्म धर्म शम दम दानादिक, सहज मोटाउब लटना। सहज वारि पर चलब उड़ब नभ, सुगम अनल अँग सटना।।५।। बिषधर धरब रसायन करतब, गृही सन्त सँग खटना। प्रेमलता सब सुगम अगम अति, नाम यजन पय डटना ॥ ६ ॥

पद (२७१)

प्रीति एक नामैं मन करिये ॥ टेक॥

तजि संशय मन मुदित दिवस निशि, व्है इकन्त ररिये ॥ १॥ समुझि मान अपमान उभय सम, मागि उदर भरिये॥ चिन्तन चारु चरित सियबर के, गुरुपद उर धरिये॥ २॥ जगकी प्रीति दुसह दुखदायक, सो करि जानि जरिये। अन्ध कूप ग्रह अति अगाध लखि, तेहि महँ जनि परिये ॥ ३ ॥ साधन बिबिधि शुभाशुभ शिधि प्रद, तिन्ह कहँ परिहरिये । श्री सियराम नाम रटि सादर, कलि भव निधि तरिये ।। ठाटि फकीरी बेष सुदृढ़ उर, काहुइ जनि डरिये। कोउ भल कहै मन्द बरु कह कोउ, सुनि न रीझि लरिये॥५॥ बादिगई बर बयस बीति

बहु, अब सुढरनि ढरिये॥प्रेमलता जेहि पंथ दियो पग, तेहि पथ अनुसरिये ॥ ६ ॥

पद (२७२)

भजु सियराम नाम पद नीका ॥ टेक॥

ज्ञान ध्यान जप योग भोग बहु, जेहि सनमुख सब फीका॥१॥ सुख निधान गुण भवन दवन दुख, हेतु रहित हित जीका॥सब हिंसुलभ सब दिन सबदेशनि, गति दायक सबहीका। २॥ जग कारण हठि अधम उधारण, तारण मोह नदी का॥रटत सहस मुख मुनिगणेश जेहि-दूल्हा पारवतीका ॥३॥ स्वामीसरल समर्थ अस न कोउ, बदहिं जासु श्रुति लीका। हिन्सारत अति अधम ब्याध ते ब्रह्म कियो बलमीका॥ ४ ॥ नाम प्रभाव सु अकथ अनूपम, अमल करन मन धीका॥ प्रेमलता बिनु यतन जपत जेहि, दरश होत सिय पी का ॥५॥

पद (२७३)

भजु मन राम नाम अति मीठा ॥ टेक ॥

फीके सकल पदारथ जगके, अमियउ लागत सीठा ॥१॥नाम प्रभाव रामशुभ गतिके, केहि न दिये करि चीठा॥ चहुँ युग चहुँ श्रुति तर्यो न जो रटि, नाम सु

सुना न दीठा ॥२॥ नाशन त्रिबिधि पाप पाला हित, नामसु प्रबल अँगीठा ॥ मन मति मल हरि करत परम शुचि, जिमि पट पाट अरीठा ॥ ३ ॥ बिनु कारण हित सुलभ सुखद अति, भजन भवन निउ नीठा ॥ पावत नीचउ सूमिरि दशो दिशि, मङ्गल मुद सु पतीठा ॥४॥ थिर न होत उररटे नाम बिनु, रहत सु चित्त उबीठा ॥ प्रेमलता तेहि कस न भजत शठ, मुदित जगत दै पीठा ॥ ५ ॥

पद (२७४)

जिभिया रटु सियराम खसोटी ॥ टेक ॥

भीतर भर्यो बिकार व्याधि बहु, नखशिख काया खोटी। तेहिकर गर्ब न कीजै रंचौ, जानि बयस अति छोटी ॥ १ ॥ आय अचानक प्रबल एक दिन, यम गण धरिहैं चोटी मारि सूसर निप्राण काढ़िहैं, यंत्र निजै हैं ओटी ॥२॥ छणभंगुर तनु ताहि मोटावत, खाय दूध घृत रोटी॥ मारग चलत निहारत दोउ दिशि, भुज फरकावत चोटी ॥३॥ बातें गढ़ि गढ़ि स्वारथ साधत, शीश धरत अघ पोटी। छाती फटत देत मारथ पर गाड़त महि धन जोटी ॥ ४ ॥ भगवाँ ओढ़ि फकीर बने कहुँ, करि शिर घोटम घोटी॥ दंड कमंडल हाथ काँखतर,

पोथी लाँग लँगोटी ॥ ५ ॥ ब्रह्म बना तजि लाज उदर हित, करत फिरत झंझोटी॥ भजत न प्रभुहिं लोभ लम्पट शठ, सुख चह फोकट फोटी ॥ ६ ॥ पावत सुगति न सुख शिधि सपनेउ, साधत साधन कोटी॥ प्रेमलता विनु नाम रटे सब, करतब प्राण घतोटी ॥ ७ ॥

पद (२७५)

रसना सुमिरु नाम दै डङ्का ॥ टेक ॥

कोउ भल कहै मन्द कह कोऊ, सुनि न करिय मन शङ्का ॥१॥ जानत कोउकोउ नाम महात्तम, गुरु प्रशाद अति बङ्का। करहिं कुतर्क अज्ञ अबिचारी, अपढ़ अन्ध मति रङ्का ॥ २ ॥ पर उपदेश कुशल बहुनर जग, परे आपु भव पङ्का। कादर कुटिल मलीन आचरण, जीवत ज्यों बक कङ्का ॥ ३ ॥ नाम प्रभाव जान मारुत सुत, टप्यो शिन्धु करि हङ्का॥ सीतहिं भेंटि उजारि बाटिका, ठोकि जराई लङ्का ॥ ४ ॥ बाल समय एक दिवश अंजनी, बैठी लै निज अङ्का। भोर उदय लखि भानु जानि फल, उछरि कीन्ह तेहि फङ्का ॥ ५ ॥ नाम प्रताप पियो बिष सङ्कर, खाइ सु गोला भङ्का। अबहुँ देत गति सबहिं सुनाइ सु, तारक नाम भनङ्का ॥ ६ ॥ नाम

प्रभाव सु अतुल अनूपम, साधन सेर छटङ्का ॥ प्रेमलता
अब जानि नाम रटु, नशिहै झंकी झङ्का ॥ ७ ॥

पद (२७६)

भजु सियरामैं बहुत दिन सोयो ॥ टेक ॥
हम हम करत जरत त्रय तापनि, मोह भार शिर ढोयो
॥१ ।धावत फिरत उदर लगि चहुँदिशि, बादि सु
जीवन खोयो॥तजि प्रभु चरण कमल सुखदाई, नीचन
को मुख जोयो ॥२॥ लाभ बिलोकि हँसत हरषत उर,
हानि हेरि अति रोयो।रोवत हँसत गयेचलि तिहुँपन
लुनिहै निज कर बोयो ॥ ३ ॥ महत बारि घृत लागि
मन्द मति, जल हित व्योम निचोयो ॥ प्रेमलता सिय
रामनामरटि, कबहुँन मानस धोयो ॥ ४ ॥

पद(२७७)

सोवत ही गइ बीति बयस सब रटेउ न नाम अघारी॥
बिसरेउ कौल करार गर्भ को, निपटहि भयो अनारी
॥ १ ॥ जोरे नये नये नेह जगत के,झूठ दुसह दुख कारी॥
जो दीनी नर देह भजन हित, तासों कुटिल बिगारी
॥२ जोरि धरत धन महल चुनावत, रचि रचि ऊँच
अटारी। बूझत उर न अचेत मोह बस, जीवन है दिन

चारी ॥ ३ ॥ खेलत खात लरिकपन बितयो, पाल्यो
पितु महतारी । ज्वानी जोर जग्यो मनसिज अँग,
युवतिनि सँग भइ यारी ॥ ४ ॥ तिनहीं के रँग रँग्यो
जानि निज, सुखद सु प्राण अधारी ॥ भोगत कंठ
लगाय चूमि सुख, तरुणाई यों हारी ॥ ५ ॥ आइ गयो
अनयास बुढ़ापौ, होन लगी तनु ख्वारी ॥ तजेउ
सकल जो रहे परम हित, लगे देन दुख भारी ॥ ६ ॥ ये
तेउ पर नहि तजत तिन्हैं खल, करत हमार हमारी ॥
प्रेमलता सिखयो नहिं मानत, अजहुँ न भजत खरारी

पद गजल (२७८)

प्यारे दिमानी हो गई तेरे नाम के ऊपर ॥ टेक ॥
करमें लिया कमण्डल गर गूदरी पहनी, खप्पर दबाया
काँख में शिर टोप दै ज़बर ॥ १ ॥ सब तौर से हूँ आप
की दिल्दार गुन्हेगार, दोजग के लिये घूमती फिरती
हूँ दर व दर ॥ २ ॥ गुण हीन हूँ नालाक मैं चालाक मतलबी,
बैठो हूँ हाथ धोय के दोउ लोक से अडर ॥ ३ ॥
भाते न ज्ञान ध्यान मुझे योग यज्ञ जाप, साधन् सकल
सुनाम हींन लागते जहर ॥ ४ ॥ तन प्राण से प्यारी
लगै सिय राम की रटन, जिसके प्रताप हो रहे सैत-न

चर अचर ॥ ५ ॥ लागी लगन एक नाम से मुर्शिद की
महरि पाय, मन मस्त मेरा होगया छूटी सबी कुफ़र
॥ ६ ॥ अलि प्रेमलता याचती बर जन्म जन्म को, श्री
नाम दान दीजिये करि दीन पै नज़र ॥ ७ ॥

पद गजल (२९८)

रटिले ज़वाँ से खूब सिया राम नाम रे ॥ टेक ॥

सोया पड़ा क्या नींद में मन जागि जागि जागि,
दुर्लभ सुदेह पाइ करे नाश बामरे ॥ १ ॥ कर याद तू
जो गर्भ में क्या कौल किया है, करता से बार बार
सो भूला गुलामरे ॥ २ ॥ रोता रहा उलटा टँगा जहँ
कौनथा साथी, काढ़ा तुझे तिस नर्क से वह आइ रामरे
॥ ३ ॥ जोरे अनेक नेह तू अब झूठ लोक से, दुख रूप
तिहूँ काल सो अइहैं न कामरे ॥ ४ ॥ भजने लगा तजि
ताहि तू तजने कहा तिसको, सजने लगा सुख साज
दगाबाज धामरे ॥ २ ॥ मुर्शिद बिना बेहोस फिरे
जीव मोसता, रटता न नाम का भदा बकता तमामरे
॥ ६ ॥ सुमिरे बिना अलि प्रेमलता नाम लय लगाय
करि मरि उपाय कोटिन पैहै न ठामरे ॥ ७ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद गजल (२८०)

अक्षर सु राम नाम के राजा धिराज हैं ॥ टेक ॥

माया सु ब्रह्म जीव औ दश चारि भुवन जे, कारण सबी के नाम अपर सर्ब काज हैं ॥ १ ॥ रटते इन्हे लय लायं जो मुर्शिद से पाइ सन्त, चहुँओर होत सुलभ तिन्हे सुख समाज हैं ॥ २ ॥ तिहुँ काल है तिन्हका भला जो नाम रँगीले, पुजते वही तिहुँलोक सर्ब शीस ताज हैं ॥ ३ ॥ कहते पुराण वेद शम्भु शेष सारदा गुण गण सु राम नाम के नित गाज गाज हैं ॥ ४ ॥ सब तौर से सुखधाम राम नाम जानिये, इन्हके बिना उपाय सर्ब शोक साज हैं ॥ ५ ॥ रटते न नाम प्रेमलता नर शरीर पाय, भूमी के भार जीव ते सु दगाबाज़ हैं

पद गजल (२८१)

रटिये सु राम नाम के अक्षर अनूप हैं ॥ टेक ॥

आधार सर्ब शृष्टि के सु सुखद जनन के, इन्हके बिहांन साधन्सब अन्ध कूप हैं ॥ १ ॥ स्वामी समर्थ रक्षक निरहेतु गुण निधान, श्रीनाम सियाराम सर्ब ब्रह्म भूप हैं ॥ २ ॥ अवतार जो श्रीराम आदि अगुण सगुण कें, महिभार हरण होयँ ते सु नाम रूप हैं ॥ ३ ॥

महिमा अपार नाम की जाने बिना सु लोग, कर्त कठिन जपयोग सहत सीत धूप हैं ॥ ४ ॥ कलिकाल में जीते सोई रटते जो राम नाम, मुर्शिद से पाइ निशि दिन रहते न चूप हैं॥५॥ अलि प्रेमलता धन्य ते जे नाम रँग रँगे, प्यारे सोई सिय राम के जिमि शिशुनपूपहैं

पद गजल (२८२)

रटता न राम नाम सो भूमी का भार है ॥टेक॥

नर शरीर पाय जगत लाभ क्या लिया, भूला जो कौल गर्भ का जीवन्पै छार है ॥ १ ॥ सुनता पुराण बेद भेद जानता नहीं, मिटता न खेद गुरु बिना यह बात सार है॥२॥ खाता अघाय सोवता सुबयस खोवता उर जोवता न हानि लाभ खुद गवाँर है॥ ३ ॥ कहि२ अनेक ज्ञान ध्यान सबनि सिखावै, अपना न होस करत परत मोह धार है॥ ४ ॥ चलता जमीन देखता न जीव पै दया, पोथी पढ़ा तमाम पै न उर बिचार है ॥५॥ पीवै न नीर छानि के पंडित कहावता, पसुओं की तरह भोजन करता बिहार है॥ ६ ॥ बातों से बना ब्रह्म औ करनी मलीन है, दुख सहत हैं तेहि लागि जनमि बार बार है ॥७॥ साधन्कठिन्सु साधता हठ ठानि

ठानि ठानि, रटता न राम नाम सुगम तजि बिकार है ॥८॥ चितचेति अली प्रेमलता नाम सुमिरिये, जाना चहै कलिकाल जो भवसिन्धुपार है ॥ ९ ॥

पद गजल (२८३)

रटता न सियाराम सो न रामदास है ॥टेक॥

साधु से न प्रेम करै साधु बना है, श्री राम आश छाड़ि करै आन आश है ॥१॥ जिस्ने बचाया नर्क से दै बेष बैष्णवी, सिखलाय ज्ञान ध्यान किया मोह नाश है ॥२॥ तिस्की न करे सेवभक्ति भाव चावसे, जाने न मूढ़ ईष्ट गुरू देव खास है ॥३॥ अभिमान करै जाति का गर पहिरि जनेऊ, निज रूप का न बोध हिये भोग बास है ॥४॥ बाना सु बाँधि सन्त को करनी करै मलीन जिस्तिस्तरह तनु पोषता नहिं भजन पास है ॥५॥ जग में फिरै पुजावता न आप पूजता, चाहे किया तिहुँ लोक में अपना प्रकाश है ॥ ६ ॥ करता अनेक यतन उदर शिश्न के लिये, कर्ता को गयो भूलि मन्द उर न त्राश है ॥ ७ ॥ बक्ता तमाम प्रेमलता बात वे बिचार जपा न बैठि राम नाम स्वास स्वास है ॥ ८ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।

पद् गजल (२८४)

बोलो सदा जय जयति सिया राम नाम की ॥टेक॥

रटना अखंड नेम धारि भाव प्रेम से, कीजै सु लय लगाय के सुद् मोद धाम की ॥ १ ॥ इसके समान दूसरा न सुखद् लोक में, रटते लगै नजीभ ते कौड़ी छदाम की॥२॥ तरते सोई भव सिन्धु ते रटते जो राम नाम, करते सोई सब तौर से पूजा सु राम की ॥३॥ जरते सोई त्रयताप से त्रयलोक लालची, जप्रै न नाम पाइ जो नर देह धाम की ।४॥ रटिये सु राम नाम सिया सहित बार बार, तजि लोक लाज कानि चाह बाम कामकी ॥५॥ अलिप्रेमलता रटत नाम कटत मोह जाल, बिगरी सबै बनि जायगी मन आठ यामकी॥६॥

पद् (२८५)

जागिजागिमनभयासबेरानामसुमिरक्यासोवैरे॥टेक॥

भजन बिना सुख चहै सोइ सो घृत हित बारि बिलोवैरे ॥ १ ॥ प्रभुताई दश चारि भुवन की स्वासा सम नहिं हो वैरे। सोस्वासा सियराम नाम बिनु मूढ़ बादि क्यों खोवैरे ॥२॥ मुक्ति नीर लगि खनै कूप बहु साधन ब्योम निचोवैरे। नाम सुधा नद बहत सु तामधि मनमानस

नहिं धोवैरे॥३॥तजै न ममता मान मोह मद, भार शीस
धरि ढोवैरे॥अपने हाथ उखारि कल्पतरु मूरख कंटक
बो वैरे॥४॥ मणि सु गाँठ ते खोलि अन्ध जिमि, डारि
कुथल टक टोवैरे ॥ प्रेमलता नर देह महा मणि मिलै
न पुनि तब रोवैरे॥५॥

पद (२८९)

राम को नाम सकल सुख दाता ॥ टेक ॥

सप्तकोटि जग मंत्र कहत श्रुति, नाम सरिस नहिं कोउ
जग त्राता॥ १ ॥ योग यज्ञ जप तप व्रत तीरथ, करम
धरम साधन शिधि ब्राता॥ राम नाम सम जन प्रति
पालक, भुवन चतुर्दश कोउ न दिखाता॥ २ ॥ यद्यपि
लोक अमित हितकारी, तात मातु सुत परिजन भ्राता
युवती जन परिवार शनेही, स्वारथ रत सबही दर
शाता॥ ३ ॥ नाम बिमुख सुख सुगति न सपनेउ, भुक्ति
मुक्ति संतोष न पाता॥ हम हम करि नाशत मानुष
तनु, अवसर चूके पुनि पछिताता॥ ४॥ श्रीसियराम
नाम जो सादर, रटत सदा सोइ प्रभु मन भाता॥
पूजित सोइ तिहुँकाल लोक तिहुँ, ब्रह्मादिक तेहि
शीस नवाता ॥ ५ ॥ रामते अधिक नाम जापक की,
महिमा बेद पुराण सु गाता ॥ सेतु बाँधि उतरे प्रभु

सागर, कूदि गये हनुमत विख्याता ॥ ६ ॥ ध्रुव प्रहलाद
बिभीषण नारद, शेष शंभु षटबदन विधाता ॥ लख्यो
न को जपि नाम ऊँधपद, भील बालमिक ब्रह्म कहाता
॥ ७ ॥ काल कराल बिकट बाये मुख, खात सकल जग
जिव न अघाता ॥ प्रेमलता वाचे कोउ कोउ जन,
युगल नाम जिन्ह कर मन राता ॥ ८ ॥

पद (२८७)

विपति किमि मिटै रटे बिनु नाम ॥ टेक ॥
आधि ब्याधि अधिकाति नवल नित, सेवत ही तनु
चाम ॥ १ ॥ पंडित भये कहा पढ़ि पोथी, अथ ऋग
यजु अरु साम ॥ ब्रह्म बिचार हींन कामातुर, भोगत
पशु जिमि बाम ॥ २ ॥ धन बल सीदत सबहिं करत सब,
भय बस आय सलाम । आपु न नमत देत कछु काहुइ,
हरि हित दाम छदाम ॥ ३ ॥ ब्याकुल रहत बढै केहि
बिधि धन, करत सु यतन तमाम । हम हम करि मरि
सहत अन्त दुख, बिपुल काल यम धाम ॥ ४ ॥ बीर भये
तौ कहा धीर कबि, कहा भये गुण ग्राम : सुर मुनि
सिद्ध भये कछु लाभ न, जौन भजेउ सियराम ॥ ५ ॥ तीरथ
बर्त किये बहु साधन 'सेयेउ ठाकुर ठाम । जप तप योग

याग करि हारयो, मिट्यो न मन को काम ॥ ६ ॥
चाह चमारिन बिबश नचत सब, सहहिं घोर भव घाम
प्रेमलता सुख चहहु ररिय तौ, चारि बरण बशुबाम

पद (२८८)

कठिन अति राम मिलन को देश ॥ टेक ॥
जप तप योग यग्य व्रत साधन, करि बहु सहत कलेश
सपनेउ होत न सुख रञ्चौ उर, बिनु सतगुरु करुणेश
॥ १ ॥ करत भजन मनमुखी ठानि हठ, फिरत बढ़ाये
केश। ठगि २ खात हुहात अघात न, बिरचि साधु को
वेष ॥ २ ॥ परमहंस कोउ संन्यासी कोउ, कोउ त्यागी
सिद्धेश। कोउ तपसी कोउ बन्यो उदासी, रटत न
नाम रसेश ॥ ३ ॥ अजपद्द जपो कहत कोउ भाषत,
हमहीं ब्रह्म परेश ॥ तनु पोसत मोसत लघु जीवन,
इन्द्रिनि बिबश हमेश ॥ ४ ॥ सुमिरत नाम रूप उर
आवत, बिनु श्रम श्री सीतेश। प्रेमलता शुचि साखि
प्रगट जग, प्रबल बिराज महेश ॥ ५ ॥

पद (२८९)

रस नामैं में है मन मानु कही ॥ टे ५
श्री सियराम नाम मृदु माखन, चाखु न तजि मधु कम

मही ॥ १ ॥ नशिहहिं त्रिबिध दोष दुखदारुण, पैहै ऋधि शिधि निधि अचही। उघरहिं ज्ञान बिराग बिलोचन, सूझहिं प्रभु गुण बिमल सही ॥ २ ॥ मायाकृत सुख भोग स्वाद बहु, षटरस अशन सु दूध दही। फीके लगत सकल तेहि जन कहँ, नाम रटन जेहि लागि रही ॥ ३ ॥ समुझि सु लाभ हानि सुनि शुचि शिख, परिहरि अबजो कुटेव गही। पढ़ि गुणि सुनि सियराम नाम नित, बार बार श्रुति कहत यही ॥ ४ ॥ चहुँ युग तीनि काल तिहुँ लोकनि, को न नाम जपि सुगति लही। प्रेमलता सोइ पाइ सुगुरु सन, रटिय त्यागि कुल करतबही ॥ ५ ॥

पद ग़ज़ल (२८०)

मजा जो नाम रटने में किसी में सो न पाया है ॥ टेक ॥ नहीं परियों के भोगों में, न है जप तप सुयोगों में, सुनी मैं साधु लोगों में, प्रगट बेदों में गाया है ॥ १ ॥ नहीं जङ्गल न बागों में, न है बिद्या सुरागोंमें, नहीं कर्तब सु लागों में, झूठ बादल की छाया है ॥ २ ॥ नहीं सुख स्वाद कर्मों में, बिबिधि साधन्सु धर्मों में, भटकते भूलि भर्मों में, जीव जगमें निकाया है ॥ ३ ॥ हुये त्रय लोक के राजा, ऐस के लगे सजन साजा, बजत शिर

मौत के बाजा, सबी को जिसने खाया है ॥ ४ ॥ किया हम मन्सुबा पक्का, जाय को द्वारिका मक्का, लगाया नाम सें तक्का, खूब मुर्शिद बताया है ॥ ५ ॥ मिटी परवाह संसारी, लगी सिय पीय सों यारी, बैठि अलि प्रेमलता न्यारी, रटै सोइ तर्कि माया है ॥ ६ ॥

पद (२८१)

रटै जो नाम रसना से तिसे नहिं काल खाताहै ॥ टेक ॥ सन्त सोइ सूरमा साँचा, सुयश त्रय लोक तेहि माचा, त्यागि जग भोग भ्रम नाचा, निरन्तर नाम गाताहै ॥ १ ॥ कहीं खाया कहीं भूखा, तरातर मिलै कभी रूखा, कभी तैयार कभी सूखा, उसे यह हाल भाता है ॥ २ ॥ रजा में सदा रहै राजी फकीरी साज अँग साजी अजब रँग ढंग तरह ताजी, शिकन्दर नजर न आता है ॥ ३ ॥ मस्त हर हाल में रहते, किसी से कुछ नहीं चहते, कभी त्रय ताप न उर दहते, बिलग बसना सुहाता है ॥ ४ ॥ प्रभूके प्राण प्रिय सोई रटै सियराम नाम जोई, लोककी लाज शर्म खोई, तोरि सब झूठ नाता है ॥ ५ ॥ कहैं कबि बेद बुध टेरी, नशी गति साधनों केरी, समुझि अस प्रेमलता चेरी नामजपु जन्म जाता है ॥ ६ ॥

पद ग़ज़ल (२८२)

रटन् सियराम की प्यारी मेरे दिल्में समाई है ॥टेक॥
धरे हम रूप बहुतेरे, होइ मद मोह के चेरे, फिरे निज कर्म केप्रेरे, योनि बहु शोकदाई है॥१॥पढ़ीबहु पोथियाँ गाथा, सुनी मिलि सन्त जन साथा, सार सियराम रघुनाथा, लखेउ सब धोख धाई है ॥ ४ ॥ कही गुरु देव मोहि सोई, रटो सियराम शङ्क खोई, सकलके ईश यही दोई, कीर्ति श्रुति बीच गाई है ॥ ३ ॥ कृपाकरि सुभग तनुदीना, स्वयं हैं जासु आधीना, भेद यह कोउ कोऊ चीना, भक्ति मति गति सोइ पाई है॥ ४ ॥ भूलिहौं अब न कभी नामैं, नेम करि रटिहौं बशुयामैं, त्यागि जगजाल कोह कामैं, टेक उर यह सुलाई है ॥ ५ ॥ करैं कोउ जप तप मख ध्याना, शुभा शुभ कर्म धर्म नाना, परण अलि प्रेमलता ठाना, नाम के कर सु बिकाई है ॥ ६ ॥

पद गजल (२८३)

रटैं सियराम नाम जोई बड़ा सोइ सन्त ज्ञानी है ॥टेक॥
सोई चहुँ बेद का ज्ञाता, नाम सें जिसका मन राता, त्यागि जग योग भोग नाता, सोई पंडित सु ध्यानी

है ॥ १ ॥ पूज्य प्रिय मान हैं सोई, रटैं लय लाय नाम जोई, कहत शिव बात न यह गोई, सूत शुक ऋषि बखानी है ॥ २ ॥ चहूँ युग काल तिहुँ लोका, हुए जन विपुल बिगत शोका, निरन्तर नाम जो घोका, बिदित सब को कहानी है ॥ ३ ॥ मिले सिय राम दोउ तिस्को लगी रट नाम की जिस्को, कर्म करि नफा हुई किस्को कहौ कलि साँच बानी है ॥ ४ ॥ अकथ है नाम सनेही की, सु महिमा कह मति केंही की, फिकर नहिं जिस्को देही की, मौज हर हाल मानी है ॥५॥ रहत नहिं नाम बिना खाली, रटैं सहि खलनि मार गाली, करी ते प्रेमलता आली सफल जग जिन्दगानी है ॥ ६ ॥

पद गजल (२८४)

नहीं है गर्ज कुछ हमको किसीसे नाम गाते हैं ॥टेक॥
नचहिये धाम धन धरणी, सुता सुतचहत नहिं घरणी
लगी एक नाम की ररनी, तजे जगके कुनाते हैं ॥ ३ ॥
नचहिये ताज साहना, बसन भूषण अशन नाना,
बैठि तरु छाँह मैदाना, नाम रटते रटाते हैं ॥२॥ विषय
सुख भोग संसारी यान गज अश्व असवारी, न
चहिये जीति अरु हारी, नाम सियराम भाते हैं ॥३॥

न चहिये लोक में माना न चहिये पदहु निर्वाना,
न चहिये राग रँग गाना, नामरटि प्रभुहिं रिझाते
हैं ॥४॥ फकीरी साज अँग साजी, गूदरी टोप तरह
ताजी रहत हरवक्त हिय राजी, मधुकरी माँगि खाते
हैं ॥५॥ करत सोइ गुरु जो कहते हैं, कभी त्रय ताप
न दहते हैं, ईष्ट प्रिय पुरिन सुरहते हैं, शरण सिय
लाल कहाते हैं ॥६॥

पद (२८५)

सिया रामै ते लागी हमार यारी॥टेक॥

श्री गुरुदीन निदेश श्रवण लगि, परमतत्व शिर कर
धारी॥ पर ते परे यही सुत साधन, रटिय सदा आखर
चारी ॥१॥ मंत्र यंत्र मत पंथ यदपि जग, बेद कथित
बहु भ्रम कारी॥ श्रीसियराम नाम सम नहिं कोउ,
पाप ताप भ्रम श्रम हारी॥२॥ नहिं अस बेषन तिलक
छाप कहुँ, रहनि कहनि समुझनि प्यारी॥ धाम
न मिथिला अवध सरिस कोउ, कमला सरयु सम न
बारी ॥३॥ श्री सिय सम न सु शक्ति राम सम,
पुरुष न जेहि मुनि तिय तारी॥ लीला ललित न
रामायण सम, विधि प्रपंच ते है न्यारी॥४॥ नाम रूप

गुण धाम धनुष शर, पाँचो की महिमा भारी॥ जानत
जगत न पक्ष पात कछु, बदत शेष श्रुति त्रिपुरारी॥५॥
गुरु पद बिमुख बिमूढ़ मलिन मति, अन्ध बधिर जे
नर नारी॥ प्रेमलता ते सियरामहिं तजि, आनहिं
भजि चहैं दुख टारी॥६॥

पद (२९६)

सकल सुख नाम रटन पै बारे ॥ टेक॥

ठाटि फकीरी बेष बिशद बर, गुरु पद सद उर धारे ।
मिटे शुभाशुभ बन्ध भये भल, लोक बेद ते न्यारे ॥१॥
बिचरत अवनि असंग रंग निज, आनँद साँझ सकारे॥
रटत नाम सिय राम निरन्तर, मान मोह मद जारे॥२॥
माँगि खात मधुकरी घूमि फिरि, सन्तन केर सु द्वारे॥
आश न त्राश अपर की सपनेउ, सोवत पाँव पसारे॥३॥
नीच ऊँच ठग साहु कहै कोउ, कोउ वन्दै कोउ मारे। तेहि
कर सोच सँकोच न रञ्चौ, रटिहौं नाम पियारे॥४॥ शिर
पर जंगी टोप गूदरी गर में भारी डारे॥ खप्पर झोरी हाथ
कमंडल, बैठे रहत किनारे ॥५॥ नाम प्रसाद सु कुशल
दिवस निशि, नशे अमङ्गल भारे ॥ रक्षक सदा अंजनी
नन्दन, श्री सियराम दुलारे ॥६॥ काल कर्म युग गुण

स्वभाव कृत, पाप प्रपञ्च अपारे। जिन्ह के बिबश परे
जिव डोलहिं,दीन मलीन दुखारे ॥ ७ ॥ नाम शनेहिन
पर न चलत कछु, करतब करि हिय हारे ॥ अघ उलूक
यमदूत सु धुनि सुनि, भागहिं भभरि बिचारे ॥८॥ सिय
बर मिलन सु जन्म लाभ भव, जो चह आतम तारे ॥
प्रेमलता सो रटै नाम करि, नेम बजाइ नगारे ॥ ९ ॥

पद (२९७)

नाम मणि धरु मन जीह सु द्वार ॥टेक॥
परम प्रकाश रूप दिन राती, पावन बिगत बिकार॥ १ ॥
अन्तरङ्ग बहिरङ्ग प्रकाशक, नाशक मोह अँधार ॥ देत
लखाय सु गुप्त प्रगट दोउ, बिधि निषेध ब्योहार ॥२॥
उघरहिं अनायास दोउ लोचन, बिमल सुग्यान बिचार॥
नाशै तिमिर प्रकाश प्रकाशै,दशहू दिशनि मझार॥३॥
सूझै सकल सदा होइ सम चित, बुझै न तेज अपार ॥
बिद्या बिनय बिबेक बिराग सु,आवत लखि उजियार
॥४॥नेम सु दियटि बैखरी चौकी,रटन सुदृढ़ इकतार॥
राजहिं नाम महामणि तेहि पर,सब सारन के सार॥५॥
भानु आदि कोटिन जे जहँ लगि, तेज मान बहु बार॥
वारिय श्री सियराम नाम पर, गहि गहि बार हजार

॥६॥ सब दुख हरण भरन सब सुख उर, दरन कपट मद
मार ॥ प्रेमलता भजु नाम नरेशहिं, तजि ग्रह
शोकागार॥ ७ ॥

पद (१९८).

प्रथमते राम नाम सुख दाई ॥ टेक॥

चहुँयुग तीनि काल तिहुँ लोकनि, होरही नाम बड़ाई
पावन भये पतित बहु जपि जेहि, मुनि दुर्लभ गतिपाई
॥ १ ॥ बालमीकि प्रहलाद पील ध्रुव, आदि भक्त बहु
भाई ॥ अबिचल पद पायो कृत युग सब, जपि सु नाम
लय लाई ॥२॥ त्रेता गीध ब्याध कपि निशिचर, भालु
स्वपच अततातई ॥ किये मुक्त प्रभु स्वयं दर्शदै, केवल
नाम सगाई ॥ ३ ॥ द्वापर गोपी ग्वाल सुदामा, असुर
अनीक जो आई ॥ जप्यो नाम जेहि भाव लही सो,
रति गति भूति सुहाई ॥४॥ कलि युग तरे तरत तरिहैं
बहु, कहँ लगि कहौं गनाई ॥ सुनि सुनाय श्री नामसु
धुनि जन, पावत मोद अघाई ॥५ ॥ ज्ञान ध्यान पूजन
त्रय युगकी, कलि मर्याद उठाई। रहिगय एक प्रबल
नामैं की, प्रेमलता ठकुराई ॥ ६ ॥

पद लावनी (२९९)

मिला जो चहै सियाबर से।

रटै सो नाम निकलि घर से ॥टेक॥

करै सतसङ्ग रसिक जनका । लोभ नहिं जिन्हिके अन धनका ॥ रटै सियराम मारि मन का । सोच नहिं राखत निज तनका ॥ फिरैं जग प्रमुदित ज्यों सनका । जियन कर निश्चै नहिं छण का ॥ भरोसा राम श्याम घन का । लिये सुनि प्रण जन पालन का॥

दोहा—आशा नहिं संसार की, रँगे रहत निज रंग। रटत नाम करि नेम निरन्तर, बैठि इकन्त असंग॥१॥

प्रीति सम करहिं चराचर से । मिला जो चहै सियाबर से ॥ १ ॥ तिन्है सियराम रूप जानी । रिझावै मन सु कर्म बानी ॥ कहैं सो करै शीस मानी। दुखावै नहिं निज हठ ठानी ॥ करै सब अर्पण तिन्ह पानी । बेगि लखि होत सु बय हानी ॥ लेइ उपदेश सु मुद दानी । बेष बैष्णव को गुण खानी ॥

दोहा—खायसीथ भरि उदर धोय पग, पीवै तजि अभिमान। सेवै शुचि मन मुदित नाम जपि, सन्त सु गुरु भगवान॥२॥ डरै नित तिनहीं के डर से। मिला जो चहै सिया बर से ॥ २ ॥ सन्त हैं मातु पिता भाई । स्वजन हित मीत सु सुख दाई ॥ रहैं नित प्रभु सों लव

लाई। मिलैं नहिं तिन्ह बिनु रघुराई ॥ दुखद जग प्रभु
बिनु प्रभुताई। ज्ञान गुन गरुता सजनाई ॥ भजो हरि
मानुष तनु पाई। गेह तजि सन्त शरण जाई ॥

॥ दोहा ॥

करैं भजन बहु जीव गेह बसि, मन अरुझो जग जाल।
होतनबिमलबिराग कबहुँउर,रीझतनहिंसियलाल ॥३॥
प्रीतिअतिलखिअक्षर क्षरसे।मिलाजोचहैसियाबरसे॥
ग्रहस्ती शोकखानिजानों। भ्रात सुत भूत प्रेत मानों॥
डाकिनी नारि खाइ प्राणों।जीवतेहिसुखमेंअरुझानों॥
फिरै जहँ तहँ ऐंचो तानों। तहाँबसिभजनसुमरणठानों॥
मूर्ख सो अति आँधर कानों। गेह में प्रभु चह उरआनों॥
दोहा—घरसें बन तो भजन तो, सतरूपा मनुभूप।
राज त्यागि क्यों बसे जाइबन, सहे घोर हिमधूप ॥४॥
डिगेनहिंदृढ़, बिधिहरिहरसे।मिलाजोचहैसियाबरसे॥
त्यागि घर पीपा प्रभु पाये।सुयशशुचित्रिभुवनमें छाये॥
गेह तजि मीरा गुण गाये। सदेहहि प्रभु तेहि अपनाये॥
शरण में जो जो जन आये। गेह तजि सो सो प्रभुपाये॥
किये सब सब के मन भाये।दोष दुख दारुण बिनशाये॥
जय सियराम जय जय सियराम।

* दोहा *

गृह त्यागी जन पुजैं जगत में, गृही सहैं दुख भार ॥
प्रेमलता अस जानि तज्यो घर, पायेप्रभुसुखसार ॥५॥
गह्योकरप्रीतमनिजकरसे। मिलाजोचहैसियाबरसे॥५॥

पद कजरी राग (३००)

रसनारटिलेसीतारामनामनहिंफिरिपछितावैगी ।टेक।
हेतु रहित हित सिय रघुराई, सर्वेश्वर सन्तन सुखदाई, तिन्हितें नर तनु पाइ ताहि क्याव्यर्थनशावैगी ॥१॥ झूँठ साँच निन्दा अपवादा, बकि बकि, नाशत उर अहलादा, चाखति नाना स्वाद भजन बिनु अति दुख पावैगी ॥२॥ आवैंगे जब जम के दूता, काल पास बँधि हैं मजबूता, माय माय पितु पूता पूता तब चिचियावैगी ॥३॥ जाकौंतूसबभाँतिसम्हारी, मोरमोर कहि सदा पुकारी, सो माया लखि भारी तेरे संग न जावैगी ॥४॥ छण छण छीजत बयस दिमानी, बूझत नहिं भोगनि अरुझानी, करति सु निज हितहानि बहुरि कब प्रभु मन भावैगी ॥५॥ प्रेमलता अलि दोउ कर जोरै, बार बार करि बिनय निहोरै, मुख मोरे में बैठि कबहुँ सिय पिय गुण गावैगी ॥६॥

पद (१०१)

नाम सँग सोउ सुरतिया प्यारी ॥टेक॥
करु नखशिख शृंगार सु षोड़श; लोकलाज पटफारी
॥१॥ सतसँग नीर नहाउ उबटनो, श्रवण कथा सुखकारी ॥ मनन फुँदेल धारणा इंगुर, बिरचि सु माघ
सम्हारी ॥२॥ टीको टहल सु कारपन्यता, काजर
नयन मझारी ॥ सोहै नाक नवनि नथ पावन, प्रण सु
पान सुखियारी ॥३॥ झमक झूमका श्रवण फूल उर,
बिनय बन्दियाँ बारी ॥ दया दाम हिय हार सु हिम्मत,
बलय बिबेक सुधारी ॥४॥ चैन चुरीकर मौज सु मेहदी
आरसि आनँद भारी ॥ बिरति बिराग बिचार बिमल
गुण, भूषण सजि सु अपारी॥५॥ मङ्गल मोद महावर
पाँयँनि, रचि सुमयन मदहारी॥ लय लहँगा कटि घूम
घुमारो, ओढ़ि सु श्रद्धा सारी ॥ ६ ॥ भाव सु भोजन
पावहु पिय सँग, भरिबर थिरता थारी॥ नेह नीर
शुचि अँचइ प्रेमपथ, चढ़ि चलु अभय अटारी ॥ ७॥
सत्य सेज बिज्ञान बिछौना, तकिया तोष लगारी ॥
नाम नरेश संग सुख पौढ़हु होउ न कबहूँ न्यारी ॥८॥
पैहौ सब मन काम बदत बुध, श्रुति पुराण त्रिपुरारी॥

प्रेमलता भैहौ सियपिय, जिय, ह्वो इहैबहुरि न ख्वारी

पद (३०२)

जीभ सिय रामहिं क्यों न ररै ॥ टेक ॥

प्रभुकृत खेल जगत यह जहँ लगि, एक जन्मत एक मरै ॥ जाकी जेहि बिधि लिखी होय सोइ, टारे नाहिं टरै ॥१॥ कोउ दाता कोउ, सूम बनायो, जोरि जोरि धन धरै ॥ कोउ राजा कोउ रङ्क कहावत, नित तिहुँ ताप जरै ॥२॥ पालत हरि बिधि शृजय पाइ जेहि, रुख शिवनाश करै ॥ बहै पवन रबि तपै जासु डर, थर थर काल डरै ॥ ३॥ सहत शूल तेहि भूलि मन्द मति, कवन भाँति उबरै॥ सुधा सरिस तजि नाम अशन सठ, कौर कर्म लगि लरै ॥४॥ आनहिं ज्ञान सिखावत आपु न, फिरि फिरि पर बश परै॥ अति अपार भव शिन्धु धार मधि, कोउ बूड़ै कोउ तरै ५ ५ ॥ गुरुपद बिमुख बिपुल साधन नर, करत न काज सरै॥ अरुझत जाय अधिक निशि बासर, दुखद गलानि गरै ॥ ६ ॥ कियो कर्म जस करत भरत तस, मन प्रभुदिशि न ढरै॥ भर्म जाल फँसि जन्म नशावत, उर सन्तोष न भरै॥७॥ जेहि आचरत होइ हरि गुरुपद, विमुख सोइ आचरै॥

तेहि पर चहत एरण्ड अम्बतरु, प्रेमलताफल फरै ॥८॥

पद (३०३)

नामरस जानैं जो पीते ॥ टेक ॥

तिहुँपुर के बहु भोग रोग सम, जानि तजे जी ते ॥
जागत की तौ कहा कथा है, स्वप्नेउ नहिं छीते ॥१॥
रटत नाम सियराम निरन्तर, मन बच क्रम हीते ॥
चलहिं सुपंथ सम्हरि निशि बासर, तजहिं न श्रुति नीते ॥ २ ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि रहहिं सँग, कारज चित चीते। पूरहिं श्री हनुमन्त सहायक, श्री रघुबर सीते ॥३॥ मूरख नर तनु पाइ नशावत, भजत न सिय मीते॥ जोरत धन अरु धाम सम्हारत, अन्त जात रीते ॥४॥ आमय ग्रसित मलीन देह तेहि, पालत दधि घी ते॥ हर्ष शोक बश परे भजन बिनु, डोलत भय भीते ॥ ५ ॥ सन्त शनेही देह गेह तजि, कर्म शुभा शुभ तीते। चाखहिं मुदित नामरस रटि रटि, संशृति दुख बीते ॥६॥ विचरहिं अवनि असंग रंग निज, गावत प्रभु गीते ॥ प्रेमलता निर्द्वन्द सदा जग, जीवत यशयी ते ॥७॥

पद (३०४)

नामरस रशिक रसीले सन्त ॥ टेक ॥

पहिरि गूदरी टोप पीत अँग, जगते भयेउ निचन्त।
रटहिं नाम सियराम निरन्तर, प्रमुदित बैठि इकन्त
॥ १ ॥ मागि खात मधुकरी बार इक, दिवस सु लखि
बुधवन्त। तजे भोग भ्रम भेद खेदभय, लोका लोक
प्रयन्त ॥२॥ सुनहिं सुनावहिं नाम राम की, गाथहिं
पढ़त लिखन्त। नाम उपासकसंगरहहिंनित,स्वप्नेउ
जाँयँ न अन्त ॥ ३ ॥ नामरटन बिनु जाय समय जो,
ताहि काल निज गन्त। कर्म धर्म साधन धन नामहिं,
जानत अपर न तन्त ॥४॥ नाम बिभूति मानि अगजग
ते, प्रीति लिये निबहन्त। नामहींन पल व्यर्थ न इत
उत, फिरहिं बजावत दन्त ॥ ५ ॥ विचरहिं अभय ईष्ट
धामनि, बिच, रक्षक श्री हनुमन्त ॥ प्रेमलता प्रभुरूप
सुतिन्हकी, महिमा अकथ अनन्त ॥ ६ ॥

पद (३०५)

सहायक राम नाम नित तेरे ॥ टेक ॥

पाल्यो पालत पालेंगे सोइ, रहु निशोच मन मेरे ॥ १ ॥
माया ब्रह्म जीव जड़ चेतन, सकल नामके चेरे॥कालहु
डरत, नाम जापक सन, कहत सन्त श्रुति टेरे॥२॥परम
प्रताप नामको त्रिभुवन व्यापि रह्यो चहुँ फेरे ॥ अस

विचारि रहि अभय नामरटु, जगजीवन फल लेरे ॥३॥ ऋद्धि शिद्धि निधि बसहिं आय सब, नामशनेहिन नेरे। मङ्गल मोद दशो दिशि माहीं, नामिन कों रहें घेरे ॥४॥ नाम शनेह हींन साधन बहु, करत खात भट भेरे॥ तरयो चहत सो मूढ़ मोहनिधि, अगम तरनि बिनु बेरे॥५॥ नामरटत महि अटत सन्त जे, निष्किंचन बिनु डेरे॥ पावहि प्रेमलता, ते सब सुख, आशक सिय बर केरे ॥६॥

पद (३०६)

चाखि तू रसना नाम रसै ॥ टेक ॥

यह संसार अपार पेखनों, कहुँ उजरै कहुँ बसै॥ राउ होय कहुँ रङ्क भिखारी, राज शिंहासन लसै॥ १॥ प्रभुकी माया प्रबल गुणमई, को बरणै तेहि जसै॥ नाच नचाय रही सब जग कहँ, शिव ब्रह्महिं धरि कसै॥ २॥ कर्म धर्म जप योग यग्य ब्रत, करत ताहि लखि हँसै ॥ छण में देति बिगारि कठिन अस, ज्ञान ध्यान सब ग्रसै ॥३॥ रचि राखे बहु भोग बिषय सुख, स्वाद तहाँ जिव फँसै॥ शब्द रूप रस गन्ध अलिङ्गन, इन्हके बश परि नशै॥४॥ बिसरे गर्भ करार नारि सँग, चाम चाम ते घसै॥ जेहि महँ सहै दुसह दुख दारुण, पुनिपुनि तेहि महँ धसै ॥५॥

बूझत नहिं अज्ञान अभागी, जीवन है दिन दशै। प्रेमलता रठि नाम उतरु भव, पार न काल डसै ॥ ६ ॥

पद (३०७)

नाम रस करु रसना नित पान ॥टेक॥

बार बार करि, बिनय निहोरौं, कस न करहु सिख कान ॥ बादि बकति वहुबाद शोकमय, चाखति स्वाद मलान ॥ १ ॥ सब रस निरस जानि रटु नामहिं, तजि ममता मद मान ॥ पैहै परमानन्द दुसह दुख, नशिहै कहत पुराण ॥२॥ यद्यपि बेद कथित बहु साधन, योग यग्यजप दान ॥ श्री सियराम नाम सम सुखद न, कर्म धर्म तप ध्यान, ॥३॥ करत रहे बहु कष्ट प्रथम मुनि, गतिहित साधि सु ज्ञान ॥ लहत रहे कोउ कोउ कोटिन में, अगमसु पद निर्बान ॥ ४॥ नाम रटत अनयास, सुगति सोइ, पावत सन्त सुजान॥ अधम जीव ते तजि अस नामहिं, सेवहिं साधन आन ॥ ५ ॥ परम कृपा श्री कलि कृपाल की, मङ्गल मोद निधान ॥ प्रेम लता बिनु श्रम गति पावहिं, नर करि नाम सु गान॥६॥

पद (३०८)

रटै जो जीह नाम लय लाय ॥ टेक॥

होय प्रकाश हिये नित नूतन, मोह तिमिर बिन शाय॥
सूझि परै सियराम रूप तब, भेद भर्म भय जाय ॥१॥
फटै कपट पट खुलै सु अनुभव, षट रिपु सहित सहाय।
भागै भभरि दशोदिशि जहँतहँ, मायाकृतदुखदाय॥२॥
ग्यान बिराग बिवेक बिचार सु, बढ़त सु अवसर पाय॥
नामराज लखि जन उर आवति, भगति सु सह शिशु
भाय॥ऋधिशिधिनिधिसुखसुकृतसकल गुण, बिनुश्रम
घेरहिं आय। श्री सियराम नाम जापक कहँ, सेवहिं
बिघन बराय ॥४॥ जो कहुँ मिलै नाम जापक गुरु,
तिन्ह सँग भाव बढ़ाय ॥ रटै नाम बहु भर्म कर्म तजि,
द्वादश वर्ष अघाय ॥५॥ जोइ गुरु कहैं करै सोइ सोइ
हिय, प्रीति प्रतीति दृढ़ाय। धारण करै जन्म भरि बृत्ति
सु, जो गुरु देइँ बताय ॥६॥ पावै सो शिष नाम रटन
सुख, जो न सकै कोउ गाय॥ प्रेमलता अलि लखेउ
नयन यह, कहेउ न बात बनाय ॥७॥

पद (३०८)

नाम सियराम रटैं जा प्यारे ॥टेक॥
ऋधि शिधि मान बढ़ाई जगकी, कादरता सुख सारे॥
तजि ममता मद मोह कपट छल, जाति पाँति परिवारे

॥१॥ ठाटि फकीरी बेष बैष्णवी, गुरु मुख बारन लारे ॥
मांगिखाव मधुकरी नाम रटि, तरु तर बैठि किनारे
॥२॥ सुर दुर्लभ मानुष तनु पायो, व्यर्थ न ताहि गमारे
छण छण छीजत जात सु आयू, पछितैहै यम द्वारे ॥३॥
गर्भ कौल केहि लागि बिसार्यो, जहँ पाये दुख भारे॥
बाहिर कीन्ह तोहि तिन्हि प्रभु कहँ, भजुजेहि संकट
टारे ॥४॥ तहँ न रह्यो कोउ धीर धरैया, अब नाते
बिस्तारे॥ पढ़्यो पुराण मढ़्यो मुद माया, सीख्यो
ज्ञान बिचारे ॥ ५ ॥ अबहूँ चेति सुमिरु सीतापति,
दशरथ राज दुलारे ॥ सुख पैहै परिणाम नाम रटि,
सन्त शरणमें आरे॥६॥यह संसार असार ख्याल लखि
तेंहिदिशि तू मतिजारे॥पूतभूतसम नारि सु नागिनि,
दैहैं अवशि दगारे ॥ ७ ॥ गहु गुरु चरण कमल रटु
नामहिं, उतरु घोर भव पारे॥ प्रेमलता कलि अपर न
साधन, कह श्रुति सन्त पुकारे ॥ ८ ॥

पद (३१०)

नाम सियराम काम तरु साँचे ॥टेक॥

कवनिउबिधि कोउ शरण लीन सो, फिरतिहुँ ताप न
आँचे ॥ सेवत सुलभ होत दशहूँ दिशि, ऋधि सिधि

सुख बिनु याँचे ॥१॥ रटहिं बैठि तरु छाँह नाम सुख,
तजि जग कारज काँचे। सब ऋतु सुखद अदोष अबाधा,
बिरद सु बेदनि वाँचे ॥ २ ॥ जरत दुसह ज्वर जिन्हि
भोगनि लगि, जीव फिरहिं जग नाँचे ॥ पावहिं सो
अनयास सन्त बहु, नित जो नामहिं राँचे ॥३॥ बूझत
नहिं नर मूढ़ मोहबश, जीवन है दिन पाँचे ॥ तजत न
बिषय बिकार बासना, बूढ़ भयेउ पर ढाँचे ॥४॥ रटहिं
नाम प्रिय प्रेमलता जो, तिन्हि मन मोद सु माँचे ॥
परखे नहिं खर खोट छोट बड़, ते प्रभु आँटी टाँचे ॥५॥

पद (३११)

नामबिनु चैन न एक घरी ॥टेक॥
सोवत तो रोवत उठि शिर धुनि करत गलानि खरी ।
नींद पापिनी हरेउ भजन धन, नाम रटन मणि लरी
॥१॥ जागि न सोवत नाम शनेही, बहुरि सु बानि परी॥
होइ शुचि बैठि सचेत सु आसन, करत सु नाम झरी॥२॥
नामबिहाइ भलिहु वरु गाथा, बूझहिं जो नर नरी ॥
कृपापात्र लखि कहहिं कछुक पै, लागत मन अरबरी
॥३॥ सब सन प्रीति नीति रत निशिदिन, एक टेक
पकरी॥ जेहि तेहि बिधि भरि उदर नामरट, रहत

सदा सुखभरी ॥४॥ ऋधि शिधिनिधि जगमानबड़ाई,
विषय भोग लखि अरी। तजत तिन्है करि यतन
भजत प्रभु, नाम प्रबल नरहरी ॥५॥ नाम सकल सुख
खानि जानि जिय, रटन सु जीवन जरी । प्रेमलता
बिसरत नहिं पल छिन, लागी रहत सुररी ॥६॥

पद (३१२)

रटन सियराम नाम की अछिया ॥टेक॥

योग यग्य जप तप ब्रत तीरथ, कर्म धर्म लखि छछिया॥
परि हरि पीजिये नाम सुधारस, ललकि दूध ज्यों
बछिया॥१॥ काँच किरच सम ऋधि सिधि निधि बहु,
रामनाम मणि लछिया ॥ धारहिं जे सुनाम मणि
माला, करहिं तासु प्रभु रछिया॥२॥ जीव सकुन उड़ि
मिलत प्रभुहिं करि, नाम बरण दोउ पछिया ॥ नाम
अनेह हीनजो तिन्हि कहँ, कालव्याल,धरिभछिया॥३॥
नामरशिक तिहुँ काल दशोदिशि बिचरहिं जिमि
जल मछिया॥ तजे भोग व्योहार फकीरी, साज सुभग
अँग कछिया॥४॥ रटत नाम करि नेम निरन्तर, गुरु
सन लेइ सुदछिया॥ ते जन मरहिं न जियहिं सदा जग
राजत ध्रुव नभ सछिया॥५॥ तरिहैं नाम सुमिरि बहु

भवनिधि, तरे तरत पर तछिया ॥ प्रेमलतहिं लखि लेउ लपटि रहि लहि तमाल पिउ गछिया ॥६॥

पद गजल (३१३)

मरने के दिवश आगये अतिही नगीच में ॥टेक॥

आये रहे जिस्केलिये सो तौ बना नहीं, सारी उमरिया खपगई झंझट के बीच में ॥१॥ निकला था साथ गर्भ ते मिट्टी का पूतला, सोभी न चला संग में समुझा न नीच में ॥२॥ श्रीराम नाम मणि बिसारि कर्म कौड़ियाँ, राखी बटोरि मूढ़ ढके खान घीच में ॥३॥ अज्ञान मान मोह कुमद पी अमल किया, बेहोस होइ फसि गया माया की कीच में ॥४॥ तिस्पर डसी सु बिहँसि नई नारि नागिनी, सब तौर से फिरि परि गया अति कठिन मीच में ॥५॥ भोगों के साथ मिलइ मसलि खाइ गया काल, करि प्रेमलता बे पता जिमि घीव खीच में ॥६॥

पद (३१४)

काल बलवन्त सकल जग खायो ॥ टेक ॥

हिरणाकुश अरु हाटक लोचन, सतयुग द्वन्द मचायो ॥ काल कराल कोल नरहरि बनि, दोउ कहँ मारि खपायो ॥१॥ त्रेता महँ अति प्रबल दशानन, भा अति

धर्म उठायो॥ सुरनर नाग असुर मुनि अगजग, सब पर हुकुम चलायो ॥२॥ शिव बिरंचि हरि डरत जासु डर, शोक तिलोकनि छायो ॥ रामरूप धरि मारि सकुल तेहि, श्रमबिनु समर सुतायो॥३॥ सहसबाहु तिमिबालि महाबल सब सन बैर बढ़ायो॥ मारि काल मिलये महि तेउ सब, रूप रंग बिनशायो ॥ ४ ॥ द्वापर भयेउ कंश दुर्योधन, अति अधर्म प्रगटायो॥ जरासन्ध शिशुपाल वक्ररद, सबकहँ काल चबायो ॥ ५ ॥ कलि ऊदल आल्हादि प्रबलभट, जिन्हिकर यश जग गायो॥ काल ब्याल के गाल परे तेउ, सुनि मोहि अचरज आयो ॥६॥ बड़े बड़े बलवान धनिक महि, बढ़ि बढ़ि जोर जनायो ॥ काल कलेऊ कीन बीचही, करि न सके मन भायो॥७॥ जीवचराचरकाल सुभोजन, बहुबिधि बिधि उपजायो॥ भक्षण करत फिरत निशि बासर, दशहू दिशनि सुधायो ॥८॥ जो तनु धरै मरै सो तेहि लगि, यह मृत लोक कहायो ॥ भवसागर महँ काल जाल बिच, सबहिनि कहँ अरुझायो॥९॥ सुनियत जो सियरामनाम जन, रटत सदा अधिकायो॥ प्रेमलता ते बचत अवसि पै, सो निपटहिं बिसरायो ॥१०॥

पद (३१५)

बनाय लीजे मेरी नाम महाराजा ॥टेक॥

तुम्ह सर्ब भाँति समर्थ सु साहिब, राखत सबकी लाजा ॥१॥ अधम उधारण बिरद बदत श्रुति, निशिदिन सन्त समाजा॥ आप समान न सुखद लोकतिहुँ, भवनिधिकेर जहाजा ॥ २ ॥ श्रीसियराम रूप उर दशरत, रटत तुमहिं सहसाजा ॥ अंगतिनि कहँ गति देत सु श्रमबिनु, सुनियत बरबसु बाजा ॥३॥ सबबिधि सुलभ सर्बहिं सब देशनि, सकल धर्म शिरताजा ॥ बिधिहरि हर सुर सबल नामरटि, भयेउ करत जग काजा ॥ ४ ॥ नामहिं सुमिरि न सुखी भयेउ को, केहिकर दुख नहिं भाजा ॥ प्रेमलता सुप्रभाव सत्य सुनि, शरण आय अन्दाजा ॥५॥

पद (३१६)

जय जय मिथिलेशपुरी मिथिला सुखदाई ॥ टेक ॥

सप्तपुरी तीर्थधाम, सकल सुभद्रपुन्यठाम, सेइतबसुपद ललाम, सकल शिद्धिपाई॥१॥ तीनि लोकतीनि काल तो समानतूकृपाल, निरखिरामभेनिहाल, सहितलषन भाई ॥२॥ अमर सिद्ध सन्त भूप, सेवत तोहि लखि अनूप, पावत सियराम रूप, कहत बेदगाई॥३॥ निबसि

तब सुअङ्क लोग, करत बिबिधि योग भोग, ब्यापत नहिं रोग सोग, तोर दया माई ॥ ४ ॥ अनुपम थल तीर्थ बाग, बिपुल बिमल सरि तड़ाग, जागत अनुराग भाग, हेरि के निकाई ॥ ५ ॥ जगत मातु सीय आय, जनमि तोहि कीन माय, थके कबि सुगाय गाय कीर्ति तव सुहाई ॥६॥ बीतराग सीयराम रटत अटत महि अकाम, तोर निकट आठ याम, मुदित मागिखाई ॥७॥ मिथिला सबबिधि सुखैन, प्रेमलता जो न नयन निरखी सो जिउ न चयन, लहत कहूँ जाई ॥८॥

पद (३१७)

नाम बिनु नाहिन कतहूँ ठाम ॥टेक॥

कर्म ज्ञानवैराग योगजप, तप तीरथ व्रत धाम॥ पौरुष हींन भये परि पर बश, कलिमल ग्रथित तमाम ॥ १ ॥ पाप प्रपंचनि सने सुसाधन, आराधन अभिराम। भक्ति हींन ते हुइ हैं केहिबिधि, जीवनि प्रद विश्राम ॥२॥ सरोनाव दरियाव प्रवल अति, केवट गुरू सकाम। तेहिपर चढ़िचहैं पार जान जे, तिन्हैं भयेउ बिधिबाम ॥३॥ शुक ज्यों सेमर सेइ फूल लखि, नाश्यो समय ललाम। फल तेउड़ी तूल तब रोयो, परिहरि दाड़िम

आम ॥४॥ देत सुभूषण बेचि ठगन कर, खोटे लै जो दाम ॥ सो पछितात बहोरि पीटि शिर, मूरख नर बशु जाम ॥५॥ जिमि कोउ तजि बहु अशन सुधासम, चाटत सूखो चाम ॥ प्रेमलता तिमि सकल धर्म लखि, बिनु सियराम सुनाम ॥ ६ ॥ जय सियराम।

पद (३१८)

सब बिधि राम नाम सुख दाई ॥टेक॥

योगी जपी तपी सन्यासी, शिद्ध सन्त बहुताई ॥ रटहिं न श्री सियराम नाम तौ, सब जिमि स्वान बिलाई ॥१॥ बर्णाधम अति नीच अपावन, होइ न स्वपच कशाई। मोरे पूज्य प्राण ते प्रिय ते, करहिं जे नाम रटाई ॥२॥ नामहिं जाति जनेऊ नामहिं, साहिब सखा सहाई॥ नाम गोत्र गायत्री सन्ध्या, भक्ति भावना भाई ॥३॥ नहिं हम हिन्दू तूर्क आश्रमी, बरणी बुध अन्याई। षटदर्शनी न कर्मी धर्मी, चतुर न चुगल चबाई ॥४॥ बिधि निषेध दोउनि ते बाहिर, राम नाम ठकुराई। तिन्हि के शरण भयेउ तजि शङ्का, रटि रटाय गति पाई ॥५॥ लोक बेद के कठिन कुबन्धन, कटेउ सु समता आई। मन बच क्रम थिर भयेउ यतन

बिनु, लखि श्री नाम निकाई ॥ ६ ॥ सात द्वीप नव खण्ड अखण्ड बहु प्रभुता अमल सु छाई ॥ प्रेमलता सियराम नाम की, महिमा जात न गाई ॥ ७ ॥

पद (३१८)

नाम बिनु सकल जगत दुख दाई ॥टेक॥

भूषण बशन अशन सुत चाहत, ग्रह धन्धा पितु माई। सुता जमाई सम्पति चाहत, सब सुख भोग लुगाई॥१॥ जाति पाँति जन भोजन चाहत, अर्थ बिभव सब भाई ॥२॥ चाकर लोग चाकरी मागत, हाकिम खेत जुताई। धोबी बसन धुवाई चाहत, नापित मूड़ मुड़ाई ॥३॥ दरजी धुनियाँ चहत मजूरी, जुलहा चहत बुनाई। बढ़ई दाम काम के मागत, रँगरेजा सु रँगाई ॥४॥ देवी देव भूत नृप चाहत, बलि पूजा सिवकाई ॥ पित्रादिक तर्पण शराध नित, चाहत होम अघाई ॥५॥ चाहत भीख भिखार परोसी, मित्र सु मानबड़ाई। निज निज स्वारथ पगे जीव सब, चाहत अपन भलाई ॥६॥ रस रसना श्रुति शब्द सु चाहत, नाक सुगन्ध सुहाई॥ नयन रूप तनु कोमल अंगनि, चाहत हिय लपटाई ॥७॥ मन मतङ्ग मतवारो चाहत, निशिदिन

करन ढिठाई। सब प्रतिकूल शोक दायक सब, चाहत तोहि बिनशाई ॥८॥ तू अचेत होइ तिन्हि सँग रातौ, गर्भ कौल बिसराई॥तेहि लगि सहत बिबिधि दारुण दुख,जनमि जनमि जग आई॥९॥अबहूँ रटि सियराम निरन्तर, परिहरि कपट कचाई ॥ गुरु मुख होउ धोउ ममतामल, सन्तनि जूठनि खाई॥१०॥ मदिरा मोह पियो तेहि कारण, हृदय अँधेरी छाई । मैं मैं करत जरत तिहुँ ज्वर नित, मति माया अरुझाई ॥११॥ जो चाहै सुख सुयश सुकृत गति, रति मति भगति बड़ाई॥ तौ तजि प्रेमलता बिषयनि रटु नाम सन्त सँग जाई१२

अथ होली

पद (३२०)

होरी खेलो सम्हारि मेरी प्यारे पिया ॥ टेक ॥

तुम्ह अवधेश कुमार छबीले, मैं मिथिलाधिप केरि धिया ॥१॥ ज्यों तुम्ह श्यामल सुभग सलोने, तेहि बिधि प्रभु मोहिं गोर किया। रावरो राम नाम जग जाहिर;तैसहि मोर सु नाम सिया ॥२॥ तुम्हरी ओर

सखा लघु लघु बहु, ममदिशि अगणित प्रबल तिया ॥
अबिर गुलाल अघट इत कुम कुम, केशर रँग भरि
हौज दिया ॥ ३ ॥ चलिहैं जब पिचका चहुँ दिशिते,
धरिहै तब धीरज न हिया ॥ प्रेमलता पिय भागि
परैहौ, सहित सहाय सु लै लै जिया ॥ ४ ॥

पद (३२१)

होरी खेलि न जाने जगत कोई ॥ टेक ॥
अनुपम होरी मोहि गुरुनें बताई, खेलत सन्त सदा
सोई ॥ १ ॥ मधुर रकार सुरंग मनोहर, पिचक अकार
बड़ी जोई ॥ अर्ध चन्द्र कुमकुमा सु कोमल, बिन्दु
गुलाल अघट होई ॥ २ ॥ उड़त अबीर अकार मधुर
बर, छाय रह्यो दशदिशि ओई । रटन अखण्ड धूम लखि
भारी, त्रिबिध ताप भव भय रोई ॥ ३ ॥ भाव भगति
दम्पति परिकर गण, संयम नेम सु भय खोई । सावधान
खेलहिं निशि बासर, रँगे सु रँग सब को धोई ॥ ४ ॥
सावकाश सिय नाम सुहावन, साज समाज बरण दोई ।
प्रेमलता यह अद्भुत होरी, जानत सब न बात गोई ॥ ५ ॥

पद (३२२)

होरी खेलत सन्त सुहाई, जामें आवा गमन नशाई ॥ टेक ॥

हृदय हौद शुचि भरि सु सान्ति रँग, सुरति सुपिचक बनाई। भरि भरि मारत कुमति कुचालहिं, सहित सहाय हटाई, बिजय त्रिभुवन में पाई ॥१॥ अहं अबीरहिं कूटि भली बिधि गर्भ गुलाल उड़ाई। कुमकुम कर्म उभय कर गहि गहि, तजत सुग्यान दृढ़ाई ॥ भगतिरस अंग भिजाई ॥२॥ नाम निशान बजत निशि बासर, पाठ पणव सुखदाई। मौज मजीर प्रमोद मृदंग सु, आनँद कीच मचाई। मुक्ति नाचत हरषाई ॥३॥ भावकी भाँग सु पाइ छके सब, मनन सु मिरच मिलाई। गावत ध्यान धमार राग नित, उमगत उर अधिकाई ॥ प्रीति नितनव सर साई ॥४॥ भूलि गये भव भान भर्म भय देह गेह सुत भाई। मन बच कर्म रँगे महि डोलत, त्यागि जगत ठकुराई ॥ प्रेमलतिका अरुझाई ॥५॥

पद (३२३)

होरी खेलत सन्त उदारा-पैठि उर भवन मझारा॥टेक॥

अर्ध रेफ शुचि छत्र कार जोइ, जीवन प्राण अधारा। रङ्ग बिचित्र अगाध हौद सोइ, पिचक सु ह्रस्व अकारा॥ भयो जेहिते संसारा ॥१॥ दीर्घ अकार अबीर अनूपम भव भय हरत अपारा। पालन भरण करन त्रिभुवन में,

बिन्दु गुलाल पसारा ॥ करत पुनि सोइ संहारा ॥ २ ॥ अर्ध चन्द्र कुम कुमा मनोहर, हरत ताप मद मारा। मंधुर अकार मकारइकी जो-चालत सुरँग फुहारा ॥ सोइ शंकर अवतारा ॥ ३ ॥ षट बर बरण बिबिध गुण सौंझनि-भरेउ अघट शुठिथारा। रटन अखंड चलत पिचकारी, बरषत जनुघन धारा ॥ दबी दुर्मति गति छारा ॥ ४ ॥ संयम नेम अपार सु सङ्गी, भीजेउ भगति बिचारा। प्रेम सु कीच मची काया गढ़, चौहट गली बजारा ॥ उमँग मन बारहिं बारा ॥ ५ ॥ फजियत फाग सुहात सु फागुन, फर्क निवास पियारा ॥ जीति मोह दल मुदित अटहिं महि-प्रेमलता भ्रम-टारा। मोदके बजत नगारा ॥ ६ ॥

पद (३२४)

चलो सब देखन सजनी होरी की आजु बहारा ॥ टेक ॥ एक ओर सिय जनक नन्दिनी, अलि गण सँग अपारा एक ओर लिये मधुर सखा सँग, दशरथ राज दुलारा ॥ खड़े दल दोऊ तयारा ॥ १ ॥ केशर रंग के हौद हजारन भरे सु सौंझनि थारा। अबिर गुलालनि गंज लगे बहु, अतर भरे घट भारा ॥ चलत विधि अमित फुहारा ॥ २ ॥ सुमनस गेंद गने को कुमकुम अगणित पिचक

हजारा। सजि सजि साज भिरे कटि कसि कसि, धरु२ होत पुकारा॥ करत दिशि दोउ ते मारा ॥३॥ उड़त गुलाल लाल भये बादर, बहन लगी जल धारा। धावत गिरत उठत हँसि पकरत, अतर भिजावत बारा॥ टोरि मणि हार सु डारा ॥४॥ मारत गेंद गुलाल परस्पर, बरषत रंग सु न्यारा। लटपत अंग उमंग भरे सब, टरत न कोउ टुक टारा॥ रही नहिं देह सँभारा॥५॥ पकरि लिये नृपलाल लली इक, करि निज गोल मझारा। जनक लली रुखपाय छीनि पट, कुण्डल क्रीट उतारा॥ नारि को कीन सिंगारा॥६॥ भागि गये अवलोकि सखा सब करत न बनत बिचारा। प्रेमलता सिय चरन परो अब जानि सकल सुख सारा॥ डरो जनि राम उदारा ॥७॥

पद गजल (३२५)

खेलैं लली सियलाल सों होरी उमंग से॥ टेक॥

मारैं खड़ी चहुँ ओर अलीं अतर रङ्ग से॥१॥ सीसे धरे गुलाब के घट रङ्ग के भरे। कुमकुम गुलाल राशियाँ लागी सु ढंग से॥२॥ फेकैं अबीर झोरियाँ भरि पिचक चलावैं, धावैं धरैं एक एक को लपटैं सु अङ्ग से॥३॥ चारिउ लली मिथिलेश की इत सयन चलाई, धाई

अलीं अपार सुभग गौरि गङ्ग से ॥४॥ घेरे गुलाल मारि पिचकछीनि हाथ से, चारों लला अवधेश के सुन्दर अनङ्ग से ॥ ५ ॥ टेरैं खड़े अलि टोल में चहुँलाल सखन को, आओ हमारे पास हो भागो न सङ्ग से ॥ ६ ॥ ललना लली रुख पाय पकरि नारि बनाये, हारे सु आजु प्रेमलता बीर जङ्ग से ॥ ७ ॥ दोहा—होरी होरी होरही, होरी हारे लाल। प्रेमलता अलि रूपकरि, हँसी बाल दै ताल ॥ १ ॥

पद (२२६)

होरी खेलत राम सिया प्यारी ॥ टेक ॥

केशर रंगके हौद भरे हैं, कंचन मणि की पिचकारी ॥ उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, मारत हँसि दैदै तारी ॥२॥ एकहिं एक धरत छल बल करि, दोउ दिशि धूम मची भारी॥३॥ वरषत सुमन चलत पिचकारी, लखहिं अटनि चढ़ि नरनारी ॥ ४ ॥ प्रेमलता मिथिलापुर बासिनि धनिधनि बेद कहत चारी ॥ ५ ॥

पद (३२७)

होरी खेलत राम सिया गोरी ॥ टेक ॥

इत सिय संग सखी बहुराजैं, रघुवर संग सखन जोरी

॥१॥कंचन बनमिथिलापुरमाहीं, धूम मची अति चहुँ-
ओरी॥२॥केशर रंग गुलाब पनारे, बहन लगे खोरी खोरी
॥३॥अबिर गुलाल कुमकुमनि मारत, पिचकारिनतनु
सर बोरी ॥४॥ प्रेमलता सुर लखत मुदित मन, बरषत
सुमन सु भरि झोरी ॥५॥ पद गजल (३२८)

सुन्दरसलोने श्यामप्रिया स्वामिनी गोरी॥टेक॥
निरखो सखी मन मोहनो कैसी बनी जोरी॥१॥ बैठे
दिये गर बाँहिं मुदित बयस किशोरी, लाजैं बिलोकि
माधुरी रति काम करोरी॥२॥ उपमा न बने देत लेत
चित्तहीं चोरी, सुखमासु अंगअंग की बरणैं अलीकोरी
॥३॥मुशिकायलली लालसों बाणीअमी बोरी, बोलीं
सुमंद मंद पिया खेलिये होरी॥४॥ प्यारी कही तुम
नीक बात भावती मोरी, कीजे सोई सुख मानि सुरुचि
होय जो तोरी॥५॥धाईं अलीं रुखपाय अमितसीयकी
ओरी, ल्याईं सु साज साजि सकल सौंझ बटोरी॥६॥
खेलन लगे दोउ ओर ते भरि भरि अबिरझोरी, केशर
सुरंग प्रेमलता दे रही घोरी॥७॥

पद गजल (३२९)

निरखोअली सियलालकीहोरीबहारदार।टेक।

खेलैं अनोखी चालसों मिथिला गली बजार ॥१॥ लाखों
ठिकाने राशियाँ लागीं गुलालकी, रंगोंकी भरी कोठि
याँ हैं धरी बेसुमार ॥२॥ मुग्धा अली दोउ ओर सजि
सु पिचक कर लिये, ठाढ़ीं उमारमा सीं सुन्दर गुणी
अपार ॥३॥ रुखपाय पाय धाय धाय एकएकसे, खेलन
लगीं दिल खोलि पटकि लाज काज भार ॥४॥ बरषैं
सुरंग झमझम फेकैं अबिरगुलाल, लटपट भईं नखशिख
सबी धरु धरु करैं पुकार ॥५॥ लाल भयो नाक नगर ड
गर सगर लाल, लालभये श्यामसिया शीसके सुबार॥
६॥ दशोदिशा छाइ रह्यो लाल२ रंग, लाल सकललोक
हुए हो गये अँधार ॥७॥ सुन्ते हैं शब्द मार मार पकर
पकर कान, लखते न नयन कौन कहाँ होरही तकरार
॥८॥ देखी सुनीन आजुलौं ऐसी अनूप फाग, अलि
प्रेमलता अद्भुत जो कीन्ह अवधार ॥९॥

पद गजल (३३०)

देखो सखी सियलालकी होरी सुहावनी ॥टेक॥
प्यारी लगै सबतौर से मनमें सुभावनी ॥१॥ चालैं फुहारे
रंगके घालैं अबिर गुलाल, ललनालिये बहुसंगमेंमुनि
मन लजावनी ॥२॥ इक ओर सिया स्वामिनी नृपलाल

एक ओर, खेलैं परस्पर अंगसे दोउ फाग पावनी ॥३॥
मुरकन् झुकन् बिलोकनी हँसनी सुमन्द मन्द, उछरन
लुकन् अनूपस्इत उत सुधावनी ॥४॥ फूलों की गेंदकुम
कुम तकितकि सुमारनी, कहते वनेनमुखते पिचका चलावनी
॥५॥ भूषन्बसन् अमोल अवनि परतहैं खसि
खसि, छूटी लटैं लटकैं ललित दिल दरद दावनी ॥६॥
छायो गुलाल प्रेमलता व्योम लाललाल, बरषैं सुनीर
झमझम जनु मेघ सावनी ॥७॥

पद (३३१)

(मिथिलापुर वासिनी बचन)

रसरंग रँगीलो छबीलो लला ॥ टेक ॥

मिथिलापुरकी कुंजगलिन में, खेलत फागसो आवैचला
॥१॥ फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, संग सखादलसो
हैं भला ॥२॥ मारत एकसु एक कुमकुमनि, करत परस्पर
कोटि कला ॥३॥ श्रीलक्ष्मीनिधि आइअचानक
राघोजी के गाल गुलाल मला ॥४॥ प्रेमलता अलि
मुदित बिलोकहिं, रूपअनूप सु चित्त छला ॥५॥

पद (३३२)

होरी खेलैं अनोखी सिया के बना ॥टेक॥

मैं कमला जल भरन गईरी, शिर पर घड़ा लिये अपना॥१॥ बीच बजार खड़े घुनन्दन, अबीर गुलाल उड़ावैं घना ॥ २ ॥ अवलोकत नरनारि अटन चढ़ि, कौतुक परम न जात भना॥३॥बरबश घेरि लई मोहिं सजनी, राघव लाल गुलाल सना ॥४॥ प्रेमलता मुख चूमि भिजाई, मान्यो न ढीठ मैं कीन मना ॥ ५ ॥

पद (३३३)

निरमोही लला मोते रारि करै ॥ टेक ॥

जब मैं जाऊँ भरन जल कमला, आय अचानक हाथ धरै ॥ १ ॥ अटपट बचन कहत मन मानैं, रोकत डगरि न टारो टरै॥२॥रङ्ग गुलाल लिये सङ्गी सब, मारगबिच रगरै झगरै ॥३॥ मारत रंग गुलाल कुमकुमनि, खैंचत चुनरी न तनक डरै ॥४॥ हाथजोरि हँसि घूंघट खोलत हाहा करत मोरे पाँयँ परै ॥ ५ ॥ प्रेमलता अलि होरी के मिस, बरबश मोहिं लपटाई गरै ॥ ६ ॥

पद (३३४)

होरी खेलैं छबीलो रसीलो बली ॥टेक॥

घरते निकसि घड़ा शिर पर धरि, मैं कमला जलभरन चली ॥ रंग गुलाल उड़ावत गावत, आयगये चलि

मेरी गली ॥२॥ घेरि लई घनश्याम राम मोहिं, जानि अकेली न कोई अली ॥३॥ कर पकर्यो हठि चुनरि भिजोई, फोरि दई मोरि मटुकी भली ॥४॥ दै गर बाँहिं बिहँसि रघुनन्दन, चूमि कपोलन रोरी मली ॥ ५ ॥ प्रेमलता कछु बश न चल्योरी, मैं अबला वह छैल छली ॥६॥ जय सियराम जय जय सियराम।

(इति मिथिलापुरबासिनी बचन)

पद (३३५)

खेलैं लली लाल आजु रँग होरी ॥ टेक ॥

लाल बसन तन नयन बिभूषण, लाल करनि सोहैं झोरी॥लाल बाल मुख गाल पिचक रँग, बरषत लाल सु चहुँ ओरी ॥ १ ॥ लाल भई महि नाक दशोदिशि, मिथिला पुर खोरी खोरी॥छपेउ भानु रहि छाय अरुणता, लखि न परत कितहै कोरी॥बाढ़ी चोप परस्पर पावन, अमित सखा उत इत गोरी ॥ मारहिं एकहि एक कुमकुमनि, खोलत चखन भरैं रोरी ॥३॥ सियरुख लखि घेरे रघुनन्दन, धाय सु प्रमदा बरजोरी ॥ भरता दिक लखि सखा सकाने, भजन लगे चोरा चोरी ॥४॥ हारे हरि जीतीं सिय स्वामिनि, बैठारे दोउ इक

ठौरी ॥ प्रेमलता अलि हँसी जयति कहि, नखशिख छबि छकि तृणतीरी ॥ ५ ॥ जय जय सियराम ।

पद (३३६)

खेलत दोउ सह समाज आजु रंग फागरी ॥टेक॥

नखशिख शृङ्गार किये, कमल करनि पिचक लिये, निर्भर आनन्द हिये, उमग्यो अनुराग री ॥१॥ हो हो होरी पुकारि, उभय ओर हठ सुधारि, धाये इक इक प्रचारि, बाढ़ी अति लागरी ॥२॥ कुमकुम रँग अबिर लाल, पाटलादि कंज माल, मारत तकि तकि सु बाल धरहु धरहु बागरी ॥ ३ ॥ पङ्क मची सरयु तीर, लाल पीत भयो नीर, टूटे भूषण सु चीर, भयेउ ताग तागरी ॥४॥ प्यारी रुख पाय धाय, घेरें घनश्याम जाय, हरषीं अलि गोल लाय, सखा गये भागरी ॥५॥ प्रीतम निज हार मानि, प्रेमलता जोरि पानि, जीतीं जू कहि बखानि, सिय नवीन नागरी ॥६॥ जय सियराम ।

पद (३३७)

होरी खेलन पधारी हो नवीन सिय नागरी ॥ टेक ॥

नख शिख सजि शृङ्गार अनूपम, रूप सुशील उजागरी ॥१॥ गोर बदन शशि कोटि लजावन, सकल सु गुण

गण सागरी ॥ सुन्दरता मर्याद छबीली, आदि शक्ति मति आगरी ॥ २ ॥ निज अनुरूप लिये ललना सँग, अगणित रङ्गनि गागरी। अबिर गुलाल कुमकुमा के शर, कुशुमनि राशी लागरी ॥३॥ उतर घुनन्द सखा सखि सिय इत, दोउ दल करि सु विभागरी। खेलत फाग परस्पर हिलिमिलि, गावत सरस सु रागरी ॥४॥ मिथिला पुर नर नारि सराहत, लखि सिय सुकृत सुहागरी। प्रेमलता जेहि प्रेम सु रस रहे, आली सलोने श्याम पागरी ॥५॥ जय सियराम जय जय सियराम।

पद (३३८)

खेलत सियराम नाम संग सन्त होरी ॥ टेक ॥

नेह को गुलाल लाल, नेम अबिर भरि सु थाल, भाव भगति फूल माल, बिरति रङ्ग घोरी ॥ १ ॥ परण की सु पिचक धारि, ज्ञान गेंद कर सम्हारि, मारत तकि तकि प्रचारि, डारि गरे झोरी ॥२॥ मंगल मैदान अड़े, मगन कसे कमर खड़े, पहिरे मुद मोद कड़े, नीति नजर जोरी ॥ ३ ॥ बाजी धरि तन सु प्राण, विधि निषेध कर्म दान, त्यागि लोक लाज कान, भर्म भण्ड फोरी ॥४॥ मची रहत रटन जंग, हार जीत नाम संग, होत बढ़त मन

उमंग, बरणि सकै कोरी ॥ ५ ॥ सुनत गुनत रटत नाम, लिखत पढ़त सियसुराम, गायधाय आठ याम, नामहीं की ओरी ॥ ६ ॥ चितवत नहिं आन ओर, युगल नाम भूलि भोर, प्रेमलता चित्त चोर, नाम शरण तोरी ॥ ७ ॥

पद (३३९)

खेलहीं बसन्त सन्त सिया कन्त नामते ॥ टेक ॥

समदमादि सखा संग, उभय ओर साज अंग, ठाढ़े सब जनु अनंग, निकसि निकसि धामते ॥ १ ॥ अरुण पीत रंग प्रेम, अघट भरयो पिचक नेम, धारैं दृढ़ कर सु छेम अबिचल संग्राम ते ॥ २ ॥ कुमकुम गुण कवन गनी, सुभग कर्म माल घनी, रट अखण्ड मार ठनी, हारते न राम ते ॥ ३ ॥ अतर अबिर भगति भाव, ज्ञान गेंद तकि चलाव, पुलकि पुलकि भरे चाव, बचत बुरे कामते ॥ ४ ॥ शब्द को गुलाल मारि, छाइ रह्यो दिशनि चारि, डारत रँग अँग पुकारि, चतुर कोटि बामते ॥ ५ ॥ मोदकी सु मची पंक, प्रेमलता रेणु शंक, दबी रटत चारि अंक, मस्त अष्ट यामते ॥ ६ ॥ जय जयसियराम ।

पद (३४०)

खेलहीं सु सन्त फाग नाम संग ढंग ते ॥ टेक ॥

बिबिधि भाव सजि सु साज, पाय नाम रसिक राज, तजि कुतर्क लोक लाज, लपटि रहे अंगते ॥ १ ॥ निरखत नहिं आन ओर, प्रेम अमल उर न थोर, गावत गुण श्याम गोर, शुचि सु कोटि गंगते ॥ २ ॥ निशि दिन रह कमर कसी, भूखप्यास नींद नशी, बिरति पिचक कर सुलसी, भरी ज्ञान रंग ते ॥ ३ ॥ रट अखंड मची फाग, बिजय की सु बढ़ी लाग, मानत निज भूरिभाग, भाजते न जंगते ॥ ४ ॥ भावते न जगत खेल, राम नाम ते सु मेल, भयो अटूट रेल पेल, सन्त गुरू संगते ॥ ५ ॥ प्रेमलता हार जीति, होत बढ़त अधिक प्रीति, लरत अब सु बूझि रीति, नामसों उमंगते ॥ ६ ॥

पद (३४१)

खेलन् चली नृपलाल ते सिय स्वामिनी होरी ॥टेक॥ बाजे मृदंग डफ सु ढोल झाँझ मजीरे, लाखों झुकी चहुँ ओर ते सु गावतीं गोरी ॥ १ ॥ जयजय पुकारैं सीय की उत्साह उर भरा, नख शिख किये शृङ्गार लिये करनि में झोरी ॥ २ ॥ रंगो के भरे ठौर ठौर हौज हजारन् राखी लगी गुलाल की सु गन्धके कोरी ॥ ३ ॥ कुमकुम भरे धरे अनेक पिचक फुहारे, शीसे गुलाब इत्र के कद्द

लाख करोरी ॥४॥ हल्लापरा तिहुँलोक लोग देखने धाये, छाये बिमान ब्योम नचति बिबुध किशोरी ॥५॥ बर्षै प्रसून माल अमित पुलकि बार बार, लखि के समाज साज को विधि मति भई भोरी ॥६॥ देखी सुनी न आजुलों ऐसी अनूप फाग, जैसी रची मन मोहिनी सिय रामकी जोरी ॥७॥ अद्भुत मची सु मार अबिर रँग गुलालकी, पहिचान को केहि को सके नय चाह दोउ ओरी ॥८॥ घेरे अलिन् घनश्याम को इक बार गोल में, नारी बनाय लीन पिचक हाथ ते छोरी ॥९॥ भाजे सखा बिलोकि सबल दल सु अलिन को; जीती बिदेह नंदिनी सिय स्वामिनी मोरी ॥१०॥ प्यारी पिया सु प्रेमलता फाग रँग रँगे, बैठे दियेगर बाँहि लखो लाज त्रिण तोरी ॥ ११॥ जय सियराम ।

* * *

अथ झूलन

पद (३४२)

झूलत सङ्ग सिय रघुबीर ॥ टेक)

आसपास नव सप्त सजि सजि, नवल ललना भीर ॥

ठाढ़ी झुलावहिं औसरिनि, सब गाय गुण गण धीर ॥ १ ॥ हलत भूषण बजत कंकण, किंकिणीं मंजीर। मन्द मन्द घन गरजि बरषत, बहत त्रिविध समीर ॥ २ ॥ मधुप गुंजहिं केकि कोकिल, कूंजहीं कलकीर। हरित महि मन हरत निरखत, अवध सरयू तीर ॥ ३ ॥ गौर तन सिय सुभग राजत, नील अनुपम चीर। श्याम सुन्दर सुखद पिय अँग, लसत सखि पट पीर ॥ ४ ॥ विहँसि पिय गरडारि भुज सिय-धरतिडरपि शरीर। सजल घन बिच मनहुँ दामिनि, लसति होइ सुथीर ॥ ५ ॥ कबहुँ झूलति सिय झुलावत-पिय सु फहरत छीर। प्रेमलति का झुकी चहुँदिशि, तरुनि टपकत नीर ॥ ६ ॥

पद राग कजरी (३४३)

रिमझिम रिमझिम बरषत बादर हरषत सिय सँग झूलत राम ॥ टेक ॥ चहुँदिशि छाय रही हरियाली, शोभित सरस घटा नभ काली, झुकि रहि महि लतिका तरु डाली, सुखमा अनुपम आठो याम ॥ १ ॥ पपिहा पिया पिया करे सोरा, बोलत दादुर कीर चकोरा, नाचत प्रमुदित जहँ तहँ मोरा, बाग बन फूले ललित ललाम ॥ २ ॥ त्रिविध पवन बह सदा सुहाई, भरी सरित

सर बरणि न जाई, गावहिं गीतसुलोग लुगाई, घरघर घले हिंडोरा ग्राम ॥ ३ ॥ गोर श्याम सुन्दर बर जोरी, श्रीसियराम किशोरकिशोरी, झूलत झमकि लेत चित चोरी, कोटिनि निवछावर रतिकाम॥४॥प्रेमलताअलि अमित अपारा, सेवहिं दम्पति चरणउदारा, निरखहिं भरि भरि नयन बिहारा, निशिदिन रटहिं नाम सुख धाम॥५॥ जय सियराम जय जय सियराम।

पद राग कजरी (२४४)

झूलत सीताराम हिंडोरा मोरा सोर मचावै ना॥टेक॥ कंचन वन मिथिला पुर पावन, सकल अमंगल सूल नशावन, अति रमणीयँ सुमुनि मनभावन, देखतचितहिं चुरावैना ॥१॥ बिटप बिशाल लता अरुझानी, फूलनि फरनि भरे सुखदानी, त्रिबिधि पवन बह निर्मल पानी कीर खग मरुत उड़ावै ना ॥२॥ सजि सजि भूषण बसन भामिनी, झुण्ड झुण्ड मिलि गज सु गामिनी, शोभित मानहु बिपुल दामिनी, लखि रति मदन लजावैना ॥३॥ दम्पति सहित सु झूलहिं सादर, मधुर २ नभ गर्जत बादर, रिमझिम बरषहिंभीजत चादर, मिलि अलि राग सु गावैना ॥ ४ ॥ यह सुख अकथ जान जन सोई, श्रीगुरु

कृपा जाहि पर होई, प्रेमलता नहिं बात सु गोई, नाम रटि सब सुख पावै ना॥ ५॥ जय जय सियराम।

पद (३४५)

आजु दोउ झूलत झूलन साथ॥ टेक॥

गोर बदन सिय जनक लड़ैती, श्याम बरण रघुनाथ ॥१॥ नख शिख बसन बिभूषण शोभित, युगल गरे युग हाथ॥ चहुँदिशि ललना खड़ी बिलोकहिं, गावहिं गुण गण गाथ॥ २॥ सूरज मुखी बिजन कोउ चामर, धनुष बाण कोउ भाथ। ठाढ़ी लिये पान कोउ मेवा, कोउ कर कमला पाथ ॥३॥ रमक देति कोउ करति प्रशंसा, नाइ कमल पद माथ। प्रेमलता यह सुख न रँगे जे, ते जग जियत अकाथ॥ ४॥ जय जय सियराम।

पद (३४६)

झूलत झमकि सिय रघुनन्द॥ टेक॥

मोर कोकिल कीर बोलत, मधुप पी मकरन्द॥ त्रिबिध बहत सुगंधमय शुचि, पवन सीतल मन्द ॥१॥ सुन्दरीं नव सप्त सजि सजि, हरण पद दुख द्वन्द। सेइ सादर हरषि गावहिं, मधुर स्वर नव छन्द ॥२॥ पियहिं छवि अलि चख चकोर सु, ललकि लखि जिमि चन्द। देत

सुख हँसि हेरि दम्पति, परिकरनि सुख कन्द ॥ ३ ॥
डारि सिय गर भुज सु प्रीतम, करहिं जो सु पसन्द ।
सियहु जाति सुलपटि पिय अँग, परत प्रेम सु फन्द॥४॥
जियहु जोरी सुख सु यह सिय, अवध नृप फरजन्द ॥
प्रेमलतिका भाषि सुख अस, कियेउ लोचन बन्द ॥५॥

पद रागकजरी (३४७)

झूलत नवल हिंडोरे हिलि मिलि प्रमुदित सिय
रघुराई ना ॥ टेक ॥ ललना गण नव सप्त सजें अँग
झुंड बनाई ना । ठाढ़ी गावहिं राग मलार सु चहुँदिशि
सुख सरसाई ना ॥ १ ॥ मन्द मन्द मुश्किात परस्पर
शयन चलाई ना । बोलत हरे हरे मृदु बतियाँ लखि
रति मदन लजाई ना ॥२॥ झोंका देति सहचरी झुकि
झुकि पियरुख पाई ना । डरपि सु जनक लली सुकुमारि
जात पिय हिय लपटाई ना ॥ ३ ॥ दादुर मोर चकोर
कीर पिक सोर मचाई ना । कूजहिं गुन्जहिं मधुप
सु कंजनि पुन्जनि मोद बढ़ाई ना ॥ ४ ॥ सीतल मन्द
सुगंधित बहत सु पवन सुहाई ना । रिमझिम गरजि
गरजि घन बरषत सरसत सुख अधिकाई ना ॥ ५ ॥
उमड़े नदी तलाव पाइ जिमि खल प्रभुताई ना।झींगुर

झनर झनर झंकारैं छाई महि हरियाई ना ॥ ६ ॥ फूले फरे हरे तरु सोहत अति सुख दाई ना। पसरी प्रेमलता तिन्ह ऊपर निरखत लोग लुगाई ना ॥ ७॥

पद (३४८)

हिंडोरना में झूलत जानकि राम ॥ टेक ॥

रशिक जनन की सम्पति दम्पति, सब बिधि पूरण काम। चितवनि हँसनि मन्द मृदु बोलनि, सुन्दर ललित ललाम ॥ १ ॥ भूषण बसन अदूषन अनुपम, शुचि सुगंध मय धाम। पहिरायेउ रचि रुचिर सु रुख लखि सिय सिय पिय सुख धाम ॥ २॥ ठाढ़ीं अली भली चहुँदिशि धरि, करनि सु रेशम दाम। झोंका देति झमकि झुकि निरखहिं, गोर सु छबि घन श्याम॥ ३॥ बजत किंकिनी बलय सु नूपुर, गावत जनु श्रुति साम। बिबुध बरषहिं सुमन प्रमुदित, बरणि प्रभु गुण ग्राम ॥४॥ अवध सरयू तीरपावन, सुखद सुन्दर ठाम। मोद मंगल रूपराजत सकल ऋतु वशुयाम ॥ ५ ॥ बिमुख यह सुख जरहिं जन नित घोर कलि भव घाम ॥ प्रेमलतिका धन्य लखहिं जो झूलने रटि नाम ॥ ६ ॥ जय जय सियराम।

पद गजल (३४९)

सुन्दर सलोना सामरा दिल्को चुरा लिया ॥
कहते बने न जैसा जुल्मी जुलुम किया ॥ टेक ॥

झूलैं दिये गर बाँहि सिया संग रँग भरे, बाँकी अदाँ दिखलायके बौरी बना दिया ॥ १ ॥ शिरपै किरीट कुण्डल कानों में,हल रहे,जुल्फैं युगल सु नागिनी मेरा डसा जिया ॥ २ ॥ भूषन् बसन् अनूप अमल अंग अँग सजे, लाजै बिलोकि माधुरी रति काम की तिया ॥३॥ गावैं सु राग रागिनी अलि मोद मन् भरा, अवलोकि छटा छैल की शीतल करैं हिया ॥ छाई घटा चहुँ ओर मोर सोर मचावैं, बिरही फिरैं पुकारता पपिहा पिया पिया ॥५॥ झूलन बिहार प्रेमलता नित्य ध्यान है, निरखैं सोई जिसके बसै उर में लली सिया ॥ ६ ॥

पद (३५०)

राम नामैं में झूलैं हिंडोरा ॥ टेक ॥

रघुनन्दन सिय जनक लली दोउ, रशिक जनन चित चोरा। नख शिख किये शृङ्गार सहचरीं खड़ीं चतुर चहुँओरा ॥ १ ॥ हृदय सदन सिय नाम सु मण्डप, मङ्गल मोद न थोरा। तेहि महँ नामहिंडोर सु तेहिमधि, रा-

जत युगल किशोरा ॥१॥ उभय अकार रकारहिं के जो, युगल खम्भ बरजोरा। हल् मकार महिराव मनोहर छत्र सुरेफ अखोरा ॥ ३ ॥ पटुली ललित मकार अकार सुदाम सु प्रेम पटोरा। भाव बिछौना बिछे अनूपम, रटनि सु पेंग झकोरा॥४॥ प्रीति सु पावस नेम नीर नित, बरषि करत सर बोरा। पिय तन श्याम घटा लखि नाचत, ललकि ललकि मन मोरा ॥५॥ काया अवध सरतिया सरयू, निशिदिन करत किलोरा। मनन मलार सुमतिया गावति, तान भगति गति तोरा ॥ ६ ॥ यह झूलन गुरु कृपा लखहिं जे, ते न परहिं भवघोरा। प्रेमलता लपटाय रही तजि, जग झूलना कठोरा ॥७॥

पद (३५१)

प्रेमहिंडोरे झूलहिं सिय गोरी ॥ टेक ॥

तनु मिथिला मन कंचनबन थल हृदय सुरति रजु जोरी ॥१॥ मुदिता गंग गेरुका तट बट, भावबिशाल अखोरी ॥ नित्य बिहार हिंडोर कुञ्ज जहँ, बिहरहिं जनक किशोरी ॥ २ ॥ रति गति भगति त्रिबिधि बह मारुत, आनँद घन चहुँ ओरी। छाइ रह्यो अति सघन सु उर नभ, नचत सुमतिया मोरी ॥ ३ ॥ नेह नीर

बरषत सुख सरसत नयनसु बिमल चकोरी। सियमुख चन्द अमन्द निहारत, सुखमा सुखद न थोरी॥४॥ क्षमा दया समतादि अली बहु, सेवा रङ्ग सु बोरी। सजि नव सप्त सु अंग झुलावहिं, गहि कर कृपा सु डोरी॥५॥ दाहिन दिशि राजत रघुनन्दन, चितइ लेत चित चोरी। प्रेमलता अलि यह झूलन छबि, लखति लाज त्रिन तोरी॥६॥

पद गजल (३५२)

झूलैं मेरी सिय स्वामिनी बैठी हिंडोर हैं॥ टेक॥ पहिरैं पोशाक शब्ज जटित हेमतार से, साजैं सु अंग अंग में भूषण अथोर हैं॥१॥ तैसी अलीं अपार सजैं साज आस पास, ठाढ़ी बिलोकैं माधुरी त्रिण तोर तोर हैं॥२॥ प्यारी शनेह रस पगे झूला सु कर धरे, ठाढ़े झुलावैं मोदसे कौशल किशोर हैं॥३॥ नाचैं नवेली नारियाँ गावैं मलार राग, लाजैं बिलोकि सारदा शचि रति करोर हैं॥४॥ रशिकों के प्राण जीवन् प्यारे जहान के दोनों सखी सुख शिन्धु ये श्यामल सु गोर हैं॥५॥ फूले फरे तरु विपुल बहत त्रिविधिबयारी, बर्षैं सुहाये ब्योमते घन घोर घोर हैं॥६॥ कूजैं कपोतकीर पिकसु हंश जहँ तहाँ, गुञ्जैं अपार मधुप मुदित नचत मोर हैं॥७॥

झूलन बिहार प्रेमलता हेरि हियेराखि, सुमिरो सदा सियराम काम तजि कठोर हैं॥८॥ जय जय सियराम।

पद (३५३)

बिहँसि पिय प्यारी झूलत आज ॥ टेक ॥

मणिमय लाल हिंडोर सुहावन-अनुपम अमल सु मुनि मन भावन-बिरच्यो कमला तीर सुपावन-अवलोकत भवताप नशावन-फूले फरे लता द्रुम राजत-सुखमा वे अन्दाज ॥१॥ उमड़ि घुमड़ि घन वर्षहिं घोरा-बोलत दादुर कीर चकोरा-हरिहरिभूमिसुभगचहुँ ओरा-कूजहिं मधुप नचहिं कलमोरा-गावहिं रागमलार झुलावहिं अलि नवसप्त सु साज ॥२॥ मारुत बहत त्रिबिधि सुख दाई-झूलतझमकि सु सियरघुराई-फहरतपटलट मुखघिरि आईसुन्दरताकछुजायनगाई-गरबहियाँ सु दिये दोउ प्रमुदित लखि भये पूरण काज ॥३॥ भूषण बसनअमोलसुहाये-अंग २ रचि सखिनबनाये-छबि बिलोकि रति मदन लजाये-बाजत मंगल मोद बधाये सेवहिं रशिक सन्त बड़ भाग-सुतजि जग लाज समाज ॥४॥ जिन्ह न लखी यह झूलन प्यारी-ते हत भाग जगत नर नारी-श्यामल गोर सु छबि उजियारी-प्रेम

लता तन मन धन वारी-पायेउ परमानन्द अछत तनु गुरु प्रशाद सुख राज ॥ ५ ॥ जय जय सियराम।

पद गजल (३५४)

प्यारे युगल किशोर की झूलनू ललाम हैं ॥टेक॥

पोसाक शब्ज रङ्ग अंग खूब लगी है-भूषण अनूपहार-गरे सुमन दाम हैं ॥१॥ कसिके दिये गर बाँहि रूप माधुरी छके, निरखैं अली चहुँओर खड़ी छबि सु धाम हैं ॥२॥ मुक्ता अमोल लाल रत्न जाल परा है, हँस्ते सु मन्द मन्द रङ्ग गोर श्याम हैं ॥३॥ कूंडल बुलाक ताज शीस चंद्रिका लसै, छाई सु अंग अंग में सुखमा तमाम हैं ॥४॥ उरझे सु केश कुण्डल प्यारीसु लाल के-शोभा अपार देखि लजे कोटि काम हैं ॥५॥ काली घटा चहुँओर गगन झुकि रही प्यारी-बोलैंचकोर मोर सरस सीय राम हैं ॥ ६ ॥ सीतल सुगंध मन्द मन्द चलत पवन हैं, गावैं मलार राग मुदित नवल बामहैं ॥७॥ अलि प्रेमलता बिहँसि पान देति मोद सों-आधार आठ याम सिया राम नाम हैं ॥८॥ जय जय सियराम।

पद (३५५)

आओ आओ हिंडोरा सु झूलैं पिया ॥ टेक॥

सरयू तट बट बिटप मनोहर, अनुपम तहाँ साज सजिया ॥१॥ परयो हिंडोर लाल सुखदाई, चितवत चितहिं सु चोरि लिया ॥ चित्रित चटक दार चटकीलो, मदन स्वकर जनु प्रगट किया ॥ २ ॥ सकल साज सय ताज, भ्राज बर, सुख समाज सरसात हिया ॥ उमा रमा रति- शची सारदा, शुचि सुन्दर बर बिबुध तिया ॥ ३॥ गान कला तर तान कुशल सब, नचहिं छकी मन मोद धिया। परम प्रमोद भरे पिय प्यारी, झूलत दोउ गर बाँहिदिया ॥ ४ ॥ नयन लाभ अलि लेहुँ मुदित मन, प्रगट भयो जनु सुकृत बिया ॥ बोलत कीर चकोर कोकिला, कूकत केकि कला करिया ॥५॥ कहुँ झूलति सिय पिया झुलावत, कहुँ पिय झूलै झुलावैं सिया । प्रेमलता अलि चमर चलावति, जय जयकार करत सखिया ॥ ६ ॥

पद (३५६)

हिंडोरना में झूलि रहे सियलाल ॥ टेक ॥
मैं सरयू जल भरन गईरी, निरखत भई बेहाल ॥ १ ॥
कहा कहूँ छबि अनुपम आली, सुखमा को जनु जाल ।
चहुँ दिशि सघन लता तरु शोभित, संग मुग्ध बहु बाल
॥२॥ पाकर जम्बु कदम्ब बकुल बट, श्याम तमाल रसा

ल। फूलित फलित ललित तरुबर सब, त्रिबिध समीर सु चाल ॥ ३ ॥ बोलत मोर मेघ नभ घोरत, चोरत चितहिं सु काल। गावहिं अली मलार मनोहर, मुदित नचहिं दै ताल ॥४॥ दम्पति परम प्रशन्न परस्पर, झूलहिं गर भुज डाल। अवलो कहिं सुर चढ़े बिमाननि बरषहिं सुमन सु माल ॥ ५ ॥ नखशिख सुभग शिंगार किये दोउ, खौर तिलक बर भाल। उड़त बसन हँसि लाल सम्हारत, करत अनेक सु ख्याल ॥ ६ ॥ बारबार मुशिकाय बिलोकत, सिय मुख जनरुचि पाल। प्रेमलता अलि करहिं आरती, साजि सु कंचन थाल ॥७॥

पद गजल (३५७)

झूला झुलाओ प्यार से ललि लाल को आली ॥टेक॥ पपिहा करे पिउ पीउ कूक कोयली मारे, मोरा सु करै सोर घटा झुकि रही काली ॥ १ ॥ फूले हैं बिबिध रंग के बहु सुमन सुहाये, सीतल सुगन्ध दार मन्द ब्यार की चाली॥२॥छाई सु बेलि बिटप बिपुल सघन फल भरे, भ्रमरें करैं गुलजार लखो पर्म खुशाली ॥३॥ झीनी परे फुहार सुखद भूमि सुहाई, गर्जैं सु मेघ मधुर तड़ित चमक निराली॥ ४ ॥ पाई है बड़े भाग से ये तीज कज-

लिया, झूलो झुलाओ झूलना है बयस भी बाली ॥५॥ गाओ बजाओ प्रेमलता अलि सुमोद से, सब लोक लाज काज कर्म भर्मना टाली ॥६॥ जय जय सियराम।

पद गजल (३५७)

झूलैं लली मिथिलेश की घनश्याम झुलावैं।
ठाढ़ीं अलीं चहुँओर सरस रागिनी गावैं ॥ टेक ॥

सीतल सुगंध मन्द बहै पवन सुखारी, चातक् चकोर मोर कीर शब्द सुनावैं॥१॥ बाजें सु ब्योम दुन्दुभी नव-अप्सरा नाचैं, बरषैं प्रसून बिबुध बिपुल मोद बढ़ावैं ॥ २ ॥ छाई घटा नभ श्याम सजल मनकी भावती गर्जैं सु मेघ मधुर २ पर्म सुहावैं ॥ ३ ॥ फूले हरेक रंग के गुल चमन् में प्यारे, भमरें करैं गुन्जार बिपुल सोर मचावैं ॥ ४ ॥ लतिका ललाम बिटप बिबिध सुमन, फल भरे, उरझे बिलोकि बिबुध बिटपराज लजावैं ॥५॥ झूलैं कभी गलबाँहि दै सु युगलमोदसे, लपटैं, ललकि एक एकसें सखि भाग सरावैं ॥ ६ ॥ जोरी अनूपरूप सियारामकी प्यारी, अलि प्रेमलता निरखि हरखि पान पवावैं ॥७॥ जय सियराम जय २ सियराम।

जय सियराम जय जय सियराम।

पद गजल (३५९)

झूलन ललित ललि लालकीमनमें लगीप्यारी बोलैं पपैया मोर घटा झुकिरही कारी ॥ टेक ॥ ललना खड़ी चहुँओर रागरागिनी गावैं, निरखैं अनूप रूप मुदित बयस की बारी ॥ १ ॥ बरषैं अपार सुमन देवजयति उचारैं, बाजैं नगारे गहगहे नभ नाचती नारी ॥३॥ फूलेफरे तरु बेलि बिबिधि मधुप गुँजारैं, शीतल सुगंध मन्दमन्द बहत बयारी ॥ ३ ॥ छाईघटा मन भावती हरतर्फ सुहाई, बिहरैं चकोर हंस कूक कोयलीमारी ॥४॥ पोशाक शब्जरंग सुभग अंगलसी है, झूलैं दिये गर बार्हिं, सियाराम बिहारी ॥ ५ ॥ जीवो सदा सुखधाम ये जोरी गुसाँइयाँ, अलि प्रेमलता लखै नयन नाम उचारी॥६॥ जय जय सियराम जी की।

पद राग कजरी (३६०)

सियजू झूलिरहीं बगियामें दशरथ राजकुमर के संग ॥टेक॥ नखशिख सजे शिंगारअनूपम लखिछबिलजहिं अनंग ॥ १ ॥ चहुँदिशि खड़ीनवल ललना गण गावहिं भरी उमंग। बीणा बेणु सितार सरंगी मंजीरा सुमृदंग॥ २ ॥ ताल तमूरा किंकणि नूपुर बाजिरहीं सुह-

चंग। झोंका देहिं झमकिप्रमुदितमन पटफहरात सुरंग
॥३॥ दादुर कीर कोकिला बोले, नाचत मोर सुढंग ॥
रिमझिम रिमझिम मेहा बरषै, चढ़िरहिसरजूगंग॥४॥
सुरतिय निरखि सुमन बहुबरषैं, हरषित उड़हिं बिहंग।
प्रेमलता यह रशिकन सम्पति, युगयुग रहे अभंग॥५॥

पद राग कजरी (३६१)

झूला झूलि रहे दोउ रसिया रिमझिम बरषै बादर
ना ॥ टेक ॥ चातक मोर पपीहा कोकिल बोले दादर
ना ॥१॥ झुकिझुकि झोंकादेति खड़ीं अलि दोउदिशि
आदरना ॥२॥ गावहिं राग मलार मुदित मन, भीजै
चादरना ॥३॥ प्रेमलता लखि होत परम छबि, कामहु
कादरना॥४॥

पद (३६२)

नये रसिया ने नयाझूला लगायारी ॥ टेक ॥
सावन मास नवलनभछाया, नवघन पियमन भायारी १
बरषत नीर नया नव बागन, मोर सु सोर मचायारी ॥
नव योबन शृङ्गार नया अँग, नवल प्रेम प्रगटायारी॥२॥
हाव भाव नव चाव नेह नव, नव सब साज सजायारी ॥
नव निकुञ्ज सुखपुञ्ज नयो नित, नवल सुराग सुहायारी
नवल समाज नवल सरयू तट, नवल बिटप नवछायारी

नवल बहत बर बात पात नव, नव फल फूल निकायारी ॥४॥ नवल गरे भुज दिये परस्पर, सियस्वामिनि रघुराया री॥ हरित भयो लखि नवल अलिनि मन प्रेमलता मुद पायारी ॥५॥ जय जय सियराम जीकी ।

* दोहा *

नव श्री सतगुरु सदन नव, नव बिहार नव धाम ।
प्रेमलता नव मोद प्रद, नवल नाम सियराम ॥१॥

इति झूलन

* * *

पद (३६३)

धनि धनि राम नगर की लीला ॥ टेक ॥

आवहि सन्त अनन्त देव मुनि, बिधि हरिहर सु कबीला। किन्नर नाग दनुज निशिचर कपि, हनुमदादि नल नीला ॥१॥ राजसमाज समेत गजन चढ़ि काशीश्वर नृप शीला। अवलोकत मन लाय चरित नित, राम सुरंग रँगीला॥२॥ बाराणसी निवासी नित प्रति, देखन हेतु हठीला। धावहिं बाँधि लँगोट सोट गहि लोटा प्रेम छकीला ॥ ३ ॥ बिमल बसन तन पहिरि अमल छकि, झुण्ड झुण्ड मन मेला। बोलहिं राजा

राम चन्द्र जय, बार बार हरखीला ॥४॥ लोचन लाहु लेत नित सादर, भक्ति भाव गरभीला। सीताराम अनूप रूप छबि निरखहिं प्रमुदित जीला ॥ ५ ॥परिकर साज समाजअनूपम,बरबश चितहिं हरीला।प्रेमलता केहि भाँति बखानैं, कहनि रहनि उरझीला ॥ ६ ॥

पद—ब्यारू (३६४)

सतगुरु सदन मध्य श्री सतगुरु ब्यारु करत सुखदाई जी ॥टेक॥ सिय स्वामिनि श्री युगल बिहारिणि, व्यञ्जन बिबिधि बनाई जी। हेमथार भरि बिपुल कटोरिनि,सौंझ सकल सजि ल्याई जी॥ १॥आगे धरि परि पाँयँ सु बिनवहिं, पाइये नाथ अघाई जी। भाव भरे सुनि बचन प्रीति लखि, हरष न हृदय समाई जी ॥२॥ आरोगन प्रभु लगे अरपि निज, प्रभुहिं सौंझ समुदाई जी। सुधहि लजावन अशन भाँति बहु, बरणि न जाइ मिठाई जी ॥ ३ ॥ जल झारी सरयू लियें ठाढ़ीं, चमर करत रघुराई जी। चन्द्रकला श्री चारुशिला मिलि, परसहिं प्रभु सुख पाई जी ॥ ४ ॥ रुचि अनुकूल सराहि सुभोजन, करत कृपा अधिकाई जी। हास विलास करत शुचि परिकर, चहुँदिशि मोद बढ़ाई जी ॥ ५ ॥

राखत सबकी सुरुचि दयानिधि, श्री मुख करि सुबड़ाई जी। देत सुज्ञान मान अतिपावन, आशिषसीख सुहाई जी ॥६॥ करि अचवन पय पान कीन पुनि, बीरी रुचिर पवाई जी। पौढ़े जाइ सु सयन सेज पर, प्रेमलता बलि जाई जी ॥७॥ जय जय सियाराम जी की।

* दोहा *

सीय प्रसाद सु पाय पुनि, सेवा कीन सुभाय।
गयें बहुरि निज आशननि, सत गुरु आयशु पाय ॥ १ ॥

पद—भोजन (३६५)

भोजन करत साथ सतगुरु के, रघुनन्दन सिय प्यारी जी ॥ टेक ॥ बिलग बिलग सजि अशन सुधा सम, भरि भरि कञ्चन थारी जी। प्रीति सहित श्री युगल बिहारिणि, अर्पेउ अति रुचि कारी जी ॥ १ ॥ खाटे मीठे सुखद सलोने, परसत नाम उचारी जी। जेंवत हरषि हिये श्री सतगुरु, सियरघुबरहिं निहारी जी ॥२॥ चाखि चाखि प्रिय मधुर पदारथ, अपनें कर गुरु धारी जी॥ देत लेत हँसि सिय रघुनन्दन, पाय सु होत सुखारी जी ॥३॥ यह सुख सतगुरु बिनु अति दुर्लभ, गावत रसिक पुरारी जी। सतगुरु सीय प्रशाद स्वाद सुख

केहि बिधि पाव अनारी जी ॥ ४ ॥ कोउ बड़ भागिनि बिजन सु ढोरति, कोउ ल्याई जल झारी जी ॥ कोउ खरिका कर लिये निहारै, सतगुरु मुख सु अचारी जी ॥ ५ ॥ जेये जानि सुमोद आनि उर, रघुबर जनक दुलारी जी ॥ उठेउ अचइ गुरु सहित पुलकि अँग, अलि गण सङ्ग अपारी जी ॥ ६ ॥ आयसु पाइ लागि गुरु चरणनि, रघुबर सिय सुकुमारी जी ॥ पौढ़ेउ जाइ सु प्रेमलता निज, मणि मय कनक अटारी जी ॥ ७ ॥

अथ श्री जानकी जी की बिनय

पद—(३६६)

भरोसो सब बिधि जनक लली को ॥ टेक ॥

अब न शोच पर लोक लोक को, नाश्यो संशय जीको ॥१॥ योग ज्ञान बैराग जाग जप, कर्म धर्म सब नीको ॥ मोको तो सिय नाम कामतरु, जग सुख लागत फीको ॥ २ ॥ परम कृपाल कृतग्य शिरोमणि, राम प्राण प्रिय सीको ॥ मिलत आय विनु यतन स परिकर, ज्यों जल शिन्धु नदीको ॥ ३ ॥ सतगुरु देव दयाल दया करि, हरयो अमंगल ही को ॥ दीन्ह सु बोध नाम नातो शुचि सखी भाव सिय पी को ॥४॥ रसना रटु सिय राम कह्यो

मोहिं, पैहै स्वाद अमी को॥ परम अधार सु मंत्र मोद
प्रद, प्रेमलता युवती को ॥ ५ ॥ जय श्री सिया जू की ।

पद—(३६७)

आश उर जनक विदेह सुता की ॥ टेक ॥

उमा रमा इंद्रानी बाणी, करहिं खवासी जाकी ॥ १ ॥
रूप शील शोभा गुण आकर, जीवन राम ललाकी ॥
स्वयं प्रकाश प्रकाशित त्रिभुवन, गरज न भानु प्रभाकी ॥ २ ॥ सेवहिं चरण कमल ललना गण, सीम सकल
सुखमा की ॥ अवलोकहिं भरि नयन परम छबि, रहहिं
सु तत्सुख छाकी ॥ ३ ॥ कृपा रूप अति सरल सयानी,
हरणि त्रिविधि बिपदा की॥ महिमा जासु अगम श्रुति
गावत, शिव विरंचि मति थाकी ॥ ४ ॥ ईष्ट देव शुठि
संत जनन की, जगहित सरित सुधाकी ॥ प्रेमलता अलि सिय स्वमिनिधनि, बलि बलि बलि सु छटा की॥ ५॥

पद—(३६८)

हमारे श्रीसिय स्वामिनि सरकार ॥ टेक ॥

रूप शील सुख गुणनि आगरी, हरनि अमंगल भार॥ १॥
बरणत बेद पुराण जासु नित, कीरति परम उदार ॥
उद्भव पालन प्रलय होत जेहि, भृकुटी बल संसार ॥ २॥

विनु श्रम देत परम पद सादर, करति घोर भव पार ॥
हेतु रहित जन पाल सयानी, घट घट करति बिहार ॥३॥
सेवति चरण कमल ऋधि शिधि निधि, शक्ति सु शृष्टि
अधार ॥ विरदावली बिदित भव भंजनि, चौदह भुवन
मझार ॥ ४ ॥ सिय पद प्रीति किये बिनु जप तप, योग
यज्ञ व्रत छार ॥ जेहि सम सुखद न शरण पाल कोउ,
ईश ब्रह्म करतार ॥ ५ ॥ सुनियत पूरण ब्रह्म जगत पति,
दशरथ राज कुमार ॥ प्रेमलता सिय विवश रहत सोइ,
जानत विमल बिचार ॥ ६ ॥ जय जय सियराम ।

पद-(३६९)

सेउ मन सिय पद कंज ललाम ॥ टेक ॥

उभय लोक सुख सुयश चहहु जो, मुद मंगल बशु याम
॥ १ ॥ जन्मत मरत बिपुल दिन बीते, सहत घोर भव
घाम ॥ धावत वृथा दशोदिशि ब्याकुल, लोभ बिबश
रत काम ॥ २ ॥ हम हम करि जग नेह बढ़ावत, बिरचत
ऊँचे धाम ॥ नाना विधि करि यतन बटोरत, झूँठ साँच
कहि दाम ॥ ३ ॥ अबहूँ चेति अचेत मानि सिख, तजु
प्रपंच हित बाम ॥ जनक लली पद सु दृढ़ धारि उर,
रटि सियराम सु नाम ॥ ४ ॥ गावहिं बेद पुराण संत कबि,

बिमल जासु गुण ग्राम ॥ मिलत आय विनु यतन
किये सोइ, दशरथ सुत श्री राम ॥५॥ सिय विनु करहिं
कठिन जप तप ब्रत, नर हित लागि तमाम ॥ प्रेमलता
सुख होत न सपनेउँ, छीजत बय तनु चाम ॥ ६ ॥

पद—(३७१)

जियों नित सिय स्वामिनि गुण गाइ ॥ टेक ॥
बन्दौं चरण कमल निशि वासर, सादर महि सिर नाइ
॥१॥ रसना रटौं नाम सुख सागर, सिय मूरति उर लाइ॥
मन बच कर्म अनन्य भाव धरि, सेवों हिय हरषाइ ॥२॥
बन्यो रहै अभिमान सदा यह, अति पावन सुख दाइ॥
मैं सिय कर सिय स्वामिनि मेरी, चित न अन्त चलि
जाइ॥ ३ ॥ निशिदिन रहत मुदित मन सिय बल, कालहु ते न डराइ॥ बिचरत अवनि अशंक रङ्क ज्यों,
ममता लोभ विहाइ ॥ ४ ॥ स्वामिनि कृपा कटाक्ष बिलोकत, नित नव सुख सरसाइ ॥ लेशहु काय कलेश न
भासत, परमानँद अधिकाइ॥५॥को करि कठिन योग
जप तप ब्रत, बृथा मरै जग धाइ ॥ बिनु श्रम सत गुरु
कृपा परम सुख, पायो सहज अघाइ ॥ ६ ॥ भाग हींन
जन भजत न सिय पद, सुन्दर नर तनु पाइ ॥ अन्तउ

सो भरि पेट पीटि शिर, भली भाँति पछिताइ ॥ ७ ॥
जिन्हिं के लागि उपाय करत बहु, जोरत नेह दृढ़ाइ ॥
चलिहै सोन संग तेरे कोउ, मातु पिता हित भाइ ॥८॥
गावत संत अनंत जासु गुण, विविधि भाँति समुझाइ॥
सो न सुनत मन मूढ़ मोह बश, बकत आपनी बाइ ॥९॥
अबहूँ सुनि गुरु ज्ञान मान तजि, सुयश रहै जग छाइ ॥
प्रेमलता रटि नाम सेउ सिय, चरण शरण में आइ॥ १०॥

पद—(३७१)

जय २ जग दम्ब सिया राम प्राण प्यारी ॥ टेक ॥

महिमा अपार मातु बदत बेद चारी ॥ भक्त हेतु बिशद चरित कीन क्लेश हारी ॥ १ ॥ ध्यावत पद कमल अमल सुर मुनीश झारी ॥ गावत गुण सम्भु शेष शारदा उहारी ॥२॥ ज्ञनक नगर मध्य यज्ञ भूमि सो विदारी॥ प्रगट भई सखिनि सहित चमर छत्र धारी ॥३॥ तड़ित अनल सूर कोटि अधिक तेज भारी ॥ सिंहासन आशीन भली भाँति सो शृङ्गारी ॥४॥ नारदादि मुनि समूह आरती उतारी ॥ अस्तुति बहु कीन भरे नयन नेह बारी॥५॥ प्रेमलता प्रेम निरखि रूप सो बिसारी ॥ बाल बपुष कीन देखि जनक भे सुखारी ॥ ६ ॥

पद—(३७२)

जय २ जग जननि सीय जनक नन्दिनी ॥ टेक ॥

ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुरनर मुनि करत गान, कीरति कल विमलवान, भव निकन्दिनी ॥१॥ गौर बदन अधर लाल, नयन भ्रू बिशाल भाल, भूषण पट मणि सु जाल, चिवुक मन्दिनी ॥२॥ नासिका कपोल कान, अनुपम उपमा न आन, मधुर मंद मुश्किरान, मन सुफन्दिनी ॥३॥ सिर सु अतर भरित बार, कण्ठ कलित विविधि हार, नखशिख शोभा अपार, गति गयन्दिनी ॥४॥ प्रगटीं मिथिलेश धाम, पूरण जन मन सुकाम, लीला बहु बिधि ललाम, कर स्वछन्दिनी ॥५॥ भक्ति मुक्ति आदि बाम, सेवति पद जपि सु नाम, मुदित सकल आठ याम, जगत बन्दिनी ॥६॥ नाशत भव भेद फन्द, सुमिरत आनन्द कन्द, प्रेमलता राम चन्द सिय सुचन्दिनी ॥७॥ जय श्री किशोरीजी की ।

पद—(३७३)

जय २ जगदम्ब सिया राम भामिनी ॥ टेक ॥

चरणकमलअमलध्याइ, कपटदम्भछलविहाइ, जागत जन नाम गाइ, मोह यामिनी ॥१॥ हरण हेतु भूमि भार,

चरितचारु अति उदार, करति विपुल गुण अगार, विविधि नामिनी ॥२॥ बन्दत सुर चरण रेणु, सन्तन हित काम धेनु, सुखद सकल गुणनि ऐनु, जयति स्वामिनी ॥३॥ अंग अङ्ग छवि ललाम, लाजत रति कोटि काम, सेवत पद बिपुल बाम, गज सु गामिनी ॥४॥ तारण जगधरण कीन, जनक नगर जन्म लीन, सिंहासन आसीन, सुजन लाज थामिनी ॥५॥ सुन्दर सुखधाम नाम, प्रेमलता भजु अकाम, राम चन्द जलद श्याम, सिय सुदामिनी ॥६॥ जय जय श्री जानकी जू की।

पद—(३७४)

जय २ जगदम्ब सिया जयति जानकी ॥ टेक ॥

गावत मुनि शम्भु शेष, सारद गिरिजा गणेश, कीरति वर बिधि रमेश, हरन मान की ॥१॥ अलख अगम गूढ़ भेद, बरणत नहिं लखत बेद, जानत सो जन अखेद गतिन आनकी ॥२॥ निरखि संत मुदित होत, परम रूप छबि उदोत, भूषण पट हरणजोत, तड़ित भानकी ॥३॥ ललित अंग गोर बदन, निन्दत रति कोटि मदन आनन अनूप रदन, लालि पानकी ॥४॥ पालन हित धरणि देव, धर्मधेनु भक्त नेव, प्रगट चरित कीन्ह

एव, खलनि हान की॥५॥सर्व आश त्यागि हीय, भजि
भरोस राखि सीय, प्रेमलता प्रीय राम प्राण प्राण
की ॥ ६ ॥

पद—(३७५)

जय २ जग जननि सीय जनक बालिका ॥ टेक॥

प्रगट कीन बल प्रताप, मर्द्यो सत बदन आप, नाश्यो
सुर सन्त ताप, जयति कालिका॥१॥मूलिकादिसहित
सैंन, प्रवल असुर हति सुखैंन,भक्तन हित मोद दैंन, खलनि
घालिका ॥२॥ विविधि रूप धरि उदार, चरित
चारु करि अपार, हरति भूमि शोक भार,सुजन पालि
का ॥ ३ ॥ कीरति कबि करत गान, जयति मातु सुख
निधान, राजत बर बदन पान, अधर लालिका ॥४॥
प्रेमलता छबि निहारि, तन मन धन सर्व बारि, राम
नाम खर्ग धारि, सिय सु ढालिका॥५॥ जय सियाराम।

पद—(३७६)

जय २जगदम्ब सीय क्लेश हारिका ॥टेक॥

बाल चरितकरत धाइ, ख्यालही कोदण्ड जाइ, विहँसि
लीन कर उठाइ,बल अपारिका ॥१॥ रूप तेज गुण
अगार, शील शिन्धु अति उदार, लीला विस्तार,
भूमि भार टारिका ॥२॥ पालन संहार भरण, करहु

मातु सुढर ढरण,कपट दम्भ मान हरण,शरण तारिका
॥ ३ ॥ असुर मारि सुर उबारि, बरणत यश बेद चारि,
भक्त बछल पूरण धारि,राम दारिका ॥ ४ ॥ काम कोह
मोह दाप, राग रोष त्रिविधि ताप, दरण सकल माप
नाप, पाप जारिका ॥ ५ ॥ सेवति सुर नाग नारि,तन
मन धन प्राण बारि,छण छण सिय पद निहारि,धरम
धारिका ॥६॥ चरण शरण लीन जौन, पूजित भो सकल
भौन, प्रेमलता सोच कौन, फल सु चारि का ॥७॥

पद—(३७७)

जय २ जगदम्ब सिया स्वामिनी हमारी ॥ टेक ॥
भक्तन हित पुर बिहाय,प्रगट कीन बपु अमाय, चरित
चारु शुचि निकाय,रोग सोग हारी॥१॥ अखिल लोक
लोकपाल, युगवत रुचि तव कृपाल,डरत बहत पवन
काल,उर सभीत भारी ॥ २ ॥ सिव विरञ्चि आदि देव,
सहित शक्ति चरण सेव, जानत नहिं सोपि भेव, बदत
बेद चारी ॥३॥ नारदादि मुनि महेश, सारद गिरिजा
गणेश, बरणत बर यश रसेश, सहस शीस धारी ॥ ४ ॥
असुर मारि थापि धर्म,योग यज्ञ विविधि कर्म,राखि
भूमि भक्त शर्म,अमित भय बिदारी ॥५॥ व्यापित दश

चारि भुवन, गति सु अगम लखत कवन, बल अनन्त कोटि पवन, दलन मोह धारी ॥ ६ ॥ शरण पाल शोक हरण, मंगल मुद मोद करण, प्रेमलता विश्व भरण राम प्राणप्यारी ॥ ७ ॥ जय श्री जनक नन्दिनी जूकी ।

पद—(३७८)

जय २ जगदम्बसिया चरण शरण देरी ॥ टेक ॥

नाहिन तव पद सु प्रीति, जनियत नहिं भजन रीति, मन मलीन रत अनीति, कुटिल बुद्धि मेरी ॥ १ ॥ जीविका न द्रब्य धाम, मातु पिता सुत न बाम, बल न रूप गुण ललाम, एक आश तेरी ॥ २ ॥ जनमि जगत कीन पाप, जरत फिरत तीनि ताप, काम कोह निरत दाप, लोभ मोह घेरी ॥ ३ ॥ उदर हेतु विकल रहत, लीलन गिरि मेरु चहत, कुटिल बचन कहत सहत, विपति अति घनेरी ॥ ४ ॥ खात पियत बकत बाद, मगन मान मद प्रमाद राग रोष रत बिषाद, विपुल दिन गयेरी ॥ ५ ॥ सुनत यदपि ग्यान ध्यान, बरणित कबि सत पुराण, तदपि नहीं करत कान, कहत सन्त टेरी ॥ ६ ॥ कलि युग सिय राम नाम, पूरण जन मन सु काम, सुमिरे बिनु आठ याम, गति न जीव केरी ॥ ७ ॥ सुखद सर्ब गुण निधान,

सुलभ सकल हित सुजान; याचति सो नाम दान प्रेमलता चेरी ॥ ८ ॥

पद—(३७९)

सिया जूके चरण कमल बलिहारी ॥ टेक ॥

जिन्हि चरणनि को ध्यान धरत नित, देव मनुज मुनि भारी ॥१॥ सेवत सुलभ सकल सुख करतल; होत भनत श्रुति चारी ॥ शेष गणप बिधि सन्त सारदा, यश गावत त्रिपुरारी ॥ २ ॥ मङ्गल करन हरण दुख दारुण, शरण सुखद प्रण धारी ॥ कलि मल जनित कलङ्क बिनाशन, जन्म मरण भय भारी ॥ ३ ॥ पावन परम उदार प्रगट जग, जानत जन न अनारी ॥ प्रेमलता सिय सम न देवता, हेतु रहित हित कारी ॥ ४ ॥ जय जय सियाराम।

पद—(३८०)

सिया जूके चरण कमल बलि जैहौं ॥ टेक ॥

बार बार हित लागि कुदेवनि, अब न अपन पौ दैहौं ॥ १ ॥ योग यग्य जप दान धर्म ब्रत, करतौ उर न सिरैहौं ॥ कर्म न ध्यान भक्ति साधन कलि, कवन ज्ञान गति पैहौं ॥ २ ॥ तीरथ नेम उपाय अमित जग, करि कत जन्म नशैहौं ॥ सकल त्यागि अब लखि श्रमदायक, सिय पद प्रेम निबैहौं ॥ ३ ॥ जन रञ्जन गञ्जनम मता

मद, सेइ परम सुख लैहौं ॥ मन क्रम बचन छाँडि छल सादर, पुनि पुनि शीश झुकहौं ॥ ४ ॥ बरणत बेद पुराण विविधि मत, सपनेउँ सो न मनैहौं ॥ प्रेमलता सिय नाम निरन्तर, राम नाम युत गैहौं ॥५॥ श्रीसियाराम।

पद—(३८१)

सियाजू मोहिं कब करिहौ निज दासी ॥ टेक ॥

रहिहौं निकट मुदित मन निशिदिन, करिहौं खास खवासी ॥१॥ जन्मत मरत विविधि तनु धरि जग, पंची कृत दुख रासी ॥ हर्ष शोक मद मान मोह बश, कबहुँ न होत सुपासी ॥ २ ॥ हम हम करि धन धाम सँवाँरत, भोगत भोग बिलासी ॥ गुरु पद बिमुख स्वरूप गमायो, भरमत लख चौरासी ॥ ३ ॥ सुत बित नारि भवनसुख सादर, सेवत बुद्धि विनाशी ॥ करनी करत मन्द निशि बासर, चाहत सुगति सुखासी ॥ ४ ॥ कबहुँ न साधु सङ्ग अनुराग्यो, गयो न तीरथ कासी ॥ प्रेमलता मैं मोर तोर करि, बाँध्यो यमपुर जासी ॥ ५ ॥ जय जय सियाराम।

पद—(३८२)

सिया जू मोहिं चरण शरण अब दीजै ॥ टेक ॥

अज्ञ अबोध अजान जानि जिय, स्वामिनि सरल प-

तीजै॥ ॥ बिषय भोग बश अम्ब भ्रमत जग,कामादिक खल भीजै॥ बूड़त निपट शोक सागर में,स्वामिनि कर धरि लीजै॥२॥ राम प्रिया सुख राशि सुनैनी,अघ अवगुण न गहीजै॥ बिरद बिचारि प्रणत भय भञ्जनि जन हित होइ सु कीजै॥३॥ हेतु रहित हित देव न दूसर, बेद पुराण भनीजै॥ प्रेमलता जेहि नाम श्रवण सुनि, सकल अमङ्गल छीजै॥४॥ जय श्री जानकी जीकी।

पद-(३८३)

हमारे मन सिय पद पद्म बसे॥ टेक॥

पावन परम अनूप अभय पद,देत कृपा रस रसे॥१॥ मंजुल मधुर मनोहर सुख प्रद,भूषण विविधि लसे॥ राम नाम शुचि रुचिहिं बढ़ावत, सीतल शसि रस से॥२॥ तजि सिय चरण कमल जप तप मख,करत मोह मद ग्रसे॥ भ्रमत सदा बहु योनि देहधरि,यम पुर जात कसे॥३॥ सन्तन के सुभ सदन उभय पद, सेवत दुरित नशे॥ प्रेमलता उर बसत जासु नित, सो भव भ्रम न फसे॥४॥

पद-(३८४)

सिया जू मोहिं एक तिहारी आश॥ टेक॥

दरशन देउ कृपा करि स्वामिनि, मेटहु लोचन प्यास

॥ १ ॥ मन मतङ्ग नहिं तजत बानि निज, होत न विषय
निराश ॥ खैंचत सदा दशहु दिशि इन्द्रिनि, उपजावत
अति त्राश ॥२॥ सुमिरत नाम सुहात न मन्दनि, भावत
भोग बिलाश॥ कामादिक खल कुटिल निरन्तर, करत
हृदय मम बास ॥३॥ जो करनी लखि मोर धारि चित,
हुइहौ हृदय उदास ॥ तौ कब प्रेमलता पावहि गति,
राम प्रिया तव पास ॥ ४ ॥ जय श्री जानकी जूकी।

पद—(३८५)

सियाजू मोंहिं अब न परै टुक चैंन ॥ टेक ॥

कृपा दृष्टि अवलोकि लड़ैती, जनक लली सुख दैंन॥१॥
सरसत शोक मोह ममता भ्रम, सोचत हौं दिन रैंन ॥
करनी कुटिल बिचारि मनहिं निज, तपत हृदय मम
ऐंन ॥२॥ विनु कारण हित बिरद तोर जग, बदत सन्त
श्रुति बैंन ॥ प्रेमलता पर द्रवहु न केहि लगि, राम सु
प्रिया सुखैंन ॥ ३ ॥

पद—(३८६)

सिया जू की वार वार बलिहारी ॥ टेक ॥

गोर बदन शशि मदन लजावन, रूप राशि उजियारी
॥ १ ॥ नख शिख अङ्ग महा छबि छाई, सेवहिं सुभग सु
नारी ॥ राम बाम दिशि परम सु सोभित, अमल कमल

करधारी॥२॥चलत चमर सिर छत्र सु भ्राजत,सिंहासन द्युति कारी॥ भूषण बसन अमोल अनूपम, अंग अंग रचे सँवारी॥३॥ सुन्दरता सुख खानि सुगति प्रद,बदत सन्त श्रुति चारी॥ प्रेमलता सब भाँति छबीली, श्रीमिथिलेश कुमारी ॥ ४ ॥ जय जय सियराम।

पद-(२८७)

जय जय जय मिथिलेश किशोरी॥ टेक॥

रूप राशि सुख खानि सुनैनी ,पिय मुख चन्द चकोरी॥१॥परम कृपालु प्रणत दुख भञ्जनि, कोमलता रस बोरी॥ लखहु न दोष दृगनि निज जनके,ममता दया न थोरी॥२॥सरल सुभाव उदार बेद बद,कीरति कलित अखोरी॥चरण कमल बन्दत सुर नर मुनि,बिधि हरि हर कर जोरी॥३॥ उमा रमा रति शची सारदा, ब्रह्माणी सुर गौरी॥ सेवत तोहि परम सुख पावति,शक्ति सु अमित करोरी॥४॥ तू सब की सब भाँति सहायक, लायक तो सम को री॥ उद्भव पालन प्रलय करहु तुम, अग जग बाँधहु छोरी॥५॥ नट मरकट इव सबहिं नचावहु, बर बश करि मति भोरी॥ प्रेमलता अलि शरण पाहि अब,सिय स्वामिनि गति तोरी॥६॥ जय सियाराम।

पद—(३८८)

सिया जू मोहिं अपनी करि कब जनि हो ॥ टेक ॥ मन बच कर्म करत अघ निशि दिन, गुप्त प्रगट जो भनि हो ॥१॥ बसत हृदय मम काम कपट मद, तिन्हि कहँ केहि बिधि हनि हो ॥ ज्ञान विवेक सु तोष दीनता, भक्ति भाव उर अनिहो ॥२॥ जो दिन गये जात सुमिरन विनु, स्वामिनि तिन्हैं न गनिहो ॥ राम नाम निज नाम सहित कब, मम मति कुमतिहिं हनिहो ॥ ३ ॥ करिहो हित विनु हेतु विरद लखि, कवनिउँ नाते मनि हो ॥ प्रेमलता सिय शरण पाल तुम, बार बार धनि धनि हो ॥ ४ ॥

पद—(३८९)

सिया जूकी आजु निरखि छबि आली ॥ टेक ॥ नख शिख अङ्ग अङ्ग जनु छाई, त्रिभुवन की खुशियाली ॥ १ ॥ नाशा मणि बेशर अन मोली, श्रवण तरौना वाली ॥ नयन विशाल निहाल करत जनु, भौंह बङ्क बर काली ॥ २ ॥ सीश फूल सिर लसी चन्द्रिका, अधर पान की लाली ॥ ओढ़े नील पीत पट दोउ दिशि, लट लटके घुंघुराली ॥ ३ ॥ हिये हार मणि जाल प्रकाशित, बन माला बर हाली ॥ कर कमलनि युग कंज

रंज हर, राजत सहित सु नाली ॥४॥ बैठी सोह कनक श्रिंहासन, प्रीतम गर भुज डाली ॥ सेवा साज लिये ललना गण, सेवति भाग सु साली ॥ ५ ॥ प्रमुदित सकल निरखि दम्पति छबि, सिय स्नेह प्रति पाली ॥ प्रेमलता प्यारे रघुबर को हँसि २ गावति गाली ॥ ६ ॥

पद—(३९०)

सिया जू तुम कीन बहुत हित मोरा ॥ टेक ॥

वही जात लखि मोह नदी मोहिं, खैंचि लीन निज ओरा ॥ १ ॥ भ्रमत रही बहु योनि कर्म बश, पायो दुख नहिं थोरा ॥ जहँ जहँ जन्म लियो नाना विधि, तहँ तहँ पाप बटोरा ॥२॥ रट्यो न नाम चारु चिन्ता मणि मनु न भक्ति रस बोरा ॥ सुनेंउँन चरित लाय चित कबहूँ, द्रवोन हृदय कठोरा ॥ ३ ॥ लोभ लागि तजि ज्ञान बिकल नित, इन्द्रिनि हित शिर फोरा ॥ सुधा समुद्र साधु सङ्गति तजि, जल हित व्योम निचोरा ॥४॥ येतेउ पर तुम कीन्ह परम हित, कठिन कुवन्धन छोरा ॥ सेवा सुख सम्बन्ध दीन निज, नाम नेह मन जोरा ॥ ५ ॥ यह बड़ि बात न बदत सन्त श्रुति, बिरद पतित हित तोरा ॥ प्रेमलता की श्री सिय स्वामिनि, स्वामी राम

किशोरा ॥ ६ ॥

पद—(३८१)

सिया जू मोहि तुम विनु कछु न सुहात ॥ टेक ॥

सोवत जगत पगत इन्द्रिनि सुख, यहि विधि निशि दिन जात ॥ १ ॥ यह संसार सार विनु भासत, सुख ज्यों तरुवर पात ॥ विषय भोग भये रोग सरिस मोहिं, आपन कोउ न लखात ॥ २ ॥ छीजत छण छण बैस ऐस बिनु, ज्यों कपूर वह बात ॥ योग वियोग सोग नित नव दुख, अधिक अधिक अधिकात ॥ ३ ॥ विकल रहत मन प्रेत पेट लगि, फिरत सदा बिललात ॥ भजन हीनं अति दीन छीन तनु, कबहुँन हृदय जुड़ात ॥ ४ ॥ सहत विपति तजि चरण कमल तव, अम्ब कहत सकुचात ॥ अब करि छमा किये अनुचित जो, अघ स्वामिनि अज्ञात ॥ ५ ॥ अपराधिउ पर तोर कोप सिय, सुन्यों न यह विख्यात ॥ प्रेमलतहि सो समुझि तजहु जनि, राम प्रिया बलि जात ॥ ६ ॥ जय जय सियाराम जू की ।

पद—(३८२ ॥

सिया जू अब कस न हरहु भव भीर ॥ टेक ॥

प्रणत पाल तब विरद बदत श्रुति, जानहु जन की पीर ॥ १ ॥ प्रेरहिं सदा दशहु दिशि इन्द्रीं, ज्यों तृण पात

समीर ॥ क्षुधा पिपास मोह ममता मद, भ्रम बश रहत अधीर ॥ २ ॥ रटत नाम लखि नींद निगोड़ी, घेरत आइ शरीर ॥ आलश भार अपार चढ़त शिर, मन चित होत न थीर ॥३॥ माया बिबश नचत जड़ चेतन, ज्यों नट मर्कट कीर ॥ अहंकार विपरीति बुद्धि करि, स्वबश कीन बल बीर ॥ ४ ॥ काम कोह लोभादि प्रबल रिपु, तकि २ मारत तीर ॥ प्रेमलता येहि त्राश विकल नित, रहत हृदय दल गीर ॥ ५ ॥ जय जय सियाराम।

पद—(२९३)

सिया जू अब तुम न बिसारो मोइ ॥ टेक ॥

मैं मति मन्द कुटिल माया बश, निकट न जानेउँ तोइ ॥ १ ॥ ब्याकुल फिरौं सदा इंद्रिनि हित, लाज बहाई धोइ ॥ उदर भरौं तब नाम बेचि जग, उभय लोक भय खोइ ॥ २ ॥ निज सुख लागि देत दुख आनहिं, पर सुख सकउँ न जोइ ॥ मन बच कर्म करौं बिधि नाना, दुरित सु राखौं गोइ ॥३॥ बंचक बेष विलोकि साधु को, कहत सन्त सब कोइ ॥ हृदय दम्भ छल कपट मान मद, भरेउ न जानत सोइ ॥ ४ ॥ ज्यों गज दशन मोर त्यों करनी, तुमहिं विदित विधि दोइ ॥ विनती करौं कवन मुख

स्वामिनि, निज कर दीन्ह डबोइ ॥ ५ ॥ राखैशरण देव अस को जेहि, ताहि कहौं दुख रोइ ॥ प्रेमलतहिं अब एक सुसियगति, होनी होय सु होइ ॥ ६ ॥

पद—(३८४)

सियाजू मोहि नाम तिहारो भावै ॥ टेक ॥

बोलत सरल सरस सुख दायक, तन मन तपनि बुझावै ॥ १ ॥ सिय सिय रटत कटत दुख दारुण, परमानँद उपजावै ॥ कपट दम्भ मद मान मोह छल, आशा प्यास नशावै ॥ २ ॥ श्री सिय नाम सहित निशि बासर, राम नाम जो गावै ॥ भुक्ति मुक्ति विनु यतन प्रयासहिं, राम रूप सो पावै ॥ ३ ॥ संशय शोक लोभ लालच भ्रम, सपनेउँ निकट न आवै ॥ विनय विबेक विचार सु सम दम, ज्ञान विराग बढ़ावै ॥ ४ ॥ योग यज्ञ तप ध्यान कठिन कलि, करतौ उर न खिरावै ॥ विनु सिय नाम रटे गति दुर्लभ, वातैं भलेहि बनावै ॥ ५ ॥ द्रवत न राम लखन मारुत सुत, सिय विनु विपति सतावै ॥ रटत राम तजि सियहिं मन्द मति, सो हरि बिमुख कहावै ॥ ६ ॥ राम प्राण प्रिय सिय सु भजे विनु, भव निधि गोता खावै ॥ प्रेमलता यह समुझि निरन्तर, स्वामिनि सियहिं रि-

झावै ॥ ७ ॥

पद—(३८५)

सिया जूके अंग अनूप सजावों ॥ टेक ॥

चरण धोइ करिपान सुगंधित, नीर उबटि अन्हवावों ॥१॥ अंग अँगोछि ओढ़ाइ नीलपट, कटि लहंगापहिरावों ॥ करि बिनती बैठारि सु आसन, केशनि अतर लगावों ॥२॥ अलक सम्हारि बनाइ भली बिधि माँग शिंदूर चढ़ावों ॥ खौरि ललाट बिचित्र अनूपम, भौंहँ कमान बनावों॥३॥ काजर नैन सुभग सुन्दर नथ, नाशा मणि लटकावों ॥ कनक फूलश्रुतिसिर सु चन्द्रिका, बंदी जड़ित जमाओं॥४॥ कंठ सु हार हमेल बिभूषण, सुमन माल गुहि लावों ॥ पहिरावों मन लाय अमोलक, चोली उरशि लशावों ॥५॥ बाजू बरा बाँहि कर चुरियाँ, मेहँदी हाथ रचावों ॥ मणि मुदरी हथफूल आरसी, कटि रसना लपटावों ॥६॥ कोमल पदनि साजि बहुभूषण, त्रिभुवन की छवि छावों ॥ यावक युत अवलोकि लाइ उर, तनकी तपनि बुझावों ॥७॥ भोजन सरस पवाय नीर शुचि, प्याइ परम सुख पावों ॥ पान मानयुत अरपि जाउँ वलि, जूठनि हित करि खावों ॥८॥ आरति करि पट बारि बिभूषण, निरखत छविन

अघावौं ॥ नाचिगाइ मन मुदित निरन्तर, जनकलली
पग ध्यावौं ॥८॥ योग यज्ञ आचार नेम तप, साधनदूरि
बहावौं ॥ प्रेमलता यहि भाँति सियापद, सेइ सुजन्म
बितावौं ॥१०॥

पद—(३८६)

सियाजू सरल सु स्वामिनि मेरी ॥ टेक ॥

कृपाखानि सब गुणनि आगरी, परम सुहित जनकेरी॥
पूजित भयो लोक परलोकहु, जाके दिशि टुक हेरी ॥१॥
बिबशहु जासु नाम जपि पामर, होत सुयश को ढेरी ॥
रीझत राम जपत सिय सिय मुख; श्रुति पुराण कहटेरी
॥२॥ शरण पाल सर्बज्ञ सर्व पर, रूप सुशील घनेरी॥ जगत
जननि शुठि जनक नन्दिनी, कीरति कलित करेरी॥३॥
राम प्रिया हँसि हेरि लाडिली, नाम रटन वर देरी ॥
प्रेमलता प्रिय जूठनि के हित, द्वारपरी अलितेरी ॥४॥

पद—(३८७)

सियाजू मोहि मिथिला अधिक सुहाय ॥ टेक ॥

जहँ सब भाँति सुपास सकल सुख, सुलभ होत समुदाय
॥१॥ बसहिं शिद्ध शुचि संत देव द्विज, सुकृती जन बहु
ताय॥ रँगे सकल सियरामरूप रँग, मनबचक्रमभलभा-
य॥२॥ सकल पुरिन शिर मौर अनूपम, कोमल भूमि

असाय॥निरखत परमानन्द उपज उर,निवसत अलख
लखाय॥३॥विपुल बाग सर सरित सुहावन, अकथरही
छविछाय ॥ निर्मल नीर समीर बहत बर, नितनव सुख
सरसाय॥४॥महिमा अगम अपार कहतश्रुति,शेषगिरा
सकुचाय ॥ भोग विभूति भगति पुरजनकी, लखि सुरराज
लजाय ॥५॥ विनु श्रम देत परम पद सादर, कलि
मल विपुल जराय॥ प्रेमलता तजि आश त्राश जग,
सेवत जेहि मन लाय ॥ जय श्री जानकी जीकी ॥

पद—(३८८)

सियाजूकी महिमा अपरम्पार ॥ टेक ॥

वरणत बेद पुराण संतकवि,शिव बिधि बदन हजार॥
कहत न बनी सकल हियहारे, लखेउ न पारावार ॥१॥
तब बोले घनश्याम रामहँसि, हम करिहैं विस्तार॥
थकि बैठे तेउ पारन पायो,रीझि भये लाचार ॥२॥ सब
ही भाँति अगाध अनूपम,सिय गुण अकथ उदार ॥हेतु
रहित हित सुखद जनन अति,सिय जू पद शुभसार॥३॥
सुन्दरता मर्याद सु लायक, शरणद बिपति बिडार ॥
विविधि रूपधरि संतभूमि लगि,हरति अमंगल भार॥४॥
शरणपाल सर्वज्ञ सु स्वामिनि, मर्दन कलिमलधार ॥

प्रेमलता जपि जासु नाम मुख, पर पद लहहिं गँमार।५।

पद—(३९९)

मेरो मन सिय पद कंजनि अटको ॥टेक॥

परमानन्द निरन्तर दरशत, मिट्यो सोच सब घटको ॥१॥ नाना योनि विविधि तनु धरिधरि, लख चौरासी भटको ॥सुख न लह्यो कहुँ सपनेउँ रंचक, पुनिपुनि रोगनि गटको॥२॥श्रीगुरुदेव दयाल दया करि, नाश्यो संश्रृतिखटको॥युगल मंत्र दै शीस हाथ धरि, खोलेउ उरको फटको॥३॥ सखी भाव सम्बन्ध दियो प्रभु, मनभोगनि ते हटको ॥ युगल ध्यान धरि कह्यो नाम रटु, सिय वर नागर नट को ॥४॥ सुर दुर्लभ तनु पाइ शिष्य जनि जग प्रपंच दिशि लटको॥ संत संग अनुकूल होउ अब, बासी सरजू तटको ॥५॥ ममता मद अभिमान लाज कर; धरयो शीश जो मटको॥ममउपदेश क्लेशहर सुनि सोइ, भार यतन करि पटको ॥६॥ बीतीजात बयसबिनु ऐसहि, समुझि हिये करु चटको॥ प्रेमलता चित चेत भयो सुनि, वचन दुसह दुख सटको ॥७॥ श्री सीताराम।

पद—(४००)

सुमिरि मन सिय पद मंगल खानि ॥ टेक ॥

अब अब करत विपुल दिन बीते,जीवन होत सु हानि
॥१॥भूषित विविधि विभूषण अनुपम,सादर निजउर
आनि ॥ देखु ध्यान धरि जगप्रपंच तजि, पावन हठ
जिय ठानि ॥२॥मृदुल मनोहर मंजु मधुर अति,सुन्दर
सुखद सु जानि ॥ भजु निशि दिवस जीति इन्द्रीगण,
तोरिकठिनकुल कानि॥३॥सहज अरुण तलयावक युत
पुनि चहुँफलके बरदानि ॥ नख दुति लखि मुद मोद
प्रकाशत,नाशत गर्वगलानि ॥४॥ गावत वेद पुराण
विदित जग, जिन्ह चरणनिकी बानि॥हेतु रहित हित
अधम उधारण,भव भय डारत भानि॥५॥ सेवत सुगम
सुलभ सब जनके,जीवन धन पहिचानि॥प्रेमलता भइ
अभय परसि सोइ, चरण कमल निज पानि ॥ ६ ॥

पद—(४०१)

हमारो धन सिय पद पद्म पराग ॥ टेक ॥

अगणित अधम उधारि उड़ावन, अवगुण अघ वक
काग ॥१॥ घटत न कबहुँ हिरात न मूसत,चोरहु परम
अदाग॥कवनिउँ भाँति न हानि होत सोइ,राजहुदंड
न लाग ॥ २ ॥ नित नव बढ़त प्रयतन किये बिनु, रहत
सदा जन साग ॥ सेति धरहिं उर कोष जीव जे, तेहि

जनके बड़ भाग ॥ ३ ॥ शिव अरु शेष बटोरत यह धन, चहत साधु सुर नाग॥ सतगुरु कृपा लहत कोउ बिरलेइ, बँधे प्रेमके ताग॥४॥करत कर्मकोउ कठिनयोगजप कोउ तप तीरथ त्याग॥धर्म धरत कोउ शीश अराधहिं, कोउ ब्रत साधन याग॥५॥पढ़हिं ब्याकरण श्रुति पुराण कोउ, ज्ञान ध्यान कोउ पाग ॥ मरण चहहिं कलि पेट खाइ सो, प्रेमलता जल भाग ॥ ६ ॥

पद—(४०२)

सुमिरि मन सिय पद परिहरि लाज ॥टेक॥

पावन पर्म उदार मनोहर, सकल धर्म शिरताज ॥१॥ पालक उभय लोक सुखदायक, घालक सोच समाज॥ अभिमत दानि सदा सब लायक, भवनिधि केर जहाज ॥२॥ सद गुण धाम अकाम काम प्रद, जनहित पूरण काज ॥ बिरदावली प्रगट भयभञ्जनि, भुवन चतुर्दस भ्राज॥३॥सीसी उचरत मरयो यवन बन, सीत ग्रसित खलराज ॥ सादर ताहि बुलाइ लोक निज, दीन सकल सुख साज॥४॥चहुँयुग चहुँश्रुति बिदित हठीली बानि गरीब निवाज ॥ प्रेमलता जो भजत न सोपद, परै तासु सिर गाज॥५॥ जय सियराम जय रसियराम

पद—(४०३)

सियाजू मोते सबही भाँति नशानी ॥ टेक ॥

जबते धरी देह जग तबते, भजेउँ न पद सुखदानी ॥१॥ मातु पिता गुरु संत भूमिसुर, पूज्य कहत मुनि ज्ञानी॥ तिन्हि सन मैं भरि उदर बिगारी, मन बुधि चित क्रम बानी ॥२॥ सुनहुँ न सीख श्रवण शुचि सुन्दर, भ्रमबश मति बौरानी ॥ दम्भ मान मद मोह कपट छल, हृदय बसायेउँ आनी ॥३॥ अनहित जे तिहुँकाल लोक दुहुँ मैं तिन्हिसन रति मानी॥ आनहिं गढ़ि गढ़ि ज्ञान सिखावहुँ, आपन हित करि हानी ॥४॥ बेद पुराण सुनों न गुनो उर, अस दारुण हठ ठानी ॥ बेष बनाइ सुसाधु कहावउँ, छानि पियों नहिं पानी ॥५॥ जानतहों सिय राम नाम कलि, गति प्रद हरण गलानी ॥ अस बिनु रटत देत अभिमत फल, सकल सिद्धि गुणखानी ॥६॥ रटेउँ न सोउ लय लाय हाय कहुँ, वादि गई जिंदगानी ॥ प्रेमलतहिं अपनै हौ केहि विधि, सिय स्वामिनि भय भानी ॥७॥

पद—(४०४)

सिया जू मैंने सब बिधि बात बिगारी ॥ टेक ॥

जेहि लगि दीन सुजन्म कृपा करि, दारुण विपति बि-

दारी॥सो न बनी भरि उदर दिवस निसि,सोयेउँ पाँव पसारी ॥१॥ मातु पिता सुत बन्धु जाति जन, देह गेह धन नारी॥तब पद कमल अमल सुखप्रद, तजि,तिन्ह सन जोरेउँ यारी ।।२॥ आदि मध्य परिणाम झूठ जग, जिमि नभ की फुलवारी ॥भजेउँ ताहि मन बचनकर्म मैं जानि सुहृद सुखकारी ॥३॥ भजन सत्य तिहुँ काल एकरस, बदत संत श्रुति चारी॥परिहरि तेहि अज्ञान मोहबश, पाप पोट शिरधारी॥४॥ काँच किरच लखि नीक गही कर, मणि सुन्दर महि डारी॥लाभ समुझि तेहि हानि कीन अति, बहुरि भयेउ दुख भारी ।।५॥ सुनियतदम्भिउ लहत परम गति,रटत सुनाम अघारी सुमिरततेहि अलसात मन्द मति,पंडितबाद मझारी संतनिसुख तव सुयश श्रवण सुनि,भयेउँ न कबहुँ सुखारी॥ सिय स्वामिनि छमि चूक करिय हित, प्रेमलता बलिहारी।।७।।

पद-(४०५)

सियाजू मोमें अवगुण बहुत भरे ।।टेक॥

मन बच कर्म मोह बस जे अघ, करिहौं करतकरे ॥ ते सब जुगइ सूम के धन ज्यों,गोय धरे उर खरे ॥१॥ काम कोह मद मान कपट छल; दंभ द्वेष सगरे ॥ बसत हृदय

मम सदा सु प्रणकरि, प्रबल न जात टरे ॥ २ ॥ निशि
दिन नाच नचावत कपिज्यों, ज्ञानादिक गुनदरे॥ कर्म
धर्म शुभ सकल ससंकित, लखि रिपु अजय टरे॥ ३ ॥
जारत उर सब भाँति देत दुख, कटि कसि पाछे परे॥
तिनहीं कररुख राखिरहूँमैं, भजन भाव परिहरे ॥४॥
संयम नेम समाधि सु साधन, सपनेउँ नहिं अनुसरे॥
सेयेउँ सन्त न गुरु पद पङ्कज, सुनि न चरित चित धरे
॥ ५ ॥ जो कछु सुकृत सङ्ग बश कबहुँक, करउँ तो जात
जरे॥ नाशहिं बेगि समूल यतन करि, देत न सुख फल
फरे ॥ ६ ॥ सुनत न श्रवण सिखावन पावन, कहि २ मान
मरे ॥ प्रेमलता सिय शरण तोर अब, सब विधि प्राण
डरे ॥ ७ ॥ पद—(४०६)

सियाजू मैंने समुझायो बहु मनकों ॥ टेक ॥

सुनत न कान अयान सीख शुचि, सोच करत अन धन
कों ॥ रटत न नाम सकल सुख दायक, छाँडि कुटिल
निज पण कों ॥ १ ॥ धायो फिरत दशो दिशि निशि
दिनि, थिर न होत इक छण कों ॥ बिषय भोग पर प्रीति नई नित, चाहत पोषण तन कों ॥ २ ॥ विरचत कहुँ
घर महल अटारी, भाजि चले कहुँ बन कों ॥ अतिशय

चपल चतुर अनरथ पथ, प्रवल कुबाद बदन कों ॥ ३ ॥ करत न कबहुँ, सुसंग जरावन, जो भव बिपिन सघन कों ॥ ४ ॥ भजत न तुमहिं सहित यह मम मन, श्री रघु कुल भूषण कों ॥ परि हरि मूढ़ परोसो पारस, फिरत रिरात कुकन कों ॥५॥ प्रेमलता अस कौन लोक तिहुँ, ठौर नहीं बैठन कों ॥ स्वामिनि अब अवलोकि अपन दिठि, अपनाइय निज जन कों ॥ ६ ॥ जय सियाराम ।

पद—(४०७)

सियाजू मेरो मन नहिं माने कही ॥ टेक ॥

तजत न मन्द कुबानि सोक प्रद, दारुण हठहि गही ॥१॥ सुधा सिन्धु तजि नाम निकट अति, सेवत कर्म मही ॥ चपल उतै चंचल उदधि उतै, गहर गँभीर अही ॥ २ ॥ धावत सूकर स्वान सरिस नित, सहत विपति दुसही ॥ तदपि न चढ़त सुपन्थ छाँड़ि छल, बरजि थकी नितही ॥ ३ ॥ दाहत उर करि कुटिल मनोरथ, चाहत दूध दही ॥ सुनत न नीति अनीति सुहावति, भावत करत वही ॥४॥ चिन्तत सदा अञ्छितक पुनि पुनि, अनहोनी अन चही ४ प्रेमलतहिं यह नाच नचावत, तू धरि मौन रही ॥ ५ ॥

पद—(४०८)

सिया जू या मन की कठिन सरोर ॥ टेक ॥

ज्यों ज्यों कहूँ भजन कर त्योंत्यों, धावत भोगनि ओर
॥१॥ राग रोष ईर्षा मद मत्सर, पाप प्रपंच न थोर ॥ भावत
अधिक बधिक ज्यों डोलत, बोलत बचन कठोर ॥२॥
पल में देत खबर त्रिभुवन की, बिनु श्रम अस बर जोर ॥
आवत जात लखात न रंचौ, सुनत न नीक निहोर ॥३॥
अनरथ करत अघात न सपनेउँ, अतिशय कपटी चोर
॥ दुर्गम करत मनोरथ नाना, मायाबी अति घोर ।४।
समुंझायों बहु भाँति विनय करि, बार बार निशि भोर
॥ तजत न बानि भजत नहिं तव पद, जारत उर नित
मोर ॥५॥ कहत सन्त श्रुति शम्भु नाम तब, सब विधि
बंदी छोर ॥ सुमिरत तेहि अलसात मन्दमति, नाशत
प्रेम हिलोर ॥६॥ देत दुसह दुख मन मोंहिं स्वांमिनि,
हेरु कृपा की कोर ॥ बरजिय बेगि बिकल निशि बासर,
प्रेमलता अलि तोर ॥७॥ जय जय सियराम जीकी ।

पद—(४०८)

सिया जू मेरो मन अति जुलुम करै ॥ टेक ॥

बानों साजि साधु को पावन, पाँव कुपन्थ धरै ॥ १ ॥
राखत गोय अधर्म यतन करि, सुकृत सु कहि उघरै ॥

हँसत आनकी बिपति विलोकत, पर सुख देखि जरै
।२।प्रबल प्रतापी निठुर निरंकुश,पाप करत नहिं डरै॥
धनवन्तनि ते नेह बढ़ावत, दीननि कहँ निदरै॥ ३॥
जेहि पथ चलत सहत दुखदारुण,तेहि पथ पुनि बिचरै॥
सहसा करत अनर्थ अचाह्यो, लोभहिं लागि गरै
॥४॥ पैरत फिरत मोहसागर में, कबहुँ न मोद भरै॥ भरमावत
बहु योनि शोक प्रद, हठिहठि कूप परै॥ ५॥
करि आयो जो कौल गर्भ में, प्रभुसन सो बिसरै॥ जो
कोउ कहै नीति सुख दायक,तेहि पर खीझि मरै॥ ६॥
रटत न नाम कामतरु सादर, जो तिहुँ ताप हरै॥ सिय
स्वामिनि अब कहहु कवन बिधि,प्रेमलता भवतरै॥७॥

पद—(४११)

सकल तजि सेउ सिया पद धूरि॥ टेक॥

चाहत जेहि सुर शिद्ध नाग मुनि, जानि सुकृत की सूरि
॥१॥पावन परम हरति अघ परसत,देति बड़ाई भूरि॥
परिहरि ताहि अरे मन मूरख,भाजत केहि लगि दूरि
॥२॥ जो चाहै दोउ लोक परम सुख, सुयश सुभग गति
रूरि॥ तौ भजु सिय पद पद्म परागहि, बिबिधि मनोरथ
चूरि ॥३॥ अस स्वामिनि कहुँ सुनी न देखी, कृपा

खानि गुण पूरि ॥ राम प्रिया जस जनक नन्दिनी, भजत न तेहि मति कूरि ॥४॥ जेहि माया वश नचत सुरासुर, ज्यों घन निरखि मयूरि ॥ प्रेमलता तेहि सुमिरि मूढ़ मन, जग सम्बन्धनि तूरि ॥ ५ ॥ जय सियाराम।

पद—(४११)

मोरे मन निवसहु स्वामिनि आय ॥ टेक ॥

जनक लली सिय सह रघुनन्दन, निशि बासर सुखदाय ॥ १ ॥ सहत दुसह दुख बहु दिन बीते, तुम बिनु परेउँ भुलाय ॥ राम प्रिया करि कृपा जानि जन, लीजिये अब अपनाय ॥२॥ त्राहि त्राहि अब हे करुणा कर, अतिशय जिय घबराय ॥ पाहि पाहि जग जननि जानकी, कीजिये बेगि सहाय ॥ ३ ॥ काल सुभाव कर्म गुण के बश, भर्मेउँ योनि निकाय ॥ जन्म समूह गये चलि यहि विधि, कहूँ कहाँ लगि गाय ॥४॥ कामादिक खल कपट दम्भ, छल, निबसत उर बहु ताय ॥ भजन पन्थ अति त्राश दिखावत, अनरथ करत अघाय ॥ ५ ॥ इन्द्री गण मन आदि मिले सब, देत सुधरम नशाय ॥ प्रेमलतहिं लखि अबल नचावत, बहु बिधि अवसर पाय ॥ ६ ॥

* जय सियराम जय जय सियराम *

पद—(४१२)

सुमिरि सिय मूरति करुणा मई ॥ टेक ॥

केहि लगि फिरत विकल मन इत उत, सहत बिपति नित नई ॥१॥ सुर दुर्लभ नर देह दीन जिन्ह, गर्भ बिथा हरि लई ॥ पालन कीन करत अरु करिहैं, तू तिन्हि पीठ दई ॥२॥ सपनेउँ जनके दोष न हेरति, गुण सुनि प्रति हुलसई ॥ राम प्रिया सम स्वामिनि त्रिभुवन, हुइहै है न भई ॥३॥ सेवत देव कुदेवनि अब लगि, बादि बयस बितई ॥ अबहूँ चेति अचेत अभागी, जाय गई सो गई ॥४॥ सुनि मम सीख परम सुख दायक, करु सिय टहल टई ॥ अमित जन्म की बिगरिउ छणमें, सकल भाँति सुधरई ॥ ५ ॥ रटु सिय नामहिं राम नाम युत, तजि कुबानि बिषई ॥ प्रेमलता जो अबके बिगरी, तौ विषबेलि बई ॥ ६ ॥ जय जय श्री जानकी जू की ।

पद—(४१३)

सुमिरु मन जनक लली सुख खानि ॥ टेक ॥

शरणागत त्रै ताप बिदारनि, प्रगट सु जाकी बानि ॥१॥ सपनेउँ सिय सिय नाम जपे कोउ, लेहिं परम हित मानि ॥ अभय दान तेहि देति लोक दोउ, सकल असं-

गल भानि ॥ २ ॥ अति कोमल जग जननि सर्व हित, श्रित की हरणि गलानि ॥ सुन्दरि सरल सुशील सयानी, बरदायक बर दानि ॥ ३ ॥ थोरेइ कष्ट द्रवति बहु श्रम बिनु, भगति प्रेम पहिचानि ॥ ऋणियाँ होति कृतघ्न देह भरि, राखति जन की कानि ॥ ४ ॥ अबहूँ समुझि अयान छाँड़ि छल, सब बिधि लखि हित हानि ॥ सेउ सिया पद कमल अमल चित, निशि बासर उर आनि ॥ ५ ॥ गुरुमुख होउ बेगि तजि आलस, जन्म सु अनुपम जानि ॥ प्रेमलता सियराम नाम रटु, पावन प्रण जिय ठानि ॥ ६ ॥ जय जय सियाराम ।

पद—(४१४)

भजुमन जनक लली गुण धाम ॥ टेक ॥

उमा रमा रति शची सारदा, सेवति जेहि बसुयाम ॥ १ ॥ पालत हरत सृजत जेहि रुख लखि, विधि हरि हर तिहुँग्राम ॥ जुगवत कृपा कटाक्ष रहहिं नित, रघुकुल मणिघन श्याम ॥ २ ॥ सदा स्वतंत्र सकल उर बासिनि, अखिल लोक अभिराम ॥ तदपि अधिक जनकी रुचि राखहिं, सब विधि पूरण काम ॥ ३ ॥ जेन केन बिधि विवशहु बारक, जपत जीह जेहि नाम ॥ पावत अध-

मौ अभय ऊँचपद, गति मति परम ललाम ।।४।। ऋधि
सिधि निधि नित चरण पलोटहिं, भुक्ति मुक्ति बहु
बाम ।। बिपुल रूप धरि सिय आयसु सिर, व्यापि रहीं
सब ठाम ।। ५ ।। पालहिं पोषहिं नाम जापकनि, सिय
सम हरि भव घाम ।। इच्छित फल जन लहहिं जाँवँ
जहँ, बिनु कौड़ी बिनु दाम ।। ६ ।। प्रगट प्रभाव
बिलोकहु जन हित, फरत बँबूरनि आम ।। प्रेमलता ते
अन्ध अभागी, सिय तजि सेवत चाम ।। ७ ।।

पद-(४१५)

सुमिरि मन स्वामिनि जनक लली ।। टेक ।।
जेहि नाते मिलिहैं रघुनन्दन, बिनु श्रम छैल छली ।।१।।
तजत न कबहुँ सियासम्बन्धिनि, अलि ज्यों कमल
कली ।। सिय सिय नाम जपत निशि बासर, रघुपति
राम बली ।। २ ।। सिय युत राम नाम जो उचरत बिच
रत अवध गली ।। तेहि जनके बश होत रीझि प्रभु, देत
भगति अचली ।। ३ ।। जानत कोउ २ सन्त रशिक बर,
प्रीति की रीति भली ।। ध्यान रंक बहु फिरत सहत
दुख, परिहरि पद मैथली ।। ४ ।। सिय विनु जे चाहत
हित प्रभु सन, रति गति मति अमली ।। पावहिं ते
सपनेउँ न परम सुख, प्रेमलता लिखली ।। ५ ।।

पद—(४१६)

हेरु अब सिय स्वामिनि करि छोह ॥टेक॥
बहु दिन गये सहत नाना दुख, करुणा करि जिय जोह
॥१॥ घेरे रहत सदा स्वामिनि मोहिं, कामादिक मद मोह॥
दंभ कपट छल तजत न छण भरि, जारत उर नित कोह
॥२॥ श्रद्धा सम संतोष शीलता, त्यागि गह्यो पर द्रोह॥
शुभ गुण हींन वनाय भयेउँ मैं, अघ औगुनि की खोह
॥ ३ ॥ तजि तब नाम परम पारस मणि, सेवत करम
कुलोह ॥ प्रभु गुरु भक्ति बिहाय गंध शुचि, सूँघत जग
बद बोह ॥ ४ ॥ चिंता साँपिनि गर्व गुहेरा, कठिन
कुटिलता गोह ॥ असहिं प्रेमलतिकहिं तुम देखहु,
ऐसी तुमहिं न सोह ॥ ५ ॥ जय जय सियाराम ।

पद—गजल (४१७)

अपनाइये सियस्वामिनी मोहि जानि के चेरी ॥टेक॥
अरजी सु कान कीजिये न कीजिये देरी ॥१॥ कलि
काल चहूँ ओर घोर जोर छा रहा ॥ बाढ़ी अनीति
लोक में नहिं जात सो हेरी॥ २॥ मनमें बसे बहु चोर आइ
काम क्रोध आदि ॥ निशि दिन्न धावें नाच सो हठ
शील अनेरी ॥३॥ फुर्नें न देत भजन भाव दाव धर्मके॥

छण में करे विनाश सुकृत नयन तरेरी ॥ ४ ॥ पंडित गुणी ज्ञानी सवी सुर शिद्ध मुनी संत॥ बरवश किये बश डारि पगनि मोह की बेरी॥५॥ भूले सु जीव पीव प्रीति नीति बेद की ॥ बिपरीत रीति होरही, सब कहत हौं टेरी ॥ ६ ॥ साधन् सु शक्ति हींन भये दीन बिचारे सुन्ते न सरल सिख सु लोग स्वामिनी मेरी ॥७॥ अलि प्रेमलता नाम ओट बचि रही अबलौं। अवलोकिये अब हेरि हिये बलि सु मैं तेरी ॥८॥ जय सियाराम।

पद—(४१८)

सिया जू तेरी माया अपरम्पार ॥ टेक ॥

शिवब्रह्मादि डरात जासु डर, अगुण सगुन अवतार ॥ सुर नर मुनि सचराचर कपि ज्यों, नचहिं फसे जेहि जार॥१॥ छण में अमित लोक शृजि पालय, अनुपम गुणआगार॥ अचरज मयकल करनि जासु सब, रचना बिविधि प्रकार॥२॥ हेतु रहित हितसवहिं सुखद सम, सरल सु सबल उदार॥ नांम सनेहिन की तौसबविधि, शिशुइव करति सम्हार॥३॥ निन्दहिं जे अज्ञान कुजन जड, निरतमोहमदमार॥ पावहिं ते तिहुँकालदुसहदुख, परहिं घोरभवधार॥४॥ जानहिं जे सियसमस्वियमाया,

विमल बिवेक विचार ॥ बिचरहिं अवनि अशंक संत
ते, प्रमुदित जगत मझार ॥ ५ ॥ माया बर्ग होइ सुख
लूटहिं, पुरुष भाव तजि भार ॥ जीवत मुक्त भये तेहि
कारण, रशिक बँध्यो संसार ॥ ६ ॥ सिया शरण बिनु
सिय माया ते, जे निज चहहिं उबार ॥ प्रेमलता ते
अज्ञ अबुध नर, आँधर फाँकहिं छार ॥ ७ ॥

पद—(४१८)

सिया जू मोहिं करन चहत मन चेली ॥ टेक ॥
अनरथही उपदेशत निशिदिन, देत पाप मधि पेली ॥
भजन भाव श्रद्धा शुचि छणमें, जारत सकल सकेली
॥ १ ॥ बार बार करि कपट दंभ छल, ठग पन करत
ठगेली ॥ ज्ञानादिक आभरण लाजपट, लूटत लखि
असहेली ॥ २ ॥ बारि बीचि सम बिषय बासना, अमित
अखंड नबेली ॥ चिंतन कीन करत चंचल अति,
प्रभुपथ परम झमेली ॥ ३ ॥ शुभ दिखाइ लघु अशुभ मेरु
सम, देत कराइ हठेली ॥ हरत अमी घट झट सु दगा करि
डारि बदन गुड़ ढेली ॥ ४ ॥ मन मलंग ते लरत गये
चलि, दिन बहु खेलसु खेली ॥ प्रेमलता अलि अब
न सकति सिय, कठिन दरेरा झेली ॥ ५ ॥

पद—(४२०)

सिया जू मोहिं मन बहु देत कलेश ॥ टेक ॥
विषय बिलास त्राश प्रद संतत, गावत संत हमेश ॥
बार बार तेहि ओर सु धावत, तजि श्री नाम परेश
॥१॥ ईष्टधाम अभिराम छुड़ाइ सु, भरमावत बहुदेश ॥
तन थाक्यो मन मरयो न तबहूँ, सेत भये शिर केश ॥२॥
स्वारथ रत परमारथ बिसरयो, तब स्वरूप अवधेश ॥
सेवत जिन्हें सदा शुचि मानस, विष्णु विरंचि महेश
॥३॥ सुमिरेउँ नाम न पुलकि पुलकि कहुँ, बिरचि सु
बैष्णव बेष ॥ प्रेमलता हिय हारि अर्ज तब, कौन कचहरी पेश ॥ ४ ॥ जय सियराम जय जय सियराम ।

पद—(४२१)

सरस अति सिय जू को सिय नाम ॥ टेक ॥
कोमल कलित मधुर मन भावन, दावन दुख सुख धाम
॥१॥ अमित प्रभाव रटत प्रगटत उर, भाव सुचाव ललाम ॥
उमगत आनँद सिन्धु दशो दिशि, मंगल आठो याम
॥ २ ॥ सिय सिय नाम जपत पियहू हिय, दशरथ सुत
श्रीराम ॥ रीझत अति सिय राम नाम सुनि, देत सकल
मन काम ॥ ३ ॥ ज्ञान बिराग योग जप तप ब्रत, साधन

शिद्धि तमाम ॥ सुलभ होत बिनु यतन जपत सिय, सहित राम बिनु दाम ॥ ४ ॥ श्री सिय नाम रूप गुण महिमा, सतगुरु बिनु नर बाम ॥ लखि न सकहिं सपनेउँ निज बुधिबल, सेवहिं जे तनु चाम ॥ ५ ॥ सोइ सीता सोइ सिया जानकी, भेद न भाषत साम ॥ प्रेमलता जे भेद बखानत, ते न लहहिं शुभ ठाम ॥ ६ ॥ जय सियराम ।

सवैया ।

यह दरबार अपार अघी भव बूड़त काढ़ि किये हठि पारा। एक ते एक महान भये यहि गेह में सन्त-बिदेह उदारा॥ नाम स्वरूप चरित्र औ धामके साँचे उपासक हीन बिकारा। प्रेमलता असपाय पता प्रभु आइ गहे पद कीजे उबारा॥ १॥ लोकहु बेद प्रशिद्ध अहै सिय स्वामिनि की यह बानि सुहाई।कोप कटाक्ष न देख्यो सुन्यों कहुँ जीवनि पै अति सय ममताई॥ निश्चरि दीनमहा दुखलङ्कमें मारत तेपि कपीते बचाई प्रेमलता अस पाद पता करुणाकर की शरणागत आई ॥२॥ जय सियराम जय जय सियराम ।

दोहा ।

तू मेरी सिय स्वामिनी, मैं चेरी हौं तोर ।
यह सम्बन्ध बिचारि उर, करहु सदा हित मोर ॥१॥
अपराधिन पर यह दया, लखि तेहि लाजेउ राम ।
प्रेमलता परिकरन पर, अतिशय कृपा ललाम ॥२॥

इति श्री सियाराम नाम प्रचारक श्री
परम हंस श्री सियालाल शरण जी ।
महाराज उपनाम 'श्री प्रेमलता, जू कृत
पदावली समाप्त शुभम् ।

* * *

जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम